अर्जुन पंडित

मर्डर स्पेशलिस्ट

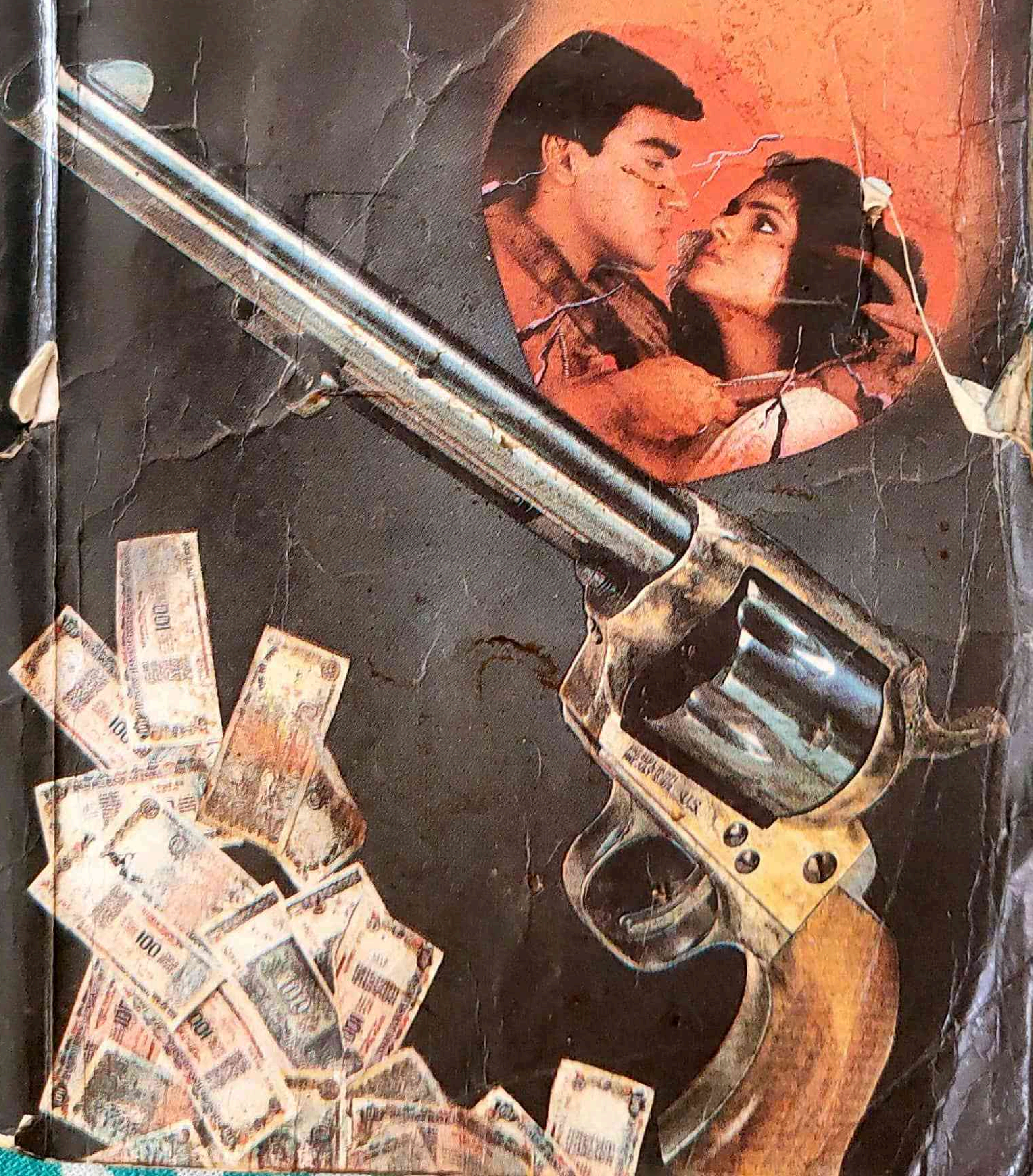

"नहीं...।" मुझसे उन दरिन्दों का रिश्ता कायम करके मुझे और अधिक जलील मत करो नागेश। उनकी मौत पर मैं बेहद खुश हूं। उन्हें अपने किए की सजा दिलवाकर तुमने कोई गुनाह नहीं किया है। किन्तु मुझे कत्ल करने के बाद तुम्हारे सिर पर एक निर्दोष के कत्ल का इल्जाम आ जाएगा। अतः मैंने फैसला किया है कि मैं स्वयं ही खुद को खत्म कर लूं, ताकि तुम्हें यह विश्वास भी हो जाए कि मेरा प्यार धोखा नहीं था।"

"क...क्या?" कैलाश उर्फ नागेश बुरी तरह बौखला उठा, "नहीं, मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा।"

"अब मुझे कोई नहीं रोक सकता नागेश, लेकिन तुमसे एक विनती करती हूं, यदि मेरी अंत्येष्टि तुम अपने हाथों करोगे तो मेरी आत्मा पर से यह बोझ हट जाएगा कि तुमने मुझे माफ नहीं किया है और तुम्हारा प्यार दिखावटी न होकर वास्तविक था।"

"त...तुम पागल हो गई हो? यह जानते हुए भी कि मैं तुम्हारा कत्ल करने पर आमादा हूं। तुम सिर्फ इसलिए अपने आपको खत्म कर रही हो कि मेरे सिर तुम्हारे कत्ल का इल्जाम न आ सके?"

"हां नागेश, मैं पागल हो गई हूं। शायद इस तरह के पागलपन को ही दुनिया वाले प्यार का नाम देते हैं। अच्छा, अलविदा। शायद अगले जन्म में तुम्हारा प्यार प्राप्त करने का सौभाग्य पा सकूं।" कहने के साथ ही सरला का चाकू वाला हाथ तेजी से उसके सीने की तरफ लपका। और 'खच्च' की आवाज के साथ सरला के सीने में पेवस्त हो गया।

□ □
□

मर्डर स्पेशलिस्ट

...पल मौत के साये में जीते ऐसे इंसानों की कहानी, ...चीख-चीखकर खुद को बेगुनाह साबित करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन...।

पुस्तक क्रमांक 1701

मनोज पॉकेट बुक्स

में

थ्रिल, सस्पेंस और इन्वेस्टिगेशन के जादूगर

अर्जुन पंडित

का

कानून की वर्दी

काला सिन्दूर

लॉकर नं० ३०२

मौत बनी दुल्हन

इंसाफ की बेटी

हत्यारी बीवी

मौत बेवफा

कोख का अभिमन्यु

दौलत मेरी मां

लाश की नीलामी

व

मर्डर स्पेशलिस्ट

के बाद नया उपन्यास

फांसी दो कानून को

मनोज पॉकेट बुक्स
१५८४, दरीबा कलां, दिल्ली-६

पुस्तक क्रमांक 1701

मर्डर स्पेशलिस्ट

अर्जुन पंडित

(एक थ्रिलर उपन्यास)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक | मनोज पॉकेट बुक्स
१५८४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६
दूरभाष : ३२६७२३८

वितरक | राजा सेल्स कारपोरेशन
२५/१२८-२६, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७
दूरभाष : ७११२३८४, ७१२३२०१

मुद्रक | आदर्श प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-३२

मर्डर स्पेशलिस्ट : उपन्यास : अर्जुन पंडित

मूल्य : दस रुपये

(इस उपन्यास के पात्र, स्थान तथा घटनाएं सर्वथा काल्पनिक हैं।)

पुस्तक
क्रमांक..........

मर्डर स्पेशलिस्ट

एक इंसानी साया बड़ी तेजी से उन बंगलों का निरीक्षण करता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था जो एक कतार में सड़क के दोनों ओर बने हुए थे।

अचानक वह एक बंगले के सामने पहुंचकर ठिठका। बंगले के जालीदार गेट पर अंदर की तरफ लगे ताले को देख कर लगता था, वह बंगला खाली पड़ा था।

सिर्फ एक क्षण ठिठकने के बाद वह साया बड़ी फुर्ती से बंगले के पिछवाड़े की तरफ लपका और अगले ही क्षण छः फीट ऊंची चारदीवारी को फांदकर अंदर कूद पड़ा।

अहाते में मौजूद नर्म घास व भुरभुरी मिट्टी की वजह से उसके कूदने की ज्यादा आवाज नहीं हुई थी।

वहां जल रहे एकमात्र बल्ब के सीमित प्रकाश में भी उसे साफ पहचाना जा सकता था।

वह देवेन्द्र था, देवेन्द्रसिंह राठौर।

छः फुट से भी ज्यादा लम्बा कद, गोरा रंग और खूबसूरत कहे जाने वाले नैन-नक्श। कुल मिलाकर वह काफी आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक था।

अब वह दबे कदमों से उस खिड़की की तरफ बढ़ रहा था, जो थोड़ी-सी खुली हुई थी।

खिड़की के निकट पहुंचकर झिरी से अन्दर का दृश्य देखते ही उसका चेहरा क्रोध से बुरी तरह विकृत होने लगा। नथुने इस बुरी तरह फूलने-पिचकने लगे कि उनसे सीटी की-सी ध्वनि उत्पन्न होने लगी थी।

अन्दर उसकी पत्नी लक्ष्मी एक अपरिचित नौजवान के साथ जिस हालत में थी, उसे देखकर कमजोर से कमजोर

वह भी अपने खून को उबलने से नहीं रोक सकता था।

फिर उसने आहिस्ता से खिड़की के पट खोल दिये और क्रोध से थर-थर कांपते अपने जिस्म को उसने एक तीव्र झटका दिया तो वह जमीन से पांच फुट ऊंची खिड़की से गुजरकर कमरे के अंदर जा पहुंचा।

'धप्प' की आवाज के साथ किसी को यूं अन्दर दाखिल होते देख प्रेमालाप में मग्न उस जोड़े के मुंह से घुटी-घुटी-सी चीखें उबल पड़ीं।

फिर सामने खड़े देवेन्द्र व उसके हाथ में थमा रिवॉल्वर देखने के बाद उनकी वे चीखें गले में ही घुटकर दम तोड़ गईं।

"कमीनी, कुतिया···!" खून से सनी आंखें लक्ष्मी के नग्न जिस्म पर टिकाये वह किसी जंगली दरिंदे की तरह गुर्राया—"तो यह है तेरा असली रूप? और यही है तेरी वह बीमार सहेली, जिससे मिलने का बहाना करके तू अब तक मेरी आंखों में धूल झोंकती रही? तू समझती थी कि तेरी काली करतूतों का मुझे कभी पता ही नहीं चलेगा? खैर, आज तुम दोनों को मैं ऐसी मौत मारूंगा कि लाश देखने वालों के कलेजे थर्रा उठेंगे।"

"क···क···कौन हो तुम?" काफी प्रयास के बाद लक्ष्मी के साथ मौजूद युवक के मुंह से हकलाहट भरा स्वर निकला। वैसे, उसने ये दिलेरी भरे शब्द दिखावे के लिए ही कहे थे, जबकि हकीकत में उसका पूरा जिस्म जूड़ी के मरीज की तरह कांप रहा था।

लक्ष्मी की हालत तो उससे भी बदतर थी। उसका तो न सिर्फ जिस्म, बल्कि रोयां-रोयां थर्रा रहा था। चेहरा ऐसे निचुड़ा हुआ दिखाई देने लगा था, जैसे उसमें खून का अस्तित्व ही न रहा हो। फिर भी उसने इतनी दिलेरी जरूर दिखाई थी कि पैर के पास मौजूद चादर को अपने नग्न जिस्म पर खींच लिया था।

"हरामजादी···!" रिवॉल्वर ताने बेड की तरफ बढ़ता देवेन्द्र पूरी ताकत से दहाड़ा—"अब तू पतिव्रता बनने की कोशिश कर रही है। मेरे सामने शर्म आ रही है तुझे। अपने इस खसम के साथ रंगरेलियां मनाते समय सारी लाज-शर्म

घोलकर पी गई थी। ठहर हरामजादी, तेरी नंगी लाश को चौराहे पर न लटका दिया तो मैं भी राठौर की औलाद नहीं।" कहने के साथ ही उसका रिवॉल्वर वाला हाथ तन-कर सीधा हो गया।

ट्रेगर पर उंगलियां सख्ती से भिंचती चली गईं।

लेकिन !

इससे पहले कि रिवॉल्वर से गोली चलती, पलक झप-कने से भी कम समय में दो काम एकसाथ हुए।

कमरे में जल रहे सभी बल्ब एक साथ बुझ गए और किसी डंडे जैसी ठोस चीज का प्रहार देवेन्द्र की खोपड़ी पर हुआ।

खोपड़ी के पृष्ठ भाग पर हुआ प्रहार इतना जोरदार था कि वह औंधे मुंह फर्श पर जा गिरा। हाथ में थमा रिवॉल्वर फिसलकर न जाने उस अंधकार में कहां विलीन हो गया था।

बेहोश होने से पहले वह सिर्फ इतना ही सोच सका था कि उनके अलावा यहां कोई तीसरा व्यक्ति भी मौजूद था, जिसने लाइट गुल करके उस पर प्रहार किया था।

▭ ▭

हल्के नीले रंग का सलवार-सूट पहने गुलाबी रंग वाली वह युवती, पहली निगाह में ही किसी को भी अपनी तरफ आकृष्ट कर लेने की क्षमता रखती थी। इस समय वह जिस कमरे के सामने खड़ी थी, उसके ऊपर लगी नेम प्लेट पर हिन्दी के अक्षरों में लिखा था।

"संदीप कुलकर्णी !"

तभी डोर बेल की तरफ हाथ बढ़ाती उस युवती को पता नहीं क्या सूझा कि अचानक वह 'की-होल' से आंख सटा कर अन्दर झांकने का प्रयास करने लगी। फिर अन्दर का दृश्य देखते ही उसकी कजरारी आंखें भय और आश्चर्य से फैलती चली गईं।

कमरे में दरवाजे की तरफ पीठ किये एक ऐसा व्यक्ति खड़ा था, जिसके साढ़े पांच फुट के कसरती बदन पर काले रंग की शर्ट-पैंट, सिर पर उसी रंग की फैल्ट कैप एवं हाथों में दस्ताने चढ़े थे।

किन्तु युवती उसकी इस रहस्यमयी शख्सियत से इसलिए ज्यादा चौंकी थी, क्योंकि उसने उसे अलमारी से एक रिवॉल्वर निकालकर अपने कपड़ों में रखते देख लिया था।

की-होल पर नजरें जमाये उसके मुंह से स्वतः ही धीमी-सी बड़बड़ाहट निकल पड़ी—"कहीं मेरी नजरें धोखा तो नहीं खा रहीं हैं? लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? ये तो संदीप ही है। फ···फिर यह क्या हुलिया बना रखा है इसने?"

दुविधा में फंसी होने के बावजूद उसने अपना कांपता हाथ बेल स्विच की तरफ बढ़ा दिया।

किन्तु उसे दबाने के साथ ही वह कुछ इस तरह सावधान होकर पुनः की-होल पर झुक गई कि अगर वह संदीप न हुआ तो फौरन चोर-चोर का शोर मचाते हुए वहां से भाग खड़ी होगी।

उधर अलमारी बन्द करते उस आदमी के कानों से ज्यों ही घण्टी की आवाज टकराई, वह इतने जोर से चौंककर उछला कि उसके सिर से फैल्ट कैप फिसलकर फर्श पर जा गिरी।

आंखों में भय व उत्कंठा के मिले-जुले भाव लिए वह पलटकर इस अंदाज में दरवाजे को घूरने लगा, जैसे उसने घण्टी की नहीं, बल्कि पुलिस सायरन की आवाज सुन ली हो।

उसके चेहरे पर नजर पड़ते ही उस युवती ने एक निःश्वास छोड़ी और दरवाजा खुलने का इन्तजार करने लगी।

करीब दो मिनट बाद दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाले के चेहरे पर इस समय घबराहट की जगह कृत्रिम आलस्य झलक रहा था।

जिस्म पर मौजूद काली ड्रेस ने सूती गाऊन का रूप ले लिया था—"म···मीनाक्षी, तुम···?" उसकी तरफ मिचमिचाती आंखों से देखते हुए उसने कुछ इस तरह चौंकने की एक्टिंग की, जैसे वह सीधा बिस्तर से उठकर आ रहा है।

"यस डार्लिंग···।" होंठों पर दिलकश मुस्कराहट लिए

संदीप की तरफ अजीब निगाहों से देखती हुई वह बोली—"लेकिन तुम तो मुझे देखकर ऐसे घबरा रहे हो, जैसे मेरी जगह मेरे भूत को देख लिया हो।"

"न···नहीं तो···म···मैं तो इतनी रात गए तुम्हारे यहां आने की वजह से चौंक पड़ा था।"

"क्या बात है संदीप डार्लिंग ?" पूर्ववत् उसके घबराए चेहरे पर नजरें टिकाए व होंठों पर व्यंग्य भरी मुस्कराहट लाते हुए मीनाक्षी ने कहा—"आज तो तुम बात-बात में चौंक रहे हो। मेरा इतनी रात गए यहां आना आज कोई नई बात तो है नहीं। क्या तुम्हें यह भी ध्यान नहीं कि एक बार मैं यहां दो बजे रात को भी आ चुकी हूं। उस दिन तो तुमने कुछ बोलने का अवसर दिए बिना ही मुझे अन्दर खींच लिया था और आज जबकि सिर्फ सवा दस ही बजे हैं, तुम ऐसे चौंक रहे हो।"

"ओह ! सॉरी मीनाक्षी।" दरवाजे से हटकर होंठों पर जबरन मुस्कराहट लाने की कोशिश करते हुए संदीप बोला—"दरअसल कच्ची नींद में उठने के कारण थोड़ा हड़बड़ा गया था।"

"अरे !" चौंकने की खूबसूरत एक्टिंग करने के साथ ही मीनाक्षी अन्दर दाखिल होती हुई कह उठी—"कितनी विचित्र बात है। सो तुम रहे थे और सपना मैं देख रही थी।"

"स···सपना ?"

दरवाजे की चिटकनी लगाकर संदीप घूमा तो उसके चेहरे पर घबराहट ने पुनः अपना कब्जा जमा लिया।

"हां यार, बड़ा अजीब सपना देखा है मैंने।"

"क···क··· क्या देखा ?"

"अब क्या बताऊं, सपने भी कितने विचित्र और डरावने होते हैं।" कहते हुए मीनाक्षी की निगाहें संदीप के चेहरे पर ही टिकी हुई थीं—"मैंने देखा कि मैं तुम्हारे इस कमरे में खड़ी हूं और मेरी ओर पीठ किये एक अजनबी काले कपड़े पहने खड़ा है। फिर मेरे देखते-ही-देखते उसने तुम्हारी अलमारी को खोला और उसमें रखा रिवॉल्वर निकालकर अपने कपड़ों में छुपा लिया। मैं डरकर चीखने ही वाली थी

कि मैंने देखा वह कोई अजनबी नहीं, बल्कि तुम थे।"

मीनाक्षी की बात सुनकर संदीप के सिर पर जैसे कड़-कड़ाकर बिजली-सी गिर पड़ी और चेहरे पर विराजमान घबराहट पलक झपकते ही बदहवासी में बदल गई। उसकी तरफ आश्चर्य से आंखें फाड़कर देखता हुआ वह हकलाकर कह उठा—"त''' तुमने क''' की-होल से अन्दर झांका था ?"

"हां !" मीनाक्षी का सुन्दर चेहरा क्रोध से तमतमा उठा—"जब जान ही गये हो कि तुम्हारी प्रत्येक हरकत को मैंने 'की-होल' से देख लिया है तो मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे बहलाने की कोशिश किए बगैर अपनी इस हरकत की वजह साफ-साफ बता दोगे।"

"बैठो !" दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए वह वहां मौजूद बैठने व सोने के एकमात्र साधन छोटे से बेड पर बैठता हुआ बहुत धीरे से बोला—"मैं नहीं चाहता था कि वक्त से पहले ही तुम्हें अपने उस इरादे से अवगत कराऊं, जो मेरे सीने में तभी जन्म ले चुका था, जब देवेन्द्रसिंह' राठौर नाम के उस जानवर ने तुम्हें अपनी वासना का शिकार बनाना चाहा था।"

"क''' क्या''' ? तुम अभी तक उस हादसे को अपने दिल से नहीं निकाल पाये हो ?" आंखों में हैरानी के भाव लिए संदीप से एकदम सटकर बैठती हुई वह याचना भरे स्वर में बोली—"उसने जो किया, उसकी सजा तुमने उसे उसी वक्त दे दी थी। और अब जबकि हमारा उससे कोई सम्बन्ध नहीं रहा, तो क्यों बेवजह पुरानी बातों को याद करके अपना दिमाग खराब कर रहे हो।"

"नहीं मीनाक्षी। वह हादसा ऐसा है, जिसे मैं चाहकर भी नहीं भुला सकता। यह मत भूलो कि वह हादसा सिर्फ तुम्हारी ही नहीं, बल्कि मेरी जिन्दगी में भी जहर घोल चुका है।" उसने एक बार बोलना शुरू किया तो उसी तरह बोलता रहा—

"मेरे हाथों पिटने के बाद उस हरामजादे ने हम पर चोरी का इल्जाम लगाकर हमें न सिर्फ नौकरी से निकाल दिया था, बल्कि ऑफिस के तमाम लोगों के सामने अपमानित भी किया था। फिर मैं इस आशा से उसके कमीने बाप

भूपेन्द्रसिंह से मिला था कि शायद सच्चाई सुनकर वह हमारे साथ इंसाफ करेगा, लेकिन जानती हो उस कमीने ने क्या जवाब दिया था ? उस जलील आदमी ने कहा था—"मेरे बेटे पर हाथ उठाने से पहले तुम्हें अपनी औकात तो देख लेनी चाहिये थी। उसने कोई गलत काम तो किया नहीं था। जवान है, जरा-सी छेड़छाड़ कर दी तो कौन-सा इतना बड़ा गुनाह कर दिया कि तुम उस पर हाथ उठाने की जुर्रत कर बैठे। शुक्र मनाओ संदीप कुलकर्णी, कि तुम दोनों को सिर्फ नौकरी से निकाला जा रहा है। अगर मेरी जगह कोई दूसरा होता तो जेल भिजवाये बगैर न मानता।"

संदीप ने धाराप्रवाह बोलना जारी रखा—"उस वक्त उसका गला दबा देने की अपनी इच्छा को मैं कैसे रोक सका था, यह मेरा ही दिल जानता है। और तभी मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि मौका लगते ही दौलत के उस घमंडी को ऐसा सबक सिखाऊंगा, कि वह फिर कभी किसी असहाय की जिन्दगी में जहर घोलने के काबिल न रह सके, लेकिन अब मेरा इरादा कुछ बदल गया है। पहले मैं बाप-बेटे को जान से मार डालने का ख्वाहिशमंद था, लेकिन अब सोच रहा हूं कि ऐसा करके तो मैं उन्हें सब पापों से मुक्ति दिला दूंगा। उन्हें तो कोई ऐसी सजा मिलनी चाहिये, जिससे वे जीते-जी मर जायें।

और आज मैं बेहद खुश हूं, क्योंकि उन हरामजादों के लिए मैंने एक ऐसी सजा सोची है, जो उन्हें भिखारियों से भी बदतर जिंदगी जीने पर मजबूर कर देगी।"

"त···तुम करना क्या चाहते हो ?"

"चोरी !"

"च···चोरी ?" मीनाक्षी का मुंह हैरत से खुला-का-खुला रह गया।

"हां, चोरी।" संदीप बोलता गया—"मेरी इस चोरी से न सिर्फ उन हरामजादों का दौलत का घमंड चूर-चूर हो जाएगा, बल्कि वे दर-दर के भिखारी बनने पर मजबूर हो जायेंगे। लेकिन हो सकता है, मेरी इस हरकत से तुम मुझे पागल समझने लगो और यह सोचने लगो कि सिर्फ चोरी करने से ही वे ऐसी स्थिति में कैसे पहुंच सकते हैं। लेकिन यह

एक अटल सच्चाई है। अगर मैं उनकी सेफ में मौजूद उन तीस लाख रुपयों को उड़ाने में कामयाब हो गया तो वे बरबाद हो जायेंगे। वह रुपया उन्होंने अपनी फैक्टरी व बंगले को गिरवी रखकर हासिल किया है, जिसे वे कल अपने उस कर्जदार को चुकता करने वाले हैं, जिसने उन्हें धमकी दी है कि यदि उसके रुपये जल्दी ही वापस नहीं मिले तो वह उनकी फैक्टरी व बंगले को नीलाम करवा देगा। तुम्हें शायद विश्वास न आ रहा हो कि वे कर्जदार हो सकते हैं, किन्तु यह हकीकत है, क्योंकि बाप-बेटे की ऐय्याशी की वजह से उन पर बैंक व दूसरे व्यापारियों का इतना कर्ज बढ़ चुका है कि मजबूरन उन्हें अपनी सारी सम्पत्ति गिरवी रखनी पड़ी थी।"

"ल...लेकिन...!" मीनाक्षी हैरानी भरे स्वर में बोली —"यह सब तुम्हें कैसे मालूम हुआ? खैर, कहीं से भी मालूम हुआ हो, मैं तुम्हें वहां नहीं जाने दूंगी। अगर कहीं तुम चोरी करते वक्त पकड़े गए तो? नहीं संदीप, उनसे बदला लेने की भावना अपने दिल से निकाल दो। उन्हें उनके किये की सजा स्वयं मिल जाएगी। तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारे सिवा मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मेरा क्या...?" बाकी के शब्द उसकी भर्राहट में गले में ही अटक गये।

"पगली कहीं की...।" धीरे से मीनाक्षी के गाल पर प्यार भरी चपत जमाते हुए वह आत्म-विश्वास भरे स्वर में कह उठा—"तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं है क्या? तुम अच्छी तरह जानती हो, अब तक मैंने जिस भी काम में हाथ डाला है, उसमें कभी असफल नहीं हुआ। पहले तुम मेरी पूरी योजना सुन लो, उसके बाद तुम्हें खुद ही यकीन आ जाएगा कि मेरा बाल भी बांका नहीं हो सकेगा। मैं अपना मकसद पूरा करके दो घण्टे के अन्दर-अन्दर सकुशल लौट आऊंगा, तब तक तुम मेरा यहीं इन्तजार करोगी। सुबह चार बजे की फ्लाइट में श्रीनगर के लिए दो टिकट मैं पहले ही बुक करा चुका हूं। वहां पहुंचकर कुछ दिन एंज्वाय करने के बाद अगर तुम्हारी इच्छा होगी तो वहीं, नहीं तो किसी दूसरी जगह जाकर सेटल हो जायेंगे। बोलो, अब तो खुश?"

किन्तु मीनाक्षी के मुंह से एक भी शब्द न निकल सका।

वह अब भी अपनी कजरारी आंखों में भय और आशंका लिए उसके चेहरे की तरफ देखे जा रही थी।

"ओफ…ओ! तुम समझने की कोशिश क्यों नहीं करती। इस काम में फैक्टरी मैनेजर भी मेरा साथ दे रहा है। उसी ने मुझे वहां तक पहुंचने और रुपया उड़ाने की पूरी स्कीम समझाई है, इसलिए खतरे की कोई बात नहीं है।"

कहते हुए वह अलमारी से अपनी काली पोशाक निकालकर पहनने लगा। उसकी आंखों में बेइन्तहा चमक पैदा हो गई थी।

जबकि मीनाक्षी को हर पल अपना दिल पसलियों को तोड़कर बाहर निकलता लग रहा था।

▭ ▭

"भ…भइया…य…ये खून?" घबराहट भरे स्वर में कहते हुए सरला की निगाहें देवेन्द्र के सिर से लेकर पीठ तक बहकर सूख चुके खून के धब्बों पर टिकी हुई थीं।

लेकिन उसकी तरफ देखे बिना ही वह सीधा अपने कमरे की तरफ बढ़ गया।

"अ…आप बोल क्यों नहीं रहे भइया? यह चोट आपको कैसे लगी?"

आंखों में क्रोध व अपमान की ज्वाला लिए एकाएक वह घूम पड़ा। उसके चेहरे पर नजरें पड़ते ही सरला अवाक् रह गई। जिस भाई के चेहरे पर वह हमेशा मुस्कराहट देखा करती थी, आज वही गुस्से की अधिकता के कारण ऊबड़-खाबड़ एवं सख्त चट्टान की तरह नजर आ रहा था। फिर स्वर को जबरन संयत बनाये रखने की कोशिश करते हुए देवेन्द्र ने जवाब दिया—"मुझे कुछ नहीं हुआ है सरला। यूं ही पैर फिसल जाने से मामूली-सी चोट आ गई है। अभी ड्रेसिंग करवा लूंगा। सुबह तक सब ठीक हो जायेगा।"

उसे एक बार फिर चौंकना पड़ा। उसे हमेशा सल्लो कहकर पुकारने वाला भाई आज सरला कह रहा था। हल्की-सी चीत्कार के साथ वह उसकी तरफ झपटती हुई चिल्लाई—"आप झूठ बोल रहे हैं भइया। जरूर किसी के

साथ आपका झगड़ा हुआ है। इतना सारा खून बह गया। और आप इसे मामूली-सी चोट बता रहे हैं। कमरे में चलिये, मैं डॉक्टर को बुला···।"

"मैंने कहा ना, मामूली चोट है। जा, सीधी जाकर अपने कमरे में सो जा।" चीखकर कहने के साथ ही वह तेज कदमों से अपने कमरे की तरफ बढ़ गया।

भाई के इस न समझ में आने वाले व्यवहार पर हैरान होकर वह किंकर्तव्यविमूढ़ अवस्था में वहीं खड़ी रह गई थी।

फिर दरवाजे को धकेलकर देवेन्द्र ने ज्यों ही अन्दर कदम रखा, इतने जोर से चौंककर उछला, जैसे उसके पैर फर्श पर नहीं, बल्कि जहरीले सांपों पर पड़ गए हों।

क्रोध, घृणा व अविश्वास के भाव लिए उसकी फटी-फटी आंखें सामने मौजूद अपनी बीवी लक्ष्मी पर ऐसे टिकी रह गई थीं, जैसे वह कोई स्वप्न देख रहा हो।

आरामदेह कुर्सी पर बैठी वह कागज पेन लिए कुछ लिख रही थी। दरवाजे की तरफ पीठ होने की वजह से या फिर लिखते वक्त कुछ सोचने में तल्लीन होने की वजह से उसे देवेन्द्र के आगमन का आभास-तक नहीं हो सका था।

मेज पर उसे अपना वह रिवॉल्वर भी रखा नजर आया, जो होश में आने के बाद उसे बहुत ढूंढने पर भी नहीं मिल सका था।

काफी देर से सोया पड़ा उसका गुस्सा उसे अपने सामने देखते ही पुनः अपने शबाब पर आ गया। और यह सोचकर उसका वजूद झुलस उठा कि इतना कुछ हो जाने के बावजूद उसने यहां कदम रखने का दुःसाहस कैसे किया था?

फिर मेज पर रखे रिवॉल्वर और पत्र लिखने का कारण समझ में आते ही उसका जिस्म किसी जख्मी चीते की तरह उछलकर मेज के नजदीक पहुंचा और अगले ही पल उसने रिवॉल्वर उठा लिया। फिर उसे उसके माथे की तरफ तानकर पूरी ताकत से चिल्लाया—"ब···बन्द कर हरामजादी अपना ये नाटक। तू क्या समझती है? मैं तेरे इस आत्महत्या के ड्रामे को देखकर तुझे माफ कर दूंगा। नहीं कमीनी, तेरे विश्वासघात की सजा, मैं तुझे अपने हाथों से दूंगा।" इन

शब्दों के साथ ही उसने गोली चला दी।

धांय !

गोली उसके माथे में लगी और उसका सुन्दर चेहरा खून और मांस के लोथड़ों में परिवर्तित हो गया।

गोली के धमाके और लक्ष्मी की लाश ने ज्वालामुखी बने देवेन्द्र को इतना नर्वस कर दिया कि न सिर्फ उसकी टांगें, बल्कि पूरा जिस्म तूफान में हिलते पत्ते की तरह कंप-कंपा उठा था।

जिस क्रोध व जुनून की अवस्था में उसने गोली चलाई थी, अब उसका नामोनिशान तक नजर नहीं आ रहा था। अगर इस वक्त उसके चेहरे पर कुछ दिखाई दे रहा था तो सिर्फ फांसी का खौफ।

उसके कांपते हाथों में रिवॉल्वर ज्यादा देर तक टिका न रह सका और खन्न की आवाज के साथ फर्श पर जा गिरा।

"क···क्या हुआ ? ग···गोली कैसे चली ?" तभी बुरी तरह बौखलाए भूपेन्द्रसिंह ने आंधी-तूफान की तरह कमरे में प्रवेश किया।

और जैसे ही निगाहें लक्ष्मी की लाश से टकराईं, उसका पूरा जिस्म अपनी जगह पर ही जड़ होकर रह गया। आंखों की पलकों तक ने हरकत करना बन्द कर दिया था।

पीछे-पीछे पहुंची सरला की नजरें भी लाश पर पड़ीं तो भय की अधिकता से उसके मुंह से इतनी जोरदार चीख उबली कि भूपेन्द्रसिंह और देवेन्द्र के जिस्म ही नहीं, बल्कि कमरे की दीवारें तक झनझना उठीं।

किन्तु !

चीखने के बाद वह खुद अपनी चीख सुनने के लिए होश में न रह सकी थी।

उसका बेहोश जिस्म फर्श पर लुढ़क चुका था।

▭ ▭

भड़ाक !

भड़ाक !

इस जोरदार आवाज के कानों से टकराते ही बेड पर झपकी ले रही मीनाक्षी घबराकर इतने जोर से उछली कि

गिरते-गिरते बची, फिर सहमे हुए अंदाज में उसने दरवाजे की तरफ देखा तो उसका दिल धक से रह गया। वहां संदीप खड़ा था।

बुरी तरह हांफते हुए उसके जिस्म पर मौजूद काले कपड़ों पर, जगह-जगह धूल और मिट्टी लिथड़ी हुई थी।

"स···संदीप···क···क्या हुआ ?" बड़ी मुश्किल से अपने धाड़-धाड़ करते हुए दिल पर काबू पाने के बाद मीनाक्षी ने हकलाते हुए पूछा था।

जवाब देने से पहले कुत्ते की तरह हांफ रहे संदीप के जिस्म ने एक जोरदार झुरझुरी ली।

फिर आंखों में खौफ का साया लिए उसके होंठों से धीमा व अस्फुट स्वर निकला—"ख···खू···खून···ह···हो···हो···।" बाकी के शब्द लाख चाहने के बावजूद उसके गले से निकलने को तैयार न हुए।

"क···क्या···?" मीनाक्षी बदहवास-सी हो उठी। उसे लगा कि चोरी करते वक्त संदीप से किसी का खू··· हो गया है।

फिर अपनी कांपती टांगों से चलता हुआ संदीप बेड के नजदीक पहुंचा और उस पर ढेर हो गया। तत्पश्चात् धौंकनी की तरह चल रही अपनी सांसों को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा।

"त···तुम बोलते क्यों नहीं ?" सस्पेंस की अधिकता से मीनाक्षी चीख पड़ी—"किसका खून कर दिया है तुमने ?"

"न···नहीं···!" संदीप ने जोरदार आर्तनाद करने की कोशिश की, लेकिन मुंह से बहुत धीमी व सहमी हुई आवाज निकली—"म···मैंने किसी का खून नहीं किया···।"

"फिर, खून···खून क्यों चिल्ला रहे हो ?"

"ख···खून तो वास्तव में हुआ है मीनाक्षी, लेकिन विश्वास करो, वह मैंने नहीं किया।"

"लेकिन खून हुआ किसका है ?" अपने-आपको सम्भाल चुकी मीनाक्षी ने शुष्क स्वर में पूछा।

"देवेन्द्र की बीवी का।"

"द···देवेन्द्र की बीवी का···।" चेहरे पर हैरानी और

स्वर में क्रोध व नफरत का पुट लिए वह बोल उठी—"क्या मैं पूछ सकती हूं संदीप, उस बेचारी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? तुम्हारे या मेरे साथ जो भी ज्यादती हुई थी, वह देवेन्द्र व उसके बाप भूपेन्द्रसिंह की वजह से हुई थी, न कि उस अबला की वजह से। त···तुम इतना गिर सकते हो, यह तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी। मुझे बेवकूफ बनाने के लिए तुमने झूठमूठ एक मनगढ़त चोरी की स्कीम बताई, जबकि रिवॉल्वर लेकर यहां से जाने का तुम्हारा मकसद ही सिर्फ यह था कि उन बाप-बेटों को खत्म करके अपने प्रतिशोध की ज्वाला शांत कर सको। लेकिन जब उन पर वार करने में कामयाब नहीं हुए तो तुम एक निर्दोष को ही अपने प्रतिशोध की आग में झोंक कर चले आए। और अब···।"

"म···मीना···क्षी···!" संदीप गला फाड़ कर बीच में ही चिल्ला पड़ा—"म···मैं कहता हूं, बन्द करो अपनी बेहूदा बकवास। मुझ पर इस तरह अविश्वास जताकर तुमने यह साबित कर दिया है कि तुम्हारा प्यार एक धोखा था, छलावा था। अगर तुम्हें मुझसे जरा भी मोहब्बत होती, तो मेरा चेहरा देखते ही समझ सकती थीं कि मैं झूठ बोल रहा हूं या सच।"

"त···तो फिर···?" चेहरे पर उलझन के भाव लिए वह बोली—"तुम्हारा इस बुरी तरह घबराया होना, कपड़ों पर धूल-मिट्टी लगी होना···।"

"हूं! और इसकी एकमात्र वजह तुमने यह सोच ली कि मैं खूनी हूं।" संदीप ने नफरत-भरे स्वर में बोलना जारी रखा—"तुम्हारी आंखों पर अविश्वास की जो पट्टी बंधी है, उसे खोलकर देखती तो इसका कारण तुम्हें खुद-ब-खुद समझ में आ जाता। मेरी जगह वहां अगर तुम गई होतीं और तुम्हारी आंखों के सामने ही किसी का कत्ल कर दिया जाता तो क्या तुम चोरी के इरादे से घुसी होने के बावजूद चीख-चिल्ला नहीं पड़ती ? उसी वक्त चोरी का इरादा छोड़ भाग नहीं खड़ी होती ? बोलो, तब क्या तुम्हारी हालत मेरी जैसी न हो गई होती ?"

"स···सॉरी डार्लिंग···!" संदीप की बातों से प्रभावित हुई मीनाक्षी एकाएक पश्चाताप-भरे स्वर में कह उठी—

"तुम्हारी घबराहट देखकर मैं इतना बौखला उठी थी कि मेरे मुंह से बहुत कुछ उल्टा-सीधा निकल गया। खैर, अब बताओ कि देवेन्द्र की बीवी ा खून किसने किया ? और घबराहट में कहीं तुम कोई ऐसा सबूत तो वहां नहीं छोड़ आए हो, जिससे पुलिस तुम्हारे ऊपर शक करे।"

"उफ् !" संदीप ने सिर पर हाथ मारते हुए बड़ी बेचैनी से कहा—"उसी की वजह से तो मेरी यह हालत हुई है। हड़बड़ी में मैं वहां एक ऐसा सबूत छोड़ आया हूं, जिससे बड़ी आसानी से उस खून का इल्जाम मेरे सिर मढ़ा जा सकता है। उन्हें सिर्फ यह कहानी सोचने की देर है कि कोई चोर यहां घुसा था। जब मृतका ने उसे देखकर शोर मचाने की कोशिश की तो पकड़े जाने के भय से वह उसे गोली मार-कर भाग खड़ा हुआ। त··· तब··· तब···!" कहते हुए संदीप का बदन एक बार फिर बड़ी जोर से कांपा।

"लेकिन तुमने वहां ऐसा क्या छोड़ दिया, जिससे पुलिस को उनकी कहानी पर यकीन आ जाएगा ?"

"द··· दस्ताना।"

"दस्ताना ! वह वहां कैसे गिर गया ?"

संदीप मरे-मरे-से स्वर में बोला—"खून होते देख मैं इतना ज्यादा बदहवास हो उठा था कि वहां एक पल भी रुक पाना मेरे वश से बाहर हो गया। अतः हड़बड़ी में पाइप से उतरते वक्त मेरे एक हाथ का दस्ताना निकलकर पता नहीं क ां जा गिरा था। घबराहट मुझ पर इस बुरी तरह हावी हो गई थी कि पैरों के जमीन से टकराने से पहले ही मेरे हाथों से पाइप छूट गया था। मैं कई फुट ऊंचाई से जमीन पर आ गिरा था। और धप्प की आवाज उत्पन्न होने से मेरी रही-सही हिम्मत भी जवाब दे गई थी। वहां अपना दस्ताना ढूंढ़ना मुझे मौत को दावत देने जैसा काम लगा था, अतः ज़ल्दी-से-जल्दी वहां से भाग आने में ही मुझे अपनी भलाई दिखाई दी।"

"लेकिन जब तुम सीधे भूपेन्द्रसिंह के कमरे की खिड़की तक पहुंचने वाले थे तो देवेन्द्र के कमरे में कैसे पहुंच गए ?"

"व··· वही तो चूक हो गई मुझसे। ऊपर चढ़ते वक्त, किसी के जोर-जोर से चिल्लाने का स्वर सुनकर उसका

कारण जानने के लिए न मैं उस तरफ बढ़ता और न ही इस मुसीबत में फंसता। लेकिन उस वक्त तो मेरी मत मारी गई थी, जो छज्जे पर झुककर चलता हुआ उस कमरे तक जा पहुंचा था और…।" फिर संदीप ने वहां घटने वाली घटना का पूरा विवरण सुना दिया।

"ओह !" एक लम्बी निःश्वास छोड़ते हुए मीनाक्षी बोली– "लेकिन, तुम्हें इतना घबराने की क्या जरूरत है ? मेरे ख्याल से तो तुम्हें पुलिस को पूरी बात साफ-साफ बता देनी चाहिए।"

"प…पागल हो गई हो तुम। इस तरह तो मैं खुद ही अपनी मौत का इंतजाम कर दूंगा। और यह भी सोचा है तुमने कि उस स्थिति में वहां अपनी मौजूदगी की मैं क्या वजह बताऊंगा ? खैर, मान लो कि कोई बहाना बनाकर मैं उन्हें यह यकीन दिलाने में कामयाब भी हो गया कि वहां किसी गलत इरादे से नहीं गया था, परन्तु जब उन्हें मेरा दस्ताना वहां मिलेगा तब क्या तुरन्त ही वे यह नहीं समझ जायेंगे कि मैं उन्हें बेवकूफ बना रहा हूं ? और तब हो सकता है कि मेरे झूठ बोलने का कारण वे यह समझें कि यह सब मेरा ही किया धरा है। नहीं मीनाक्षी, नहीं ? मैं पुलिस के पास नहीं जाऊंगा।"

"स…संदीप ! तुम समझते क्यों नहीं ? अगर तुमने सच्चाई कबूल नहीं की तो हम भारी मुसीबत में फंस सकते हैं। तुम वहां चोरी के इरादे से गए जरूर थे, किन्तु की तो नहीं। फिर इसमें इतना डरने की क्या जरूरत है ?"

"तुम नहीं समझोगी मीनाक्षी।" संदीप व्याकुल स्वर में बोला—"पुलिस वाले अपने बाप पर भी यकीन नहीं करते। जैसे ही उन्हें यह मालूम होगा कि मैं चोरी करने के इरादे से वहां गया था और भूपेन्द्रसिंह से मेरी दुश्मनी है, तो वे मेरी किसी भी बात पर यकीन नहीं करेंगे। तब मेरी वहां मौजूदगी का वे केवल एक ही नतीजा निकालेंगे कि मैं वहां कत्ल करने के इरादे से ही गया था। और फिर तुम यह क्यों भूलती हो कि अभी कुछ देर पहले तुम्हें खुद भी मेरी बात पर यकीन नहीं हुआ था, फिर वे तो पुलिस वाले हैं। उनसे ऐसी उम्मीद रखना सरासर बेवकूफी होगी। अब मुझे ही

कोई ऐसी तरकीब सोचनी होगी, जिससे पुलिस मुझ पर संदेह तक न कर सके और वे हरामजादे भी हत्या के इल्जाम से बचने न पायें।"

"क्या ऐसा हो सकता है?"

"होने को तो क्या नहीं हो सकता, लेकिन कैसे हो सकता है, यही समझ में नहीं आ रहा है। अगर किसी तरह पुलिस इसी वक्त वहां पहुंच जाए तो कुछ बात बन सकती है, क्योंकि कुछ देर तक तो हड़बड़ाये होने की वजह से वे अपने बचाव का कोई रास्ता सोच ही नहीं पाए होंगे। अभी वह रिवॉल्वर, जिससे देवेन्द्र ने अपनी बीवी पर गोली चलाई थी, वहीं मौजूद होगा, लेकिन देर होने पर वे सबूत ठिकाने लगा सकते हैं।"

"उफ्!" बुरी तरह झुंझलाते हुए संदीप ने बोलना जारी रखा—"पुलिस के पास जाता हूं, तो फंसता हूं। नहीं जाता हूं तो भी···।"

"तब क्यों न हम लोग यहां से भाग चलें।" मीनाक्षी ने सुझाव देते हुए कहा—"श्रीनगर जाने के लिए हमारे पास टिकट मौजूद ही हैं। अगर वहां पहुंचकर हमें यह मालूम हुआ कि पुलिस तुम पर शक कर रही है तो अपना नाम बदल कर वहीं सेटल हो जायेंगे।"

"लेकिन इतनी दूर रहकर हम यह कैसे जान पायेंगे कि पुलिस का शक किस पर है?"

"अरे, अखबार के जरिए और कैसे?"

"ल···लेकिन इस तरह भागने से तो पुलिस अधिक मुस्तैदी से हमारे पीछे पड़ जायेगी। बाद में हमारे लिए सफाई देना भी मुश्किल हो जाएगा। मुझे कुछ सोचने दो। शायद कोई ऐसी तरकीब निकल आए, जिससे गले पड़ी इस मुसीबत से छुटकारा मिल सके।"

कहने के साथ ही संदीप आंखें बन्द करके बेड पर लेट गया।

और मीनाक्षी अपनी आंखों में भय व व्याकुलता लिए उसकी पेशानी पर उभरने वाली आड़ी-तिरछी रेखाओं को इस तरह देख रही थी, जैसे रेखा गणित का कोई कठिन प्रश्न हल करने की कोशिश कर रही हो।

□□

"न...नहीं...! लक्ष्मी ऐसी नहीं हो सकती।" भूपेन्द्रसिंह ने अपने बेटे की बात सुनने के बाद जोरदार प्रतिवाद किया।

"लेकिन यह सच है डैड। मैंने अपनी आंखों से उसे अपने यार के साथ आपत्तिजनक अवस्था में देखा था। उसने मुझ पर प्राणघातक हमला भी करवाया था, जिससे मैं बेहोश हो गया था। मेरी बेहोशी के दौरान उठाकर लाए मेरे रिवॉल्वर को अपने पास रखकर पत्र लिखने की एक्टिंग करते हुए वह यह जाहिर करना चाहती थी कि अपनी गलती महसूस कर आत्महत्या करना चाहती है।"

"और तुमने अपने उसी लाइसेंस-शुदा रिवॉल्वर से उसे गोली मार दी?"

"हां डैड। गुस्से में मैं इतना पागल हो चुका था कि मेरे अन्दर कुछ सोचने-समझने की ताकत ही नहीं बची थी।"

"उफ्!" बुरी तरह झुंझलाए भूपेन्द्रसिंह कुर्सी पर बेचैनी से पहलू बदलते हुए बोले—"लेकिन अब क्या होगा?"

"अब क्या होगा?" देवेन्द्र को जब कुछ न सूझा तो उसने भूपेन्द्रसिंह की ही बात को पुनः दुहरा दिया।

"तुझे फांसी होगी बेवकूफ और क्या होगा?" क्रोध से चीख ही तो पड़े भूपेन्द्रसिंह। फिर उन्होंने उसी अंदाज में बोलना जारी रखा—"तुमसे ऐसी बेवकूफी की उम्मीद मुझे कतई नहीं थी देवेन्द्र। अगर तुम्हारी बीवी वास्तव में चरित्रहीन थी, तब भी तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह तरीका इस्तेमाल करके तुमने न सिर्फ अपनी जान जोखिम में डाल ली है, बल्कि पूरे परिवार की मान-मर्यादा को दांव पर लगा दिया है। अब लोग हमारे मुंह पर ही हमें हत्यारे का बाप कहकर हम पर कीचड़ उछालेंगे। उनके ऐसा करने पर मैं भला उनका क्या बिगाड़ सकूंगा? बोलो, मेरी इस बात का कोई जवाब है तुम्हारे पास? हो भी कैसे सकता है। जवान होकर थोड़ी दुनियादारी का अनुभव क्या कर लिया, खुद को तीसमार खां समझ बैठे। सोचा, अब

डैडी से सलाह लेने की जरूरत ही क्या है। अब भुगतो अपने किए का फल।"

"स···सॉरी डैड! सलाह लेने का मुझे वक्त ही कहां मिला। जिस वक्त प्राइवेट जासूस ने लक्ष्मी के बारे में रिपोर्ट दी, उस वक्त न तो आप घर पर थे और न ही ऑफिस में। अतः उसे रंगे हाथों पकड़ने के चक्कर में मैं वहां पहुंच गया था। और फिर···।"

"बकवास बन्द करो अब।" गुस्से से आगबबूला होकर भूपेन्द्रसिंह जैसे काट खाने को दौड़े—"तुम थोड़ी देर सब्र नहीं कर सकते थे। और यहां आने के बाद जब तुमने लक्ष्मी को अपने कमरे में देखा था, उस वक्त तो मैं यहीं मौजूद था। तब तुम मेरे पास क्यों नहीं आए?"

दांतों से होंठ के किनारे काटता हुआ देवेन्द्र इस बार खामोश ही रहा।

तभी बेहोश पड़ी सरला कुनमुनाई। दोनों की नजरें एक साथ उसकी तरफ उठ गईं।

धीरे से पलकों को खोलते हुए उसने सहमे हुए अंदाज में गर्दन घुमाकर कमरे का जायजा लिया। वहां भाभी की लाश न देखकर उसके चेहरे पर राहत के भाव झलकने लगे, किन्तु आंखों में खौफ का साया अब भी बरकरार था। अंत में अपनी निगाहें स्थिर रखकर लरजते स्वर में उसने पूछा—"भ···भइया! क···क्या भाभी का खून आपने किया···?"

जवाब देने की जगह देवेन्द्र ने अपना सिर झुका लिया, जबकि स्थिर कदम से चलते हुए भूपेन्द्रसिंह सरला के नजदीक पहुंचे और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले—"हां बेटी, यह सच है। लेकिन अब इस तरह घबराने से काम नहीं चलेगा। लक्ष्मी को तो हम वापस नहीं ला सकते, लेकिन तेरे भाई को फांसी से बचाना होगा, इसके लिए जरूरी है कि हम अपने होश-हवास काबू में रखें।"

मुंह से एक भी शब्द निकाले बिना सरला ने सहमति-सूचक ढंग से यूं सिर हिलाया, जैसे सब समझ गई हो, जबकि हकीकत में अपने डैडी के मुंह से निकला एक भी शब्द उसे सुनाई नहीं दिया था। उसके जेहन पर तो बार-बार लक्ष्मी की डरावनी लाश उभर रही थी।

"अब !" वापस कुर्सी पर आकर बैठते हुए भूपेन्द्रसिंह का बेचैनी-भरा स्वर गूंजा—"हमें कोई ऐसी तरकीब सोचनी होगी, जिससे लक्ष्मी की लाश ठिकाने लगाने के साथ-साथ उसके कत्ल के इल्जाम से देवेन्द्र को बचाया भी जा सके।"

भूपेन्द्रसिंह के चुप होने के बाद उस कमरे में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया।

बाप-बेटे एक दूसरे की आंखों में झांक रहे थे।

और सरला, वह बेचारी कभी भाई की तरफ तो कभी अपने डैडी की तरफ इस तरह टुकर-टुकर ताकने लगती, जैसे कोई हिरनी दो शेरों के बीच फंस गई हो।

"ड···डैडी···।" अचानक देवेन्द्र प्रसन्नता से उछलता हुआ बोल उठा—"मैं एक तरकीब बता सकता हूं।"

"तो फिर देर किस बात की है ?" उपहास पूर्ण दृष्टि से उसकी तरफ देखते हुए भूपेन्द्रसिंह बोले—"बता दो, ताकि हम भी तो जानें कि हमारा बेटा वास्तव में तीसमार खां है !"

"वह रिवॉल्वर···।" बाप के स्वर में छुपे व्यंग्य को नजरअंदाज करता देवेन्द्र उत्साहित स्वर में बोल उठा—"जिससे मैंने लक्ष्मी को गोली मारी है और जिस पर मेरी उंगलियों के निशान मौजूद हैं, उसे कपड़े से अच्छी तरह साफ कर लक्ष्मी के हाथों में पकड़ा देंगे। और उसे आत्महत्या साबित करने के लिए सरला से एक 'सुसाइड नोट' लिखवा कर वहां प्लांट कर देंगे, लेकिन उसके लिए लक्ष्मी के लिखे हर कागज को वहां से नष्ट करना होगा। और बदले में सल्लू के हाथ के लिखे कुछ कागज वहां रख देने होंगे। अतः पुलिस के द्वारा लिखावट का मिलान करने पर सुसाइड नोट व बाकी के कागजातों की लिखावट में बाल बराबर भी फर्क नहीं मिलेगा। अगर फिर भी उन्हें संदेह हुआ कि सुसाइड नोट व अन्य कागजों की लिखावट हम लोगों में से ही किसी ने लिखी होगी, तब भी उनके हाथ कुछ नहीं लगेगा, क्योंकि सल्लू सुसाइड नोट व अन्य कागज बाएं हाथ से लिखेगी और पुलिस को अपनी लिखावट का नमूना देते वक्त दाहिने हाथ से। और यह तो आप भी अच्छी तरह जानते हैं कि सल्लू दाहिने हाथ से जितना अच्छा लिख लेती है, उतना बायें हाथ

से भी लिख लेती है। और मैं समझता हूं कि आत्महत्या का कारण बताने में भी हमें कोई दिक्कत नहीं होगी, क्योंकि प्राइवेट जासूस की रिपोर्ट उसे निर्विवाद रूप से चरित्रहीन साबित कर देगी। इसके लिए सल्लू को उस सुसाइड नोट में यह लिखना होगा कि मेरे पति को मेरे अनैतिक सम्बन्धों की जानकारी हो जाने के कारण आत्मग्लानि से भरकर मैं आत्महत्या कर रही हूं।"

"बहुत खूब! वाह! क्या दिमाग लगाया है? मानना पड़ेगा! तुम्हें बेवकूफ समझ मैंने कितनी बड़ी भूल की थी। इतना सब करने के बाद पुलिस की क्या मजाल, जो यह कहने की जुर्रत कर सके कि लक्ष्मी ने आत्महत्या नहीं की, बल्कि उसका कत्ल किया गया है।"

"त···तो क्या···?" आश्चर्य से आंखें फाड़े देवेन्द्र हकला उठा—"इसके बावजूद भी पुलिस को मालूम हो जाएगा कि लक्ष्मी का खून किया गया है?"

"और नहीं तो क्या?" भूपेन्द्रसिंह विक्षिप्तों की तरह चिल्ला उठे—"तुम क्या समझते हो, पुलिस वाले आंखों पर पट्टी बांध कर यहां आयेंगे। अरे बेवकूफ, तेरी इस योजना की टांग तो उसी वक्त टूट जायेगी, जब वे लक्ष्मी की लाश देखेंगे।"

"क···कैसे?"

"तेरी बेवकूफी से और कैसे? बरखुरदार, अगर तुम्हारे भेजे में इतनी ही अक्ल होती तो गोली लक्ष्मी के माथे पर नहीं, बल्कि रिवॉल्वर को उसकी कनपटी पर रखकर गोली चलाते। अनाड़ी से अनाड़ी आदमी भी माथे पर लगी गोली को देखकर समझ जायेगा कि इसका कत्ल किया गया है। रिवॉल्वर से आत्महत्या करने वाला, हमेशा कनपटी या गले पर नाल टिकाकर ही ट्रेगर दबाता है।

माथे पर गोली मारने के लिए आत्महत्या करने वाले को हाथ को थोड़ा टेढ़ा करना पड़ता है। उस स्थिति में ट्रेगर पर से उसकी उंगलियों का कसाव ढीला पड़ जाता है, लेकिन अगर कोई कोशिश करे तो उस स्थिति में भी गोली चला सकता है, पर उसके लिए काफी अभ्यास की जरूरत पड़ेगी। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि मरने वाले को क्या शौक

चर्राया होगा, जो वह मरने का इतना मुश्किल तरीका इस्तेमाल करेगा।"

सुनकर देवेन्द्र के चेहरे पर अथाह बेचैनी झलकने लगी थी। यह सोच कर उसके पूरे शरीर ने पसीना उगलना शुरू कर दिया था कि अगर डैडी ने स्कीम के इस कमजोर प्वॉइंट पर ध्यान न दिया होता और इसे अमल में लाया जाता तो निश्चित रूप से वह बुरी तरह फंस जाता।

इस बीच सरला ने मुंह से एक भी शब्द नहीं निकाला था। वह अब भी पूर्ववत् दोनों को देखती हुई इस तरह खामोश थी, जैसे उसके मुंह में जुबान ही न हो।

जबकि भूपेन्द्रसिंह की गंभीर आवाज पुनः गूंजी—"आत्महत्या साबित करने वाला पत्र जिस ढंग से लिखने को तुम कह रहे हो, उसे पढ़ते ही पुलिस को यह शक भी तो हो सकता है कि क्योंकि लक्ष्मी चरित्रहीन थी अतः यह जानकारी मिलते ही तुमने गुस्से में आकर उसका खून कर दिया होगा। और इतना शक होना पुलिस वालों के लिए काफी है। फिर तो तुम्हारे मुंह से सच कबूलवाने के उनके पास ऐसे-ऐसे हथकण्डे हैं कि तुम उनके सामने पल-भर भी टिक नहीं सकते। अतः बचाव का कोई दूसरा तरीका सोचना होगा।"

"त···तो···फिर···?" आंखों में खौफ लिए देवेन्द्र हकबकाने के सिवा और कुछ न कह सका।

उसकी तरफ गुस्से से घूरकर देखने के साथ ही कुछ सख्त बात मुंह से निकालने के लिए भूपेन्द्रसिंह के होंठ हिले, लेकिन कुछ सोचकर इरादा बदलते हुए सरला की तरफ घूमकर बोले—"बेटी, तू कुछ बोलती क्यों नहीं? तू भी तो कोई तरीका सोच। हो सकता है, तेरे इस बेवकूफ भाई को हम फांसी से बचा ले जाएं। सोच बेटी, सोच। यह तेरे भाई की जिंदगी का ही नहीं, बल्कि हमारे खानदान की इज्जत का भी सवाल है।"

"म···म···मैं···!" सरला पर तो अब भी घबराहट इस कदर हावी थी कि चाहकर भी वह कुछ बोल नहीं पा रही थी। उसकी जुबान ने साथ न दिया तो अपने सिर को नकारात्मक ढंग से हिलाने लगी।

"ऐसा मत कर बेटी। मैं जानता हूं कि इस वक्त तू

काफी घबराई हुई है, लेकिन हिम्मत से काम ले। क्या तू यह चाहती है कि तेरा भाई फांसी पर लटका दिया जाए ?"

सरला का सिर एक बार फिर नकारात्मक ढंग से हिलने लगा।

"तो फिर कुछ सोच, भगवान के लिए जल्दी कुछ सोच, वरना अगर कोई आ गया तो फिर हमारी कोई भी कोशिश इसे बचा नहीं सकेगी। सुबह होने में सिर्फ तीन-चार घंटे की देर है और उससे पहले ही हमें कुछ करना होगा।"

इस बार भी बिना कुछ बोले सरला का सिर फिर उसी अंदाज में हिल पड़ा था।

"उफ !" सिर पीटते भूपेन्द्रसिंह झल्लाए—"लगता है इसे तो सिर हिलाने की बीमारी ही लग गई है। अब हमें ही कुछ करना पड़ेगा। ल···लेकिन क्या करूं? यह सब तेरी वजह से ही हो रहा है बेवकूफ।" जब और कुछ न सूझा तो वह देवेन्द्र पर ही चिल्लाने लगे—"अगर तू उसके चेहरे पर गोली न मारता तो हम आसानी से उसे आत्महत्या साबित कर सकते थे, लेकिन अब···!" कहते-कहते अचानक वे इतनी जोर से उछल कर कुर्सी से उठ खड़े हुए, मानो अब तक कुर्सी पर नहीं, बल्कि झुलसती हुई रेत पर बैठे रहे हों। फिर उनके मुंह से प्रसन्नता से लबालब भरा स्वर निकला—"कमाल है! यह बात मेरे दिमाग में पहले क्यों नहीं आई थी।"

"क···क्या डैडी ?" कुछ भी न समझ पाते हुए कुछ देर से बंद पड़ा देवेन्द्र का मुंह आखिर खुल ही गया।

"कैलाश को फोन करो।" उसके प्रश्न को नजरअंदाज करके भूपेन्द्रसिंह ने लगभग चीखते हुए आदेश दिया था।

"क···कैलाश को ?"

"हां···हां, कैलाश को। क्या तुम्हें अब यह भी याद दिलाना पड़ेगा कि मैं वकील कैलाश को फोन करने को कह रहा हूं। वह तुम्हारा दोस्त ही नहीं, बल्कि हमारा होने वाला दामाद भी है। इस मुसीबत से हमें कोई निजात दिला सकता है तो वह केवल कैलाश ही है। वह कम उम्र ही सही, लेकिन कत्ल के केसों का उसे इतना तजुर्बा है कि मिनटों में मजबूत से मजबूत केस का रुख बदल देने में सक्षम

है।'

"ल···लेकिन···।" देवेन्द्र कुछ सहमे हुए से स्वर में बोला—"अगर उसने हमारी मदद करने से इंकार कर दिया तो ?"

"अरे बेवकूफ, जबानदराजी करके वक्त मत बरबाद कर। फोन पर उसे सिर्फ इतना कहना कि तुम एक बहुत भारी मुसीबत में फंस गए हो, अतः वह तुरन्त यहां आने की कोशिश करे। उसके आने के बाद बाकी मैं संभाल लूंगा, लेकिन ध्यान रहे, उसके आने के बाद तुम्हें सिर्फ इतना कहना है कि तुम्हारा उसे कत्ल करने का कोई इरादा नहीं था। सिर्फ धमकाने की नीयत से तुमने रिवॉल्वर निकाला था, लेकिन उसने तुम पर हमला कर दिया और रिवॉल्वर की छीना-झपटी में गोली चल गई। समझ गये ?"

लगातार बोलने के कार भूपेन्द्रसिंह को लम्बी-लम्बी सांसें लेनी पड़ गई थीं। जबकि सहमति में सिर हिलाता देवेन्द्र टेलीफोन की तरफ बढ़ गया था।

▭ ▭

कॉलबेल की मधुर स्वर लहरी पूरे हॉल में गूंजी थी, जो वहां की बेजान दीवारों के अलावा उन तीन जीवित इंसानों के कानों से भी टकराई थी, जो जीवित होने के बावजूद निर्जीव जैसे दृष्टिगोचर हो रहे थे। घंटी की आवाज सुनते ही तीनों के जिस्म ऐसे उछल पड़े थे, जैसे उनके कानों में बम फट पड़ा हो। भय की अधिकता से फड़फड़ाते देवेन्द्र के होंठों ने स्वर उगला—"क···कौन हो सकता है ?"

"उफ !" अपने को संभाल चुके भूपेन्द्रसिंह झुंझलाये स्वर में बोले—"किस गधे से पाला पड़ गया ? बेवकूफ, अभी तूने ही तो कैलाश को फोन किया था। वही होगा। और कौन होगा, जो इतनी रात को यहां आयेगा। जा, जाकर दरवाजा खोल।"

"म···मैं ?"

"हां तू। और नहीं तो क्या तेरा बाप जायेगा।"

तभी, कॉलबेल एक बार फिर बजी और कुछ देर तक बजती ही चली गई।

अंततः अपनी कांपती टांगों को काबू में करने की ता-

कामयाब कोशिश करता हुआ देवेन्द्र मजबूरन प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ गया।

दरवाजा खोलने से पहले उसने एहतियात के तौर पर मैजिक आई से झांक कर यह विश्वास कर लेना चाहा कि आने वाला कैलाश ही है या कोई और।

लेकिन वहां का दृश्य देखते ही उसकी आंखें भय व आश्चर्य से फैलकर चौड़ी हो गईं और वह कांपती टांगों के साथ गिरता-पड़ता वापस भूपेन्द्रसिंह के पास पहुंचा।

"क्या हुआ ?" उसकी हालत देखकर भूपेन्द्रसिंह ने आशंकित होकर पूछा—"कौन है दरवाजे पर ?"

"प···पु···लि···स।" देवेन्द्र के मुंह से मरी-मरी-सी ऐसी आवाज निकली कि एकदम नजदीक खड़ा आदमी भी बड़ी मुश्किल से सुन सके।

"प···पुलिस···!" भूपेन्द्रसिंह के भी छक्के छूट गए।

सरला तो इतनी बदहवास हो उठी कि डर कर कब चीख उठे, कुछ कहा नहीं जा सकता था।

"तुम दोनों अपने आपको संभालो। हो सकता है, पुलिस किसी अन्य कारण से आई हो, लेकिन तुम्हारी घबराहट देखकर उन्हें शक हो सकता है।"

तभी कॉलबेल एक बार फिर बज उठी, लेकिन इस बार वह बन्द नहीं हुई, बजती ही चली गई।

"मैं दरवाजा खोलने जा रहा हूं।" चेहरे पर बदहवासी लिए दरवाजे की तरफ झपटते हुए भूपेन्द्रसिंह बोले—"लेकिन उससे पहले तुम दोनों अपने-अपने कमरों में चले जाओ। और हां···देवेन्द्र, तुम फौरन नाइट सूट पहन लो। जल्दी करो।"

दोनों गिरते-पड़ते अपने-अपने कमरों की तरफ भागे।

घबराहट व सांसों को व्यवस्थित करने के बाद भूपेन्द्रसिंह ने दरवाजा खोला। सामने एक इंस्पेक्टर और दो सिपाही खड़े थे। आंखों में नींद की खुमारी दिखाने की कोशिश करते भूपेन्द्रसिंह ने अकड़कर कहा—"कौन हैं आप लोग ?"

इंस्पेक्टर की भृकुटी पर बल पड़ गए।

लेकिन फिर भी सिर से लेकर पैर तक उसका मुआयना

करने के बाद उसने शांत स्वर में कहा—"आपके प्रश्न का जवाब तो मुझे यूं देना चाहिए कि कहीं आपको रतौंधी तो नहीं, जो हमारे जिस्म पर मौजूद पुलिस की वर्दी देखने के बावजूद हमारा परिचय जानने की आवश्यकता महसूस हुई। लेकिन जब पूछ ही चुके हो तो न बताना भी सरासर नाइंसाफी होगी। मुझे गाडगिल कहते हैं। मैं इस इलाके का इंस्पेक्टर हूं। लेकिन आपने अभी तक अपना परिचय नहीं दिया।"

"मुझे भूपेन्द्रसिंह राठौर कहते हैं और मैं इस घर का मालिक हूं। वैसे क्या मैं जान सकता हूं कि इतनी रात गए एक शरीफ नागरिक को परेशान करने का मतलब...?"

"जरूर, किन्तु आपकी जानकारी के लिए मैं बता दूं कि किसी भी शरीफ नागरिक को परेशान करने का ख्याल तक हम नहीं लाते। लेकिन आपको तकलीफ इसलिए देनी पड़ी, क्योंकि हमें खबर मिली है कि आपके बंगले में किसी का खून हो गया है।"

सुनकर एक पल को तो ऐसा लगा, जैसे भूपेन्द्रसिंह लहराकर फर्श पर गिर पड़ेंगे, किन्तु अगले ही पल वह बड़ी ही तेजी से संभल भी गए।

"क...क्या...?" चौंकने की बड़ी खूबसूरत एक्टिंग करते हुए वह उछल पड़े। लेकिन अपनी आंखों में चौंकने वाले भाव उत्पन्न नहीं कर सके थे।

यह उनकी खुशकिस्मती कहिए या गाडगिल की बेवकूफी कि वह उनकी आंखों में उभरने वाली घबराहट या बैचेनी को न पढ़ सका।

फलस्वरूप इंस्पेक्टर गाडगिल अपने स्वर को सामान्य बनाए रखते हुए बोला—"जी हां। इसीलिए हम आपके बंगले की तलाशी लेना चाहते हैं। मुझे यकीन तो नहीं है कि यहां ऐसा कुछ हुआ है, फिर भी मिलने वाली खबर को इस तरह नजरअन्दाज भी तो नहीं किया जा सकता।"

"लेकिन इंस्पेक्टर साहब, आप यह क्यों नहीं सोचते कि कत्ल जैसी वारदात होने के बाद भी क्या हम आपको खबर न करते ? आखिर हम शरीफ लोग हैं, कोई चोर, बदमाश या कातिल नहीं, जो किसी का कत्ल कर दें। लगता है, किसी

दुश्मन ने हमें परेशान करने की नीयत से यह झूठी खबर दी है।"

"हो सकता है, आप सच कह रहे हों, लेकिन मैं इस वक्त ड्यूटी पर हूं और आंखें बंद करके किसी की बातों पर यक़ीन कर लेना मेरा उसूल नहीं है।"

"क्या आप खबर देने वाले का नाम बता सकते हैं ?"

"उसने अपना नाम तो नहीं बताया, लेकिन इतना जरूर कहा था कि आपके बंगले के करीब से गुजरते हुए तकरीबन बारह बजे के आसपास उसे बंगले से गोली चलने के धमाके के साथ किसी औरत की चीख भी सुनाई दी थी।"

"बहुत खूब !" भूपेन्द्रसिंह उत्तेजित होकर चीख उठे —"मैं कहता था न, यह मेरे किसी दुश्मन की करतूत है। जरा आप बंगले में बने कमरों को देखकर जवाब दीजिए कि यदि यहां गोली चलाई जाए तो क्या उसकी आवाज बाहर से सुनी जा सकती है ?"

"क्यों ?" धीरे से चौंकते हुए गाडगिल ने पूछा—"क्या खासियत है इस बंगले में ?"

अपनी बात का असर होते देख भूपेन्द्रसिंह ने दूने उत्साह से बोलना शुरू किया—"आप देख नहीं रहे हैं, हमारे बंगले के हर कमरे में एयरकंडीशनर फिट है। और इतना तो आप भी जानते होंगे कि यदि कमरे में एयरकंडीशनर लगा हो तो बाहर की आवाज अंदर और अंदर की आवाज बाहर बहुत कम आती है। अगर किसी तरह की आवाज होती भी है, तो वह एकदम नजदीक खड़े व्यक्ति को भी बड़ी मुश्किल से सुनाई देती है। अतः आप खुद ही सोच सकते हैं कि उसे बंगले के बाहर मौजूद व्यक्ति कैसे सुन सकता है।"

"मानता हूं, आपकी बात में वजन है, लेकिन फिर भी इसमें एक कमी है। वह यह कि भूल से उस कमरे की एक-आध खिड़की खुली रह गई होगी जहां गोली के साथ औरत की चीख उत्पन्न हुई थी। इसलिए मैं यही चाहूंगा कि हमें तलाशी लेने दी जाए तो ज्यादा ठीक रहेगा।"

कहने के साथ ही इस बार इंस्पेक्टर गाडगिल ने भूपेन्द्रसिंह के एतराज की परवाह किए बिना ही अन्दर की तरफ कदम बढ़ा दिए थे।

दोनों सिपाहियों ने भी ऑफिसर का अनुसरण किया था।

"द...देखिए...अब...आप...।" गाडगिल के सामने खड़े होते हुए भूपेन्द्रसिंह सिर्फ हकलाकर रह गए।

"क्या मैं यह समझूं...।" भूपेन्द्रसिंह की तरफ गुस्से से घूरते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल धीरे-से गुर्राया—"कि हमारे तलाशी लेने के काम में आप रुकावट पैदा करना चाहते हैं ?"

"न...नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था।"

"आपका मतलब जो भी रहा हो, कृपया थोड़ी देर के लिए उसे अपने पास ही रखिए। मैं सिर्फ चंद मिनट लूंगा। अगर खबर गलत साबित हुई तो तुरन्त चला जाऊंगा। ओ० के० ।"

चेहरे पर दयनीय भाव लिए भूपेन्द्रसिंह को मजबूरन वहां से हटना पड़ा। दो कमरों को खोलकर देखने के बाद गाडगिल सरला के कमरे के सामने पहुंचा। खटखटाने पर देवेन्द्र ने दरवाजा खोला।

भूपेन्द्रसिंह के इतना समझाने के बाद भी उसकी हालत देखने योग्य थी। तेज हवा में हिलते पत्ते की तरह कांप रही उसकी टांगें अब तक उसके शरीर के बोझ को न जाने कैसे संभाले हुए थीं, यह ताज्जुब की बात थी।

कमरे का निरीक्षण करते इंस्पेक्टर गाडगिल की आंखें बैड पर सोने का अभिनय कर रही सरला पर जा टिकीं। उसने भूपेन्द्रसिंह की तरफ घूमकर पूछा—"इनका परिचय ?"

"ज...जी, मेरी बेटी सरला है और यह मेरा लड़का देवेन्द्रसिंह।"

"क...क्या...?" इंस्पेक्टर गाडगिल बड़े जोर से चौंककर उछल पड़ा।

पहले तो भूपेन्द्रसिंह भी इंस्पेक्टर के इस तरह चौंकने का कारण ही समझ नहीं पाया, लेकिन जल्द ही वह अपने बेटे की बेवकूफी समझ गए। लाश के डर से देवेन्द्र अपने कमरे में न जाकर सरला के कमरे में ही घुस गया था।

"बात दरअसल यह है इंस्पेक्टर साहब।" भूपेन्द्रसिंह

ने जल्दी संभलते हुए कहा—"कि देवेन्द्र को रात देर से सोने की आदत है। अतः सरला के पास आकर यह कभी-कभी तो रात-भर बातें करता रहता है।"

"लेकिन आपकी बेटी तो सो रही है। फिर ये किससे बातें कर रहे थे ? और अगर ये जाग रहे थे तो कॉलबेल की आवाज सुनकर आपकी जगह दरवाजा खोलने खुद क्यों नहीं पहुंचे ?" कहते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल देवेन्द्र की तरफ घूम गया और उसे शंका-भरी दृष्टि से देखते हुए बोला—"क्यों मिस्टर कॉलबेल, इतनी देर बजने के बावजूद, वह आपको क्यों सुनाई नहीं दी ?"

बेचारा देवेन्द्र !

वह जवाब देने की स्थिति में कहां था ?

उसकी खोपड़ी में तो पटाके छूट रहे थे। उसने बहुत कोशिश की कि अपनी घबराहट को काबू में कर ले, लेकिन वह उसे जितना भी काबू में करने की कोशिश करता, वह गुस्सैल घोड़े की तरह उतनी ही और बिदकती जाती।

कुछ क्षण इन्तजार करने के बाद भी जब देवेन्द्र ने कोई जवाब न दिया, तो कंधे उचकाते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल ने कहा—"खैर, मुझे इससे क्या मतलब है ? चलिए, दूसरे कमरों को देख लिया जाए। वैसे, क्या इस बंगले में आप तीन ही व्यक्ति रहते हैं ?"

"जी हां।" जवाब भूपेन्द्रसिंह ने ही दिया, लेकिन फिर तुरन्त ही चौंककर बोल उठे—"सॉरी मेरी बहू, यानी देवेन्द्र की पत्नी लक्ष्मी को मिलाकर हम चार लोग हैं।"

"लेकिन वे दिखाई तो नहीं दे रही हैं ?"

"जी...बात ये है...।" चेहरे पर उभर आने को आतुर घबराहट को तेजी से काबू में करते हुए भूपेन्द्रसिंह बोले—"कि आज उसका और देवेन्द्र का थोड़ा मनमुटाव हो गया था। पति-पत्नी में ऐसे छोटे-छोटे झगड़े तो अक्सर होते ही रहते हैं, इसलिए शायद रूठकर वह अपने मायके चली गई।"

"शायद !" इस शब्द पर जोर देते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल बोला—"यानी आप पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि वह अपने मायके ही गई है।"

"ससुराल से रूठने के बाद औरतें अपने मायके ही जातीं

है इंस्पेक्टर और कहां जाएगी ?"

"खैर, आश्चर्य है कि इतने बड़े बंगले में कोई नौकर नहीं दिखाई दे रहा है।"

"एक नौकर व नौकरानी है। दोनों पति-पत्नी हैं। लेकिन आज शाम वे अपने गांव चले गए हैं। उस वक्त मैं अपने ऑफिस में था। यह बात मुझे यहां आने के बाद ही मालूम हुई।"

"कमाल है!" भूपेन्द्रसिंह को शंकित निगाहों से घूरते हुए इंस्पेक्टर ने कहा—"आज ही आपकी बहू रूठकर मायके गई और आज ही आपके नौकर व नौकरानी भी गांव चले गए। वह भी दोनों एक साथ।"

"इंस्पेक्टर साहब, मैं बता चुका हूं, वो दोनों पति-पत्नी थे।"

"मानता हूं। फिर भी दोनों का इस तरह अचानक चले जाना हैरत की बात है। क्या आपने ऐसा महसूस नहीं किया ?"

"क्यों नहीं किया। लेकिन मैं कर भी क्या सकता था ?"

"ओ० के०। आइए, अब जरा दूसरे कमरों को भी देख लूं, ताकि जल्दी से यहां से रुखसत हो सकूं।" कहते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल कमरे से बाहर निकल आया।

पीछे-पीछे भूपेन्द्रसिंह और देवेन्द्र भी निकले थे।

निचली मंजिल के हर कमरों को चैक करने के बाद जब इंस्पेक्टर गाडगिल ने ऊपर जाने वाले जीने का रुख किया तो देवेन्द्र को ऐसा लगा, जैसे उसका दिल जल्दी ही अपनी हरकतें बन्द कर देगा।

भूपेन्द्रसिंह को ऐसा महसूस हुआ था, जैसे उनके पैरों में एक-एक क्विटल का वजन बांध दिया गया हो।

फिर ताले लगे दो कमरों को खुलवाकर उनमें झांकने के बाद इंस्पेक्टर गाडगिल उस कमरे के सामने जा खड़ा हुआ, जिसमें लक्ष्मी की लाश के रूप में देवेन्द्र के लिए फांसी का फंदा मौजूद था।

इंस्पेक्टर गाडगिल को उस कमरे में दाखिल होते देखने की ताकत अब देवेन्द्र में शेष नहीं रह गई थी।

इस समय उसके चेहरे पर ठीक वही भाव दिखाई दे रहे

थे, जो हलाल होते बकरे के चेहरे पर दिखाई देते हैं।

"सॉरी मिस्टर भूपेन्द्रसिंह।"

कुछ देर बाद भूपेन्द्रसिंह के कानों में इंस्पेक्टर गाडगिल का स्वर पड़ा।

इस आवाज को सुनकर देवेन्द्र बुरी तरह चौंककर उछल पड़ा था। अविश्वास से फटी जा रही अपनी आंखों से वह गाडगिल को इस तरह देखने लगा, जैसे सोच रहा हो कि या तो वह खुद पागल हो गया है या फिर पुलिस वाले।

इंस्पेक्टर गाडगिल की आवाज पुनः उसके कानों से टकराई—"आप लोगों को अकारण ही कष्ट देना पड़ा, इसके लिए हम शर्मिन्दा हैं। जरूर, आपके किसी दुश्मन ने हमें झूठी खबर दी थी। अच्छा अब हम चलते हैं।"

किन्तु, अब कुछ और सुनने के लिए उनके दिमाग अपनी जगह पर नहीं थे। वह तो यह सोचकर ब्रह्माण्ड की सैर करते निकल पड़े थे कि अब मौत निश्चित है। किन्तु यह तो करिश्मा हो गया था। जब लक्ष्मी की लाश कमरे में मौजूद थी तो यह इंस्पेक्टर उन्हें इस तरह क्यों छोड़ गया था? या फिर उसे वह लाश दिखाई नहीं दी? लेकिन ऐसा कैसे हो सकता था? वह तो किसी अंधे को भी दिखाई दे जाती। उसे तो छुपाने तक का प्रयास नहीं किया गया था।

विचारों के इस जाल में वे दोनों इस कदर उलझ गए, कि उन्हें यह भी होश नहीं रहा कि इंस्पेक्टर गाडगिल अपने दोनों सिपाहियों के साथ कब का जा चुका है।

▭ ▭

"चलो मीनाक्षी। जल्दी तैयार हो जाओ।" कमरे में आंधी-तूफान की तरह घुसते हुए संदीप चहका—"पुलिस उनके बंगले में दाखिल हो चुकी है। मैं अपनी आंखों से देखकर आ रहा हूं। अब वे हरामजादे, किसी भी कीमत पर खुद को नहीं बचा सकेंगे।"

"ल···लेकिन···।" असमंजस-भरी निगाहों से उसकी तरफ देखती हुई वह हैरानी से बोली—"चलना कहां है?"

"अरे डार्लिंग, तुम भी कमाल करती हो। तीन बज रहे हैं। फ्लाइट छूटने में सिर्फ एक घण्टे का समय रह गया है और तुम पूछ रही हो कि चलना कहां है? जब टिकट ले ही

चुके हैं तो क्यों न कश्मीर की सैर कर ली जाए।"

"क्या, अब भी तुम्हें अपने फंसने का खतरा है ?"

"नहीं, खतरा तो अब कुछ नहीं है। वहां से लक्ष्मी की लाश व रिवॉल्वर बरामद होते ही वे दोनों अपनी किसी भी कोशिश से पुलिस को गुमराह नहीं कर सकेंगे। अब मेरे दस्ताने या उनके बयान से मेरी वहां मौजूदगी की बात अगर पुलिस को मालूम भी पड़ जाती है, तो भी रिवॉल्वर पर मिले उंगलियों के निशान, उनके किसी भी झूठ को नहीं चलने देंगे। मेरे गुमनाम टेलीफोन से पुलिस स्वतः ही समझ चुकी होगी कि किसी चोर ने वहां चोरी के इरादे से घुसने की कोशिश की होगी, लेकिन कत्ल होते देख घबराकर भाग छूटा, जिससे हड़बड़ी में उसका दस्ताना वहीं गिर गया और कहीं हत्या के इल्जाम में वह खुद न फंस जाए, इसलिए तुरन्त फोन के जरिए उसने पुलिस को सूचना दे दी। ओह ! मैं तो खुद यूं ही बेकार में समय नष्ट कर रहा था। चलो, जल्दी करो।" कहने के साथ ही उतावला-सा होकर वह अपने कपड़ों पर झपटा।

कुछ कहने के लिए अभी मीनाक्षी ने मुंह खोला ही था कि कॉलबेल घनघना उठी।

कपड़ों को सूटकेस में भर रहे संदीप के हाथ अपनी जगह पर ही स्थिर होकर रह गए और मुंह से बड़बड़ाहट जैसा स्वर निकला—"इस वक्त कौन हो सकता है ?"

मीनाक्षी, भला क्या जवाब देती ? उसकी आंखें तो दरवाजे पर ऐसे चिपककर रह गई थीं, जैसे वह दरवाजे को नहीं बल्कि दिल्ली की कुतुबमीनार और लाल किले को कबड्डी खेलते हुए देख रही हो।

संदीप दबे पांव दरवाजे के निकट पहुंचा और अपनी आंखें की-होल से सटा दीं।

किन्तु उसे दरवाजे के सामने खड़े व्यक्ति की काले रंग की पैंट के सिवा और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

एक क्षण सोचने के बाद संदीप तेजी से, किन्तु दबे पांव अलमारी की तरफ दौड़ा और रिवॉल्वर निकालकर पुनः दरवाजे के नजदीक पहुंच गया।

फिर धीरे से चिटकनी नीचे सरकाने के साथ ही उसने दरवाजे को इतनी तेजी से अपनी तरफ खींचा कि उससे सट-

कर खड़ा व्यक्ति लड़खड़ाकर अन्दर आ पड़ा।

परन्तु आगंतुक ने, जिसका कि जिस्म ही नहीं, बल्कि चेहरा भी काले नकाब से ढका हुआ था, बड़ी फुर्ती से अपने को गिरने से बचा लिया था।

"कौन हो तुम?" संदीप के मुंह से गुर्राहट निकली थी।

"रिवॉल्वर अपनी जेब में रख लो मिस्टर संदीप कुलकर्णी।" नकाबपोश के मुंह से कर्कश स्वर निकला—"वर्ना इस बिना लाइसेंस के तमंचे की प्रदर्शनी तुम्हें काफी महंगी पड़ सकती है।"

"त...तुम...।" संदीप बुरी तरह हकला उठा—"मु—मुझे कैसे जानते हो?"

"मुझे तुम्हारे बारे में और भी बहुत कुछ मालूम है। अगर इजाजत हो तो अन्दर आकर बताऊं।"

"ल...लेकिन तुम हो कौन?"

"पहले अन्दर तो आने दो।" कहते हुए उसके हाथ में थमी रिवॉल्वर की जरा भी परवाह किए बिना नकाबपोश निःसंकोच अन्दर दाखिल हो गया था।

फिर दरवाजे को पैर से बन्द करता हुआ वह बोला—"मिस्टर संदीप, मैं जो भी हूं, तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। तुम्हें मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि मैं यहां तुम्हारा अहित करने नहीं आया हूं, बल्कि फायदे के लिए आया हूं।"

"स...संदीप...य...ये...।" एक नकाबपोश को यूं अंदर दाखिल होते देख मीनाक्षी इतनी ज्यादा आतंकित हो उठी थी कि कुछ पूछने के लिए उसके मुंह से निकले शब्द, घिघियाहट में बदल गए थे।

"इसे समझाओ।" नकाबपोश बोला—"मैं तुम्हारा मित्र हूं, मुझसे डरने की कतई जरूरत नहीं है।"

"क्यों नहीं?" संदीप व्यंग्य से बोल उठा—"मैं तुम्हें जानता तक नहीं, फिर भी तुम हमारे मित्र बन गए। और मित्र से मिलने का तरीका और वक्त भी तुमने खूब चुना। रात के इस वक्त, चेहरे को इस तरह छुपाकर आने वाले को कोई मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी अपना मित्र नहीं कह सकता। सीधे-सीधे बता दो कौन हो तुम और यहां क्यों आए

हो ? वरना मजबूरन मुझे गोली चलानी पड़ेगी।"

"अच्छा !" नकाबपोश धीमे से हंसा—"तुम इतने मूर्ख तो नहीं दिखाई दे रहे हो कि मुझे गोली मारकर अपने लिए एक और मुसीबत पैदा करना चाहोगे। अब तक तो तुम्हें अपने उस दस्ताने की ही फिक्र थी, जो भूपेन्द्रसिंह के बंगले में छोड़ आए थे। फिर एक लाश ठिकाने लगाने व बिना लाइसेंस रिवॉल्वर रखने की जवाबदेही की फिक्र भी सताने लगेगी। ऊपर से गोली की आवाज सुनते ही इमारत के अन्य लोग भी यहां आ धमकेंगे। अब बोलो, क्या इसके बावजूद तुम मुझ पर गोली चलाने का हौसला कर सकते हो ?"

"त···तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ ? तुम कौन···?" नकाबपोश की जानकारी पर संदीप हैरान रह गया था।

"अपने बारे में मैं पहले ही बता चुका हूं। एक बार फिर सुन लो, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं, बल्कि एक मित्र हूं।"

"य··· यहां क्यों आए हो ?"

"मित्रता का सबूत देने।"

"क्या मतलब ?" संदीप हैरान दिखाई देने लगा था।

"मतलब तुम इससे समझ सकते हो।" कहने के साथ ही नकाबपोश ने एक काली-सी चीज निकालकर उसकी तरफ उछाल दी।

"य···य···य···।" हाथ में थमी उस वस्तु को देखते ही वह और अधिक बौखला उठा और उसके बाकी के शब्द गले में ही घुटकर रह गए। वह विस्फारित नजरों से अपने उस दस्ताने को देख रहा था, जो भूपेन्द्रसिंह के बंगले में गिर पड़ा था।

"यह वही दस्ताना है।" उसकी बौखलाहट को नकाब के छेदों से देखते हुए नकाबपोश ने बोलना जारी रखा—"जिसे जल्दबाजी में तुम भूपेन्द्रसिंह के बंगले में गिरा आये थे। अगर यह पुलिस के हाथों पड़ जाता तो तुम किसी भी तरह उन्हें यह विश्वास नहीं दिला सकते थे कि वहां जाने के बावजूद तुम्हारा उस कत्ल में कोई हाथ नहीं है। चोरी की नीयत से वहां घुसे होने की तुम्हारी दलील, पुलिस कतई मानने को तैयार नहीं होती, क्योंकि तब लक्ष्मी की हत्या का आरोप तुम्हारे सिर मढ़ने के लिए उनके हाथों में एक जबर-

दस्त सबूत आ गया होता। भूपेन्द्र सिंह व उसके बेटे से तुम्हारी दुश्मनी की पुष्टि होते ही इसमें कोई शक नहीं रह जाता कि अदालत तुम्हें मुजरिम करार देते हुए फांसी का हकदार समझ बैठती। जिसे तुम्हारा शुभचिंतक होने के नाते मैं कतई नहीं होने देना चाहता था। अतः मैं अपनी जान जोखिम में डालकर इसे तुम्हारे सुपुर्द करने चला आया और एक तुम हो कि धन्यवाद देने की जगह रिवॉल्वर ताने खड़े हो।"

नकाबपोश की बात सुनकर वह थोड़ा नर्वस जरूर हुआ, किन्तु फिर तुरन्त ही संभलता हुआ बोला—"जब तुम इतना सब कुछ जानते हो तो यह भी अच्छी तरह जानते होंगे कि जिस रिवॉल्वर से गोली चलाई गई थी, वह अब भी वहीं मौजूद है।"

"हां ! शायद ?"

"शायद नहीं मिस्टर नकाबपोश।" संदीप आवेश भरे स्वर में गरजा—"शत-प्रतिशत कहो। रिवॉल्वर वहां से हटाने की जरूरत तो वे लोग तब महसूस करते, जब किसी चोर के वहां घुसने और उसके द्वारा लक्ष्मी की हत्या करने की कहानी उनके दिमाग में आ पाती, किन्तु मैंने उन्हें इसका मौका ही नहीं दिया। वहां तो कब की पुलिस पहुंच चुकी है। अतः अब तुम खुद ही सोच सकते हो कि मुझे तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन एक बात अब साफ है कि तुम जो भी हो, जरूर उन बाप-बेटों के सताये हुए हो। शायद तुम भी ऐसे ही किसी इरादे से वहां गए थे···।"

"मिस्टर संदीप कुलकर्णी, तुम्हारी किसी भी संभावना में दम नहीं है। तुम समझ रहे हो कि पुलिस मुजरिमों को गिरफ्तार कर चुकी होगी। जबकि जल्दबाजी से काम न लेकर यदि तुम वहां थोड़ी देर और रुके होते तो अपनी आंखों से देखते कि पुलिस वाले बिना किसी को गिरफ्तार किए खाली हाथ लौट गए हैं।"

"क···क्या···?" संदीप को हैरत का एक जबरदस्त झटका लगा। वह बोला—"ऐसा कैसे हो सकता है ? लक्ष्मी की लाश व रिवॉल्वर बरामद होने के बाद भी मुजरिमों को गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया ? ओह !" अचानक कुछ सोचकर वह गुर्राते हुए बोल पड़ा—"जरूर यही बात है।

हां, ऐसा ही हुआ होगा।"

"क"'क्या हुआ होगा ?" मीनाक्षी ने अपना काफी देर से बंद पड़ा मुंह खोलते हुए पूछा।

संदीप ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—"उसने पुलिस को खरीद लिया गया होगा। वे लोग दौलत के बल पर एक बार फिर कानून से खिलवाड़ करने जा रहे हैं, लेकिन नहीं, मैं ऐसा हरगिज नहीं होने दूंगा। मैं खुद पुलिस के बड़े-बड़े अफसरों से मिलकर उन्हें हकीकत बताऊंगा और'''।"

"और तुम समझते हो'''।" नकाबपोश की कर्कश आवाज ने संदीप की बात पूरी नहीं होने दी—"कि वह तुम्हारी बात पर फौरन यकीन कर लेंगे। सोचो मिस्टर संदीप कि तुम्हारे वहां मौजूद होने की तसदीक उन्हें क्या सोचने पर विवश कर देगी। यही न कि तुम उन दोनों से बदला लेने की फिराक में थे। अतः कत्ल के इरादे से वहां पहुंचे, लक्ष्मी ने जब तुम्हें देखा तो शोर मचाने की कोशिश की, जब तुम्हें कुछ और नहीं सूझा तो तुमने उसे ही गोली मार दी'''।"

"नहीं'''।" संदीप चीखा— "पुलिस को मेरी बात का यकीन करना होगा। हत्या में प्रयुक्त रिवॉल्वर पर मुजरिम की उंगलियों के निशान देखते ही उनका शक अपने आप दूर हो जाएगा।"

"अगर तुम यह सोचते हो कि पुलिस के पास जाने से मामला सुलझ जाएगा तो तुम शौक से जाओ, लेकिन बाद में पछतावे के सिवा तुम्हारे हाथ कुछ नहीं लगेगा। जिस रिवॉल्वर के दम पर तुम इतना उछल रहे हो, अगर वे लोग उसे ही गायब कर देते हैं या उस पर से उंगलियों के निशान मिटा देते हैं तो तुम्हारी कोई भी दलील तुम्हें फांसी से नहीं बचा सकेगी।"

"ओह !" स्थिति की गंभीरता को समझते हुए संदीप का जिस्म पंक्चर टायर की तरह पिचकता चला गया।

फिर, उसने कुछ सोचते हुए नकाबपोश की आंखों में झांकते हुए पूछा—"अगर वास्तव में तुम मेरा अहित नहीं चाहते और मेरे मित्र हो, तो फिर अपना चेहरा छुपाने की क्या आवश्यकता है ?"

रहस्यमयी, किन्तु धीमी हंसी के साथ वह बोला, "बिना

अकारण की गई हरकत को बेवकूफी कहा जाता है। और शायद मैं तुम्हें बेवकूफ तो हरगिज नहीं दिखाई दे रहा हूंगा। बहरहाल, इस वक्त तो मैं अपना चेहरा छुपाने का कारण बता पाने में असमर्थ हूं। तुम्हारे लिए इतना ही काफी है कि तुम्हारी 'चीज' तुम्हारे पास पहुंच गई है, ओ० के०।"

"ल···लेकिन इतना तो बताते जाओ, तुमने मेरी मदद क्यों की ?"

दरवाजे के पास पहुंच चुका नकाबपोश पलटा।

फिर उसी धीमी व रहस्यमयी हंसी के साथ बोला—"बस, इतना समझ लो कि मुझे एक बीमारी है। मुश्किल में फंसे हुए लोगों की मदद करने की बीमारी।" कहने के साथ ही दरवाजा खोलकर वह बिजली की तेजी से बाहर निकल गया।

आश्चर्य से आंखें फाड़े संदीप और मीनाक्षी इस तरह एक-दूसरे को देख रहे थे। जैसे पूछना चाहते हों कि वह कौन-सी बीमारी थी ?

▭ ▭

"क···क्या ? लाश गायब हो गई ?"

साढ़े छः फीट से भी ज्यादा लंबे और खूबसूरत युवक कैलाश ने आश्चर्य से उछलते हुए देवेन्द्र की तरफ देखा था।

"हां बेटे।" जवाब भूपेन्द्रसिंह ने दिया—"यह सच है। कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि माजरा क्या है ?"

"क्या सिर्फ लाश ही गायब हुई है ?"

"नहीं रिवॉल्वर भी गायब है। हमने पूरा बंगला छान मारा है, लेकिन न तो रिवॉल्वर का ही कहीं पता चला और न ही लाश का।"

"मेरे ख्याल से ऐसा केवल एक ही तरीके से संभव है।" कुछ सोचते हुए सरला बोली—"इस समय उसके चेहरे पर घबराहट का नामोनिशान तक नहीं था। शायद वह अपने मंगेतर की मौजूदगी में अपने को डरपोक नहीं दिखाना चाहती थी।

"कैसे ?" उसकी आंखों में देखते हुए कैलाश ने पूछा।

"हमने···।" भाई और पिता पर एक निगाह डालने के बाद वह बोली—"भाभी को सिर्फ बहूलुहान पड़े देखा था।

हम में से किसी ने भी यह जानने की कोशिश नहीं की थी कि वह वास्तव में मर चुकी थीं या सिर्फ घायल थीं। हो सकता है कि वह घायल होकर बेहोश पड़ी रही हों और फिर होश में आने के बाद रिवॉल्वर लेकर इस इरादे से फरार हो गई हों कि अपनी दुर्गति करने वाले से बदला लेंगी।"

"तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है ?" देवेन्द्र पागलों की तरह चिल्ला उठा—"चेहरे पर गोली लगने के बाद भी भला कोई जीवित बच सकता है ?"

"क्यों नहीं ? अगर गोली अंदर घुसने की जगह तिरछी होकर बाहर निकल जाए तो आदमी जीवित बच सकता है।"

"तू तो लाश को देखते ही चिल्लाकर बेहोश हो गई थी, लेकिन मैं और डैडी वहां काफी देर तक मौजूद रहे थे। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह मर चुकी थी।"

लम्बे कद के कैलाश ने घूम कर भूपेन्द्रसिंह की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा तो उसने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा—"देवेन्द्र सही कह रहा है। लक्ष्मी की लाश में जीवन के कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे।"

"अगर वह मर चुकी थीं।" सरला विरोध करते हुए बोली—"तो क्या उनकी रूह ने आकर लाश गायब कर दी, जिससे उनकी हत्या के इल्जाम में भइया को फांसी न हो।"

देवेन्द्र ने सरला की तरफ घूरकर देखा।

फिर अभी वह कुछ कहना ही चाहता था कि कैलाश हाथ उठाकर उसे शांत करते हुए बोला था, "देख यार, जिस झमेले में तुम फंसे हो, उसमें एक-दूसरे पर खफा होने से काम नहीं चलेगा। दिमाग को ठंडा रखकर ही इससे निजात पाई जा सकती है। अगर वास्तव में तुम्हारे हाथ से चलने वाली गोली से लक्ष्मी मर चुकी थी तो इस तरह लाश गायब हो जाना अपने आप में महान हैरतअंगेज बात है लेकिन…।"

"लेकिन क्या ?"

"पुलिस के इतनी जल्दी यहां पहुंचने वाली बात पर ध्यान दिया जाये तो मामला अपने आप साफ हो जाता है कि लाश गायब नहीं हुई, बल्कि गायब की गई है।"

"क…क्या…ग…गायब की गई है।" तीनों के मुंह से आश्चर्य में डूबे स्वर निकले थे।

"हां, गायब की गई है।" कैलाश ने दृढ़ शब्दों में बोलना जारी रखा—"मेरे ख्याल से जिस वक्त देवेन्द्र और लक्ष्मी में रिवॉल्वर के लिए छीना झपटी हो रही थी, उस वक्त कमरे में या आस-पास कोई तीसरा व्यक्ति भी मौजूद था। देवेन्द्र के हाथों लक्ष्मी का कत्ल होते उसने अपनी आंखों ... था। तब उसने एक मौके का लाभ उठाने का फैसला किया होगा। अतः तुम लोगों के बाहर निकलते ही वह कमरे में पहुंचा होगा और रिवॉल्वर अपने कब्जे में करने के बाद लाश को किसी तरह वहां से हटा दिया होगा। तत्पश्चात् पुलिस को फोन करके इसलिए यहां भेजा, ताकि वह तुम्हें ज्यादा आतंकित कर सके।"

"ल...लेकिन कैलाश।" विरोध करते हुए देवेन्द्र बोला—"ऐसा कैसे हो सकता है ? अगर वहां कोई और मौजूद होता तो मुझे दिखाई तो देता। फिर भी मैं मान लेता हूं कि यदि खिड़की के बाहर या छज्जे पर कोई मौजूद था, तो क्या उसे ख्वाब आया था कि आज मेरे हाथों लक्ष्मी का कत्ल होगा ? इसके अलावा हमें सिर्फ आतंकित करने से ही उसे क्या हासिल होगा ?"

"मेरी बात पर शायद तुमने गौर नहीं किया है। इस हादसे के बाद जिस आश्चर्यजनक ढंग से पुलिस यहां पहुंची थी, उस पर गहराई से विचार करने के बाद तुम भी इस बात से इंकार नहीं कर सकते। तुम ही सोचो, पुलिस वालों को यह कैसे मालूम पड़ता कि यहां गोली चलने की आवाज के साथ-साथ ही किसी औरत की चीख भी सुनाई दी थी। और फिर जिसने भी तुम्हें लक्ष्मी का कत्ल करते देखा होगा, उसकी मौजूदगी के बारे में एक ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वह कोई चोर था, जो चोरी के इरादे से यहां छुपा हुआ था। इन सब तथ्यों को जोड़ने के बाद कहानी यह बनती है...।" कैलाश ने धाराप्रवाह बोलना जारी रखा—"कि लक्ष्मी की हत्या होते वक्त यहां कोई चोर मौजूद था। उसने कत्ल होते हुए देखा और ब्लैकमेल करने के उद्देश्य से लाश गायब कर दी और वह रिवॉल्वर भी अपने कब्जे में कर ली। तत्पश्चात् उसने फोन से पुलिस को सूचना दी। अपनी इस हरकत के पीछे उसका उद्देश्य यही हो सकता है कि तुम उससे ज्यादा-

से-ज्यादा आतंकित हो जाओ और भविष्य में उसके हर आदेश का पालन करते रहो। मेरा ख्याल है अब तक वह लाश को ऐसी जगह पर फेंक चुका होगा, जहां वह आसानी से पुलिस को बरामद हो जाये। फिर पोस्टमार्टम की रिपोर्ट सामने आते ही यह बात तुरन्त साफ हो जाएगी कि हत्या तुम्हारे ही लाइसेंसी रिवॉल्वर से की गई थी। तब तक अदालत में यह तर्क दिया जा सकता है कि मियां-बीवी में झगड़ा होने के बाद वह किसी को बताए बगैर ही रिवॉल्वर लेकर चुपचाप घर से निकल पड़ी होगी और रास्ते में किसी गुंडे-बदमाश से अपने को बचाने के लिए जब उसने रिवॉल्वर निकाला होगा तो बदमाशों ने उसी रिवॉल्वर से उसका कत्ल कर दिया। अब तुम्हारी सलामती तभी तक रह सकती है, जब तक कि रिवॉल्वर पुलिस के कब्जे में नहीं पहुंचता है। इन सब बातों की कल्पना वह चोर भी अच्छी तरह कर चुका होगा।"

"ओह, माईगॉड!" भूपेन्द्रसिंह के मुंह से व्याकुलता-भरा स्वर निकला—"यह तो आकाश से गिरे और खजूर में अटके जैसी बात हो गई, अगर तुम्हारी संभावना सच साबित हुई तो ब्लैकमेलर रूपी नंगी तलवार हमारे ऊपर तब तक टंगी रहेगी जब तक कि हम उसकी मांगों को पूरा करने में समर्थ रहेंगे। अगर कभी हम ऐसा न कर पाये तो वह रिवॉल्वर पुलिस के सुपुर्द कर, देवेन्द्र को फांसी पर लटकवा सकता है।"

"हां, वो तो है।"

"लेकिन…।" सरला उत्तेजना भरे स्वर में बोल उठी—"जब तक असलियत का पता न लग जाये, इस तरह हवा में घोड़े दौड़ाने से क्या फायदा? अगर यह किसी ब्लैकमेलर का काम होता तो अब तक तो वह अपनी मांग रख भी चुका होता, जबकि ऐसा न होना हमें दूसरी तरफ सोचने पर बाध्य करता है।"

"हो सकता है, वह अपनी मांग रख भी चुका हो।"

"कैसे?"

बारी-बारी से सबके चेहरों पर नजरें दौड़ाने के बाद कैलाश ने कहा—"जिस कमरे से लक्ष्मी की लाश गायब हुई है, वहां आप लोगों ने कोई पत्र वगैरह तलाशने की कोशिश

की थी ?"

"नहीं !" भूपेन्द्रसिंह बोले—"लाश के गायब होने से हम इतने ज्यादा हतप्रभ हो गए थे कि इस ओर सोचने का हमें मौका ही नहीं मिला। अतः वहां कोई पत्र मौजूद भी रहा होगा तो उस पर हमारा ध्यान नहीं गया।"

"यह स्वाभाविक बात है। आपकी जगह कोई और होता तो उस वक्त उसके जेहन पर भी सिर्फ लाश और रिवॉल्वर गायब होने की बात ही सवार रहती।"

"लेकिन कैलाश…।" देवेन्द्र बोला—"तुम यह कैसे कह सकते हो वह हमसे पत्र द्वारा सम्बन्ध बनायेगा।"

"यह मेरा अनुमान मात्र है। सोचने वाली बात यह है कि जिसने भी ऐसा किया होगा, अपने किसी फायदे को सोच-कर ही किया होगा। तब वह अवश्य ही किसी न किसी तरीके से तुमसे सम्बन्ध बनायेगा। इतना तो सभी जानते हैं कि अपनी सुरक्षा की दृष्टि से ब्लैकमेलर टेलीफोन से या फिर पत्र के जरिये सम्बन्ध बनाते हैं। अब अगर टेलीफोन पर उसने अब तक सम्बन्ध नहीं बनाया है तो सीधी-सी बात है कि जरूर उसने पत्र द्वारा अपनी मांग रखी होगी। ऐसा वह यह सोच कर भी कर सकता है कि अब तुम उस कमरे में पुनः पहुंचोगे तो उसके द्वारा रखे पत्र को आसानी से देख लोगे।"

"अगर वहां कोई ऐसा पत्र मौजूद रहा होगा।" सरला सोचने वाली मुद्रा बनाये बोली—"तो मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि अब वह वहां नहीं होगा।"

"क्यों ? क्यों नहीं होगा ?" देवेन्द्र ने चौंककर पूछा।

"वह मैं बताता हूं।" सरला के बोलने से पहले ही कैलाश कह उठा—"पत्र के वहां मौजूद न होने का दावा सरला इसलिए कर रही है, क्योंकि इसकी समझ के मुताबिक वह पत्र यहां तलाशी लेने आये इंस्पेक्टर के हाथों पड़ चुका होगा। जबकि मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि उस वक्त उस इंस्पेक्टर को भी तुम्हारी तरह केवल लाश की ही तलाश थी। कागज-पत्रों पर ध्यान देने की जरूरत तो वह तब महसूस करता, जब यहां हुई हत्या की गंध सूंघ पाता। उसके इस तरह से निराश होकर जाने का मतलब है कि उसे यहां हुए अपराध का कोई 'क्लू' नहीं मिल सका।"

"ओफ्फो···!" भूपेन्द्रसिंह लगभग चीखते हुए बोले—"तुम लोग तो संभावनाओं में ही वक्त बरबाद करने पर तुले हुए हो। एक बार वहां चलकर देख लेने में क्या हर्ज है।"

"हां, डैडी ठीक कह रहे हैं।" जीने की तरफ बढ़ता हुआ देवेन्द्र बोला—"वैसे भी उस कमरे का बारीकी से मुआयना करके हमें यह जान लेना चाहिए कि कहीं अब भी वहां कोई ऐसा सबूत तो नहीं छूट गया है, जो मुझे फांसी के फंदे तक पहुंचा दे। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि आज नहीं तो कल, हमें लक्ष्मी की गुमशुदगी की रिपोर्ट तो लिखानी ही पड़ेगी। और तब, पुलिस वाले शायद उसके कमरे की तलाशी लेना चाहें।"

"म···मैं तो नहीं जाऊंगी।" सरला डरे हुए स्वर में बोली। लेकिन फिर कैलाश की उपस्थिति का ख्याल करके बात को घुमाते हुए बोली—"जब वहां ऐसा कुछ है ही नहीं तो परेशान होने से क्या फायदा?"

"तुझे कौन जाने को कह रहा है?" देवेन्द्र उसे डांटते हुए कैलाश की तरफ घूमा—"तुम भी उस कमरे को एक बार अच्छी तरह देख लो। वकील हो ना, अतः छोटी-से-छोटी गलती पर भी तुम्हारा ध्यान जा सकता है।"

सहमति में सिर हिलाता हुआ कैलाश भी जीने की तरफ बढ़ गया।

▭ ▭

"वह रहा।" कमरे में घुसते ही देवेन्द्र उत्तेजित स्वर में चीखते हुए आंधी-तूफान की तरह उस मेज की तरफ दौड़ा, जहां पेपर वेट के नीचे एक कागज दबा था।

जब तक कैलाश नजदीक पहुंचता, वह उसे खोलकर पढ़ना शुरू कर चुका था।

कैलाश की निगाहें कमरे का जायजा लेने लगी थीं।

कमरे में फर्श पर काफी कीमती कालीन बिछा हुआ था। लुढ़की हुई कुर्सी के नजदीक कालीन पर एक छोटा-सा धब्बा दिखाई दे रहा था। आगे बढ़कर देखने पर उसे यह समझते देर नहीं लगी कि यह खून का धब्बा था।

कुर्सी को पकड़कर सीधा करने पर उस पर लगा खून भी स्पष्ट दिखाई देने लगा था।

बगल में एक पेन भी गिरा हुआ था।

तभी देवेन्द्र की तरफ घूमकर उसने कुछ कहना चाहा। लेकिन उसकी हालत तो पहले ही बेरंग थी।

वह आंखों में खौफ का साया लिए कभी पत्र की तरफ देख रहा था तो कभी उसकी तरफ।

"क···क्या हुआ देवेन्द्र ?"

"व···वो···ल···लाश !"

बुरी तरह आतंकित, वह सिर्फ हकलाकर रह गया था।

"ल···लाश ?"

"हां···हां···व···वह यहीं है।" उसके मुंह से निकलने वाला स्वर ठीक वैसा ही था, जैसे कोई जन्मजात गूंगा अचानक बोल उठा हो।

"क···कहां है ?" नजदीक पहुंचकर उसे झंझोड़ते हुए कैलाश ने पूछा था।

जवाब देने की जगह उसने हाथ में थमा पत्र उसकी तरफ बढ़ा दिया था।

मिस्टर भूपेन्द्रसिंह राठौर, आप यह जानकर इस वक्त खुशियां मना रहे होंगे कि पुलिस लक्ष्मी की लाश को आपके बंगले से बरामद नहीं कर सकी। साथ ही आप यह सोचकर आश्चर्यचकित होंगे कि आखिर लाश कहां गायब हो गई ? लेकिन क्षमा करना, अभी तक मैंने अपना परिचय नहीं दिया। मैं एक मददगार हूं। ऐसा मददगार जिसे परेशानी में फंसे लोगों की मदद करने की बीमारी है। हां, तो मैं बता रहा था कि लक्ष्मी की लाश गायब करने में मेरा हाथ है। मैंने ऐसा क्यों किया ? यह बताना मैं जरूरी नहीं समझता, क्योंकि यह तो आप मेरे परिचय से ही समझ चुके होंगे। किन्तु मेरे ख्याल से ऐसा सोचने की जगह अगर आप यह सोचें कि मेरे ऐसा करने से आपको क्या फायदा पहुंचा तो न चाहते हुए भी आपको मानना पड़ेगा कि सिर्फ मेरी ही वजह से आपकी डूबती हुई नाव थोड़ी देर के लिए किनारे से लग गई है। थोड़ी देर इसलिए लिखना पड़ रहा है, क्योंकि आपके सिर पर मंडराता खतरा मुकम्मल तौर पर अभी हटा नहीं है, क्योंकि वह लाश

अभी-भी आपके बंगले में ही मौजूद है। अगर मैं चाहता तो जिस तरह उसे उस कमरे से हटाया, उसी तरह बंगले के बाहर भी निकाल सकता था। लेकिन फिर सोचा, जब खून आपके बेटे ने किया है तो फिर रिस्क मैं क्यों उठाऊं ? इतना क्या कम है कि वह पुलिस के हाथों में पड़ने से बाल-बाल बच गई। लेकिन क्षमा करना, आपको जरा मैं गलत कह गया। उसे बचाने में सिर्फ मेरा ही हाथ नहीं, बल्कि आपकी किस्मत का भी हाथ था। आप सोच रहे होंगे कि यहां किस्मत कहां से आ गई ? लेकिन यह सच है, अगर वह इंस्पैक्टर कांइयां किस्म का होता तो तुरन्त ही ताड़ जाता कि यहां किसी न किसी का कत्ल जरूर हुआ है। क्योंकि, जल्दबाजी में मैंने लाश तो वहां से हटा दी थी, लेकिन उन सबूतों को नहीं हटा सका था, जो चीख-चीखकर वहां हत्या होने का संकेत दे रहे थे। जैसे वह खून लगी कुर्सी और कालीन पर गिरा खून का धब्बा। दरअसल मेरा ध्यान भी इन सबूतों पर गया था। खैर, इन बातों में समय नष्ट करने की बजाय मैं आपको यह बता दूं कि इस वक्त लक्ष्मी की लाश कहां है, लेकिन स्पष्ट न बताकर आपकी परीक्षा लेना चाहूंगा। अगर आप परीक्षा में पास होते हैं तो मैं समझूंगा कि मैंने एक अक्लमंद और काबिल आदमी की मदद की है। वरना उसे अपने किए की सजा भुगतनी पड़ेगी। मूर्खों की मदद करना मैं अपनी शान में गुस्ताखी समझता हूं।

अब आप यह नक्शा देखिए। इसमें ए और बी बिन्दुअ दिखाए गए हैं। लाश ठीक उस स्थान के नीचे मौजूद है, जहां बी बिन्दु दिखाया गया है। अब आपको इस चित्र की मदद से वह स्थान खोजना है, जहां बी बिन्दु दिखाया गया है। लेकिन ढूंढने का समय सिर्फ सुबह तक का है। यदि सवेरा होने से पहले लाश को ढूंढकर आप उसे ठिकाने लगाने में असफल रहे तो मैं समझूंगा कि मैंने एक गलत आदमी की मदद की है। और तब मुझे मजबूरन पुलिस को एक गुमनाम फोन करके यह बता देना पड़ेगा कि आपने लाश कहां छुपाई

है। वैसे मुझे पूरी उम्मीद है कि ऐसी नौबत नहीं आएगी। और हां, एक बात तो लिखना मैं भूल ही गया। वह यह कि आपकी लाइसेंस शुदा रिवॉल्वर को,

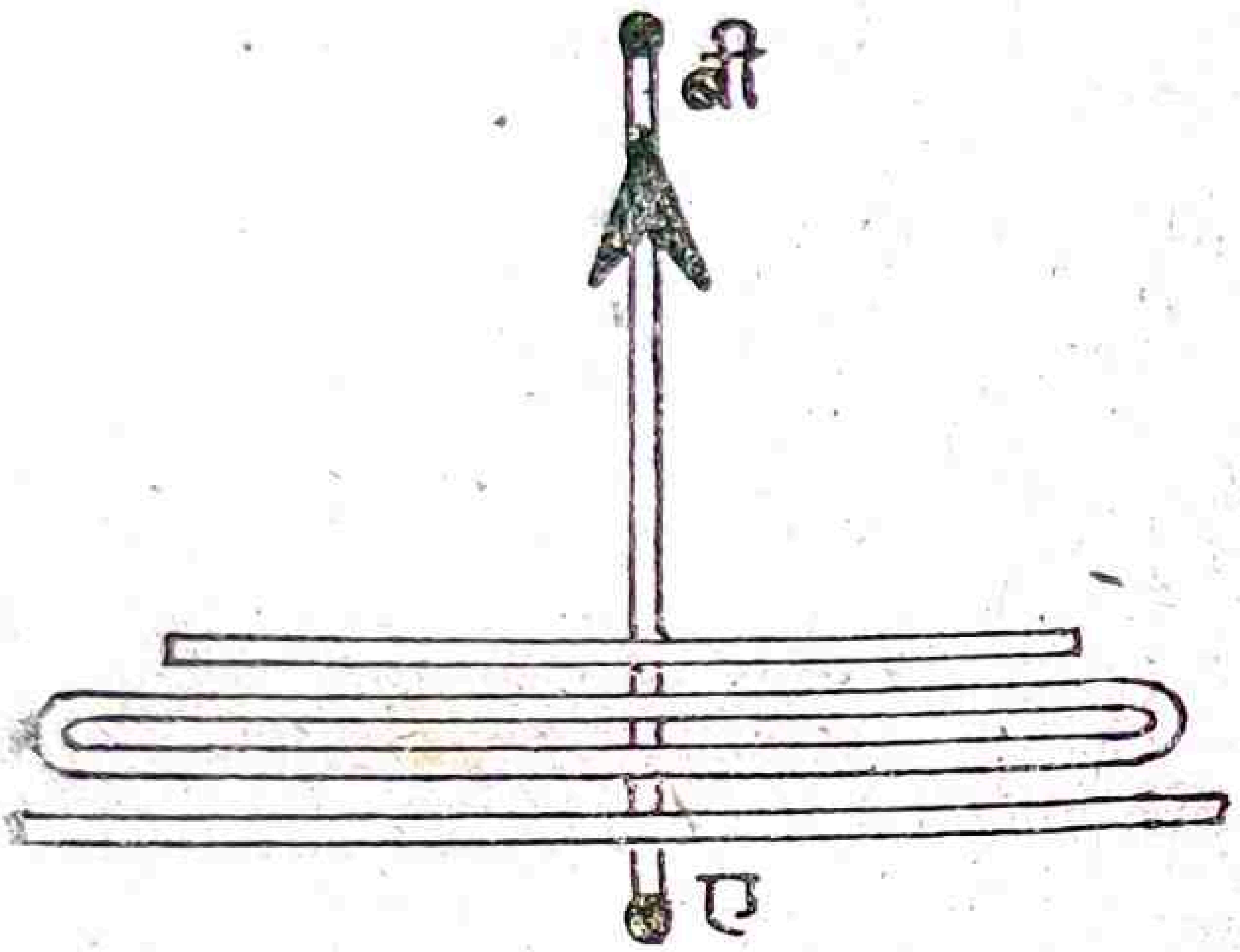

जिससे आपके बेटे ने लक्ष्मी को गोली मारी थी, मैं अपने साथ ले जा रहा हूं। ऐसा करके एक तरह से मैं आप पर उपकार ही कर रहा हूं, क्योंकि जहां वह मेरे लिए काम की चीज है, वहीं आपके बेटे के लिए फांसी का फंदा है। अतः आशा है कि आप इस बारे में विशेष फिक्रमंद नहीं होंगे।

आपका

—एक अज्ञात मददगार।

पत्र पढ़ने के बाद कैलाश ने अपना सिर ऊपर उठाया तो उसके चेहरे पर अथाह परेशानी झलक रही थी। फिर उसके मुंह से हैरानी भरा स्वर निकला—"पत्र लिखने वाला कोई सिरफिरा आदमी लगता है। वह एक तरफ तो मदद करने का दावा कर रहा है, और दूसरी तरफ पुलिस की धमकी दे रहा है। लेकिन सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि पूरे पत्र में उसने ऐसा कुछ नहीं लिखा है, जिससे यह पता चल सके कि अपनी मदद के बदले में वह क्या चाहता

है ?"

"अरे यार !" मातमी सूरत लिए देवेन्द्र लगभग रो देने वाले स्वर में बोल उठा—"यह आश्चर्य करने या उस साले सिरफिरे आदमी के स्वार्थ के बारे में जानने का वक्त नहीं है। हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि हम लाश कहां ढूंढें ? अगर सवेरा होने तक हम उसे नहीं ढूंढ पाए तो वह हरामजादा मुझे फांसी पर लटकवा देगा।"

"हां ! लेकिन इसके लिए हमें इस नक्शे को समझना होगा।" चेहरे पर चिन्ता की लकीरें लिए कैलाश की निगाहें एक बार फिर उस नक्शे पर जम गई।

काफी देर तक माथापच्ची करने के बाद वह बोला—'उफ ! कुछ समझ में नहीं आ रहा है, पता नहीं इन आड़ी-तिरछी रेखाओं से वह किस स्थान के बारे में बताना चाहता है ?"

इतना कहकर उसने देवेन्द्र के बौखलाये व बुरी तरह बदहवास चेहरे की तरफ देखते हुए पूछा—"क्या आप लोगों ने अच्छी तरह से पूरे बंगले को चैक कर लिया है ?"

"तुम अच्छी तरह से कह रहे हो, हमने तो कोना-कोना इस तरह देख डाला है कि अगर सुई गुमती तो वह भी मिल जाती।"

"तब तो इस नक्शे को समझे बिना लाश को ढूंढ निकालना लगभग नामुमकिन है।"

"अरे, तो इसे समझो न !" देवेन्द्र इस बार हिस्टीरियाई अंदाज में चीख पड़ा, लेकिन फिर तुरन्त ही स्वयं पर काबू पाता हुआ गिड़गिड़ा उठा—"कैलाश, मेरे यार, मेरे भाई अब तू ही मुझे बचा सकता है। प···प्लीज, इसे समझने की कोशिश करो, वरना तुम्हारा यार फांसी पर लटका दिया जाएगा।"

"मेरे रहते तुम्हें चिन्ता की कोई जरूरत नहीं है।" कैलाश ने बड़े ही आत्मविश्वास भरे स्वर में उसकी पीठ थपथपाई—"हौसला रखो मेरे दोस्त, जल्दी ही हम लाश ढूंढ निकालेंगे। मैं इस नक्शे को सरला और अंकल को दिखाता हूं। हो सकता है उनमें से कोई इसे समझ ले।"

कहने के साथ ही वह बिजली की-सी तेजी से दरवाजे

की तरफ लपका था।

आप भी (पाठकगण) इस विचित्र नक्शे को समझने की कोशिश करके अपना बुद्धि परीक्षण कर सकते हैं। अगर आप कहानी के पात्रों से पहले ही इस गुत्थी को सुलझा लेते हैं, तो आप निश्चित ही जीनियस हैं।

▭ ▭

दरवाजे के की-होल में चाबी लगाने का प्रयास करते हुए प्रफुल्ल का हाथ बार-बार बहके जा रहा था। ऐसा शायद उसके अत्यधिक नशे में होने की वजह से हो रहा था।

आखिर, कई बार के प्रयासों के बाद उसे सफलता मिल ही गई।

अंधों के समान टटोल-टटोलकर उसने स्विच बोर्ड तलाश किया।

रोशनी होते ही थोड़ी देर के लिए उसकी आंखें चुंधिया गईं, लेकिन वह रुका नहीं। लड़खड़ाता हुआ चलता चला गया। यह देखे बिना कि हॉल में पहले से ही कोई मौजूद था। एक रहस्यमय शख्स की नकाब से झांकती आंखें उसकी प्रत्येक हरकत को बड़े इत्मीनान से देख रही थीं।

तभी !

"मिस्टर प्रफुल्ल उर्फ ब्लैकमेलर, मुझसे नहीं मिलोगे?" प्रफुल्ल को बेडरूम की तरफ बढ़ता देखकर उस नकाबपोश की कर्कश आवाज गूंज उठी थी।

अत्यधिक नशे में होने के बावजूद प्रफुल्ल बुरी तरह चौंक उठा, मानो उसने साक्षात यमराज की आवाज सुन ली हो।

नशे और भय से कांपती टांगों के साथ वह पलटा।

अविश्वास से फटी जा रही आंखों से नकाबपोश की तरफ देखते हुए उसके फड़फड़ाते होंठों ने बड़ी मुश्किल से अस्फुट स्वर निकला—"क···कौन हो तुम?"

"मैं कौन हूं, यह जानने से पहले···।" रहस्यमयी स्वर में नकाबपोश ने बोलना शुरू किया—"मेरे ख्याल से तुम्हें आराम से बैठ जाना चाहिए, क्योंकि मैं तुम्हें लूटने नहीं, बल्कि कुछ देने आया हूं, लेकिन इतना ध्यान रखना, तुम्हारी

कोई गलत हरकत मुझे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होगी। इतना तो तुम बखूबी समझ सकते हो कि जो शख्स इस तरह बिना इजाजत तुम्हारे घर में घुसने का दुःसाहस कर सकता है, वह अपनी सुरक्षा के बारे में लापरवाह नहीं हो सकता।"

नकाबपोश के धमकी भरे शब्दों ने उसकी आत्मा तक को कंपा दिया और वह किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह धम्म से सामने पड़े सोफे पर बैठ गया।

"तो मिस्टर प्रफुल्ल, तुम मेरा परिचय जानने को उत्सुक हो, लेकिन यह तुम्हारी बेवकूफी है। समझदार आदमी को आम खाने से मतलब होना चाहिए, न कि पेड़ गिनने से। तुम्हारे लिए इतना ही जान लेना काफी है कि मैं तुम्हारी मदद के उद्देश्य से यहां आया हूं।"

"क···कैसी मदद?" कुछ हद तक अपने आकाश में मंडराते दिमाग पर काबू पाते हुए उसने पूछा।

"आर्थिक मदद।"

"आ···आर्थिक!" कहते हुए उसके स्थिर हो रहे दिमाग ने पुनः मंडराना शुरू कर दिया था।

"हां! आर्थिक।" नकाबपोश ने धाराप्रवाह बोलना जारी रखा--"यानी रुपया, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम एक मशहूर व बदनाम ब्लैकमेलर होने के बावजूद आजकल काफी तंगी में चल रहे हो। और इसका कारण है तुम्हारे उन तमाम कागजातों एवं तस्वीरों का चोरी हो जाना, जिनके बलबूते पर तुम्हें उनसे संबंधित लोगों से अच्छी-खासी आमदनी हो जाती थी। अब हालात यह हैं कि तुम्हारी वर्षों की मेहनत पर वह चोर तो मौज मना रहे हैं, और तुम खिसियाई बिल्ली की तरह सिर्फ खंभा नोचते फिर रहे हो। खैर, अब तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है। मैंने तुम्हारे लिए एक ऐसी मुर्गी तलाश की है, जो काफी दिनों तक सोने के अण्डे देती रहेगी।"

"म···मैं कुछ समझा नहीं?" उसका दिमाग पूरे वेग से चक्कर काटने लगा था।

"इसमें मैंने न समझ में आने वाली तो कोई बात नहीं कही। सीधी-सी बात है, तुम्हें इस समय धन की सख्त आवश्यकता है और उसे प्राप्त करने के लिए एक मोटी

आसामी मेरी नजरों में है।"

"यानी उसका नाम बताने के एवज में तुम उससे प्राप्त होने वाले धन में हिस्सा चाहोगे?"

सुनकर वह नकाबपोश बड़े जोरों से ठठाकर हंसा। फिर अपनी हंसी पर काबू पाते हुए बोला, "नहीं मिस्टर प्रफुल्ल, तुम्हारा अंदाजा बिल्कुल गलत है। मेरी ऐसी कोई अभिलाषा नहीं है। उलटा, मैं तुम्हें उस आसामी का नाम ही नहीं बल्कि उसका वह रहस्य भी बताऊंगा, जिसके बदले में तुम उससे मनचाही दौलत प्राप्त कर सकते हो। अब शायद तुम्हारे भेजे में यह बात अच्छी तरह घुस चुकी होगी कि मेरी दी हुई जानकारी से मिलने वाला धन बिना किसी मशक्कत या परेशानी उठाये तुम्हें बड़े आराम से प्राप्त हो सकता है।"

"ल...लेकिन बिना किसी स्वार्थ के तो अपना सगा भी किसी की मदद नहीं करता। नहीं-नहीं।" कहते हुए अचानक इंकार में सिर हिलाता हुआ प्रफुल्ल दृढ़ स्वर में कह उठा—"मैं तुम्हारी चाल में नहीं फंसूंगा। दौलत का लालच दिखाकर तुम जरूर मुझे किसी झमेले में फंसाना चाहते हो।"

"मैं तुम्हें किसी चाल में फंसाना चाहता हूं, यह सोचकर तुम अपना नुकसान ही कर रहे हो। पहली बात तो तुम्हें यह सोचना चाहिए कि मैं ऐसा क्यों करूंगा? जबकि हमारी-तुम्हारी दुश्मनी तो क्या जान-पहचान तक नहीं है। अगर थोड़ी देर के लिए यह सब मान भी लिया जाए तब सवाल यह उठता है कि तुम्हें किसी चक्कर में फंसाने के लिए मैं वही तरीका क्यों चुनूंगा? जिसे करने के तुम आदी हो चुके हो। किसी को ब्लैकमेल करना तुम्हारे लिए चुटकी बजाने जितना आसान काम है। फिर तुम मेरी चाल में क्योंकर फंसोगे। हां, तुम्हारी इस बात को मैं बेहिचक मानने के लिए तैयार हूं कि ऐसा मैं अपने किसी स्वार्थवश ही कर रहा हूं। मेरा उद्देश्य तुम्हारे हाथों ब्लैकमेल होने वाले शख्स को केवल आर्थिक नुकसान पहुंचाना ही है। इसके बावजूद अगर तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं तो फिर मजबूरन मुझे तुम्हारे किसी दूसरे ब्लैकमेलर साथी की शरण में जाना

पड़ेगा।"

अब प्रफुल्ल उससे काफी प्रभावित दिखाई देने लगा था। लेकिन फिर भी वह झिझकते हुए बोला—"इसकी क्या गारंटी है कि जो रहस्य तुम बताओगे, उसे सुनकर वह व्यक्ति पुलिस के पास नहीं जाएगा।"

"वह रहस्य कुछ ऐसा ही है।" कहते हुए नकाबपोश का स्वर रहस्यमयी हो उठा—"कि पुलिस के पास जाने की कौन कहे, उसके फरिश्ते उसका नाम जुबान पर भी लाने तक का दुःसाहस नहीं कर सकेंगे।"

"तब ठीक है।" उसका स्वर प्रसन्नता में डूबा हुआ था—"लेकिन अब भी मुझे विश्वास नहीं आ रहा है कि उससे मिलने वाली रकम में से तुम हिस्सा नहीं लोगे।"

"उसके लिए तुम बेफिक्र रहो। हिस्सा तो क्या मैं एक फूटी कौड़ी भी नहीं लूंगा।"

"अब यार, जल्दी से मुझे उस आसामी का नाम और वह रहस्य बता दो, जिसके बदले मुझे इस तंगी से छुटकारा मिलने वाला है।"

"मिस्टर प्रफुल्ल!" नकाबपोश क्रोध से गुर्राया—"तुम्हारी मदद कर रहा हूं, इसका मतलब यह नहीं कि मैं तुम्हारा लंगोटिया यार हो गया हूं। आइंदा मुझसे ऐसे बेहूदे ढंग से बात करने की कोशिश भी की तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।"

"ओह सॉरी!" शर्मिन्दगी जताते हुए प्रफुल्ल चापलूसी भरे स्वर में बोल उठा—"आप तो खामखाह नाराज हो रहे हैं। अगर दोस्ताना तरीका आपको पसन्द नहीं तो दुबारा ऐसी गलती नहीं करूंगा।"

"हूं! ठीक है, ठीक है। अब पहले उस आसामी का नाम-पता नोट कर लो। उसका नाम भूपेन्द्रसिंह राठौर है। नेवीन्सी रोड, सी ब्लाक में उसका बंगला है।"

"आप आगे बढ़िए। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। मैं जिस पेशे से जुड़ा हूं, उसमें शहर के धनवान व्यक्तियों की जानकारी रखना आवश्यक है।"

फिर, नकाबपोश लक्ष्मी के कत्ल से सम्बन्धित विवरण बताने लगा। जिसे सुनकर प्रफुल्ल की आंखों की चमक और

लाईट की तरह बढ़ती ही जा रही थी।

और फिर···थोड़ी देर बाद···।

"तो तुम सब कुछ समझ गए न?"

"हां, लेकिन वह रिवॉल्वर कहां है?"

"वह रिवॉल्वर मैंने देवेन्द्र के बेडरूम में मौजूद अलमारी के पेंदे में टेप की सहायता से अच्छी तरह चिपका दिया है। और हां, यदि तुमने उस पर हाथ लगाने की कोशिश की तो हत्या का इल्जाम तुम पर आ सकता है। इसलिए अपना काम सिर्फ ब्लैकमेलिंग तक ही सीमित रखना···।"

इतना कहते ही नकाबपोश हवा के तेज झोंके की तरह, दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

□ □

पत्र में बने नक्शे को बड़े ध्यान से देखती हुई, सरला अचानक खुशी से उछल पड़ी और उसके मुंह से कंपकंपाता स्वर निकला—"अरे! ये तो···ये तो···!"

"क···क्या है ये?" बुरी तरह सस्पेंस में फंसा देवेन्द्र चीखा—"कुछ बताएगी भी या सिर्फ ये तो···ये तो ही किए जाएगी।"

किन्तु उसके चीखने का सरला पर कोई असर न हुआ। वह तो अपनी ही धुन में बोली—"ये तो टेलीविजन के एंटीना का संकेत चिह्न है। लेकिन समझ में नहीं आ रहा है कि इतनी बड़ी लाश एंटीना में कैसे छुपाई जा सकती है?"

"जरा देखूं तो।" कहते हुए बगल में खड़े कैलाश ने बड़ी बेसब्री से उसके हाथ से वह पत्र छीन लिया था।

पत्र में बने नक्शे को उलटा करके देखते ही वह भी चीख पड़ा—"कमाल है। इतनी देर से मेरे दिमाग में यह बात क्यों नहीं घुसी, कि इसे उलटा करके भी देखना चाहिए अब समझा कि तुम लोगों को लाश क्यों नहीं मिली थी?"

"क्यों नहीं मिली थी?" आश्चर्य से मंडराते दिमाग के साथ भूपेन्द्रसिंह ने पूछा।

"क्योंकि, आप लोगों ने सिर्फ उन्हीं कमरों को चैक किया था, जो खुले हुए थे।"

"हां, हां !" देवेन्द्र बोला—"लेकिन उस इंस्पेक्टर ने तो ताले लगे कमरों को भी खुलवाकर देखा था। पर ये तो बताओ, जब इस नक्शे में टी० वी० एंटीना दिखाया गया है तो फिर कमरे का चक्कर बीच में कहां से आ गया ?"

सरला और भूपेन्द्रसिंह भी आंखों में असमंजस के भाव लिए जैसे यही पूछना चाह रहे थे।

धीमी मुस्कराहट के साथ कैलाश के होंठ हिले—"इस नक्शे को समझने के लिए हमारे सामने ये समस्या थी कि तीन आड़ी और एक तीरयुक्त रेखा का अर्थ क्या है ? अब जबकि सरला ने उसे सुलझा दिया है तो बाकी ए और बी बिन्दुओं का मतलब समझना बहुत ही आसान हो गया है। ए बिन्दु ठीक उसके शीर्ष पर स्थित है और तीर का निशान बी बिन्दु की तरफ संकेत कर रहा है। मतलब साफ है, जिस स्थान पर एंटीना लगा हुआ है, उस जगह के नीचे वह लाश छुपाई हुई है। और जहां तक मैं समझता हूं, एंटीना ठीक उस कमरे के ऊपर है, जहां बेकार का सामान भरा हुआ है। उस कमरे में ही कहीं-न-कहीं लाश छुपाई गई होगी।"

"करेक्ट।" भूपेन्द्रसिंह उत्साहित स्वर में बोल उठे—"जरूर ऐसा ही होगा।"

देवेन्द्र उस कमरे की तरफ दौड़ पड़ा। उसे वापस आने में दो मिनट से भी कम समय लगा।

उसके चेहरे पर विराजी वह घबराहट अभी भी दिखाई दे रही थी, जो लक्ष्मी को गोली मारने के बाद से उसके चेहरे पर स्थाई-सा पड़ाव डाल चुकी थी।

फिर वह अटकते हुए-से स्वर में बोला—"व...वहीं है। प...पुराने कारपेट में लिपटी रखी है।"

लाश के नाम से सरला बदहवास-सी दिखाई देने लगी, किन्तु बदहवासी के भाव उसने चेहरे पर उजागर न होने दिए और होंठों को दांतों से भींचकर खुद को सामान्य रखने का प्रयास करने लगी।

जबकि काफी देर तक विचार-मग्न रहने के बाद कैलाश एकाएक प्रसन्नता-भरे स्वर में बोल उठा—"गुड ! मिल गया।"

"क...क्या मिल गया ?" कुछ भी न समझ पाते हुए देवेन्द्र ने पूछा। उसके चेहरे पर आशा की चमक दिखाई देने लगी थी।

"लाश ठिकाने लगाने व तुम्हें बचाने का तरीका।" कैलाश ने वकीलों के-से अंदाज में बोलना जारी रखा—"लेकिन इसके लिए जरूरी है कि इसे यहां से हटाकर किसी ऐसे स्थान पर प्लांट कर दी जाए, जहां वह आसानी से नजर आ सके।"

"हुंह ! इससे क्या फायदा होगा ?" सरला मुंह बिचकाते हुए बोली—"यही न कि लाश बरामद होते ही पुलिस तुरन्त ही भइया को गिरफ्तार करने के लिए दौड़ पड़ेगी। हम पर शक तो उन्हें पहले ही हो चुका है।"

कैलाश के होंठों पर ऐसी मुस्कराहट उभरी, जैसी बुजुर्गों के चेहरे पर तब उभरती है जब वे किसी नासमझ बच्चे की नादानी भरी बातें सुनते हैं—"शक की वजह से ही तो लाश को इस तरह गायब करने को नहीं कह रहा हूं कि वह बरामद ही न हो। क्योंकि उस स्थिति में लक्ष्मी की गुम-शुदगी की रिपोर्ट लिखाने के बाद पुलिस को उस गुमनाम टेलीफोन के कारण यह पक्का विश्वास हो जाएगा कि लक्ष्मी को कत्ल करके उसकी लाश फेंक दी गई है। हम पर शक होते ही उस हत्या का रहस्य जानने के लिए वे कोई कोशिश बाकी नहीं रखेंगे। हो सकता है, तब वह सख्ती पर भी उतर आयें। तब, कोई-न-कोई तो जरूर टूट ही जाएगा, इसलिए मैंने एक योजना बनाई है उससे शक की कोई गुंजाइश ही नहीं रहेगी। लाश फेंकने से पह वहां ऐसी सिचुएशन क्रियेट करनी होगी, जिससे जांच करने वाले को वह लूट और हत्या का मामला लगे।"

"ओह गुड !" भूपेन्द्रसिंह का स्वर प्रसन्नता की वजह से कांप उठा था—"लेकिन वहां करना क्या होगा ?"

बारी-बारी से सबके चेहरों का अध्ययन करने के बाद कैलाश बोला—"काम बहुत ही आसान है। लेकिन अगर जल्दबाजी और हड़बड़ाहट से काम लिया गया, तो सब को मेरी पूरी स्कीम चौपट हो जाएगी।"

"मेरे यार, मेरे भाई।" देवेन्द्र खीझ व बेबसी-भरे स्वर

में बोल उठा—"इस तरह भूमिका बांधने में ही समय गंवा दोगे तो सुबह हो जायेगी। तब तुम्हारी सारी स्कीम धरी-की-धरी रह जाएगी और म'''मैं फांसी के फंदे पर'''।"

"देखो देवेन्द्र, तुम अभी से उतावली कर रहे हो। बाद में यदि तुम्हारी वजह से कोई गलती होती है, तो उसका दोष मुझे मत देना। क्या तुम्हें मुझ पर भ रोसा नहीं ? क्या मैं यह चाहूंगा कि तुम्हें फांसी हो जाए ?"

"नहीं यार, नहीं। प'''प्लीज, मैं तो समय के बारे में ध्यान दिला रहा था।"

"उसके बारे में, मैं लापरवाह नहीं हूं। कार में लाश ठिकाने लगाने में मुश्किल से पन्द्रह मिनट लगेंगे और अभी हमारे पास डेढ़ घंटा है। खैर, आप लोग जरा ध्यान से सुनिए, ताकि जिसके जिम्मे मैं जो काम सौंपू वह उसे ठीक ढंग से अंजाम दे सके।" कैलाश ने बोलना जारी किया—"सबसे पहले तो लाश के सारे जेवर उतारने हैं। यह काम कोई भी कर सकता है, तू तू, मैं'''मैं नहीं होनी चाहिए, इसलिए मैं जिसका नाम लूं वह बिना कोई आपत्ति उठाये मान ले। वरना बेवजह ही समय नष्ट होगा। मेरे ख्याल से इस काम को देवेन्द्र अच्छी तरह से कर सकता है। तुम्हें यहां एक काम और करना होगा। देवेन्द्र जेवरों को तुम इस बेदर्दी से खींच-खींचकर निकालोगे, ताकि लाश पर खरोंचों के निशान छूट जायें। इसके अलावा नेलकटर या अन्य किसी नुकीली चीज से चोट और कुछ ऐसी खरोचें बना देना, जिससे लगे कि वे हत्यारे के नाखूनों के निशान हैं, किन्तु भूलकर भी अपने नाखूनों का प्रयोग मत कर बैठना। जेवरों को किसी सुरक्षित स्थान पर छुपाने के बाद लाश को उठाकर कार में रखना है। यह काम अंकल और देवेन्द्र दोनों मिलकर करेंगे। और मेरा काम यह देखना होगा कि लाश से खून टपककर कहीं अपने निशान तो नहीं छोड़ रहा है। अगर ऐसा होता है तो अपने साथ बाल्टी में पानी और कपड़ा लेकर चल रही सरला से मैं उसे साफ करवाता रहूंगा। मैं एक बार फिर कह रहा हूं, सब काम बिलकुल मेरे बताए मुताबिक सतर्कतापूर्वक होना चाहिए।"

"लेकिन कैलाश बेटे।" भूपेन्द्रसिंह बोले—"इतना सब

करने के बावजूद भी तो यहां बहुत से ऐसे सबूत छूट जाते हैं, जो हमें फंसा सकते हैं।"

"मुझे सब ध्यान है। प्लीज, आप बीच में मत बोलिए। लाश को कार की डिक्की में रखने के बाद ड्राइविंग की जिम्मेदारी देवेन्द्र संभालेगा और पिछली सीट पर बैठेगी सरला...।"

"न...नहीं। म...मैं नहीं जाऊंगी।" इस बार लाख चाहने के बाद भी सरला खुद को भयभीत होने से नहीं रोक पाई। लाश के साथ कार में सवार होने की कल्पना मात्र से उसका रोम-रोम थरथरा उठा था।

"तुम्हें कुछ करना नहीं है सरला!" कैलाश समझाने वाले अंदाज में बोला—"तुम्हें देवेन्द्र के साथ भेजने का अभिप्राय सिर्फ यह है कि, इस वक्त इसे अकेले देखकर कोई शक भी कर सकता है। तुम्हारी मौजूदगी से यह समस्या तो हल होगी ही, साथ ही इसका साहस भी बना रहेगा। और यदि तुम्हारी जगह मैं गया तो यहां जो काम करने हैं, उन्हें उतने अच्छे ढंग से तुम नहीं कर पाओगी, जितने अच्छे ढंग से मैं कर सकूंगा।"

"अब यहां कौन-सा काम बाकी रह जाएगा?" देवेन्द्र ने पूछा।

उसकी तरफ उपहासपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कैलाश ने कहा—"यह क्यों भूलते हो कि कत्ल के संदेह में पुलिस एक बार यहां आ चुकी है। अतः जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि मिलने वाली लाश तुम्हारी पत्नी की है तो वे तुरन्त यहां आ धमकेंगे। और यह कोई जरूरी नहीं कि दुबारा आने वाला इंस्पेक्टर वही हो, जिसकी अदूरदर्शिता से तुम बचने में कामयाब हो गए थे। शायद तुमने इस क्षेत्र के सर्कल इंस्पेक्टर वामनराव का नाम नहीं सुना है। वह इतना कांइयां पुलिसिया है कि शातिर-से-शातिर मुजरिम, उसका नाम सुनते ही पेंट तक गीली कर देता है। अगर उस इंस्पेक्टर की जगह वह खुद आया होता तो न वह अज्ञात मददगार ही तुम्हारी कोई मदद कर सकता था, और न मैं ही। और अब तक तो तुम हथकड़ियां पहने हवालात में नजर आ रहे होते। इसलिए सामने वाला कहां तक सोच सकता है, उस हिसाब

से रणनीति तैयार की जाएगी। तभी तुम्हें बचाया जा सकता है। अतः पूरे बंगले में घूम-घूमकर मुझे प्रत्येक सबूत को खोजकर नष्ट करना है, जो यहां हत्या होने की तरफ संकेत कर रहे हैं। इस काम में अंकल अच्छे मददगार साबित हो सकते हैं, इसलिए लाश ठिकाने लगाने का काम तुम दोनों को ही अंजाम देना होगा।"

"ल···लेकिन···म···मैं···!"

लेकिन इससे पहले कि हकबकाहट से परिपूर्ण सरला का वाक्य पूरा होता, कैलाश गंभीर होकर बोल उठा—"इस तरह वक्त बरबाद करोगी तो तुम्हारे भाई को मैं तो क्या भगवान भी नहीं बचा पायेंगे। अगर उसे बचाना चाहती हो तो उसके साथ जाना ही होगा। फिर तुम्हें कुछ करना थोड़े ही है, सिर्फ कार में बैठे रहना है। उचित स्थान और मौका देखकर देवेन्द्र लाश को डिक्की से बाहर निकालेगा और कार खड़ी की हुई जगह से काफी दूरी पर फेंक आएगा। लेकिन देवेन्द्र, यहां तुम्हें दो बातों पर विशेष ध्यान देना है। एक तो कार जहां खड़ी करोगे वह जमीन या तो पथरीली हो या फिर इतनी कठोर, जिससे उस पर टायरों के निशान न छूटें। दूसरा, लाश फेंकने की जगह ठीक उसके विपरीत इतनी भुरभुरी हो कि आसानी से पैरों के निशान बन सकें। भुरभुरी जमीन शुरू होते ही तुम लाश को उसके पैरों पर खड़ा कर दोगे और कुछ दूर तक उसे इस तरह चलाने की कोशिश करोगे, जिससे उसके पैरों के निशान वहां बन जायें। मानता हूं, यह काम थोड़ा मुश्किल है, लेकिन असंभव नहीं। ऐसा करते समय घिसटते हुए तुम्हें इस तरह चलना है कि तुम्हारे पैरों की छाप स्पष्ट न होने पाए। लाश फेंक-कर आते वक्त भी उसी तरह लौटना है। बस, फिर समझो फतह। तब तक यहां का काम मैं निपटा चुका होऊंगा। फिर वामनराव तो क्या, उसके पुरखे भी तुम्हें हत्यारा साबित नहीं कर सकेंगे।"

कैलाश के चुप होने पर जहां देवेन्द्र और भूपेन्द्रसिंह की आंखों में आशा की किरणें कौंध उठी थीं, वहीं सरला के चेहरे पर भय और हिचकिचाहट के भाव कुंडली मारे बैठे थे।

फिर, सभी लोग अपने-अपने काम में जुट गए।

▭ ▭

"भ‥ भइया ! जरा स्पीड कम कर दो न।"

"चुपचाप बैठी रह।" विंड स्क्रीन पर नजरें टिकाए देवेन्द्र ने भड़ककर कहा, "देख नहीं रही, थोड़ी देर में सवेरा होने वाला है।"

"ल‥ लेकिन‥ !"

कहते-कहते अचानक वह बुरी तरह चौंक उठी। थोड़ी दूरी पर सड़क के किनारे पुलिस की एक गश्ती जीप खड़ी थी। वहीं तीन सिपाही आपस में बातें करते दिखाई दे रहे थे।

देवेन्द्र की नजरें भी उन पर पड़ चुकी थीं।

इसी घबराहट में उसके पैर का दबाव एक्सीलेटर पर और अधिक बढ़ गया। फलस्वरूप कार की रफ्तार अस्सी के करीब पहुंच गई और वह गश्ती जीप के बगल से सर्र की आवाज करती हुई तूफान के झोंके की तरह गुजर गई।

खतरे को इस तरह टलते देख सरला के चेहरे पर कुछ हद तक आश्वस्तता झलकने लगी थी, किन्तु कार की तूफानी रफ्तार व डिक्की में रखी लक्ष्मी की लाश का अहसास अब भी उसके छक्के छुड़ाए हुए था।

"उफ् ! लगता है, पुलिस को हम पर शक हो गया है। उनकी जीप हमारा पीछा कर रही है।" देवेन्द्र ने घबराहट-भरे स्वर में कहा।

"क‥ क्या ?" उसकी बात सुनकर सरला बुरी तरह भयभीत हो उठी। और उसके मुंह से इतनी जोरदार चीख निकली कि देवेन्द्र का दिल ही नहीं, बल्कि स्टेयरिंग पर जमा हाथ भी कांप उठा।

परिणामस्वरूप, कार जोर से लहराई। लेकिन इससे पहले कि वह सड़क से उतरकर पलट जाती, उसने अपनी समस्त शारीरिक व मानसिक शक्तियों को बटोर कर उस पर काबू पा लिया।

अब तक पुलिस की जीप काफी नजदीक आ चुकी थी।

दिल को मजबूत करके उसने कार की रफ्तार और तेज

कर दी।

पल-पल उसे ऐसा लग रहा था कि स्टेयरिंग से उसका कंट्रोल हट जायेगा। लेकिन न जाने यह उसकी ड्राईविंग की दक्षता थी या फांसी से बचने की प्रेरणा, कि कार अब भी सूनी और सपाट सड़क पर द्रुत वेग से सीधी दौड़ी चली जा रही थी। पुलिस जीप का ड्राइवर भी ड्राईविंग के मामले में शायद महारथी था। इतनी अधिक स्पीड के बावजूद वह कार के बिल्कुल करीब आ पहुंचा था। सरला की बदहवासी देखने योग्य थी। वह भाड़ जैसा मुंह खोले फटी आंखों से कभी एकदम नजदीक पहुंच चुकी पुलिस जीप को देखती, तो कभी देवेन्द्र को, जो जी-जान से स्टेयरिंग से जूझ रहा था।

"ऐ मिस्टर! कार रोको!"

देवेन्द्र के हाथ-पांव फूल गए। उसने कनखियों से देखा, जीप उसके एकदम समानान्तर चल रही थी।

अंततः कोई रास्ता न देख स्पीड कम करते हुए उसने अपनी आखिरी कोशिश में चिल्लाकर कहा—"कहिए, क्या बात है इंस्पेक्टर साहब ? हमें जरा जल्दी है।"

"पहले कार रोको।"

मरता क्या न करता, उसे कार रोक देनी पड़ी।

अपनी घबराहट पर काबू न रख पाने की वजह से सरला आंखें बन्द करके सीट पर इस तरह लुढ़क गई थी, ताकि देखने वाले को लगे कि वह सो गई है।

इंस्पेक्टर तेजी से जीप से उतरकर देवेन्द्र के करीब आता हुआ चिल्लाया—"हमें देखने के बावजूद भी तुमने कार की रफ्तार क्यों बढ़ाई ?"

जान पर बन आने पर डरपोक से डरपोक इंसान, अपने आपको बचाने के लिए शेर तक से भिड़ जाता है। चेहरे पर उभरने वाली घबराहट को रोकने में देवेन्द्र को दांतों तले पसीना आ गया था, फिर भी वह गुस्से का प्रदर्शन करते हुए बोला—"मुझे क्या पता था कि आप मुझे रुकने के लिए कह रहे थे।"

"लेकिन हमें देखकर तुमने स्पीड क्यों बढ़ाई ?"

"बताया तो, मुझे फौरन कहीं पहुंचना है।"

"कहां ?" शंका से उसकी आंखों में घूरते हुए इंस्पेक्टर ने पूछा।

देवेन्द्र क्षण-भर के लिए तो घबरा उठा कि क्या जवाब दे, लेकिन अगले ही क्षण अपनी घबराहट को झल्लाहट में बदलता हुआ कह उठा—"देखिए इंस्पेक्टर साहब हमारे मामा जी की तबीयत बहुत खराब है, आप बेवजह हमें रोके हुए हैं।"

"तो आप मामा जी की खातिर इतनी स्पीड से गाड़ी चला रहे थे, कि खुद की जान की भी परवाह नहीं थी।"

"जी…जी हां।"

"नहीं मिस्टर, मुझे लगता है आप झूठ बोल रहे हैं। जरा कार की डिक्की खोलकर दिखाइए।"

डिक्की का नाम सुनते ही देवेन्द्र के दिल पर मानो हथौड़ा-सा पड़ा हो।

और नींद की एक्टिंग कर रही सरला तो जोर से चीख मारकर उछल ही पड़ी थी।

"ये कौन है ?" इंस्पेक्टर सरला की तरफ आकर्षित हुआ। लेकिन अगले ही पल चौंककर बोल उठा—"अरे, सरला तुम !"

"म…म…मैं…!" कहते हुए सरला की खौफजदा आंखें इंस्पेक्टर की तरफ उठीं, तो वह उसे तुरन्त ही पहचान गई। वह योगन्ना था, जो उसका क्लास-फैलो रह चुका था।

फिर खिसियाई हंसी के साथ वह बोली—"योगन्ना तुम ? पुलिस की वर्दी में मैं तुम्हें पहचान ही नहीं सकी थी। इसी शहर में होने के बावजूद तुम कभी मिलने तक नहीं आए ?"

"सॉरी सरला ! यहां ट्रांसफर होने के बाद इतना व्यस्त हो गया कि फुर्सत ही नहीं मिली। खैर, कोई बात नहीं। फिर कभी आ जाऊंगा। अरे हां, मैं तो बेकार ही तुम लोगों का वक्त बरबाद कर रहा हूं। तुम्हें अपने मामा के पास जल्दी पहुंचना है ना।"

"म…मामा…हां…हां…।" घबराहट में वह मुस्कराई तो उसकी हंसी काफी हास्यस्पद लगी। जिस वक्त देवेन्द्र ने

अपने मामा को काल्पनिक बीमारी की बात बताई थी, तब अत्यधिक घबराई हुई होने की वजह से वह कुछ भी सुन ही नहीं पाई थी।

"ठीक है, चलता हूं। मुझे भी अपनी ड्यूटी सम्भालनी है।" कहते हुए योगन्ना तेजी से अपनी जीप की तरफ मुड़ गया।

कार स्टार्ट करते समय देवेन्द्र के चेहरे पर ठीक वैसे ही भाव दृष्टिगोचर हो रहे थे, जैसे मृत्युदण्ड प्राप्त किसी व्यक्ति को जीवनदान मिलने के बाद उसके चेहरे पर दिखाई देते हैं।

□ □

"व···वामनराव साहब आ रहे हैं।"

फुसफुसाहट भरे स्वर में कहते हुए लाश के नजदीक खड़े चारों सिपाही काफी मुस्तैद नजर आने लगे थे।

उनकी देखा-देखी इंस्पेक्टर गाडगिल भी चौकन्ना हो उठा और उसकी नजरें उस जीप से जा टकराईं, जो अभी-अभी वहां आकर रुकी थी।

फिर जीप का अगला दरवाजा खुला।

सबसे पहले खाकी कपड़े व चमचमाते लाल रंग के जूतों में छिपी ऐसी दो टांगें नजर आईं, जो काफी लम्बी होने के साथ-साथ शतुरमुर्ग की टांगों की तरह बेहद पतली थीं।

आमतौर पर सर्कल इंस्पेक्टर यानी क्षेत्राधिकारी का नाम सुनते ही जेहन पर एक लम्बे-चौड़े और मोटे-से शख्स की छवि उभर आती है, जिसके लाल-लाल चेहरे पर हर समय अभिमान की झलक मौजूद रहती हो।

जबकि इसके ठीक विपरीत वामनराव इसका अपवाद था। तांगे में जुतने वाले बूढ़े घोड़े की तरह उसके दुर्बल जिस्म पर मांस तो जैसे था ही नहीं।

किन्तु इसके बावजूद उसकी शख्सियत में दो ऐसी बातें सम्मिलित थीं, जो सामने वाले को काफी प्रभावित करती थीं।

पहली, सात फुट के करीब उसका लम्बा कद, जो लोहे की रॉड की तरह हमेशा तना रहता था।

दूसरी, उ की अनुभवी आंखें, जो बिल्ली की आंखों से एकदम मेल खाती हुईं, हरी व चमकदार थीं।

जीप से निकलकर, अपनी शतुरमुर्ग जैसी टांगों से चलता हुआ वह लाश के निकट कब जा पहुंचा, यह वहां खड़े चारों सिपाही व गाडगिल जान तक ना सके थे।

"फिंगर प्रिंट और फोटोग्राफर विभाग के लोग क्या अपना काम निपटा चुके हैं ?"

तभी उसकी सांय-सांय-भरी आवाज ने उनकी तन्द्रा भंग की।

"य···यस सर !" गाडगिल ने हकबकाहट-भरे स्वर में जवाब दिया।

"हूं !" अपनी चमकदार बिल्लौरी निगाहें लाश पर स्थिर रखते हुए उसका एक हाथ अपनी जेब में रेंगा। और शीघ्र ही पनामा की सिगरेट होंठों से लगाकर सुलगाने व मुंह से ढेर सारा धुंआ छोड़ने के साथ ही उसकी वही चिर-परिचित आवाज पुनः उभरी—"क्या यह लाश तुम्हें मुंह के बल पड़ी मिली थी ?"

"य···यस सर !" गाडगिल ने चौंकते हुए जवाब दिया—"लाश का फोटो चेहरे की तरफ से लेने के लिए इसे सीधा किया गया था। लेकिन सर, आपने कैसे जाना कि···?"

"मिस्टर गाडगिल ! मैं तुम्हें कई मर्तबा कह चुका हूं कि तुम अपने दिमाग की ओवर हालिंग करवा लो, ताकि छोटी-छोटी बातों का कारण जानने के लिए तुम्हें यूं शर्मिन्दा ना होना पड़े। साफ-साफ दिखाई दे रहा है कि पीठ के बल पड़ी होने के बावजूद लाश के चेहरे व सामने के अंगों पर मिट्टी के कण लगे हैं। और ये कण···।" कहते समय वामन-राव की सरसराती आवाज में उत्साह का समावेश हो गया—"हमें चीख-चीखकर बता रहे हैं कि इसकी हत्या कहीं और हुई थी।"

इस रहस्योद्घाटन पर न सिर्फ गाडगिल, बल्कि वहां मौजूद सभी सिपाही बुरी तरह चौंक पड़े।

आश्चर्य से आंखें फाड़े उसकी तरफ वे ऐसे देख रहे थे, मानो किसी अन्य ग्रह के प्राणी को देख रहे हों।

"ल···लेकिन कैसे सर ?" हिम्मत बटोरकर गाडगिल

ने पूछा—"किसी के चेहरे पर मिट्टी के कण तो उस स्थिति में भी लग सकते हैं, जबकि हत्यारे से हाथापाई की स्थिति में वह मुंह के बल जा गिरा हो।"

"अपनी मूर्खतापूर्ण संभावनाओं को तुम अपने पास ही रखो। तुम जैसे लोगों को ही आंखों वाले अंधे की पदवी दी जाती है। जरा अपने दिमाग पर जोर देकर सोचो, मिट्टी के कण अगर इसके मरने से पहले लगे होते, तो क्या वह चेहरे से निकलने वाले खून के साथ बह नहीं गए होते ? जबकि इसके चेहरे पर लगे सूखे खून पर मिट्टी लगी स्पष्ट दिखाई दे रही है। और फिर इसके चेहरे से निकले खून का यहां नामोनिशान तक नहीं है। इसी बात से तुम्हें यह समझ जाना था कि इसका कत्ल कहीं दूसरी जगह हुआ है। इसके अलावा, हमें गुमराह करने के लिए हत्यारे ने जो बचकाना चाल चली है, उसे देखकर तो ठहाके लगाने को जी चाहता है।"

"च···चाल चली है ?"

"हां, बचकानी चाल।" पिचके गालों वाले होंठों पर मंद-मंद मुस्कराहट लिए वामनराव ने बोलना जारी रखा—"तुम इन पैरों की छाप देख रहे हो, जो कुछ दूर से आरंभ होकर यहां समाप्त हो गए हैं। ये इस औरत के नंगे पैरों की छाप हैं, लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि जब यह यहां आई थी तो एक लाश के रूप में थी।"

"त···तो क्या लाशें चल भी सकती हैं ?" आश्चर्य के बवंडर में फंसा गाडगिल आखिर पूछ ही बैठा था।

"औरों के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता। हां, लेकिन यह लाश तो शर्तिया चली है, भले ही हत्यारे की जबरदस्ती से चली हो। उसने लाश को उसके पैरों पर खड़ा करके कुछ दूर तक चलाने की कोशिश की थी। वैसे यह मानना पड़ेगा कि अपनी कोशिश में वह काफी हद तक कामयाब रहा, क्योंकि अब तक तुम लोग भी वही सब सोच रहे थे, जैसाकि वह हत्यारा चाहता था।"

फिर थोड़ा रुककर पनामा की एक दूसरी सिगरेट सुलगाने के बाद वह पुनः बोला—"जमीन पर लाश के पैरों की छाप इतनी अस्पष्ट है कि साफ जाहिर हो रहा है कि उसका

, एक [illegible] वजन भी पैरों पर नहीं पड़ा होगा। जबकि उसके बगल में मौजूद जूतों की छाप इसके ठीक विपरीत ऐसी दिखाई दे रही है, जैसे कि वह व्यक्ति कोई वजनी सामान उठाए हुए था। वैसे उसने भरसक कोशिश की थी, कि उसके पैरों की छाप स्पष्ट न हो सके, फिर भी जल्दबाजी में वह कहीं-कहीं अपने पैरों को घसीटना भूल गया। हां, एक बात और! यह हत्या किसी मकान के ऐसे कमरे में हुई, जिसके फर्श पर नीले रंग का कालीन मौजूद रहा होगा।"

"क···कैसे सर ?"

इंस्पेक्टर गाडगिल के प्रश्न का जवाब देने से पहले उस की शतुरमुर्ग जैसी टांगें लाश के नजदीक पहुंचकर रुकीं। फिर वामनराव ने झुककर मृतका के बालों में फंसे नीले रंग के एक लम्बे से धागे को निकालकर, उसे गाडगिल की आंखों के आगे नचाते हुए कहा—"इससे, क्योंकि यह धागा सिर्फ कालीन बनाने के उपयोग में आता है। इससे साफ जाहिर होता है कि यह हत्या नीले रंग के कालीन बिछे हुए कमरे में हुई है।"

वामनराव की तरफ ईर्ष्या-भरी नजरों से देखता हुआ गाडगिल सोच रहा था, कि आखिर ऊपर वाले ने दिमाग बांटने में ऐसा पक्षपात क्यों किया? तभी, अचानक उसके जेहन में एक विचार यूं चमक उठा, जैसे काफी देर तक लुप-लुप करने के बाद कोई ट्यूबलाईट जल उठी हो।

फिर उसके मुंह से प्रसन्नता से लबालब भरा स्वर निकला—"स···सर! मैं समझ गया हूं कि यह लाश किसकी है।"

"किसकी है?" वामनराव ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

गाडगिल ने एक बार बोलना शुरू किया तो तब तक बोलता रहा, जब तक कि अज्ञात फोन आने, भूपेन्द्रसिंह के यहां तलाशी लेने एवं उसके बयान को पूरा बता न चुका।

"गुड!" बोलते समय वामनराव की आंखें ठीक उसी

ढंग से चमक रही थीं, जैसे किसी चूहे को देखकर बिल्ली की चमकती हैं।

▭ ▭

"क्या तुमने अच्छी तरह देखा था देवेन्द्र कि लाश की एक पाजेब गायब है ?"

पसीने से लथपथ व बुरी तरह हांफ रहे देवेन्द्र ने अभी कमरे में कदम रखा ही था कि भूपेन्द्रसिंह ने गोली की तरह यह प्रश्न दागा था।

कुछ देर तक मूर्खों की तरह मुंह बाये उसका चेहरा देखने के बाद बिना कुछ बोले ही वह सोफे पर जाकर ढेर हो गया और लम्बी-लम्बी सांसें खींचने लगा। उसके पीछे-पीछे पहुंची सरला की सांसें भी धोंकनी की तरह चल रही थीं। किन्तु, साथ ही उनके चेहरे पर आतंक से छुटकारा पाने की राहत झलक रही थी।

"अंकल जो पूछ रहे हैं, उसका जवाब क्यों नहीं देते देवेन्द्र ?" चिन्तित स्वर में कहते हुए कैलाश उसके नजदीक पहुंचा और उसे कंधों से पकड़कर हिलाते हुए कहा—"क्या बात है ? तुम इतने घबराए हुए क्यों हो ? क्या कोई गड़बड़ी हो गई है ?"

"नहीं···नहीं ! ऐसी बात नहीं है।" सांसों को व्यवस्थित कर कटु स्वर में उसने कहा—"योजनाएं बनाना तो आसान है, लेकिन उन्हें अंजाम देते वक्त मालूम पड़ता है कि कितना मुश्किल काम है। वह तो हमारी किस्मत अच्छी थी, वरना अब तक तो मैं जेल की सलाखों के पीछे पहुंच चुका होता।"

"आखिर हुआ क्या ? अब कुछ बताएगा भी या···?" भूपेन्द्रसिंह फट पड़े।

और जब उसने रास्ते में घटी घटना के बारे में बताया तो कई क्षणों तक किसी के मुंह से आवाज नहीं निकल सकी थी।

"मैं मानता हूं कि वह सिचुएशन काफी विस्फोटक थी।" कैलाश देवेन्द्र की बगल में बैठता हुआ बोला—"खैर, लेकिन अब एक और समस्या हमारे सामने आ खड़ी हुई है, और उसका समाधान केवल तुम ही कर सकते हो।"

"हां, अभी डैडी ने पाजेब के बारे में पूछा था, लेकिन मैंने तो उसी वक्त बता दिया था, कि उसके सिर्फ एक ही पैर में पाजेब थी। तब मैंने उसे ढूंढ़ने के लिए भी कहा था। ऐसा भी हो सकता है कि उस मददगार द्वारा लाश यहां से हटाने के दौरान वह कहीं गिर गई हो।"

"कमाल है!" कैलाश ने आश्चर्य से कहा—"अब उसे कहां ढूंढा जाए?"

"क्या वह उस कमरे में भी नहीं मिली, जिसमें लाश छुपाई गई थी?"

"अरे, तो क्या हमारे भेजे में इतनी भी अक्ल नहीं...?" झुंझलाकर चीखते हुए भूपेन्द्रसिंह बोले—"कि हम उसे वहां नहीं ढूंढ़ते! हमने बगल का ही नहीं, बल्कि कम्पाउण्ड व लॉन का कोना-कोना खंगाल डाला है।"

"फ...फिर?"

"फिर क्या? हड़बड़ाहट में अवश्य ही तुम्हें यह भ्रम हो गया होगा कि उसके एक पैर में पाजेब नहीं थी।"

"न...नहीं...!" देवेन्द्र चीखा—"मुझे कोई भ्रम-व्रम नहीं हुआ था। वास्तव में ही उसके एक पैर की पाजेब नदारद थी। अगर वह यहां कहीं नहीं तो इसका सीधा-सा मतलब है कि वह हरामजादा मददगार उसे अपने साथ ले गया है।"

"तेरा दिमाग तो नहीं घूम गया। अगर उसे जेवर ले जाने का ही शौक होता तो वह कुछ और लेकर जाता। लाश पर मौजूद हजारों रुपयों के जेवरों को छोड़, सिर्फ चांदी की एक पाजेब ले जाने की इसे क्या जरूरत थी?"

"प...प्लीज, शांत हो जाइए।" इससे पहले कि उनकी आवाजें और बुलन्द होती कैलाश मध्यस्थता करता हुआ बोला—"इस तरह एक-दूसरे पर चिल्लाने से किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता। देवेन्द्र के कहे मुताबिक अगर वास्तव में लाश के एक पैर से पाजेब गायब थी तो उसका न मिलना यह साबित करता है कि यह हरकत उसी शख्स की है। इससे यह नतीजा निकलता है कि वह आपका ऐसा दुश्मन है, जो आपको आतंकित करके अधिक-से-अधिक लाभ उठाना चाहता है।"

कैलाश की बातें सुनकर वहां मौजूद सभी लोगों की अंतरात्मा तक कांप उठी। सरला के चेहरे पर तो सबसे ज्यादा बदहवासी उभर आई। अपने सूखे होंठों पर जुबान फिराते हुए वह बड़ी मुश्किल से बोल पाई—"न" नहीं, यह गलत है। हमने भला किसी का क्या बिगाड़ा है, जो कोई हमसे इस कदर दुश्मनी निभाएगा।"

देवेन्द्र के होंठ तो एक-दूसरे से ऐसे चिपककर रह गए, जैसे उन्हें फेवीकोल से चिपका दिया गया हो।

अचानक भूपेन्द्रसिंह ने उससे पूछा—"तूने बाकी जेवर कहां रखे हैं ?"

"स···सेफ में। और कहां रखता ?"

"उफ !" सिर पर हाथ मारते हुए भूपेन्द्रसिंह उबल पड़े—"तेरे दिमाग में गोबर तो नहीं भरा है। अरे बेवकूफ, वो जेवर वहां से बरामद होते ही तेरे गले में फांसी का फंदा पड़ जाएगा।"

"लेकिन अंकल···।" कैलाश बोला—"जेवरों को तो हम अभी भी वहां से हटाकर किसी सुरक्षित स्थान पर छुपा सकते हैं।"

"हां, यह तो करना ही पड़ेगा। जेवरों को यहां ले आओ देवेन्द्र।" भूपेन्द्रसिंह ने कहा।

पता नहीं सरला एकदम गुमसुम होकर क्यों बैठी थी। उसे लग रहा था कि उसके पिता जानबूझकर कोई बात छिपा रहे हैं।

कैलाश द्वारा किसी दुश्मन का जिक्र करते ही देवेन्द्र की चुप्पी व भूपेन्द्रसिंह का गोलमाल ढंग से बात को टाल देना, उसके शक को और भी ज्यादा पुख्ता कर रहे थे।

तभी हाथों में कपड़े की एक पोटली लिए देवेन्द्र को आता देखकर उसकी तन्द्रा भंग हुई।

"इसे खोलो।" भूपेन्द्रसिंह ने आदेश दनदनाया।

उसने पोटली तिपाही पर रखकर खोल दी।

जेवरों पर अच्छी तरह निगाहें दौड़ाने के बाद भूपेन्द्रसिंह के चेहरे पर बौखलाहट नाच उठी। मुंह से अस्फुट स्वर निकला—"प···पाजेब तो इनमें भी नहीं है। सोचा था हड़बड़ाहट के कारण देवेन्द्र को भ्रम हुआ होगा। अ···अब

उसे कहां तलाश किया जाए ? लगता है, इसकी बात सही है। दहेज गायब करने के पीछे जरूर उसी मददगार के बच्चे का हाथ है।"

"जो हो चुका है...!" कैलाश सहानुभूति-भरे स्वर में बोला—"उसे बार-बार दोहराने से कोई फायदा नहीं है, मेरे ख्याल से तो पहले इस विष की पोटली से पीछा छुड़ाना जरूरी है।"

"त...तो क्या तुम इन्हें कहीं फेंक देने की सलाह दे रहे हो ?" ऐसा पूछते समय भूपेन्द्रसिंह के चेहरे पर ठीक वही भाव उजागर हो गए थे, जो किसी कंजूस के चेहरे पर दान देने के नाम पर दिखाई देते हैं।

"जी नहीं !" वह बोला—"मेरे कहने का मतलब सिर्फ यह है कि इन्हें किसी ऐसी जगह पर छुपाना होगा, जहां कोई पुलिस न ढूंढ़ सके।"

"ऐसा कौन-सा स्थान हो सकता है ?"

"यह सोचना आप लोगों का काम है। बंगला आपका है। अत: उपयुक्त स्थान का चुनाव आप लोग ही बेहतर ढंग से कर सकते हैं।"

कुछ देर सोचने के बाद भूपेन्द्रसिंह उत्साहित स्वर में बोल उठे—"हां, वह जगह बिल्कुल ठीक रहेगी।"

"आप किस जगह की बात कर रहे हैं अंकल ?"

"मेरे साथ आओ।" जवाब देने की जगह पोटली उठाकर बाज की तरह वह बाहर की ओर झपटा। असमंजस में फंसे वे तीनों भी उनके पीछे हो लिए।

बंगले के पिछवाड़े बने छोटे से बगीचे में पहुंचकर भूपेन्द्रसिंह उस कोने में जाकर रुक गए, जहां तीन कतारों में करीब पन्द्रह-बीस गमले रखे हुए थे।

गमले के अधिकांश पौधों में गुलाब के फूल खिले हुए थे। बीच वाली कतार के एक गमले के पास रुकते हुए भूपेन्द्रसिंह बोले—"तुम बाऊंड्री वाल के पास खड़े होकर यह देखते रहो देवेन्द्र कि कोई इस तरफ ताक-झांक तो नहीं कर रहा है।"

वह सीमा के प्रहरी की तरह तुरन्त बाऊंड्री पर जाकर खड़ा हो गया, किन्तु यह अलग बात थी कि वह एक तरफ

देखने की बजाय दोनों ही तरफ ध्यान दे रहा था।

भूपेन्द्रसिंह उस गमले के करीब उकड़ू होकर बैठ चुके थे। न सिर्फ बैठ चुके थे, बल्कि एक ऐसी हरकत कर चुके थे जिसे देखकर उन तीनों की खोपड़ी ही जैसे घूमकर रह गई थी। उन्होंने सोचा, कहीं अत्यधिक मानसिक तनाव में वह पागल तो नहीं हो गए हैं।

वास्तव में उनकी वह हरकत किसी को भी ऐसा सोचने पर मजबूर कर सकती थी। क्योंकि उन्होंने यहां-वहां नजरें दौड़ाने के बाद अपनी शर्ट उतारकर जमीन पर बिछा दी थी और गमले को उस पर रख लिया था। फिर सावधानी पूर्वक गुलाब का पौधा मिट्टी सहित बाहर निकालकर जेवरों की पोटली गमले में रखी और पौधा ज्यों-का-त्यों रोप दिया था। अब तक तीनों उनकी इस हरकत का अर्थ समझ गए थे।

कैलाश के मुंह से बरबस ही निकल पड़ा—"वाह अंकल ! मान गए आपको। दिमाग के मामले में तो आपने शातिर मुजरिमों को भी मात दे दी। अब अगर पुलिस यहां आती भी है तो उसे इन गमलों पर शक करने का कोई कारण नजर नहीं आएगा। पुलिस वाले मुजरिमों की छोटी-छोटी गलतियों का ही सहारा लेकर उन तक पहुंचने में कामयाब होते हैं। अगर-आपकी जगह कोई दूसरा होता तो गमले से गिरने वाली मिट्टी पर कोई ध्यान ही नहीं देता और फिर गमले के करीब गिरी हुई मिट्टी को देखते ही पुलिस फौरन समझ जाती कि जरूर इसमें कुछ-न-कुछ छिपाया गया है।"

गमले को यथास्थान रखने के बाद शर्ट को सावधानी से उठाकर उसे बगल की क्यारियों में झाड़ते हुए भूपेन्द्रसिंह अभी कुछ कहना ही चाहते थे कि बाऊंड्री वाल के निकट खड़ा देवेन्द्र बदहवासी की-सी हालत में आंधी-तूफान की तरह उनकी तरफ दौड़ते हुए चिल्लाया—"प···पुलिस···!"

"क···क्या ?"

"ह···हां ! पुलिस की एक जीप इसी तरफ आ रही है। जल्दी सब लोग अंदर पहुंचो, वरना हमें इकट्ठा देखकर उन्हें तुरन्त शक हो जायेगा।"

कहने के साथ ही वह यह देखे बिना ही प्रवेश-द्वार की तरफ दौड़ पड़ा कि उसके पीछे वे तीनों भी दौड़ रहे हैं या नहीं।

▭ ▭

"हमें एक लाश बरामद हुई है, जिसके माथे में घुसी गोली अड़तीस कैलीबर के रिवॉल्वर से चलाई गई है। हमें पता लगा है कि आपके पास भी अड़तीस कैलीबर का एक लायसेंसी रिवॉल्वर है। क्या यह सच है?"

घबराहट पर काबू पाने की कोशिश करते हुए भूपेन्द्रसिंह के होंठों ने हरकत की—"ज···जी हां। लेकिन वह तब ही से लापता है, जब से लक्ष्मी रूठकर गई है, इसलिए अभी तक रिपोर्ट नहीं लिखवाई कि हो सकता है, उसे गायब करने में उसी का हाथ हो। ल···लेकिन कहीं आपके कहने का मतलब ये तो नहीं कि किसी ने उसी रिवॉल्वर से लक्ष्मी का कत्ल कर दिया है।"

"कमाल है!" सांय-सांय-भरी आवाज के साथ पिचके गालों वाले होंठ हिले—"मैंने तो अभी यह भी नहीं कहा कि मिलने वाली लाश किसी स्त्री की है या पुरुष की। तब आप कूदकर एकदम से इस नतीजे पर कैसे पहुंच गए कि हमें मिलने वाली लाश लक्ष्मी की है।" वामनराव के शब्दों ने न सिर्फ भूपेन्द्रसिंह के, बल्कि देवेन्द्र, सरला और कैलाश के जिस्मों को भी चार सौ चालीस वोल्ट का झटका दिया था।

किन्तु स्थिति की गम्भीरता का अहसास होते ही कैलाश चिल्ला उठा—"इंस्पेक्टर साहब, आपकी ज्यादती यहां नहीं चलेगी आप जिस तरह घुमा-फिराकर बात कर रहे हैं, उसका तजुर्बा आपसे कहीं ज्यादा मुझे है। आपने शायद मेरा नाम तो सुना होगा। मुझे एडवोकेट कैलाशनाथ कहते हैं। जब आप खुद बता रहे हैं, कि अंकल जैसे ही किसी लाइसेंसी रिवॉल्वर से एक कत्ल हुआ है···।" अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए उसने बोलना जारी रखा—"अब मान लीजिए उनकी जगह अगर आप होते तो क्या किसी लाश से बरामद होने का जिक्र सुनने के बाद इसी नतीजे पर नहीं पहुंचते, कि किसी बदमाश ने उस अकेली औरत को लूटने की कोशिश में उसकी हत्या कर दी।"

"जरूर-जरूर"'।" रहस्यमय मुस्कराहट के साथ वामनराव बोला—"मानता हूं आपकी संभावनाओं में काफी दम है, लेकिन जहां तक मैं समझता हूं यह हत्या सिर्फ लूटने के इरादे से ही नहीं की गई।"

"त'''तो क्या वह लक्ष्मी की ही लाश है ?" देवेन्द्र ने पूछा।

"हां, अब तो कहना ही पड़ेगा। फिर भी जब तक कि आप लोग शिनाख्त नहीं कर लेते, तब तक निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। लेकिन मैं चाहता हूं कि पहले लक्ष्मी के कमरे को देख लिया जाए।"

उसकी बात पूरी होने से पहले ही दे द्र 'लक्ष्मी-लक्ष्मी' चिल्लाता हुआ फर्श पर ऐसे लुढ़क गया जैसे बेहोश हो गया हो। आखिर उसे यह तो दिखाना ही था कि वह अपनी बीवी को कितना चाहता था।

सरला की तो हिचकी बंध गई थी।

कैलाश और भूपेन्द्रसिंह के द्वारा देवेन्द्र को सोफे पर लिटाने तक वामनराव खामोश रहा, लेकिन जब वह टेलीफोन की तरफ झपटा तो उसका आदेशात्मक स्वर गूंजा —"डॉक्टर को बुलाने की कोई जरूरत नहीं है। बीवी की मौत का जो सदमा इन्हें लगा है, वह इतना साधारण है कि थोड़ी देर में खुद ही होश में आ जायेंगे। इसलिए मैं चाहता हूं कि पहले मुझे उस कमरे को देख लेने दिया जाए, तो शायद मैं जल्दी ही उसके हत्यारे को गिरफ्तार कर लूं।"

"ल'''लेकिन'''?" भूपेन्द्रसिंह हड़बड़ाते हुए बोले—"अगर इसे कुछ हो गया तो ?"

"कुछ नहीं होगा। इसकी जिम्मेदारी मैं लेता हूं।"

"मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है'''।" झुंझलाते हुए कैलाश ने कहा—"कि जब लक्ष्मी की हत्या बाहर हुई है तो आप उसके कमरे को क्यों देखना चाहते हैं ?"

"वह इसलिए'''।" सबके चेहरों पर अपनी आंखें घुमाने के बाद वामनराव बोला—"क्योंकि अपनी इंवेस्टीगेशन से मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं, कि उसका कत्ल उसके किसी परिचित ने ही किया है।"

उसके शब्दों को सुनकर सबके ऊपर जैसे कड़कड़ाती

हुई बिजली आ गिरी थी। जीते-जागते जिस्म जैसे लकड़ी के कुंदों में परिवर्तित हो गए थे। बेहोशी का नाटक कर रहे देवेन्द्र पर तो सचमुच बेहोशी हावी होने लगी थी।

जबकि वामनराव धाराप्रवाह बोलता रहा—"वह परिचित कोई भी हो, उसने काफी सोच-समझकर यह योजना बनाई थी। या तो उसने लक्ष्मी को फुसलाकर जेवरात व रिवॉल्वर लेकर भागने के लिए तैयार किया होगा। या फिर किसी वजह से वह उस आदमी की हर उचित व अनुचित बात मानने के लिए मजबूर रही होगी। मेरा मतलब शायद आप लोग समझ रहे होंगे? यानी हो सकता है कि उसे कोई ब्लैकमेल कर रहा हो। इन दोनों में से जो भी शख्स रहा हो, वह उसके कहने पर घर से अपने जेवरात, रिवॉल्वर और शायद कुछ नकदी लेकर, पहले से निश्चित हुए स्थान पर पहुंची, और कातिल ने बड़े आराम से उसी रिवॉल्वर से उसे कत्ल कर दिया और···।"

थोड़ा रुककर उसने प्रतिक्रिया देखने के लिए सबके चेहरों पर निगाहें डालीं।

भूपेन्द्रसिंह और कैलाश के चेहरे पर तो कुछ भी नहीं दिखाई दिया, किन्तु बेहोश पड़े देवेन्द्र का चेहरा प्रसन्नता से दमक रहा था। खुशी के वेग में वह शायद यह भी भूल गया था कि वह बेहोश है और बेहोश व्यक्ति के चेहरे पर कोई भी भाव मौजूद नहीं रहने चाहिए।

इस हास्यास्पद दृश्य पर वामनराव का दिल ठहाके लगाने को हुआ, लेकिन बड़ी मुश्किल से वह अपनी इस इच्छा का गला घोंटते हुए पुनः बोला—"और फिर उसने लाश के जेवरात वगैरह निकालकर इस तरह की सिच्युएशन क्रियेट की, जिससे वह पुलिस को लूट और हत्या का मामला लगे। और ऐसा करते समय उसने यह भी अच्छी तरह सोच लिया होगा कि अगर पुलिस उसकी चाल में नहीं भी फंसती, तब भी वह उस पर शक करने की जगह आप लोगों पर शक करेगी। क्योंकि लाश को लगी गोली तुम्हारे लाइसेंसी रिवॉल्वर की है।"

"वह सब तो ठीक है।" भूपेन्द्रसिंह कसमसाते हुए बोले—"पर आप लक्ष्मी के कमरे से ऐसा क्या मिलने की

उम्मीद रखते हैं, जिससे हत्यारे तक पहुंचने में सफलता मिलेगी ?"

"उम्मीद तो बहुत कुछ मिलने की है।" रहस्यमयी मुस्कराहट के साथ वामनराव के होंठ हिले—"लेकिन ज्यादा संभावना किसी पत्र आदि की है, जो लक्ष्मी के भी हो सकते हैं, और उस कातिल के भी, जिन्हें नष्ट करना वे भूल गए हों।"

"आइये, अगर ऐसी बात है तो आप हम पर अहसान ही करेंगे। लक्ष्मी के कातिल को सजा मिले, हम तो यही चाहते हैं।" कहने के साथ ही वह जीने की तरफ बढ़ गए।

कैलाश और वामनराव ने भी भूपेन्द्रसिंह का अनुसरण किया।

बाकी सभी लोग हॉल में ही रहे।

कमरे में पहुंचते ही वामनराव की हरी व चमकदार आंखें तीव्रता से चारों ओर घूमने लगीं। और कमरे का पूरा चक्कर लगाने के बाद कालीन के उस स्थान पर जाकर ठहर गईं, जहां से उसका थोड़ा हिस्सा कटा हुआ दिखाई दे रहा था। उसे यह समझते देर न लगी कि खून का धब्बा मिटाने के लिए उतनी दूर के धागों को काट दिया गया था। फिर भी एक विचार उसकी खोपड़ी में बराबर घूमता रहा कि लाश के सिर में नीले रंग का धागा मिला था, जबकि इस कालीन का रंग लाल है। ऐसा क्यों ?

फिर झुककर गौर से उस स्थान को देखते हुए चौंकने की शानदार एक्टिंग करते हुए वह बोला—"ओह ! इतना कीमती कालीन किसने बरबाद कर दिया ?"

"क···कहां ?" कहते हुए भूपेन्द्रसिंह उसके एकदम नजदीक आकर बोले—"ओह ! लगता है, यह चूहों की बदमाशी है।"

"भई मानना पड़ेगा।" उसकी आंखों में झांकता हुआ वह बोला—"आपके बंगले के चूहे कटिंग के मामले में उस्ताद है। इस सफाई से कालीन को काटा है कि कैंची को भी मात दे दी। ऊपर से जो धागे निकले उन्हें भी खा गए। वाह !"

जब कोई जवाब न सूझा तो भूपेन्द्रसिंह कसमसा कर

चुप रह गए।

अनायास ही वामनराव की निगाहें मेज के पाए के नीचे सुई के नोक बराबर चमकती किसी चीज से टकराई। उसने तुरन्त ही मेज को थोड़ा-सा उठाकर उसे निकाल लिया।

वह चांदी की पाजेब थी, केवल एक पांव की।

उसे देखते ही भूपेन्द्रसिंह और कैलाश को तो जैसे सांप सूंघ गया था।

"कहीं यह पाजेब लक्ष्मी की तो नहीं है ?" उसे भूपेन्द्रसिंह और कैलाश की आंखों के आगे नचाते हुए वामनराव ने पूछा था।

कैलाश के कुछ बोल पाने से पहले ही भूपेन्द्रसिंह बोल उठे—"श···शायद, पर मुझे पक्का पता नहीं है। यह तो सरला या देवेन्द्र ही बता सकते हैं। आप कहें तो सरला को बुलाऊं।"

"कोई जरूरत नहीं। जब यह लक्ष्मी का कमरा है, तो जाहिर है कि यह उसी की होगी। और इसकी यहां मौजूदगी से अब यह भी साफ हो गया है कि कितनी हड़बड़ी में उसे यहां से जाना पड़ा था, कि अपनी पाजेब गिरने तक का भी उसे होश नहीं रहा। फिलहाल तो यह तब तक हमारे कब्जे में रहेगी, जब तक कि कातिल गिरफ्तार नहीं हो जाता। आपको कोई एतराज तो नहीं ?"

"न···नहीं, भला मुझे क्या एतराज हो सकता है ?"

फिर, उसने मेज के ड्राअर चैक करके पुनः बन्द भी कर दिए थे। इसी दौरान तह किया हुआ एक कागज उसकी जेब में पहुंच चुका था। इसके बाद उसने कमरे के उन स्थानों को चैक किया, जहां कुछ छिपाए जाने की उम्मीद मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी नहीं कर सकता था।

फिर निराशा से चहलकदमी करते हुए वह उस खिड़की के सामने जा खड़ा हुआ, जो बंगले के पिछवाड़े मौजूद छोटे से बगीचे की तरफ खुलती थी।

पता नहीं क्या सोचकर उसकी आंखों में बहुत तेज चमक कौंधी और भूपेन्द्रसिंह की तरफ घूमते हुए वह बोल उठा—"आपके बगीचे में तो बहुत ही निराले व खूबसूरत किस्म के फूल लगे हैं। क्या, मैं नजदीक से उन्हें एक नजर

देख सकता हूं ?"

उन दोनों को काटो तो खून नहीं। उनके चेहरे पर ऐसा पीलापन छा गया, जैसे वे वर्षों से पीलिया के मरीज हों। कई क्षणों बाद खिसियाई हंसी के साथ भूपेन्द्रसिंह बोले—"अगर आपको देखना है तो शौक से देखिए, किन्तु फिर भी मैं तो यही कहूंगा कि बेवजह ही आप अपना वक्त बर्बाद करेंगे। हमारे बगीचे में फूलों की वही आम किस्में हैं, जो हर किसी के बगीचे और लॉन में दिखाई देती हैं।"

"अजी नहीं राठौर साहब ! आप ऐसा इसलिए कह रहे हैं, क्योंकि आप उन्हें प्रतिदिन देखते रहते हैं। और किसी चीज को प्रतिदिन देखने से शनैः-शनैः उसका आकर्षण लुप्त होता जाता है।"

"देखिए इंस्पेक्टर साहब !" गुस्से का प्रदर्शन करते हुए कैलाश बोला—"आप फिर ज्यादती कर रहे हैं। एक तो लक्ष्मी के कत्ल की खबर सुनकर हम वैसे ही परेशान हैं। उस सदमे से मेरा यार देवेन्द्र अभी तक बेहोश पड़ा है और आपको फूलों की खूबसूरती का दीदार करने की सूझ रही है। प्लीज, मेहरबानी करके अगर आपकी इंवेस्टीगेशन पूरी हो चुकी हो, तो यहां से तशरीफ ले जाइए।"

"मिस्टर एडवोकेट।" वामनराव ने उसी लहजे में जवाब दिया—"अगर आपके दुःख को मैं न समझ रहा होता तो आपकी लायसेंसी रिवॉल्वर से हुए कत्ल के आधार पर यहां वारंट के साथ तलाशी के लिए आता। और तब तुम मुझे यूं रोकने की हालत में न रहते।"

स्थिति को बिगड़ता देख भूपेन्द्रसिंह झट चापलूसी भरे स्वर में बोल उठे—"जाने भी दीजिए साहब। चलिए, बगीचे में चलते हैं।"

आग्नेय नेत्रों से कैलाश की तरफ घूरते हुए वामनराव दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद वे लोग बगीचे में खड़े थे। फिर वामनराव मानो वहां कुछ खोजने लगा हो।

अचानक वह ठीक उसी गमले के सामने जा खड़ा हुआ, जिसमें लक्ष्मी के जेवर दफनाए गए थे।

गमले में मौजूद मिट्टी को देखते ही उसकी बिल्ली जैसी

हरी आंखों में बड़ी तेजी से चमक उभरती चली गई।

और फिर !

बिजली की तेजी से वामनराव नीचे झुका और उस गमले को उठा लिया।

"य···ये···आप क्या कह रहे हैं ?" बदहवास भूपेन्द्रसिंह आर्तनाद करता हुआ उसकी तरफ दौड़ा।

लेकिन जब तक वह नजदीक पहुंचता वामनराव गमले को उलटा चुका था।

लेकिन आश्चर्य !

उसमें मिट्टी व गुलाब के पौधे को छोड़कर ऐसा कुछ भी नहीं था, जिसे संदेह की दृष्टि से देखा जाये।

जेवरात तो क्या उसमें लाहे की एक कील तक न थी।

यह देखकर जहां वामनराव की आंखें सोचने वाले अंदाज में सिकुड़ती चली गईं, वहीं भूपेन्द्रसिंह और कैलाश की फटी-फटी आंखें गमले से निकली मिट्टी पर ऐसे चिपकी रह गई थीं, जैसे वे संसार का आठवां आश्चर्य देख रहे हों।

□ □

"क···कैलाश ! मुझे बहुत डर लग रहा है।"

"क्यों ?" अपने सीने से लता की तरह लिपटी सरला की पीठ पर हाथ फेरते हुए उसने पूछा—"किस बात का डर ? तुमने देखा नहीं, वह कांइयां पुलिसिया वामनराव मेरी चाल में फंसकर किस तरह उलझ गया है ?"

"न···नहीं कैलाश ! पुलिस भले ही कुछ न समझ पाई हो, लेकिन तुम उस इंसान को क्यों भूल रहे हो, जो हमारे जेहन पर किसी छिपकली की तरह चिपक गया है। अब तो मुझे यह पक्का यकीन हो चुका है कि वह हमारा ऐसा कोई दुश्मन है, जो हमें डरा-डराकर मार डालना चाहता है।"

"लेकिन अंकल तो कह रहे थे कि उनका ऐसा कोई दुश्मन नहीं है, तो फिर बेवजह ही तुम क्यों डर रही हो। आखिर कोई किसी से बेवजह तो दुश्मनी रखता नहीं है।"

"वही तो मैं समझ नहीं पा रही हूं, अगर हमारा ऐसा कोई दुश्मन है भी तो डैडी और भइया बताते क्यों नहीं हैं ? वह मददगार हमारा दुश्मन है या नहीं, इस बारे में मैं दावे

के साथ तो कुछ नहीं कह सकती, किन्तु इतना निश्चित है कि ऐसी कोई बात जरूर है, जिसे वे लोग हमें नहीं बताना चाहते हैं।"

"हां, जब मैंने मददगार को दुश्मन कहकर सम्बोधित किया था तब ऐसा कुछ मुझे भी लगा था।"

"तुम खुद ही सोचो।" सरला आवेशभरे स्वर में बोली—"जब ऐसी कोई बात नहीं थी तो भइया और डैडी ने तुम्हारी बात का तीव्र विरोध क्यों नहीं किया। कोई भी इंसान अपने ऊपर लगाये, झूठे आरोपों को कदापि सहन नहीं कर सकता।"

"लेकिन मैंने आरोप कहां लगाया था। मैंने तो सिर्फ एक सम्भावना व्यक्त की थी। फिर यह कोई जरूरी तो नहीं कि हर सम्भावना सही निकले।"

"मानती हूं, यह कोई जरूरी नहीं है।" सरला धारा-प्रवाह बोलती गई—"किन्तु किसी दुश्मन की सम्भावना पर भइया की खामोशी और डैडी का टाल-मटोल ढंग से जवाब देना, क्या यह साबित नहीं करता कि वह बात सही है? फिर इसके अलावा वह मददगार हमारे साथ जिस ढंग से चूहे-बिल्ली का खेल खेल रहा है, उसे देखते हुए तुम खुद ही सोचो कि किसी ब्लैकमेलर को क्या जरूरत पड़ी है, जो वह इस तरह का ड्रामा करके आतंक फैलाए। उसे तो सिर्फ दौलत से मतलब होना चाहिए।"

"हो सकता है तुम्हारी बात सही हो। लेकिन जब तक कि उसका कोई इरादा सामने नहीं आता, तब तक किस सम्भावना को सही माना जाए, और किसे गलत? हमारे सामने तो असली समस्या देवेन्द्र को बचाने की थी। और उसमें हमें सफलता मिल ही गई है। रही बात मददगार की, तो अब उससे निपटने के लिए भी कोई-न-कोई योजना बनानी पड़ेगी।"

"तो कब बनाओगे? क्या तब, जब डरा-डराकर वह हमारी जान निकाल लेगा?"

"पहले उसे अपना इरादा तो जाहिर करने दो।" सरला के सुन्दर मुखड़े की तरफ एकटक देखते हुए कैलाश उसे दिलासा देता हुआ बोल उठा—"जब तक कि वह ऐसा नहीं

करेगा, हम कैसे जानेंगे कि वह कौन है? और जब तक जानेंगे ही नहीं तो योजना किस आधार पर बनाएंगे? उसकी पहली चाल के बारे में तो हम जान ही चुके हैं कि वह अपनी हरकतों से हमें ज्यादा-से-ज्यादा आतंकित करने की कोशिश कर रहा है। और यह सब जानने के बावजूद तुम उसकी चाल न फंस रही हो।"

"ल···लेकिन कैलाश!"

"अब बिल्कुल कुछ नहीं सुनूंगा मैं।" और अपने होंठ उसके होंठों की तरफ बढ़ाते हुए वह बोला—"फिलहाल तो जिस उद्देश्य से हम यहां आए हैं, उसे पूरा होने दो।"

उसके बंधनों से आजाद होने के लिए सरला जोर से कसमसाई, किन्तु वह किसी जोंक की तरह उसके बदन से चिपक चुका था।

□ □

"स···सर!" अविश्वास भरी दृष्टि से वामनराव की तरफ देखते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल ने बड़े ही उतावले स्वर में कहा—"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि इतने सारे सबूत मिलने के बावजूद आपने उन्हें क्यों छोड़ दिया?"

वामनराव की हरी व चमकदार आंखें इंस्पेक्टर गाडगिल की तरफ उठीं। फिर उसके पिचके गालों वाले होंठों पर ऐसी मुस्कराहट आ विराजी जो किसी अनुभवी तैराक के होंठों पर तब दिखाई देती है, जब वह किसी नौसिखिये तैराक को तैरने के नाम पर उछल-कूद मचाते देखता है। उसने कहा—"अब तक हमें जो भी सबूत मिले हैं, उन्हें सबूत समझना सरासर बेवकूफी है। अगर उन सबूतों के आधार पर गिरफ्तार करके उन्हें अदालत में पेश भी कर दिया जाए, तो जानते हो क्या होगा? मुजरिम बड़ी आसानी से संदेह का लाभ उठाकर बरी हो जाएगा, जो कि मैं हरगिज सहन नहीं कर सकूंगा। मेरा ये रिकार्ड है कि अब तक मेरे हाथों जो भी मुजरिम गिरफ्तार हुआ है, वह संदेह का लाभ उठाकर रिहा नहीं हो सकता। अतः मैं तब तक किसी मुजरिम पर हाथ डालने की बेवकूफी नहीं करता, जब तक कि मुझे पूरी तरह यह यकीन नहीं हो जाता, कि मैंने उसके खिलाफ जो भी सबूत जुटाए हैं, उन्हें कांइयां से कांइयां वकील भी झुठलाने

की ताकत न रख सके।"

"लेकिन सर ! मृतका की पाजेब का उसके कमरे में मिलना क्या यह साबित नहीं करता कि उसकी हत्या उन्हीं लोगों में से किसी ने की है ?"

"यह कोई ऐसा सबूत नहीं है, जिसकी कोई काट न हो। इसकी तो कोई नौसिखिया वकील भी धज्जियां उड़ाकर रख देगा। हां, उस स्थिति में यह सबूत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जब बाकी के जेवर भी उन लोगों के पास से ही बरामद हो जायें, किन्तु इन बातों से ज्यादा अहम सवाल हमारे सामने यह है कि मृतका के एक पैर की पाजेब हमें जिस स्थिति में मिली, उसका क्या अर्थ हुआ ?"

"अर्थ क्या हुआ ?" इंस्पेक्टर गाडगिल ने यूं कहा, जैसे कि इतने साधारण प्रश्न पूछे जाने पर हैरान हो रहा हो—"उसकी हत्या करते समय या लाश वहां से हटाए जाते वक्त वह पाजेब मेज या किसी दूसरी वस्तु से टकराकर वहीं गिर गई होगी।"

"हुंह !" व्यंग्य भरी दृष्टि से उसकी तरफ दे‍ते हुए वामनराव बोला—"और फिर खुद ही सरकती हुई मेज के पाये के नीचे जा घुसी थी। क्यों ?"

"क···क्या मतलब सर ?"

"मतलब ये, कि पाजेब गिरी नहीं थी, बल्कि वहां प्लांट की गई थी।"

"प···प्लांट की गई थी ? लेकिन ऐसा कौन करेगा ?"

जवाब देने से पहले पनामा की सिगरेट अपने होंठों से सुलगाने व धुआं छत की तरफ छोड़ने के बाद वामनराव बड़े ही कसमसाहट भरे स्वर में बोल उठा—"यही सवाल तो मेरी खोपड़ी में भी चक्कर काट रहा है। ड्राअर में मिली प्राईवेट जासूस गजानन की रिपोर्ट पढ़ने के बाद मैं यह तो जान चुका हूं कि लक्ष्मी की चरित्रहीनता की बात जानने के बाद, गुस्से में भरकर देवेन्द्र ने उसे गोली मार दी होगी। कातिल वही है यह तो मैं उसका चेहरा देखने के बाद ही जान गया था। और यह भी मैं अच्छी तरह समझ रहा हूं कि भूपेन्द्र, सरला और कैलाशनाथ उसे बचाने की कोशिश में शरीक हैं, किन्तु मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि वह शख्स कौन है, जो इनके प्रयत्न को विफल बनाना चाह रहा है ? ऐसा इसलिए कहना

पड़ रहा है, क्योंकि पाजेब मेज के पाये के नीचे सिर्फ दो सूरतों में दब सकती है। या तो मेज को उठाकर दूसरे स्थान पर रखते समय वह पहले से वहां गिरी हुई पाजेब पर भूल से रख दी गई हो, या किसी ने जान-बूझकर उसे इस ढंग से मेज के नीचे प्लांट किया हो कि आसानी से किसी को दिखाई न दे। उसका जरा-सा भाग बाहर निकालकर यह होशियारी भी दिखाई गई थी कि वह पुलिस की नजरों से न छुप सके तब...।"

धाराप्रवाह बोलना जारी रखते हुए वामनराव ने कहा—"अगर हम यह मानकर चलें कि इस कत्ल की खबर किसी ऐसे आदमी को भी है, जो इन्हें फंसाने का ख्वाहिशमंद है तो वह दूसरा शख्स कौन है, जो इनकी जानकारी में आए बिना इन्हें बचाने का इरादा रखता है।"

"द...दूसरा शख्स ?" इंस्पेक्टर गाडगिल चकरा उठा।

"हां, दूसरा ! ऐसा इसलिए कह रहा हूं मैं, क्योंकि गुलाब के उस गमले में कुछ छुपाए जाने के चिह्न मौजूद होने के बावजूद उसमें कुछ भी बरामद नहीं हुआ था।"

"आपको उस गमले में ऐसा क्या दिखाई दिया था, जिससे कि उसमें कुछ छुपाए जाने की उम्मीद नजर आई थी ?"

सिगरेट को ऐश-ट्रे में मसलकर बुझाते हुए वामनराव उत्साहित स्वर में बोला—"तुम इतना तो जानते होगे, कि अगर किसी व्यक्ति को अपनी कोई चीज छिपानी हो तो वह उस स्थान का चुनाव करता है, जहां आसानी से किसी का ध्यान न जा सके, इसलिए मैंने वहां सिर्फ उन्हीं स्थानों को चैक किया, जहां कुछ छिपाए जाने की उम्मीद नहीं की जा सकती। देखा गया है कि लोगों को अगर कोई वस्तु छिपानी हो तो वे उसे जमीन में गाड़ना ही सबसे सुरक्षित समझते हैं। अतः जब बंगले के अन्दर मुझे अपनी इच्छित वस्तु दिखाई न दी तो बरबस ही मेरा ध्यान उस कमरे के ठीक पीछे मौजूद बगीचे की तरफ चला गया। अतः वहां पहुंचकर मैंने सिर्फ उस स्थान की खोज शुरू की, जो हाल ही में खोदा गया हो। जब बगीचे में ऐसा कोई स्थान मुझे नजर नहीं आया तो मेरा ध्यान गमलों पर गया। तब एक गमले की मिट्टी दूसरे गमलों से काफी भिन्न दिखाई दी। और यह भिन्नता इसलिए थी,

क्योंकि हाल ही में उसकी मिट्टी निकाली गई थी। यह बात मैं इतने दावे से इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि हाल ही में खोदी गई मिट्टी को चाहे जितना ठोक-पीटकर या दबाकर कठोर बनाने की कोशिश क्यों न की जाए, वह पानी के सोखने व सूर्य की किरणों के ताप से हुई कठोर मिट्टी से अलग दिखाई देती है। मेरे उस गमले की मिट्टी निकालते वक्त जिस तरह के भाव भूपेन्द्रसिंह और कैलाश के चेहरे पर दिखाई दिए थे, उन्हें देखने के बाद शक की तो कोई गुंजाइश ही नहीं बची थी कि उसमें ऐसा कुछ न छिपाया गया हो।"

"फ...फिर वह हमें मिले क्यों नहीं ?" ऐसा पूछते समय इंस्पेक्टर गाडगिल को अपनी खोपड़ी फुल स्पीड पर चल रहे सीलिंग फैन की तरह घूमती प्रतीत हो रही थी।

"इसका कारण सिर्फ यही हो सकता है कि इस हत्या का ऐसा कोई चश्मदीद गवाह मौजूद है, जो इस स्थिति का लाभ उठाकर उन्हें ब्लैकमेल करना चाहता है। और वह जो भी है, काफी चालाक और शातिर किस्म का मुजरिम है। उसकी चालाकी का अंदाजा हम इसी बात से लगा सकते हैं कि जहां भूपेन्द्रसिंह किसी वस्तु को छिपाने का बेहतरीन स्थान समझता था, वहीं वह जानता था कि पुलिस आसानी से उस स्थान तक पहुंच सकती है। और, कोई भी ब्लैकमेलर यह हरगिज नहीं चाहेगा कि उसका शिकार पुलिस के पंजे में फंस जाए। अगर शिकार ही फंस गया तो वह ब्लैकमेल किसे करेगा ? अतः मौका देखकर उसने गमले में छिपाकर रखी वस्तु को अपने कब्जे में ले लिया। अगर वह वस्तु रिवॉल्वर या लक्ष्मी के जेवरात में से कोई एक या दोनों हैं तो वह बड़े आराम से उनका डर दिखाकर जिंदगी भर उन्हें ब्लैकमेल करता रह सकता है।"

"इसका मतलब तो यह हुआ सर, कि पाजेब को मेज के नीचे रखने वाला वह ब्लैकमेलर नहीं, बल्कि कोई दूसरा ही शख्स है।"

"पहले मैंने भी यही सोचा था। लेकिन लगता है, यह हरकत उसी की है। शातिर किस्म का मुजरिम होने की वजह से वह अच्छी तरह जानता होगा कि सुई की नोक के बराबर दिखने वाली पाजेब पर मुजरिमों का ध्यान हरगिज नहीं जा सकता, क्योंकि एक तो वे उस वक्त घबराए हुए

होंगे। दूसरे, उसे यह सोचकर ढूंढेंगे कि वह यहीं कहीं गिरी होगी। अतः उसे पूरा यकीन था कि पाजेब पर किसी का ध्यान जाएगा भी, तो सिर्फ पुलिस का। उस पाजेब को हमारे द्वारा बरामद करवाने की उसकी चाल को अब मैं बखूबी समझ चुका हूं। वह अच्छी तरह जानता था कि इस एकमात्र पाजेब से पुलिस शक भले ही करे, किन्तु सिर्फ इसकी बिनाह पर वह मुजरिम को सजा नहीं दिला सकती। वह चाहता है कि हम मुजरिम पर शक तो करें, लेकिन अन्य सबूतों के अभाव में उसे गिरफ्तार न करें। जिसका फायदा उसे यह पहुंचेगा कि वे लोग बिना किसी चूं-चपड़ के उसकी मांगें मानने पर विवश हो जायेंगे। किन्तु…।" कहते हुए वामनराव की बिल्ली जैसी आंखों में भयानक चमक उभरी और मुंह से गुर्राहट जैसा स्वर निकला—"अब ज्यादा देर तक वह मेरी नजरों से छुपा नहीं रह सकता। अतः उस पर हाथ डालने के लिए तुम्हें कुछ जरूरी काम करने पड़ेंगे।"

"बताइये सर!" गाडगिल ने सीना फुलाकर यूं कहा जैसे वह यह साबित करना चाहता हो कि उससे ज्यादा कर्मठ पुलिस इंस्पेक्टर ढूंढने से भी नहीं मिलेगा।

फिर वामनराव करीब पांच मिनट तक इंस्पेक्टर गाडगिल को कुछ समझाता रहा।

"बस सर! मैं अभी प्रबन्ध करता हूं।"

वामनराव की बात खत्म होते ही इंस्पेक्टर गाडगिल तेजी से पलटा और दरवाजे से बाहर निकल गया।

जबकि वामनराव के होंठों से पनामा की दूसरी सिगरेट चिपक चुकी थी। जिसके गहरे धुयें में उसका पूरा चेहरा लुप्त-सा हो गया था।

▭ ▭

"कौन बोल रहे हो तुम?" रिसीवर कान से सटाते हुए भूपेन्द्रसिंह झुंझलाकर चीख पड़े।

"च…च…च…।" दूसरी ओर से बनावटी अफसोस के साथ कहा गया—"लगता है कि आप बहुत परेशान हैं।"

"मैं पूछता हूं, कौन हो तुम?"

"आपका शुभचिंतक, यानी कि मददगार।"

"त…तुम…।" भूपेन्द्रसिंह का चेहरा कनपटियों तक सुलग उठा, बोले—"इसका मतलब इस हरकत के पीछे भी

तुम्हारा ही हाथ था।"

"अपनी हरकतों का खुद मुझे ही होश नहीं रहता, तो फिर मैं कैसे जानूंगा कि आप किस हरकत की बात कर रहे हैं।"

"देखो मिस्टर! तुम जो भी हो, अब साफ-साफ अपना इरादा जाहिर कर दो।" भूपेन्द्रसिंह ने धाराप्रवाह बोलना जारी रखा—"लाश गायब करने और उसे विचित्र तरीके से बरामद करवाकर अगर तुम सोच रहे हो कि हम तुमसे बुरी तरह खौफजदा हो जायेंगे, तो वह तुम्हारी भूल है। रिवॉल्वर और लक्ष्मी के जेवरात अगर तुम्हारे कब्जे में न होते तो मैं तुम्हें बताता कि तुम किससे उलझ रहे हो।"

"अच्छा तो अब समझा।" धीमी हंसी के साथ कहा गया—"गुलाब के गमले से जेवर निकाल लेने की वजह से आप मुझसे खफा हैं, लेकिन जरा सोचिये, अगर मैं ऐसा न करता तो क्या वह पुलिस के हाथों में पड़ने से बच सकते थे? और उन जेवरों का पुलिस के हाथों में पड़ने का अर्थ तो आप बखूबी समझ सकते हैं? आपको तो मेरे इस काम पर खुश होकर उलटे शाबाशी देनी चाहिए थी।"

"ठीक है, ठीक है।" भूपेन्द्रसिंह कसमसाते हुए बोले—"अब तुम अपना मुंह खोलो। अपनी इस मदद के बदले में तुम हमसे क्या चाहते हो?"

"मैं मदद की कीमत नहीं लिया करता। हां, अगर चीज का सौदा करना हो तो बात अलग है।"

"क···क्या मतलब?"

"मतलब आप बखूबी समझ रहे हैं राठौर साहब। मेरे पास आपका लायसेंसी रिवॉल्वर व जेवरात दो ऐसी वस्तुएं हैं, जिन्हें आप किसी भी कीमत पर पुलिस तक नहीं पहुंचने देना चाहेंगे। अगर आप इन्हें अपने ही कब्जे में रखना चाहते हैं, तो उनकी कीमत बताऊं?"

"ब···बोलो।"

"दस लाख!"

"क···क्या बक रहे हो?" भूपेन्द्रसिंह चीख पड़ा—"इतना रुपया एकसाथ मैं कहां से लाऊंगा?"

"वह आपका लुक आउट है।"

"नहीं! मैं इतना रुपया नहीं दे सकता।"

"तो ठीक है। आप कान खोलकर सुन लीजिए राठौर साहब, अगर दस दिन के अन्दर-अन्दर मुझे यह रकम न मिली, तो मैं इन्हें मुफ्त में दे दूंगा। आपको नहीं, पुलिस को।"

"न···नहीं ! तुम ऐसा नहीं करोगे।"

"हां, मैं ऐसा नहीं करूंगा। लेकिन तब, जब मुझे दस लाख मिल जायेंगे।"

भूपेन्द्रसिंह एकाएक कोई जवाब न दे सके। कई क्षणों तक विचार मग्न रहने के बाद अन्ततः वह बोले—"पैसों का इन्तजाम होने के बाद मैं तुमसे कहां सम्बन्ध स्थापित करूं ?"

"कहीं नहीं ! पांच दिन बाद मैं खुद ही फोन करूंगा और आपके हां कहने पर मैं आपसे खुद ही मिल लूंगा। लेकिन एक बात मैं साफ कर दूं। पहले आपको रुपये मेरे हवाले करने पड़ेंगे। रुपयों के साथ जब मैं सकुशल वहां से लौट आऊंगा, उसके बाद ही फोन पर आपको आपकी चीज के बारे में बताऊंगा।"

"इस तरह तो तुम मुझे धोखा भी दे सकते हो।"

"आप कुछ भी समझने के लिए आजाद हैं। लेकिन शर्त वही होगी, जो मैंने अभी बताई है।" कहने के साथ ही दूसरी तरफ से संबंध विच्छेद कर दिया गया था।

रिसीवर क्रेडिल पर रखने के बाद भूपेन्द्रसिंह देवेन्द्र की तरफ घूमे तो काफी बेचैन दिखाई दे रहे थे।

देवेन्द्र ने कुछ भी पूछने की कोशिश नहीं की, क्योंकि वह उसके मुंह से निकलने वाले शब्दों को सुनकर ही यह अंदाजा लगा चुका था कि अपने आपको मददगार कहने वाला शख्स सिर्फ एक ब्लैकमेलर है।

▭ ▭

केबिन में घुसते ही उस कांस्टेबल ने जोरदार सैल्यूट ठोकने के बाद कहा—"सर, यह कैसेट गाडगिल साहब ने भिजवाया है। इसमें भूपेन्द्रसिंह के टेलीफोन पर हुई पूरे दिन की बातचीत रिकार्ड है। उन्हें आपके अगले आदेश की प्रतीक्षा है।"

"इसे सुनने की तत्काल व्यवस्था करो।" कैसेट हाथ में थामते हुए वामनराव ने उत्साहित स्वर में आदेश दनदनाया

था।

वह कांस्टेबल तेजी से बाहर निकला और तीसरा मिनट पूरा होने से पहले ही एक रिकार्ड प्लेयर के साथ पुनः केबिन में दाखिल हुआ।

ब्लैकमेलर और भूपेन्द्रसिंह के बीच हुई बातों के एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से सुनने के बाद वामनराव की हरी आंखों की चमक अत्यधिक बढ़ गई थी।

उसके होंठों से प्रसन्नता से लबालब भरा एक शब्द निकला—"गुड !" फिर कई क्षणों तक सोचते रहने के बाद वह उसकी तरफ उन्मुख होकर बोला—"गाडगिल से कहना कि टेलीफोन पर होने वाली वार्ता को रिकॉर्ड करने का काम अभी जारी रखें। हो सकता है, अभी काम की कुछ और जानकारी मिलें।"

"यस सर !"

"और सुनो !"

दरवाजे तक पहुंच चुका कांस्टेबल ठिठककर पलटा।

"उसके बंगले की निगरानी कर रही टीम की कोई रिपोर्ट है ?"

"नहीं सर ! वैसे अब तक उनके यहां न तो कोई बाहरी आदमी आया और न ही वे लोग किसी से मिलने गये हैं।"

"ठीक है। दोनों काम इसी मुस्तैदी से चलते रहने चाहिए। और हां, गाडगिल को यहां भेजना।"

"ओ० के० सर !" कहने के साथ ही वह बाहर निकल चुका था।

▭ ▭

"दस लाख !" हथेली पर मुक्का जमाते हुए भूपेन्द्रसिंह बेबसी से झुंझलाये—"वह हरामजादा रिवॉल्वर व जेवरात वापस करने के एवज में दस लाख रुपये चाहता है।"

"दस लाख !" देवेन्द्र ने आश्चर्य से आंखें निकालीं। उसका मुंह खुला का खुला रह गया था।

"उफ् ! कुछ समझ में नहीं आ रहा है, क्या करूं ?" दोनों हाथों से सिर को थाम कर भूपेन्द्रसिंह ने जैसे खुद ही से कहा—"वह हरामजादा दस लाख से कम में सौदा करने को राजी नहीं है और बैंक बैलेन्स ज्यादा-से-ज्यादा लाख दो लाख होगा। ब्लैकमनी भी पांच छः लाख से ज्यादा नहीं

होगी। और…।"

"ड…डैडी…।" उसकी बात पूरी होने से पहले ही देवेन्द्र उत्साहित स्वर में बोल उठा—"क्या हम धोखे से उससे वे सबूत हासिल नहीं कर सकते ?"

"कैसे ?" उसे घूरते हुए वह धीरे से गुर्राया।

"उसे रुपया देने से पहले…।" देवेन्द्र ने अपनी उसी टोन में बोलना जारी रखा—"हम उससे यह शर्त तो रख ही सकते हैं कि पहले तुम रिवॉल्वर व लक्ष्मी के जेवरात दिखाओ, ताकि हमें यकीन हो सके कि वह वास्तव में तुम्हारे ही पास हैं। और जैसे ही वह हमें वे दोनों चीजें दिखायेगा, उसे दबोचकर हम दोनों चीजें उससे छीन लेंगे। इसके बाद वह हमारा क्या कर सकेगा ? ज्यादा-से-ज्यादा वह पुलिस को ही सूचना दे सकता है कि वे दोनों चीज हमारे पास हैं, लेकिन जब तक पुलिस यहां पहुंचेगी, दोनों चीजों को ठिकाने लगा चुके होंगे।"

"तुम्हारे सड़े हुए दिमाग से सड़ी हुई योजनाओं के अलावा और निकल भी क्या सकता है। अरे बेवकूफ, कोई भी ब्लैकमेलर तेरे जैसा मूर्ख नहीं होगा, जो यह सोचे बगैर, कि इन वस्तुओं को उससे छीनने का प्रयास भी किया जा सकता है, उसे लेकर हमें दिखाने आयेगा। अगर हमारी जिद पर उसे ऐसा करना भी पड़ा तो भी क्या वह ऐसा कोई इन्तजाम करके नहीं आयेगा कि लाख चाहने के बावजूद हम उससे उन वस्तुओं को न छीन सकें।"

"त…तो फिर ?"

"एक ही तरकीब है…।" कहते हुए उसके होंठों पर एक क्रूर मुस्कराहट थिरक उठी—"कि हम किसी बहाने से उससे यह पूछने में कामयाब हो जायें कि उन वस्तुओं के बारे में उसने किसी अन्य व्यक्ति को तो नहीं बताया है ?"

"लेकिन इससे फायदा क्या होगा ?"

"फायदा यह होगा कि हमारी इतने वर्षों की कमाई हुई दौलत पर वह हरामजादा कुंडली मारकर नहीं बैठ सकेगा।"

"क…कैसे ?"

"देखो…।" उसे समझाने वाले अन्दाज में भूपेन्द्रसिंह के होंठ हिले, "इतना तो निश्चित है कि उसने उन दोनों वस्तुओं को जहां भी रखा होगा, इस सावधानी और आत्मविश्वास

से रखा होगा कि वो आसानी से किसी को भी न मिल सकें।"

"करैक्ट !"

"और तब, जब उस स्थान को अन्य कोई जानता ही न होगा तो उसके इस दुनिया में न रहने से वे दोनों चीजें हमारे लिए भी महत्त्वहीन हो जायेंगी। कि नहीं ?"

"कहीं अ···आप···उसका खून करने का इरादा तो नहीं बना रहे हैं ?" देवेन्द्र ने हकलाये हुए स्वर में बड़ी मुश्किल से कहा।

"हां, दौलत बचाने का अब एकमात्र यही तरीका बचा है। अब जरा सोचो तुम, दस लाख कितनी बड़ी रकम होती है। उसके लिए एक नहीं, अगर हमें दो खून भी करने पड़े तो भी हमें हिचकिचाना नहीं चाहिये।"

"ल···लेकिन डैड।" कांपती हुई आवाज व थर्राते जिस्म के साथ वह बड़ी कठिनाई से बोल पाया—"अभी तो एक खून की वजह से ही हमारे सिर पर नंगी तलवार लटक रही है और आप हैं कि···।"

"वह भी तेरी बेवकूफी की वजह से वर्ना मुझसे सलाह लेकर लक्ष्मी की हत्या करते तो उसी तरह···।" कहते-कहते अचानक वह खामोश हो गये, फिर बात पलटते हुए बोले—"उसे खत्म करने के लिए मैंने एक ऐसा प्लान बनाया है कि फंसने की जरा भी गुंजाइश नहीं रहती है। सुनो···।" वह एकदम उसके कान के पास मुंह ले जाकर फुसफुसाया—"ब्लैकमेलर को नदी या समुद्र के किनारे किसी ऐसे निर्जन स्थान पर ले जायेंगे, जहां उसका खून करते वक्त न तो कोई हमें देखने वाला होगा और न ही लाश ठिकाने लगाने का झंझट रहेगा। लाश में वजनी पत्थर बांधकर हम उसे वहीं डुबो देंगे। लेकिन ऐसा तब करेंगे, जब उससे यह जानने में कामयाबी मिल जायेगी कि उसने दोनों वस्तुओं के बारे में न तो किसी अन्य व्यक्ति को बताया है और न ही वह किसी को आसानी से मिल सकती हैं।"

इस बार देवेन्द्र को जब कुछ न सूझा तो वह टुकर-टुकर भूपेन्द्रसिंह का चेहरा देखता रहा।

□ □

सिर से लेकर पैर तक काले लबादे में लिपटे एक व्यक्ति को वामनराव के आगे धकेलते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल उत्साह

भरे स्वर में बोला—"आपका अंदाजा बिल्कुल सही निकला सर! रात को यह शख्स भूपेन्द्रसिंह के बंगले में दाखिल होने की कोशिश कर रहा था। यह तो अच्छा हुआ कि आपकी सलाह पर दो सिपाहियों को लेकर मैं चुपचाप झाड़ियों में जा छुपा था, वर्ना वहां तैनात सिपाहियों की आंखों में धूल झोंकने में इसने कोई कसर नहीं रख छोड़ी थी।"

शतुरमुर्ग जैसी टांगों पर अपने दुर्बल जिस्म का भार डालते हुए वामनराव एक झटके से कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

फिर उस नकाबपोश के नजदीक पहुंचकर वह रुका और अपनी हरी व चमकदार आंखें नकाब के छेदों से झांकती उसकी सहमी आंखों में डालकर गुर्राहट भरे स्वर में बोला —"अपना यह बुर्का तुम खुद उतारोगे या हमें तकलीफ उठानी पड़ेगी?"

जवाब देने की जगह नकाबपोश का जिस्म ऐसे कंपकंपा उठा, जैसे उसे बहुत जोर की ठंड लग रही हो।

तभी!

वामनराव के दाहिने हाथ का पंजा बिजली की तेजी से उसके चेहरे की तरफ लपका। दूसरे ही क्षण काले कपड़े का एक टुकड़ा उसके हाथों में झूल रहा था।

सामने प्रफुल्ल खड़ा था। मशहूर ब्लैकमेलर प्रफुल्ल।

उसकी आंखों व चेहरे पर दहशत कीर्तन कर रहे थे।

बहुत कोशिश के बाद वह हकलाया—"म...म...मैं बेकुसूर हूं साहब। म...मुझे...।"

चटाक!

वामनराव के झन्नाटेदार थप्पड़ ने उसके आगे के शब्द गले में ही अटका दिये थे।

आंखों में भयानक खूंखारता लिए वामनराव दहाड़ उठा —"अब तेरे मुंह से जो शब्द निकलें, यह सोचकर निकलें कि तेरे सामने वह इंस्पेक्टर खड़ा है, जो तेरे और भूपेन्द्रसिंह के बीच होने वाली टेलीफोन वार्ता का न सिर्फ एक-एक शब्द सुन चुका है, बल्कि तुझे भी अच्छी तरह पहचान चुका है। इसलिए तेरा कोई भी झूठ यहां नहीं चलने वाला, समझ गया?"

"ज...ज...जी...म...मैं...।" एकाएक वह बदहवास हो

उठा और इतना ज्यादा आतंकित हो गया कि भरपूर कोशिश करने के बाद भी उसकी जुबान उसका साथ देने को तैयार नहीं हुई।

"बैठ जाओ।"

वामनराव का वाक्य पूरा होने से पहले ही उसका कंप-कंपाता जिस्म सामने रखी कुर्सी पर यूं ढेर हो गया, जैसे अगर और थोड़ी देर तक उसे बैठने को न कहा जाता तो वह फर्श पर ही ढेर हो गया होता।

"अब बोलो।" उसकी आंखों में झांकते हुए वामनराव गुर्राया—"हत्या में प्रयुक्त रिवॉल्वर व लक्ष्मी के जेवरात तुमने कहां रखे हैं?"

प्रफुल्ल ने जवाब देने से पहले, गले में अटके थूक को जोर से सटकने की कोशिश के साथ भय से थरथराते हुए कहा—"स···साहब। मैं वादा करता हूं कि आपसे झूठ नहीं बोलूंगा, लेकिन यह भी सच है कि मैं जो कुछ बताऊंगा, उस पर आप यकीन नहीं करेंगे। अतः आपसे विनती है कि मेरी पूरी बात सुनने के बाद ही सच और झूठ का फैसला करें।"

"ठीक है। बताओ···।"

फिर अपने यहां हुई चोरी, नकाबपोश का मिलना व उसके द्वारा रखे गए प्रयोजन की पूरी बात एक ही सांस में बताने के बाद प्रफुल्ल सांस लेने के लिए क्षण-भर को रुका। फिर बोला—"मुझे शक तो पहले ही था कि वह मुझे किसी चक्कर में फंसा रहा है, लेकिन फिर उसने ऐसे-ऐसे तर्क दिये कि मैं निरुत्तर हो गया और बिना किसी रिस्क के मिलने वाली रकम के लालच में आकर उसकी चाल में फंस गया।"

"अगर यह मान लिया जाए कि यह सब तुमने खुद नहीं, बल्कि किसी के कहने में आकर किया है लेकिन···।" प्रफुल्ल की आंखों में झांकते हुए वामनराव ने बोलना जारी रखा—"फिर गुलाब के गमले में जेवर छुपाए जाने एवं उनके गायब होने की जानकारी तुम्हें कहां से मिली?"

"यह मुझे उसी नकाबपोश ने बताया था।"

"अच्छा!" व्यंग्य भरी मुस्कराहट के साथ वामनराव के होंठ हिले—"इसका मतलब वे दोनों वस्तुएं उसी नकाब-

पोश के कब्जे में हैं।"

"ज···जी हां।"

"प्रफुल्ल।" अचानक उसका लहजा काफी सख्त हो उठा—"मैं पहले ही चेतावनी दे चुका हूं कि तुम झूठ बोलने की कोशिश नहीं करोगे। फिर भी अपनी जात तुमने दिखा ही दी। अब भी वक्त है, सच-सच बता दो वो जेवर और रिवॉल्वर कहां हैं? वर्ना मजबूरन मुझे कुछ ऐसा करना पड़ेगा, जिसके बाद तुम्हारे होंठ खुद-ब-खुद खुल जाएंगे।"

"म···मैं सच कह रहा हूं साहब। वह उस नकाबपोश के कब्जे में हैं।"

"ठीक है, मैं तुम्हारी बात मान लूंगा। लेकिन तब, जब तुम मेरे एक प्रश्न का सही-सही जवाब दे दोगे।"

"प···पूछिए साहब।"

"थोड़ी देर के लिए मान लिया जाए कि तुम किसी चीज के व्यापारी हो।"

प्रफुल्ल ने स्वीकृति में अपनी गरदन हिलाई, जैसे ब्लैक-मेलिंग का धन्धा छोड़कर सचमुच एक व्यापारी हो।

"और यह भी मान लो कि तुम जिस वस्तु का व्यापार करते हो, किसी कारणवश वह न तो तुम्हारे पास मौजूद हो और न ही भविष्य में मिलने की कोई उम्मीद हो।"

"ल···लेकिन···।" दुविधा में फंसे प्रफुल्ल के होंठों ने हरकत की—"यह कैसे संभव है कि व्यापारी के पास वह वस्तु ही न हो, जिसका वह व्यापार करता है। हां, उसके अभाव के कारण उसका स्टाक मौजूद न रहे, तो बात अलग है।"

"मैं मानता हूं, तुम्हारी बात अपनी जगह बिल्कुल दुरुस्त है, लेकिन इसके बावजूद यदि वह व्यापारी उस वस्तु का सौदा किसी ग्राहक से तय करता है तो उसे क्या कहा जाएगा?"

एक क्षण सोचने के बाद प्रफुल्ल ने बेहिचक कहा—"ऐसा करने वाला या तो कोई पागल होगा या फिर ऐसा बेवकूफ, जिससे बड़ा बेवकूफ शायद ही इस दुनिया में कोई दूसरा हो।"

"करैक्ट!" वामनराव खुशी से यूं चीख पड़ा, मानो प्रफुल्ल ने किसी ऐसी अनबूझ पहेली का हल ढूंढ़ लिया हो, जिसे लाख सिर पटकने के बाद भी वह नहीं समझ सका

था।

लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी आवाज सर्द ओलों में बदल गई—"किन्तु, तुम न तो पागल दिखाई दे रहे हो और न ही बेवकूफ।"

"क…क्या…?" प्रफुल्ल को अपनी खोपड़ी हवा में घूमती प्रतीत हुई। वह बड़ी मुश्किल से हकलाया—"त… तो क्या उस व्यापारी की तुलना आप मुझसे कर रहे हैं ?"

"तुम अब भी नहीं समझे।" जहरीली मुस्कराहट के साथ वामनराव ने बोलना जारी रखा—"वह जेवर व रिवॉल्वर अगर तुम्हारे कब्जे में न होते तो किसी भी कीमत पर तुम उनका सौदा तय करने की बेवकूफी नहीं कर सकते थे। किन्तु तुमने ऐसा किया है। अत: मैं डंके की चोट पर कह सकता हूं कि वे दोनों वस्तुएं तुम्हारे ही कब्जे में हैं और अब तुम्हारी खैरियत इसी में है कि उन्हें चुपचाप मेरे हवाले कर दो। वर्ना…।"

"न…नहीं…!" प्रफुल्ल चौंककर इतनी जोर से कुर्सी से उछला था, जैसे उसे बिजली का नंगा तार छू गया हो। अब उसे वामनराव की तरफ देखने मात्र से दहशत होने लगी थी।

उफ् ! इतना धूर्त कि घुमा-फिराकर मेरे मुंह से सच उगलवा ही लिया।

लेकिन प्रकट में वह घिघियाये हुए स्वर में बोला—"म …मुझे माफ कर दीजिए साहब। वास्तव में गुलाब के गमले से जेवर मैंने खुद ही निकाले थे, लेकिन मैं कसम खाकर कहता हूं कि वह रिवॉल्वर मेरे पास नहीं है।"

"जी तो चाहता है कि तेरी कोई बात सुने बगैर, पीट-पीटकर तुझे अधमरा कर दूं, किन्तु यह सोचकर अब तक शांत हूं कि शायद तू अब झूठ बोलने की कोशिश नहीं करे। तो अब यह बता कि रिवॉल्वर तेरे कब्जे में न होने के बावजूद तूने उसका सौदा किस बेस पर किया था ?"

"उ…उस नकाबपोश ने मुझे बता दिया था कि उसने वह रिवॉल्वर कहां छुपा रखा है।"

"कहां ?"

"लक्ष्मी के कमरे में मौजूद अलमारी के पेंदे में टेप की सहायता से चिपका रखा है।"

"झूठ…सफेद झूठ।" वामनराव गुस्से से चिल्लाया—"मैं खुद वहां चैक कर चुका हूं।"

"न…नहीं।" वह बदहवास होकर चीखा—"मैं सच कह रहा हूं। उसने मुझे वही जगह बताई थी। उसी के भरोसे तो दस लाख में मैंने सौदा तय किया था। मैंने सोचा था कि जेवर तो मेरे कब्जे में हैं ही और रिवॉल्वर का भी पता मालूम है।"

"अगर तुम वास्तव में सच बोल रहे हो, तो इसका मतलब हुआ कि उसने तुम्हें बेवकूफ बनाया। हत्यारे के लिए उस रिवॉल्वर की उपयोगिता तभी तक है, जब तक कि उस पर उसकी उंगलियों के निशान मौजूद हों। तुम्हारे बताए मुताबिक अगर सचमुच कोई नकाबपोश इस सारे झमेले में इन्वॉल्व है तो इसके पीछे उसका मकसद क्या है यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है। लेकिन इतना स्पष्ट है कि हत्यारे को वह भी बचाना हरगिज नहीं चाहता है। और शायद वह दौलत का तलबगार भी नहीं है, तो फिर सीधे-सीधे पुलिस को सूचना देकर रिवॉल्वर बरामद क्यों नहीं करवा देता?" कहते हुए उसने प्रफुल्ल और इंस्पेक्टर गाडगिल की तरफ इस दृष्टि से देखा, जैसे उनसे इसका उत्तर जानना चाहता हो?

लेकिन प्रफुल्ल की बोलती तो वैसे ही बन्द थी। और इंस्पेक्टर गाडगिल भी टुकर-टुकर इस तरह वामनराव की तरफ देख रहा था, मानो मन-ही-मन कह रहा हो कि यहां पहुंचकर जब आपका दिमागी घोड़ा ही लंगड़ा हो गया है तो मेरा तो पहले से ही बीमार होकर लेटा हुआ है।

कई क्षणों तक विचारमग्न रहने के बाद भी वामनराव के पल्ले जब कुछ न पड़ा, तो पनामा की सिगरेट होंठों में फंसाते हुए वह बोला—"खैर, उससे तो हम बाद में निपट लेंगे लेकिन पहले तुम ये बताओ कि जेवर उस गमले में छिपे हैं, यह तुमने कैसे जाना?"

"उस वक्त मैं उनके बगीचे में मौजूद झाड़ियों में ही छुपा हुआ बैठा था।"

"क्यों?" वामनराव सांप की तरह फुफकारा—"क्या तुम्हें ख्वाब आया था।"

"स…सुनिए तो साहब।" वह बुरी तरह भयभीत होकर बोला—"मैं रिवॉल्वर हथियाने के लिए वहां गया था,

क्योंकि मुझे भय था कि अगर संयोग से कभी वह उनके हाथ लग गया तो फिर मैं उन्हें ब्लैकमेल किस आधार पर करूंगा। लेकिन बाउंड्री फलांग कर अभी मैं लॉन में ही कूदा था कि अपनी तरफ आते कदमों की आहट सुनकर वहीं एक झाड़ी में दुबक गया था। फिर मैंने उन लोगों को गमले में कुछ छुपाते हुए देखा था। और फिर उन लोगों की आपसी बातचीत सुनने के बाद मैं यह भी जान गया था कि उस गमले में मरने वाली के जेवर छिपाए जा रहे थे। तभी पुलिस का नाम लेते हुए सब लोग अंदर की तरफ भाग उठे थे तो मैं भी डर गया था और वहां से उठकर भागने लगा था, किन्तु इससे पहले कि मैं बाउंड्री पर चढ़ने की कोशिश करता, किसी के कदमों की आहट सुनकर फिर छिप गया था। आगंतुक से काफी दूरी पर छिपा होने के कारण मैं उसका चेहरा नहीं देख सका। उसके जाने के बाद उस गमले में से जेवर निकालकर, मैंने उसे ज्यों-का-त्यों रख दिया और वहां से भाग खड़ा हुआ।"

प्रफुल्ल की बात खत्म होने के साथ ही वामनराव ने सिगरेट को ऐश-ट्रे में मसलते हुए कहा—"और अब वे जेवर तुम हमारे हवाले करोगे।" कहने के साथ ही वामनराव उठ खड़ा हुआ था।

▭ ▭

"तुम तो कह रहे थे कि जेवर गुप्त अलमारी में रखे हैं, फिर उस तकिये में क्या ढूंढ़ रहे हो ?"

"चाबियां।" कहते हुए प्रफुल्ल ने अपने बाईं तरफ दीवार पर टंगी तीन बाई तीन की एक 'पोर्ट्रेट' को उतार दिया।

रिक्त हुए स्थान पर लकड़ी की बनी छोटी-सी एक अलमारी नजर आ रही थी।

फिर उसने वह अलमारी खोलकर जेवरों की पोटली वामनराव की तरफ बढ़ा दी।

वह पोटली इंस्पेक्टर गाडगिल के हाथों में देते हुए वामनराव बोला—"इसे सावधानी से खोलो, लेकिन इतना ध्यान रखकर कि किसी भी जेवर का स्पर्श नहीं होने पाए, क्योंकि काफी संभावना है कि इन पर लक्ष्मी के जिस्म से उतारने वाले की उंगलियों के निशान अभी तक मौजूद हों।"

"और हां।" प्रफुल्ल की तरफ घूमते हुए वामनराव ने पूछा—"तुमने इन जेवरों को छूने की कोशिश तो नहीं की ?"

"नहीं साहब, मैंने तो इन्हें खोलकर भी नहीं देखा है।"

तब तक इंस्पेक्टर गाडगिल पोटली को खोल चुका था।

लेकिन पोटली के खुलते ही, जहां दोनों की गुस्से से घूरती निगाहें उसके चेहरे पर टिक गई थीं, वहीं उसकी भी आंखें आश्चर्य से बाहर निकल आने को व्याकुल हो उठी थीं।

"नहीं···।" चीखने के साथ ही हकलाया—"य···ये···ये···।"

"हां-हां, कह दो···कह दो···।" उसे खा जाने वाली निगाहों से घूरते हुए इंस्पेक्टर गाडगिल चिल्लाया—"कि ये भी उसी नकाबपोश का काम है। जब तुमने एक काल्पनिक नकाबपोश पैदा कर ही लिया है तो यह करतूत भी उसके मत्थे मढ़ने में इस तरह घबरा क्यों रहे हो ?"

"सर !" वामनराव को संबोधित करते हुए उसने बोलना जारी रखा—"आप इस आदमी को गलत ढंग से ट्रीट कर रहे हैं। अगर ऐसे लोगों से सच्चाई कबूलवानी हो तो पहले लातों से इनकी सेवा करनी चाहिए।"

पोटली में मौजूद पत्थरों के साथ एक कागज की चिट को उठाकर पढ़ते हुए वामनराव पलटा। और फिर अपनी बिल्ली जैसी आंखें प्रफुल्ल के बदहवास एवं आतंकित चेहरे पर टिकाने के साथ, अपनी चिरपरिचित सांय-सांय-भरी आवाज में बोला—"लेकिन जहां तक मेरा अन्दाजा है, यह सच बोल रहा है।"

"क···क्यों सर ?"

"वह इसलिए, क्योंकि अपनी पूरी पोल पुलिस के सामने खुल जाने के बाद, ब्लैकमेलिंग जैसे पेशे से जुड़े अधिकांश व्यक्तियों के पास इतना दिलगुर्दा नहीं बचता कि वह पुलिस को उल्लू बनाने की जुर्रत कर सके। इसके अलावा इसका यह कहना भी ठीक है कि इसने पोटली खोलकर भी नहीं देखी थी।"

"यह बात आप इतने विश्वास के साथ कैसे कह सकते

हैं ?" इंस्पेक्टर गाडगिल हैरानी से बोल उठा।

"क्योंकि गमले की लाल मिट्टी इसके ऊपर अभी तक मौजूद है। अगर इसने इसे खोला होता, तो इस पर लगी मिट्टी को पूरी तरह झाड़ने के बाद ही इसे अलमारी में रखता। अतः साफ जाहिर है कि इसने बड़ी हड़बड़ी में यह देखे बिना ही इसे अलमारी में बन्द कर दिया था कि उसमें जेवर मौजूद हैं भी या नहीं।"

"इस कागज में क्या लिखा है सर ?" सहमति में सिर हिलाते हुए उसने उसके हाथ में थमे कागज की तरफ इशारा करते हुए कहा था।

"लो, खुद ही देख लो ?"

आंखों में असमंजस के भाव लिए इंस्पेक्टर गाडगिल ने वह कागज लेकर खोला, जिसमें लिखा था।

'पत्थरों से सिर टकराने वाले को मूर्ख कहा जाता है।'

आश्चर्य से फैलकर चौड़ी हुई अपनी आंखों को उस कागज पर लिखी इबारत पर टिकाए, इंस्पेक्टर गाडगिल जैसे स्वप्न में बड़बड़ा उठा—"इ···इसका क्या मतलब हुआ ?"

"मतलब वही है, जो लिखा गया है ? यानी कि पढ़ने वाला मूर्ख है।"

वामनराव के इस विनोदपूर्ण कटाक्ष पर जहां वह बुरी तरह झेंप गया, वहीं अब तक खामोश खड़े सिपाही अपने मुंह से निकलने वाले कहकहों को रोक नहीं सके थे।

किंकर्तव्यविमूढ़ अवस्था में खड़ा प्रफुल्ल भी ही-ही करके अपनी बत्तीसी का प्रदर्शन करने लगा था।

▭ ▭

सजग कानों व चौकन्नी आंखों से स्थिति का जायजा लेने के बाद वह नकाबपोश बिल्ली की तरह दबे पांव प्रफुल्ल के बेडरूम में दाखिल हुआ।

जीरो वॉट की मद्धिम रोशनी में, चादर ओढ़े पलंग के ऊपर एक व्यक्ति लेटा हुआ दिखाई दे रहा था।

बेड के नजदीक पहुंचकर एक क्षण के लिए वह नकाबपोश ठिठका, लेकिन अगले ही क्षण अपना एक हाथ बढ़ाकर उसने झटके से उसकी चादर खींच ली।

लेकिन चादर के हटते ही उसके मुंह से घुटी-घुटी-सी

चीख निकल पड़ी और वह सहमकर पीछे हट गया।

प्रफुल्ल की जगह उसे जिस व्यक्ति का चेहरा दिखाई दे रहा था, यकीनन वह वामनराव था।

उसकी बिल्ली जैसी आंखें नकाबपोश पर ही टिकी थीं।

आश्चर्य के सागर में डुबकी लगाते हुए अभी वह कुछ समझ भी नहीं पाया था कि वामनराव का दुबला जिस्म बंदर की तरह उछलकर लोहे की रॉड की तरह उसके ठीक सामने तनकर खड़ा हो गया था। होलेस्टर से निकलकर रिवॉल्वर कब उसके हाथ में आ गया। यह उसके फरिश्ते तक न जान सके।

"मिस्टर नकाबपोश।" रिवॉल्वर की नाल उसके सीने पर टिकाते हुए उसकी सांय-सांय-भरी गुर्राहट उभरी—"अब तुम्हारा मदारी वाला रोल खत्म हो चुका है। मुझे पूरी उम्मीद थी कि प्रफुल्ल से तुम जो काम कराना चाहते थे उसकी प्रगति के बारे में उससे पूछताछ करने यहां अवश्य आओगे और अब···।" कहते हुए उसे अपना वाक्य अधूरा छोड़ देना पड़ा। क्योंकि एकाएक चार सिपाहियों ने प्रकट होकर उस नकाबपोश को दबोच लिया था, जो फ्लैट के विभिन्न हिस्सों में छुपे इसी मौके का इन्तजार कर रहे थे।

तदुपरांत सिपाही उसकी तलाशी लेने लगे। तब तक वामनराव ने एक सिगरेट सुलगाकर अपने होंठों से लगा ली थी।

फिर अपनी चिरपरिचित स्टाइल में वामनराव नकाबपोश से कहने लगा—"अपना परिचय बताने के साथ-साथ एक ही सांस में यह भी बता डालो कि तुम अब तक कौन-सी कबड्डी खेल रहे थे? लेकिन खबरदार···अगर मुंह से एक लफ्ज भी झूठ निकाला तो···। इतना याद रखना कि चाहे अदालत तुम्हें सजा दे या न दे, लेकिन मैं तुम्हें ऐसी सजा दूंगा, कि तुम गूं-गां करने के काबिल भी न रह सकोगे।"

सुनकर उस अधेड़ नकाबपोश का जिस्म हवा में हिलते सूखे पत्ते की तरह कांप उठा था। फिर भय से बुरी तरह फड़फड़ाते हुए उसके होंठ हिले—"म···मैं झूठ नहीं बोलूंगा साहब।"

थोड़ी देर तक लम्बी-लम्बी सांसें लेकर उसने होंठ फिर खोले—"म···मेरा नाम राघव है।"

"अच्छा है, आगे बको।"

"ज...जी...और...और...।" कहते-कहते अचानक वह इस तरह खामोश हो गया, जैसे वामनराव की धमकी से ही गूंगा बन गया हो।

"इसे एक गिलास पानी दो।" उसकी घबराहट भांपकर वामनराव ने एक सिपाही को पानी लाने का आदेश दिया।

शीघ्र ही सिपाही गिलास में पानी लेकर लौटा। एक ही सांस में वह पूरा गिलास ऐसे डकार गया जैसे उसे कई दिनों से पानी के दर्शन ही न हुए हों।

फिर आस्तीन से अपने होंठों को पोंछते हुए वह बोला—"मैं पहले आपको यह बताना चाहता हूं कि मैंने ऐसा क्यों किया।"

थोड़ा रुकने के बाद वह पुनः बोला—"दो वर्ष पहले तक मैं भूपेन्द्रसिंह का माली हुआ करता था। वहां मैं बचपन से ही नौकरी कर रहा था। नौकरी छोड़ने से पहले तक मैं मालिक को अपना अन्नदाता ही नहीं, बल्कि भगवान समझता था। इसलिए बंगले को छोड़कर कहीं घूमने-फिरने तक न जाता था। गांव में मेरा ऐसा कोई नहीं था, जिसे अपना समझकर मैं वहां जाने की कोशिश करता। इसलिए लगभग पैंतीस साल का होने के बाद भी अविवाहित था। एक दिन दूर के एक रिश्तेदार की बीमारी की खबर पर जब कई वर्षों बाद मैं अपने गांव पहुंचा, तो जान-पहचान के कुछ लोगों के कहने पर वहीं की एक गरीब लड़की सावित्री से विवाह कर उसे यहां ले आया।

उम्र में असमानता होने के बावजूद एक-दूसरे को हम जान से भी ज्यादा चाहते थे और खुशी-भरे हमारे दिन पंख लगाकर उड़ते चले जा रहे थे कि उस दिन...।" कहते-कहते राघव की आंखें छत से ऐसे जा टिकीं जैसे उसे वहां कोई फिल्म दिखाई दे रही हो। उसके होंठ फिर फड़कने लगे।

"बगीचे और बंगले का पूरा काम निपटाने के बाद जैसे ही मैं अपने क्वार्टर में पहुंचा, सावित्री को सुबक-सुबककर रोते देख हैरान रह गया और अधीर स्वर में बोला—"क्या हुआ सावित्री। यहां किसी तरह की तकलीफ है तुम्हें या फिर मुझसे कोई गलती हुई है ?"

तभी आंसुओं से भरा चेहरा उठाकर सावित्री ने मेरी

तरफ देखा और दौड़कर मेरे गले से लिपटते हुए और जोर से बिलख उठी। फिर मेरे काफी समझाने-बुझाने के बाद बोली —"अब मैं यहां एक पल भी नहीं रह सकती। अगर आपको मुझसे जरा भी प्यार है तो फौरन यहां से नौकरी छोड़कर कहीं और चले चलो।"

हैरान होकर मैंने पूछा—"लेकिन क्यों… ? तुम्हें यहां किस चीज की कमी है ? और फिर अगर मैंने ये नौकरी छोड़ दी, तो इस शहर में मेरा कोई परिचित भी नहीं, जो मुझे नौकरी देगा।"

"मैं कुछ नहीं जानती। अब यहां एक पल भी गुजारना मेरी बर्दाश्त के बाहर है।"

यही बात बार-बार कहने से मैं भी गुस्से में चिल्लाया—"तो तुम भी कान खोलकर सुन लो। जब तक तुम इसका कारण नहीं बताओगी, यहां से नौकरी नहीं छोड़ूंगा। इतने वर्षों की वफादारी पर बिना किसी कारण मैं कलंक नहीं लगा सकता।"

"तो ठीक है।" वह शेरनी की तरह बिफरकर बोली —"वफादारी के नाम पर आपको अपने मालिकों के तलुए चाटने हैं तो शौक से चाटिए। लेकिन अगर आप यह चाहते हैं कि मैं आपके मालिकों की बेहूदी व अश्लील हरकतों को सहन करती रहूं, तो यह मुझसे नहीं होगा। मैं आज ही अपने गांव जा रही हूं। वहीं रूखी-सूखी खाकर गुजारा कर लूंगी, पर किसी भी कीमत पर यह अनाचार सहन नहीं करूंगी।"

सुनकर मुझे झटका-सा लगा ? फिर हैरानी-भरे स्वर में मैं कह उठा—"त…तू होश में तो है ?"

"हां, मैं तो होश में हूं, लेकिन आप शायद नहीं हैं, होते तो उस दिन जब आपके सामने ही छोटे मालिक ने मेरी बांह पकड़ ली थी, सबकुछ समझ जाते।"

"त…तू सचमुच पागल हो गई है। अरी पगली, उम्र में मुझसे छोटे होने के नाते छोटे मालिक मुझे अपने बड़े भाई के समान समझते हैं। इस नाते तू उनकी भाभी हुई या नहीं ? और देवर भाभी के रिश्ते में हंसी-मजाक करना या बांह पकड़ लेना कोई ऐसी हरकत तो नहीं है, जिसे अश्लीलता की दृष्टि से देखा जाए।"

"हां-हां। मैं तो पागल हूं। कड़वी सच्चाई बताने वाला पागल ही कहलाता है। उसी दिन तो उसने बांह पकड़ी थी, लेकिन आज जानते हो उसने क्या किया ?"

"क···क्या किया ?" मैंने लरजते हुए पूछा।

"मुझे बेआबरू करने में आज उसने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। वह तो संयोग से उस वक्त बड़े मालिक आ गए और मैं बाल-बाल बच गई। नहीं तो मुंह दिखाने के काबिल न रहती।"

"क···कब ? कैसे हुआ यह सब ?"

"जब आप बाजार गए थे उस वक्त मैं स्नान कर रही थी। तभी, पता नहीं वह राक्षस कब मेरे पीछे पहुंच गया और झपटकर अचानक मुझे दबोच लिया। अपने बचाव के लिए हाथ-पैर पटकते हुए जब मैं चीखने लगी तो वह नीच कहने लगा था—मेरी बात मान जाओगी तो रानी की तरह ऐश करोगी। उस भिखारी राघव के पास क्या है ? शक्ल न सूरत, न बांका-जवान और न ही धन-दौलत, जो तुम्हें खुश रख सके। मेरे रोने-गिड़गिड़ाने का भी उस शैतान पर कोई असर नहीं हो रहा था। तभी किसी मोटर की आवाज सुनकर वह भाग खड़ा हुआ था।"

"प···पानी !" राघव एक दीर्घ निःश्वास लेता हुआ बोला।

▭ ▭

राघव पुनः बोलने लगा था —"उस दिन तो मैंने उसे यह समझा-बुझाकर मना लिया था कि उसकी शिकायत बड़े मालिक से करूंगा। वह उसे ऐसी सजा देंगे कि भविष्य में वह उस की तरफ कभी आंख उठाकर भी नहीं देखेगा। लेकिन, अपने दब्बू स्वभाव के कारण, बाद में मैंने सोचा कि क्यों बेवजह मामले को बढ़ाऊं। अगर. देवेन्द्र को थोड़ी-बहुत भी लाजशर्म होगी तो सावित्री के तीव्र विरोध को देखकर वह दोबरा ऐसी हरकत नहीं करेगा। लेकिन ऐसा सोचकर मैंने अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी भूल की थी। जिसका नतीजा यह निकला कि एक सीधा-सादा माली आपके सामने मुजरिम बना खड़ा है।"

"हूंह !" उसके प्रत्येक शब्द को ध्यान से सुन रहे बामनराव ने दिलचस्पी-भरे स्वर में पूछा—"आगे क्या

हुआ ?"

"आगे क्या हुआ, यह तो मैं नहीं जानता साहब, लेकिन इतना जरूर जानता हूं कि एक दिन बंगले के काम से छुट्टी मिलने के बाद जब मैं अपने क्वार्टर में पहुंचा तो सावित्री वहां नहीं थी। वह कहां गई ? यह मैं आज तक नहीं जान सका, लेकिन क्यों गई ? इसका कारण अभी तक मेरी जेब में मौजूद है।"

"दिखाओ ?"

राघव ने अपनी जेब से तह किया हुआ, मुड़ा-तुड़ा एक कागज निकाला तथा उसे इंस्पेक्टर वामनराव की तरफ बढ़ा दिया।

कागज की हालत बता रही थी कि काफी दिनों से वह इसी हालत में रखा रहा था। उसकी लिखावट बड़ी भद्दी और व्याकरण की कमियों से भरी हुई थी।

मेरे प्राणनाथ !

आपने मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उस दिन के बाद से तो उस शैतान की हरकतें इतनी बढ़ गई थीं कि मौका मिलते ही वह मुझसे छेड़छाड़ करने लगा था। आपको बताकर भी कोई फायदा न होना अतः खून के घूंट पीकर खामोश रहने के सिवा और कोई रास्ता नहीं था। आपको छोड़कर गांव जाने का मन भी नहीं करता था। मेरी विवशता और आपकी उदासीनता ने उस शैतान का मनोबल इतना बढ़ा दिया था कि अंततः एक दिन वह अपने कुत्सित इरादे में कामयाब हो गया। अपने लुट जाने की बात, मैं किसी को बता न सकूं, इसके लिए उसने चाकू की नोक पर मुझसे कई ऐसे प्रेमपत्र भी अपने नाम लिखवाये, जिनकी मदद से वह साबित कर सके कि जो कुछ भी हुआ, मेरी रजामंदी से हुआ। इसके अलावा पता नहीं कैसे, उस शैतान ने मेरी कुछ ऐसी तस्वीरें भी खींच ली थीं, जिन्हें देखने के बाद हर कोई मुझे ही दोषी ठहराता। अतः उसकी कठपुतली बनकर आपके साथ छल करते रहने पर मुझे मजबूर होना पड़ा। फिर भी यदि यह सिलसिला बेरोक-टोक यूं ही चलता रहता तो आपको धोखे में रखकर मैं हमेशा

आपके विश्वास की हत्या करती रहती। लेकिन इसके बाद जो हुआ उसकी तो आप कल्पना भी नहीं कर सकते। जिस बड़े मालिक को आप अपना भगवान समझते थे, उस भगवान ने भी एक दिन जबरदस्ती मेरे साथ अपना मुंह काला किया। अब मैं इस नर्क में रहने का साहस नहीं कर सकती। अतः इस पत्र की सहायता से क्षमा मांगते हुए मैं हमेशा के लिए आपको छोड़कर जा रही हूं। इतना घिनौना चेहरा लेकर मैं आपका सामना नहीं कर सकती। अतः आपसे बगैर मिले ही जा रही हूं। आशा है आप इस अभागी को माफ कर देंगे।

आपकी
—अभागी सावित्री

पूरा पत्र पढ़कर वामनराव की हरी आंखें अंगारों के समान दहक उठीं और उसके मुंह से गुर्राहट-भरा स्वर निकला—"इन शैतानों को इनके किए की सजा जरूर मिलेगी। लेकिन क्या उस वक्त तुमने इसकी शिकायत पुलिस से की थी ?"

"नहीं साहब, मैं गरीब आदमी यह सोचकर वहां जाने की हिम्मत नहीं जुटा सका कि पुलिस भी उन्हीं का साथ देती है, जिनके पास दौलत होती है। उस वक्त तो मुझे सिर्फ इतना ही सूझ रहा था कि मैं दोनों बाप-बेटों का खून कर दूं। लेकिन यह सोचने के बाद अपने आप पर काबू पा लिया कि ऐसा करने के बाद, मैं न तो कानून से बच पाऊंगा और न ही सावित्री की खोज करके उससे मिलने की उम्मीद रहेगी। इसलिए मैंने सोचा कि पहले सावित्री को तलाश करूं। बदला लेने के बारे में बाद में सोचूंगा। किन्तु दो वर्ष तक भटकने के बाद भी सावित्री को नहीं खोज सका। हां, दो वर्षों में जरायम पेशा लोगों से सम्बन्ध बनाने, अपराध करने व कानून से अपने को बचाने की जानकारी प्राप्त करने में मैं काफी हद तक सफल रहा।"

राघव धाराप्रवाह बोलता रहा—"मेरा इरादा उन दोनों का कत्ल करने का था। जब मुझे पूरी तरह यह यकीन हो गया कि अब मैं आसानी से कानून से आंख-मिचौनी का खेल खेलने में समर्थ हूं, तो उस दिन पूरी तैयारी के साथ मैं

भूपेन्द्रसिंह के बंगले में दाखिल हुआ। लेकिन वहां पहुंचने पर मैंने देखा कि एक रहस्यमय साया मुझसे पहले ही पाइप की सहायता से ऊपर चढ़ रहा था। अभी मैं उसके बारे में सोच-विचार कर रहा था कि वह बड़ी हड़बड़ी में नीचे उतरा व तुरन्त वहां से भाग खड़ा हुआ। उसकी हड़बड़ी का कारण जानने के लिए जब मैं ऊपर पहुंचा तो यह देखकर दंग रह गया कि खून से लिथड़ा चेहरा लिए लक्ष्मी की लाश कुर्सी के साथ लुढ़की हुई है। उससे थोड़ी दूरी पर ही मेरे दोनों दुश्मन खड़े थे। देवेन्द्र के पैरों के पास ही एक 'रिवॉल्वर पड़ी थी। तभी वहां सरला आ गई और लाश देखकर चीख मारती हुई बेहोश हो गई। उसे उठाकर जैसे ही बाप-बेटे कमरे के बाहर निकले, उनसे बदला लेने का एक बेहतरीन ख्याल बिजली की तरह मेरे दिमाग में कौंध गया और मैंने सोचा कि अब मैं अपने हाथ उनके गंदे खून से रंगे बिना ही उनसे प्रतिशोध ले सकता हूं। वहां पड़ी रिवॉल्वर और लाश देखकर मुझे इतना अंदाजा तो हो ही गया था कि उसकी हत्या उन दोनों शैतानों में से ही किसी ने की है। और इतने दिनों से अपराधों के बारे में जानकारी रखने की वजह से मैं यह भी बखूबी समझ सकता था कि उस रिवॉल्वर पर हत्यारे की उंगलियों के निशान भी मौजूद होंगे। और अगर वह रिवॉल्वर पुलिस को बरामद हो जाता है तो वह किसी भी कीमत पर अपने आपको नहीं बचा सकेंगे। रिवॉल्वर पर मौजूद हत्यारे की उंगलियों के निशान इतना बड़ा सबूत था कि उसके आधार पर मैं कभी भी लक्ष्मी के हत्यारे को फांसी पर चढ़वा सकता था। लेकिन मैं यह भी चाहता था कि जब वह पुलिस की गिरफ्त में फंसे तो उसके पास दौलत का वह भंडार भी न रहे, जिसके बल पर वह कानून को खरीदने की कोशिश कर सकता था। और उनकी वह दौलत रिवॉल्वर के बूते पर ब्लैकमेल कर मैं आसानी से छीन सकता था। इस तरह धीरे-धीरे मैं थोड़े ही दिनों में उनकी सारी दौलत चूस लेता। किन्तु मैं यह भी जानता था कि मैं अपने इस इरादे में तभी कामयाब हो सकता था, जबकि उन्हें ज्यादा-से-ज्यादा आतंकित करके उनके दिल में यह डर बिठा देता कि उनमें से एक की गर्दन मेरे हाथों में है। और मैं जब चाहूं, थोड़ा दबाव डालकर उसका जीवन छीन

सकता हूं। अतः लक्ष्मी की लाश को वहां से हटाकर सामान रखने वाले कमरे में छुपाते वक्त मैंने उसके एक पैर की पाजेब निकालकर इस तरह मेज के पाए के नीचे छुपा दी थी, जिससे कि वे लोग उसे ढूंढ न पायें, पर वह पुलिस को जरूर बरामद हो जाए। इससे यह फायदा होता कि पुलिस को अपने ऊपर शक करता देख वे मेरी हर मांग को पूरा करने के लिए विवश हो जाते। फिर इतना सब करने के बाद, अभी मैं वहां से निकलने का इरादा बना ही रहा था कि पुलिस वहां पहुंच गई। मुझे लगा कि अब इन्हें ब्लैकमेल करने वाली मेरी योजना शायद बेकार हो जाएगी। लेकिन पुलिस को वापस जाता देख मैं विश्वास नहीं कर सका। फिर मैंने एक विचित्र नक्शे द्वारा उनसे लाश बरामद करवाई। इस दौरान उनकी बातों को सुनने के बाद मैं यह भी जान गया कि वह हत्या देवेन्द्र ने की थी। लाश ठिकाने लगाने के बाद जब उन लोगों ने उसके जेवरात गमले में छुपाए, तब भी मैं वहीं मौजूद था। फिर आप आ गए। आपके अन्दर दाखिल होने के बाद मैंने जेवर निकाल लिए थे, लेकिन उस वक्त प्रफुल्ल भी झाड़ियों में छुपा हुआ था। यह मैं छत से ही देख चुका था। अतः इस ढंग से खुले चेहरे के साथ वहां पहुंचा, जिससे अगर वह मुझे देख भी ले तो यही समझे कि मैं यहां का माली हूं। उसके छुपे होने से मैं यह भी बखूबी समझ गया था, कि उसका इन जेवरों को हथियाने का इरादा था। अतः उसे बेवकूफ बनाने के लिए मैंने एक कपड़े में थोड़े से पत्थर बांधकर उस गमले में रख दिए व जेवरों की पोटली को अपने कब्जे में कर लिया। अब तक सब काम मेरी योजना के मुताबिक ठीक ढंग से चल रहा था। लेकिन मेरी बदकिस्मती थी कि मैं अपने इरादे में कामयाब न हो सका। लेकिन देवेन्द्र को तो आप उसके किए की सजा दिलवाकर रहेंगे, इसका मुझे पूरा यकीन है। किन्तु अफसोस मुझे इस बात का है कि भूपेन्द्र नाम का वह नाग, अपनी दौलत के बल पर अब भी गरीबों को डसता रहेगा। मुझे जिंदगी भर इसी बात का पछतावा रहेगा कि मैं उसकी दौलत छीनकर उसे जीते-जी मौत न दे सका।"

कहने के बाद जब वह खामोश हुआ तो वामनराव उसकी आंखों में आंखें डाले कुछ देर तक उसे देखता रहा,

फिर बोला—"यह सब तो ठीक है, लेकिन इस चक्कर में प्रफुल्ल को उलझाने से तुम्हें क्या फायदा पहुंचा? उसकी जगह भूपेन्द्रसिंह को तुम खुद भी तो ब्लैकमेल कर सकते थे?"

"फायदा पहुंचने की उम्मीद तो थी साहब, लेकिन पहुंचा नहीं?"

"क्या मतलब?"

"पहली बात तो मुझे दौलत में उतनी दिलचस्पी नहीं थी, जितनी कि अपने दुश्मन से प्रतिशोध लेने की।" हताश स्वर में राघव ने बोलना जारी रखा—"दूसरी बात, मैं यह नहीं चाहता था कि अपने दुश्मन को ब्लैकमेल करने के दौरान मैं कोई गलती कर बैठूं, जिससे कि पुलिस मुझ तक पहुंचने में कामयाब हो जाए। अतः मैंने यह सोचकर प्रफुल्ल को इस काम के लिए नियुक्त किया था कि ब्लैकमेलिंग इसका पेशा होने के कारण यह उस काम को बखूबी अंजाम दे सकता था। अगर फिर भी, संयोग या अपनी किसी गलती से वह पकड़ा जाता तो उससे मेरी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। क्योंकि उससे नकाबपोश के रूप में मिलने की वजह से पुलिस को न तो वह मेरा हुलिया ही बता सकता था और न नाम-पता ही। फिर उसकी गिरफ्तारी की बात जान लेता तो मैं इस तरफ झांकता तक नहीं, लेकिन आपने इतने गुपचुप तरीके से उसे गिरफ्तार किया कि मुझे पता तक न चल सका।"

"हूं! और पुलिस को वह गुमनाम टेलीफोन तुमने किया था या उस रहस्यमय साये ने, जो तुमसे पहले वहां पहुंचा था?"

"मैं तो उस वक्त बंगले में ही मौजूद था। फिर मैं ऐसी बेवकूफी क्यों करता कि खुद ही फंस जाता। यह शायद उसी का काम रहा होगा।"

"तुम उसके बारे में कुछ अंदाजा लगा सकते हो, कि वह कौन हो सकता है?"

"मैं क्या अंदाजा लगा सकता हूं साहब, मुझसे बेहतर तो आप ही लगा सकते हैं?"

"खैर, अब उससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। अब तुम यह बताओ कि तुमने वह रिवॉल्वर व जेवर कहां रखे हैं?"

"मैंने उन्हें बड़ी सावधानी से उन्हीं के बंगले में ही छिपा दिया था।"

"क···क्या···?" बुरी तरह चौंककर वामनराव कह उठा—"वहां तो मैं खुद चैक कर चुका हूं। और क्या उन लोगों ने रिवॉल्वर की तलाश में बंगले का चप्पा-चप्पा न छान मारा होगा? ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि कोई अपने ही बंगले के किसी ऐसे स्थान से परिचित न हो, जहां कोई चीज छुपाई जा सके।"

"लेकिन ऐसा ही हुआ है साहब! मैं उन्हें अभी बरामद करवा सकता हूं।"

जवाब देने की जगह होंठों पर तपिश दे रहे सिगरेट के टुकड़े को फर्श पर फेंककर, उसे अपने जूते से कुचलते हुए वामनराव एक झटके से उठकर खड़ा हो गया।

□ □

"ड···डैड···डैड···!"

एक जोरदार चीख कानों से टकराते ही लॉन में सुबह की मीठी धूप का आनन्द ले रहे भूपेन्द्रसिंह चौंककर उछल पड़े।

उन्होंने आवाज की दिशा में देखा।

बुरी तरह बदहवास देवेन्द्र उसी तरफ भागा आ रहा था।

नजदीक पहुंचकर वह रुका और कुत्ते की तरह हांफता हुआ हकलाया—"ड···डैडी···व···वो···।"

उसकी 'वो-वो' और लम्बी खिंचती देखकर वह झल्लाए हुए स्वर में चीखे—"अबे अब कुछ बकेगा भी। राघव के क्वार्टर में तुझे उसका भूत तो नजर नहीं आ गया?"

इंकार की मुद्रा में अपने सिर को जोर-जोर से हिलाते हुए उसने अपना वही राग पुनः अलापा—"वो···वो···।"

"खामोश नालायक।" बुरी तरह भिन्नाये हुए वह हलक फाड़कर चीख उठे और उसका गिरेबान थामते हुए गुर्राये—"अब अगर साफ-साफ न बोला तो तुझे इसी वक्त पागलखाने में भर्ती करवा दूंगा।"

"न···नहीं···!" गले से घिघियाया हुआ स्वर निकालने में उसे इतनी अधिक कठिनाई हुई, जितनी कठिनाई तो शायद एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाले को भी नहीं हुई

होगी। बोला—"व···वहां ल···लक्ष्मी के जेवर और मेरा रिवॉल्वर एक टीन के डिब्बे में रखे हुए हैं।"

"क···क्या ?"

"हां डैड ! मैं अपनी आंखों से देखकर आ रहा हूं।"

"तो इसमें घबराने की क्या बात है बेवकूफ।" वह उसे दुत्कारते हुए बोला—"यह तो खुशी की बात है। अब न तो पुलिस तेरा कुछ बिगाड़ सकती है और न ही वह हरामजादा ब्लैकमेलर। चलो, अब जल्दी से उसे ठिकाने लगा देना चाहिए, वरना पुलिस के कुत्ते सूंघते-सूंघते न जाने कब यहां पहुंच जायें।"

"अब उसकी कोई जरूरत नहीं राठौर साहब ! पुलिस के कुत्ते सूंघते-सूंघते न सिर्फ तुम्हारी गर्दन तक पहुंच चुके हैं, बल्कि तुम जिससे निजात पाने का इरादा बना रहे हो, उसके बारे में भी जान गए हैं।"

इन शब्दों के कान से टकराते ही दोनों फिरकनी की तरह पीछे घूमे।

अपनी शतुरमुर्ग जैसी टांगों के ऊपर खाकी वर्दी में लिपटे दुबले जिस्म के साथ वहां वामनराव खड़ा था।

उसके पीछे इंस्पेक्टर गाडगिल व सिपाहियों का एक पूरा जत्था उसी तरफ चला आ रहा था। उन लोगों ने जीप शायद बंगले के गेट पर ही रोक दी थी।

खुशी के मद में चूर बाप-बेटों को काटो तो खून नहीं।

आतंकित चेहरे व फटी हुई आंखों के साथ दोनों इस तरह उसके लम्बूतरे चेहरे की तरफ देखे चले जा रहे थे, मानो वह एक गधा हो और धीरे-धीरे उसके सिर से सींग निकल रहे हों।

वामनराव ने अपने साथ आए सिपाहियों एवं फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट को अपना काम करने का आदेश दे दिया।

और तब !

जब रिवॉल्वर और जेवरात पर पाए गए उंगलियों के निशानों को देवेन्द्र की उंगलियों से मिला लिया गया तो···।

वामनराव का आदेश गूंजा—"इसे हथकड़ी पहना दो।"

"म···मेरा बेटा बेकसूर है।" सहसा भूपेन्द्रसिंह चिल्लाए—"किसी ने हमें फंसाने के लिए इन वस्तुओं को यहां प्लांट कर दिया होगा।"

"हां-हां ऐसा भी हो सकता है। लेकिन अगर तुम मेरे प्रश्नों के उत्तर सही-सही देने में सफल रहते हो तो मैं वादा करता हूं कि तुम्हारे बेटे को छोड़ दूंगा।"

"क···कैसे प्रश्न ?"

जहरीली मुस्कराहट के साथ वामनराव बोला—"सबसे पहला तो ये कि यह तुम किस आधार पर कह सकते हो कि यहां इन वस्तुओं को किसी ने प्लांट किया है ?"

"अ···आधार ?" चेहरे पर बौखलाहट लिए वह हकलाया—"इ···इसमें आधार की क्या बात है। जब मैं यह जानता हूं कि मेरा बेटा निर्दोष है तो फिर इन वस्तुओं को उसी व्यक्ति ने यहां रखा होगा, जिसने लक्ष्मी का कत्ल किया है, ताकि हत्या का इल्जाम वह मेरे बेटे के सिर मढ़ सके।"

"तुम्हारा बेटा निर्दोष है, यह बात तुम दूसरी बार कह रहे हो। लेकिन इसे साबित तो करो।"

"स···साबित क्या करना है। जिस वक्त लक्ष्मी का कत्ल हुआ, यह बंगले में मेरे साथ ही मौजूद था। इस बात की तसदीक इंस्पेक्टर गाडगिल भी कर सकते हैं।"

"जिस वक्त लक्ष्मी का कत्ल हुआ था···।" पूछते समय इरी आंखों की चमक अत्यधिक बढ़ गई—"क्या वह समय तुम बता सकते हो ?"

"क···क्यों न···!" कहते-कहते अचानक उसकी जबान यूं रुक गई, जैसे घोड़े की लगाम खींच ली गई हो—"वह तो आपको भी मालूम होगा ?"

"हां, मालूम है।" वामनराव बोला—"लेकिन तुम्हारे इस तरह बात बदलने से अब कोई फायदा नहीं होगा भूपेन्द्र-सिंह। यह कहने की हिम्मत तुम इसलिए नहीं पैदा कर सके, क्योंकि फिर तुम्हें यह जवाब देना पड़ता कि उस वक्त की सही जानकारी तुम्हें किस प्रकार हुई ?"

"द···देखिए, यह वक्त की बात तो मेरे मुंह से बेख्याली में निकल गई थी। बल्कि मैं तो ये कहना चाहता था कि जिस रात लक्ष्मी का कत्ल हुआ था, उस रात देवेन्द्र बंगले से बाहर ही नहीं निकला था।"

"नहीं !" बोलते समय वामनराव का स्वर गुर्राहट में बदल गया—"नहीं मिस्टर भूपेन्द्रसिंह, वक्त का जिक्र तुमने

बेख्याली में किया जरूर था, किन्तु मैं यह नहीं मान सकता कि वह गलत था। अक्सर देखा गया है कि बेख्याली में निकले शब्द सच होते हैं। खैर, चलो थोड़ी देर के लिए मैं तुम्हारी बात मान लेता हूं। अतः अब मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या तुम्हारे पास नीले रंग का कोई कालीन है ?"

"जी नहीं ! हमारे घर में तो केवल लाल रंग का ही कालीन है। और आप वह पहले ही देख चुके हैं।"

"पहले कभी रहा हो ?"

"ज···जी नहीं ! पहले भी नहीं था।"

"मिस्टर भूपेन्द्रसिंह, ये आपका दूसरा झूठ है।" वह इस बार पुरजोर स्वर में चीखा—"आठ वर्ष पहले तुमने जिस दुकान से नीले रंग का कालीन खरीदा था, वह दुकान भी मौजूद है और दुकानदार भी। मैं जब पहली बार यहां आया था तो मुझे उसी कालीन की तलाश थी। फिर तुम्हारे यहां लाल रंग का कालीन देखकर कुछ चकराया जरूर था, लेकिन बंगले से निकलते वक्त कचरे के ढेर के पास कुछ जलाये जाने का अवशेष देखकर जब मैं नजदीक पहुंचा था, तो उस कालीन का काफी छोटा अधजला टुकड़ा देखते ही समझ गया था कि उसे जला दिया गया है। और अब···।" अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए उसने बोलना जारी रखा—"जबकि तुमने मेरे दोनों प्रश्नों के उत्तर गलत दिए हैं, मैं अपने वादे से मुक्त हो गया हूं। अब अपने बेटे को निर्दोष साबित करने के लिए तुम्हें जो कुछ कहना है, अदालत में कहिए।"

यह सुनकर जहां भूपेन्द्रसिंह का सिर छाती तक लटक गया था, वहीं देवेन्द्र अब भी आशा भरी निगाहों से उसकी तरफ देख रहा था, जैसे उसे यकीन हो कि उसे बचाने के लिए वह कोई-न-कोई तरकीब जरूर सोच निकालेंगे।

□□

"क···कैलाश।" सरला आंसुओं से भीगे चेहरे के साथ हिचकी लेकर रोती हुई बोली—'आखिर तुम भी भइया को फांसी से नहीं बचा पाये। कहां गया तुम्हारा वह दावा ? तुम तो कहते हो कि तुम जिसका केस अपने हाथों में लेते हो उसे अदालत कभी मुजरिम करार नहीं दे सकती। आखिर

कानून ने तुम्हारे मुंह पर तमाचा मारकर यह साबित कर दिखाया कि वह कोई कठपुतली नहीं, जो किसी के इशारे पर नाच सके।"

"तुम भूल रही हो सरला। मैंने यह दावा किसी निर्दोष के लिए किया था। और फिर तुम अच्छी तरह जानती हो कि लक्ष्मी की हत्या तुम्हारे भाई ने ही की थी। इतना ही होता तो गनीमत थी, स्थितियों का हवाला देते हुए मैं अदालत को उसे कम-से-कम सजा देने के लिए मजबूर कर सकता था। लेकिन बीच में उस राघव के बच्चे के टपक पड़ने से सब मामला चौपट हो गया। अतः अदालत ने सोच समझकर हत्या करने और लाश व हत्या के तथ्यों को नष्ट करने की कोशिश को ध्यान में रखकर देवेन्द्र को फांसी की सजा दी।"

"हूंह !" एकाएक रोना बंद कर वह व्यंग्य से कह उठी—"अपनी शिकस्त पर बौखलाकर लोग अपनी कमजोरी को यूं ही दूसरे के सिर मढ़ने की कोशिश करते हैं।"

"जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ सरला।" उसने भर्राये गले से कहा—"ऊपर वाले की अदालत में किसी की वकालत नहीं चलती। वह तुम्हारा भाई था तो मेरा भी जिगरी यार था। उसकी मौत का जितना अफसोस तुम्हें है, उतना मुझे भी है लेकिन···।"

"भूल जाऊं।" कैलाश की बात पूरी होने से पहले ही वह विक्षिप्तों की तरह चिल्ला उठी—"कैसे भूल जाऊं ? मैं पूछती हूं कि उस भाई को कैसे भूल जाऊं, जिसकी कलाई पर मैं राखी बांधा करती थी। ब···बोलो, कैसे भूल जाऊं ?"

"भूलना ही पड़ेगा।" अपनी दाहिनी कलाई को जोर से मसलते हुए कैलाश भरे गले से कह उठा—"कभी इस कलाई पर भी एक फूल-सी बहन राखी बांधा करती थी, लेकिन मुझे छोड़ कर वह न जाने कहां चली गई। मैं लाख कोशिशों के बाद भी आज तक उसे नहीं ढूंढ़ सका। पता नहीं वह इस दुनिया में है भी या नहीं। और फिर जब तक जख्म हरा रहता है, तब तक बहुत टीस देता है सरला, लेकिन जैसे-जैसे वक्त के मरहम से वह भरता चला जाता है, टीस से भी मुक्ति मिलती जाती है।"

"ओह ! क्या हुआ था तुम्हारी बहन को ? तुमसे कितनी बार तुम्हारे परिवार के बारे में पूछा, लेकिन तुमने

हर बार टाल दिया।"

"हां। कभी मेरे मां-बाप और भाई-बहन सभी थे। लेकिन वक्त के खूंखार पंजों ने सबको एक साथ ही मुझसे छीन लिया था। अपनी आंसू भरी आंखें सरला के चेहरे पर टिकाये कैलाश ने बोलना जारी रखा—"गांव में कोई कॉलेज न होने की वजह से मैं वहां से काफी दूर शहर के एक कॉलेज में पढ़ता था। फिर भी महीने में गांव के एक-दो चक्कर लगा ही लिया करता था। लेकिन एक दिन जब मैं अपने गांव में पहुंचा तो वहां की हालत देख कर गश खाकर गिर पड़ा। मेरे मां-बाप और भाई की लाशें घर के बाहर गोलियों से छलनी हुई पड़ी थीं। सभी गांव वाले अपने-अपने घरों में दुबके पड़े थे। मेरा चीखना-चिल्लाना सुनकर जब कुछ लोग बाहर निकले तो उनसे मालूम हुआ कि यह भीमा डाकू का काम है। उसका वहां इतना आतंक था कि सिर्फ नाम सुनते ही गांव वाले चूहे की तरह घरों में दुबक जाते थे। और हैवानियत का वह खेल उसने इसलिए खेला था, क्योंकि मेरे डैडी पुलिस के मुखबिर थे। गांव वालों से यह भी मालूम हुआ था कि मेरी बड़ी बहन को डाकू अपने साथ उठा ले गये। बाद में मैंने बहुत कोशिश की कि भीमा के अड्डे का पता लगाकर उस तक पहुंच सकूं, लेकिन अपने इरादे में मैं कामयाब न हो सका। अंततः सब तरफ से निराश होकर मैं इस शहर में आ गया। देवेन्द्र से दोस्ती होने के बाद मैं अपना गम भूलने लगा था और बाद में तुमसे मुहब्बत हुई तो एक-दम ही भूल गया कि मुझे अपनी बहन को भी ढूंढ़ना है। लेकिन आज ऐसा लगता है, जैसे मैं अपने कर्तव्य से गद्दारी कर रहा हूं।"

"छोड़ो कैलाश।" सरला भावुक स्वर में कह उठी—"अब अपने दिल को और दुखी क्यों कर रहे हो। जो होना था, वह तो हो ही गया। अब पछताने से न तुम्हें कुछ हासिल होगा और न मुझे ही। भाई के गम में थोड़ी देर के लिए मैं यह भी भूल गई थी कि इस संसार में हर इंसान के जीवन में दुःख और सुख आते-जाते रहते हैं, लेकिन उनसे घबराकर वह अपना सफर नहीं रोकता।"

"हां। थोड़ी देर के लिए मैं भी भावनाओं में बह गया था। पता नहीं मुझे क्या सूझा, जो मैं गड़े मुर्दे उखाड़ने बैठ

क्या।"

थोड़ा नॉर्मल होने के बाद वह पुनः बोला—"तो अब क्या इरादा है ?"

"म···मैं समझी नहीं !"

"अरे भई, हम इस होटल में क्यों आते हैं ?"

"प···प्रेम करने।"

"और हम बेवजह ही सूखे जख्मों को कुरेदकर उनमें टीस पैदा कर रहे हैं।"

"न···नहीं कैलाश। आज मन नहीं कर रहा। फिर कभी ?"

"तुम्हारे मन की दवा मेरे पास है।" कहने के साथ ही कैलाश ने एक झटके से सरला को अपनी तरफ खींच लिया। फिर अपनी बाहों का घेरा उसकी लचकदार कमर पर सख्त करते हुए वह बड़े ही नाटकीय ढंग से बोला—"मानसिक तनाव से छुटकारा प्राप्त करने की अचूक दवा है मुहब्बत। इसका इस्तेमाल करो, फौरन सब दुःख-दर्द गायब।"

"प···प्लीज कैलाश।" उसके बंधनों से छूटने की कोशिश करती हुई सरला अनुनय भरे स्वर में बोली—"आज छोड़ दो, वादा करती हूं कल इसी समय फिर मिलूंगी।"

"एकबार दामन पकड़कर उसे छोड़ने वाले को बेवफा कहा जाता है डार्लिंग।" इसके साथ ही उसने अपने अधर उसके गुलाबी अधरों की तरफ बढ़ा दिए थे। लेकिन इससे पहले कि वे आपस में चिपकते···।

'खट' की धीमी आवाज उत्पन्न करता दरवाजा खुल पड़ा।

चिहुंककर अलग होते हुए दोनों की निगाहें दरवाजे की तरफ उठ गईं।

"सॉरी !" कहने के साथ ही वह अप्रत्याशित युवती तेजी से वापस मुड़ी थी।

लेकिन वापस मुड़ती जिस औरत पर सरला की निगाहें पड़ी थीं, उसका पूरा चेहरा न देख पाने के बावजूद वह बुरी तरह चीख उठी—"ल···लक्ष्मी भ···भाभी···!"

अविश्वास भरी नजरों से सरला की तरफ देखते हुए कैलाश के होंठों से एक मात्र शब्द निकला—"क···क्या ?"

किन्तु सरला को कुछ सुनने का होश कहां था ?

वह तो हिरनी की तरह कुलांचें भरती हुई 'लक्ष्मी रुक जाओ'...पुकारती हुई आसमानी रंग की साड़ी पहने उसके आगे-आगे भाग रही औरत के पीछे दौड़ पड़ी थी। मूर्खों की तरह मुंह खोले खड़े कैलाश को जब स्थिति का अहसास हुआ तो वह भी अपनी पूरी ताकत से उनके पीछे भागा।

तब तक सीढ़ियां तय करके वह औरत प्रवेश द्वार तक पहुंच चुकी थी। उसके दौड़ने की गति इतनी तेज थी कि सरला उससे काफी पीछे छूट चुकी थी।

हॉल में खड़े लोग माजरे को समझ पाने की कोशिश में इस रेस को बड़ी दिलचस्पी से देख रहे थे।

और तभी !

आंधी-तूफान की तरह दौड़ता हुआ कैलाश भी उनके पीछे लपका लेकिन तब तक कथित लक्ष्मी एक सफेद एम्बेसडर दौड़ा चुकी थी।

एक क्षण सोचने में गंवाने के बाद कैलाश भी अपनी लाल मारुति की तरफ झपटा।

फिर उसे स्टार्ट करते हुए जैसे ही उसकी निगाहें बुरी तरह हांफती सरला पर पड़ी तो अपने सिर को खिड़की से बाहर निकालकर वह चिल्लाया—"तुम यहीं रुको सरला। मैं अभी आया।" कहने के साथ ही उसने एक्सीलेटर पर दबाव बढ़ा दिया। मारुति बन्दूक से निकली गोली की तरह भाग उठी।

"कैलाश, सुनो तो...।" पीछे सरला चिल्लाती रह गई थी।

□□

रणचंडी जैसा रूप धारण किये सरला आंधी की तरह दरवाजा पार कर वामनराव की टेबल के नजदीक पहुंचकर रुकी।

फिर क्रोध से अंगारा हुई अपनी आंखें सीधे बिल्ली जैसी आंखों में डालकर गुर्रा उठी—"इंस्पेक्टर साहब, मैं आपसे अपना भाई वापस मांगने आई हूं।"

"क...क्या ?" आश्चर्य से उछलते हुए वह चीखा—"मिस सरला, आप होश में तो हैं ? जानती हैं आप क्या कह रही हैं ?"

तब तक कैलाश भी वहां पहुंच गया था।

उस पर कोई ध्यान दिये बिना वह पुनः गुर्राई—"जी हां। मैं बिल्कुल होश में हूं। और जो भी कह रही हूं, अच्छी तरह सोच-समझकर कह रही हूं।"

हरी व चमकदार आंखें सोचने वाले अंदाज में सिकुड़ती चली गईं। फिर कई क्षणों बाद वह बोला—"यह जानने के बावजूद कि आपके भाई को फांसी दी जा चुकी है और जिसकी आप लोग अपने हाथों से अंत्येष्टि भी कर चुके हैं, उसे मुझसे वापस मांगने आई हो?"

"जी हां! मैं उसी भाई को वापस मांगने आई हूं। मेरा भाई मुझे जीवित चाहिए।"

कहीं यह लड़की पागल तो नहीं हो गई है? ऐसा सोचते हुए बेबसी से अपने होंठों के किनारों को दांतों से काटते हुए वामनराव ने कैलाश की तरफ घूमकर कहा—"एडवोकेट साहब! आप चुप क्यों खड़े हैं? इन्हें समझाते क्यों नहीं कि ये जो कुछ कह रही हैं, वह पागलपन के सिवा कुछ भी नहीं है।"

कुछ कहने के लिए वह अभी अपना मुंह खोलना ही चाहता था कि इससे पहले ही सरला चोट खाई नागिन की तरह फुफकार उठी—"हां, मैं पागल हो गई हूं, क्योंकि मैं अपने उस भाई को मांग रही हूं, जिसे आपके कानून ने बिना किसी जुर्म के फांसी पर लटका दिया।"

"ब···बिना किसी जुर्म के?" वामनराव की खोपड़ी घूम गई। उसने सोचा जरूर यह अपना मानसिक सन्तुलन गंवा चुकी है, लेकिन प्रत्यक्ष में कहा—"लगता है आप सच-मुच अपने होशो-हवास में नहीं हैं, वरना क्या आपको यह भी होश न रहता कि देवेन्द्र को उसकी पत्नी लक्ष्मी की हत्या के जुर्म में फांसी दी गई है।"

"यही तो मैं पूछना चाहती हूं इंस्पेक्टर साहब, कि जिसकी हत्या के जुर्म में मेरे भाई को फांसी हुई, अगर वह जीवित हो तो क्या कानून उसे वापस लौटा देगा?"

"ज···जीवित···!" उसकी खोपड़ी में इतने जोर का धमाका हुआ, मानो वह अभी खरबूजे की तरह फूटकर बिखर जाएगी।

"जी हां! लक्ष्मी जिंदा है।" कैलाश बोला, फिर होंठ

में घटी पूरी घटना के बारे में बताने के बाद ही वह खामोश हुआ।

"ऐसा कैसे हो सकता है ?" वामनराव के होंठों से हैरानी भरा स्वर निकला—"अगर वह जिंदा है तो जिसकी हत्या हुई, वह कौन थी ?"

"मैं यह सब नहीं जानती।" वह फिर चीखी—"मैं तो सिर्फ इतना ही जानती हूं कि जिसकी हत्या के जुर्म में मेरे भाई को फांसी हुई, वह नागिन जिंदा है। अतः कानून मेरे भाई को वापस करे।"

"हद हो गई।" वामनराव भी गुस्से से चिल्लाया—"आपका भाई हत्यारा था, यह बात अदालत में निर्विवाद रूप से साबित हो चुकी थी। मरने वाली का चेहरा या नाम बदल जाने से हत्यारे का जुर्म तो कम नहीं हो जाएगा। आप सिर्फ कानून को ही दोष नहीं दे सकती, क्योंकि मरने वाली की शिनाख्त आप लोगों ने ही की थी।"

"एक मिनट···।" चिल्लाकर कुछ कहने जा रही सरला को खामोश करते हुए कैलाश प्रभावशाली स्वर में बोल उठा—"कानून की धाराओं को समझने के नाते मैं यह तो नहीं कह सकता कि उस वक्त दिया गया फैसला गलत था, लेकिन लक्ष्मी को जीवित देखने के बाद इस सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि देवेन्द्र को उसकी हत्या के जुर्म में फंसाने के लिए किसी ने बहुत गहरी साजिश रची थी।"

"अगर थोड़ी देर के लिए मैं यह मान भी लूं तो सवाल यह उठता है कि उस रिवॉल्वर पर उसकी उंगलियों के निशान कैसे पाए गए, जिससे चली गोली लक्ष्मी की मौत का कारण बनी थी ?"

"क्योंकि वह वास्तव में देवेन्द्र ने ही चलाई थी।"

"ये बात···।" वामनराव की बिल्लौरी आंखें कैलाश की आंखों की गहराइयों में उतरती चली गईं—"आपको देवेन्द्र ने बताई थी या उस वक्त आप खुद ही वहां मौजूद थे ?"

"देवेन्द्र ने ही बताई थी, लेकिन गिरफ्तारी के बाद।"

"खैर, मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता। लक्ष्मी के जीवित होने के बारे में मेरी राय तो यह है कि उसे पहचानने

में आप लोगों को जरूर कोई गलतफहमी हुई है।"

"कोई गलतफहमी नहीं हुई है।" सरला पुनः चिल्ला उठी—"उसे पहचानने में मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं, जिसके चेहरे को मैं हर दिन देखा करती थी।"

"यह भी तो हो सकता है मिस सरला कि जिसे आपने देखा है, उसका चेहरा लक्ष्मी से काफी मिलता-जुलता हो, या फिर वह उसकी कोई हमशक्ल हो?"

"नहीं इंस्पेक्टर साहब! वह उसके सिवा और कोई नहीं हो सकती। जरा सोचिये, अगर वह लक्ष्मी न होती तो हमें देखकर इस तरह डरकर क्यों भागती?"

"हां, यही एक ऐसा प्वॉइंट है...।" कैलाश बोला—"जिसकी वजह से मैं भी चक्कर में पड़ गया हूं। अगर वह लक्ष्मी की कोई हमशक्ल थी तो इतना भयभीत होकर क्यों भागती।"

कुछ सोचते हुए वामनराव बोला—"फिर वह औरत कौन थी, जिसकी हत्या देवेन्द्र के हाथों हुई थी?"

"अगर इजाजत हो तो इस रहस्य पर मैं कुछ प्रकाश डालने की कोशिश करूं।"

उसके चेहरे की तरफ देखते हुए वामनराव बोला—"आप क्या कहना चाहते हैं?"

"हमें देखकर उसका इस तरह से डरकर भागना, यह साबित करता है कि वह लक्ष्मी ही थी। अब सवाल यह उठता है कि अगर वह जीवित है तो जिसका कत्ल हुआ वह कौन थी? देवेन्द्र इतना अहमक तो था नहीं कि लक्ष्मी समझकर किसी भी स्त्री को शूट कर देता। इसलिए इसमें सिर्फ एक ही गुंजाइश बाकी रह जाती है कि मरने वाली का चेहरा हू-ब-हू लक्ष्मी जैसा था। अब सवाल यह उठता है कि आखिर उसकी जगह मरने वह खुद क्यों पहुंच गई? इन सभी सम्भावनाओं पर गहराई से विचार करने के बाद एक ही नतीजा निकलता है, कि यह किसी की बहुत सोची-समझी साजिश थी और जहां तक मैं समझता हूं, इस साजिश के पीछे उसी का दिमाग काम कर रहा था। लेकिन उसने ऐसा क्यों किया? यह तो वही बता सकती है। लेकिन कैसे किया? इसका कुछ-कुछ अन्दाजा मैं जरूर लगा सकता हूं।"

कैलाश की बातों से प्रभावित होकर वामनराव ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा—"कैसे किया होगा ?"

कैलाश के होंठ फड़कने लगे—"इस योजना की पृष्ठभूमि लक्ष्मी के दिमाग में तब बनी होगी, जब संयोग से उसने हु-ब-हू अपनी शक्ल की किसी दूसरी स्त्री को देखा होगा। योजना के पहले चरण में उसे देवेन्द्र के मन में अपने प्रति शंका का बीज बोना था। जिसे प्रतिदिन किसी बीमार सहेली से मिलने जाने का बहाना बनाकर उसने पूरा किया। ऐसा करते समय उसने बखूबी सोच लिया होगा कि वह उस पर निगरानी रखने की कोशिश जरूर करेगा। उसका शक और गहरा हो उठे, इसके लिए उसने दो-तीन मर्तबा ऐसी चालाकी दिखाई, जिससे उसे यह पक्का यकीन हो जाए कि वह उससे छुपकर जरूर कोई गुल खिला रही है। अतः देवेन्द्र द्वारा प्राइवेट जासूस की नियुक्ति मेरे ख्याल से उसकी योजना के तहत नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप हुई होगी। लेकिन उससे उसकी योजना पर कोई असर नहीं पड़ने वाला था। अतः उसे जब यह अच्छी तरह यकीन हो गया होगा कि उसके द्वारा बोया गया शंका का बीज देवेन्द्र के मस्तिष्क में इस कदर जड़ें जमा चुका है कि वह किसी पर-पुरुष के साथ उसके अनैतिक सम्बन्धों को जानकर तुरन्त खून-खराबा करने पर आमादा हो जाएगा तो वह अपने प्रेमी से मिलने लगी, ताकि वह जासूस इसकी सूचना देवेन्द्र को देता रहे। फिर उसके हमले से अपने को बचाने के लिए उसने किसी पेशेवर गुंडे की मदद हासिल कर ली होगी और देवेन्द्र के उस जगह पहुंचने से पहले ही वह अपने उस प्रेमी के साथ इस तरह का पोज तैयार किए उसका इंतजार कर रही होगी कि उस दृश्य को देखते ही देवेन्द्र का खून खौल उठे और वह उसका कत्ल करने पर आमादा हो जाए। लेकिन वह अपने इरादे में कामयाब न हो, इसलिए उसने उस पेशेवर गुंडे को यह समझाकर वहां छुपा दिया होगा, कि जैसे ही कोई उसे मारने की कोशिश करे, वह पीछे से चोट पहुंचाकर तुरन्त उसे बेहोश कर दे।"

एक क्षण रुककर कैलाश ने गर्व भरी मुस्कराहट के साथ पुनः बोलना शुरू किया—"देवेन्द्र के बेहोश होने के बाद अपनी योजना के अन्तिम चरण में, रिवॉल्वर लेकर लक्ष्मी

अपनी उस हमशक्ल के पास पहुंची होगी, जिसे या तो किसी बहाने से, या लालच देकर इस बात के लिए तैयार कर लिया होगा कि उसे यह रिवॉल्वर मेज पर रखकर पत्र लिखने की एक्टिंग करनी है, जिससे उसके पति को लगे कि वह आत्म-हत्या करने जा रही है।"

"लेकिन वकील साहब!" व्यंग्य भरी मुस्कराहट के साथ वामनराव बोला—"आप यह क्यों भूल रहे हैं कि कोई भी औरत इतनी मूर्ख नहीं हो सकती कि किसी के बहाने या लालच में आकर उससे यह पूछे बगैर कि यह काम, वह खुद ही क्यों नहीं कर लेती, उसकी बात मान लेगी?"

"मैं भूला नहीं हूं इंस्पेक्टर साहब! जिस तरह यह बात आपके जेहन में आई है उसी तरह क्या इतनी लम्बी योजना बनाने वाले के दिमाग में नहीं आई होगी? खासकर उस स्थिति में, जब उसकी पूरी योजना का दारोमदार उसकी हमशक्ल पर ही टिका हो। अतः वह पहले से ही इसका कोई युक्तिसंगत जवाब सोच चुकी होगी। लेकिन अब आप यह मत पूछने लगना वह युक्तिसंगत जवाब कौन-सा हो सकता है? क्योंकि मैं तो सिर्फ अपना ख्याल ही जाहिर कर रहा हूं। हकीकत में क्या और कैसे हुआ था, उसे तो लक्ष्मी ही बेहतर बता सकती है।"

"हुंह!" सोचने के अंदाज में सिकुड़कर छोटी हुई अपनी आंखें कैलाश के चेहरे पर टिकाए वामनराव बोला—"चलो मान लिया कि उसके पास कोई युक्तिसंगत जवाब था, लेकिन फिर सोचने वाली बात यह है कि लक्ष्मी को यह कैसे यकीन हो गया था कि जब देवेन्द्र उसकी हमशक्ल पर प्राणघातक हमला करेगा तो वह यकीनन मारी जाएगी। लेकिन इस स्थिति में यह भी तो हो सकता था कि उसकी हमशक्ल किसी तरह वहां से बच निकलने में कामयाब हो जाती।"

"इसका जवाब मेरे पास है।" सरला बोल उठी—"भइया ने मुझे और डैडी को बताया था कि होश में आने के बाद जब वे अपने कमरे में पहुंचे थे तो उस वक्त लक्ष्मी रिवॉल्वर को मेज पर रखे लिखते हुए कुछ सोचने में इतनी तल्लीन दिखाई दे रही थी कि जैसे उसे भइया के आने का पता ही न चला हो। भइया तो पहले से ही गुस्से में थे। रिवॉल्वर मेज पर रखा ही हुआ था। अतः उसे उठाकर

ट्रेगर पर दबाव डालने तक उस बेचारी को इतना समय ही नहीं मिल पाया होगा कि वह उनका विरोध कर सकती। जरूर उस नागिन ने ही उसे यह पट्टी पढ़ा दी होगी कि उसके पति चाहे जितना गुस्सा दिखायें, लेकिन वह बिल्कुल नहीं डरे। फिर थोड़ी देर में ही भीगी बिल्ली बनकर वह तुम्हारे तलुवे चाटने लगेंगे। शायद इसी गलतफहमी में वह बेचारी अपनी जान गंवा बैठी। और मेरे भइया को डसने वाली वह नागिन आजाद घूम रही है।"

सोचपूर्ण मुद्रा में वामनराव के होंठ हिले—"आप लोगों की थ्योरी से मैं पूर्णरूप से सहमत तो नहीं हूं किन्तु अगर ऐसा है तो मानना पड़ेगा कि देवेन्द्र बेकसूर था। अत: लक्ष्मी को उसके किए की सजा दिलवाना मेरा कर्तव्य ही नहीं, बल्कि मेरी इज्जत का सवाल है, जो इतने दिनों तक पुलिस महकमे में रहकर मैंने हासिल की है। और हां मिस्टर कैलाश, आपको उस एम्बेसडर का नम्बर तो ध्यान होगा, जिससे वह भागी थी ?"

"जी हां ! एम० एच० ओ० चार सौ तेइस।"

"ओ० के० !"

कहने के साथ ही वामनराव ने अपने होंठों से पनामा की सिगरेट चिपकाली थी।

□ □

"वामनराव स्पीकिंग···!"

"स···सर ! मैं गाडगिल बोल रहा हूं।" दूसरी तरफ से इंस्पेक्टर गाडगिल का प्रसन्नता में डूबा स्वर सुनाई दिया था।

"हां बोलो। एम्बेसडर का कुछ पता चला ?"

"यस सर ! वह विजय नाम के एक युवक की है, जो क्राफेड मार्किट में कपड़े की एक दुकान का मालिक है। उसने बताया है कि उसकी वह एम्बेसडर कार दो दिन से माधुरी नाम की उसकी एक गर्लफेंड के पास है। उसका पता लेकर जब मैं वहां पहुंचा तो उसके फ्लैट में ताला लगा हुआ था। उसके बारे में उसके पड़ोसियों का कहना है कि वह अच्छे चरित्र की युवती नहीं है। उसके यहां नित्य ही नये-नये मर्द आते हैं। तब···।"

इंस्पेक्टर गाडगिल की बात बीच में ही काटकर वामन-

राव उकताए स्वर में बोला—"तुम्हारे पास लक्ष्मी की जो तस्वीर है, माधुरी के रूप में क्या उसकी किसी ने शिनाख्त की है ?"

"नहीं सर ! तस्वीर देखने के बाद उसके प्रत्येक परिचित ने यही कहा है कि यह वह नहीं है।"

"हूं ! इसका मतलब तुम अभी तक उसी की खोज कर रहे हो ?"

"खोज नहीं कर रहा हूं सर, बल्कि खोज चुका हूं।"

"क···क्या मतलब ?" हल्के से चौंकते हुए वामनराव नाराजगी भरे स्वर में बोला—"तब पहले ही साफ-साफ क्यों नहीं बता दिया ? इतनी लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधने की क्या जरूरत थी ?"

"सॉरी सर ! मैंने सोचा आप बाद में पूछेंगे कि मैं उस तक कैसे पहुंचा, इसलिए वह सब मैंने पहले ही बता देना ठीक समझा।"

"आइन्दा ध्यान रखना, मुझे फालतू बातों की नहीं, सिर्फ महत्त्वपूर्ण जानकारी की आवश्यकता रहती है। माधुरी इस समय कहां है ?"

"मैं उसी के फ्लैट से बोल रहा हूं सर। उसे गिरफ्तार करके आपके पास लाऊं या यहीं···? यही जानने के लिए आपको फोन किया था।"

एक क्षण कुछ सोचने के बाद वामनराव ने पूछा—"क्या उसका चेहरा लक्ष्मी की तस्वीर से बिल्कुल भी नहीं मिलता ?"

"नहीं सर, बिल्कुल भी नहीं।"

"कल उस होटल में जाने की बात वह स्वीकार कर रही है या नहीं ?"

"जी नहीं, उसका कहना है कि वह तो उस होटल के नजदीक भी नहीं फटकी थी।"

"एम० एच० ओ० चार सौ तेइस नम्बर की सफेद एम्बेसडर के बारे में उसका क्या कहना है ?"

"वह भी यहां पार्किंग में ही खड़ी है, परन्तु उसका कहना है कि उसने कल उसे इस्तेमाल ही नहीं किया था।"

"ठीक है। तुम वहीं रुको। मैं खुद आ रहा हूं।"

"ओ० के० सर !"

इंस्पेक्टर गाडगिल की ओ० के० सुनने से पहले ही रिसीवर को क्रेडिल पर पटककर वामनराव की शतुरमुर्ग जैसी टांगें दरवाजे की तरफ झपट चुकी थीं।

▭ ▭

"मिस माधुरी ! क्या आप हमें यह बताने का कष्ट करेंगी…।" अपनी बिल्ली जैसी आंखें सामने बैठी खूबसूरत किन्तु चालू किस्म की युवती पर टिकाये, वामनराव के होंठों से सांय-सांय के साथ बर्फ की-सी बौछारें निकलीं—"कि जब न तो आप स्वयं उस होटल में गई और न ही अपनी कार किसी को दी, तो क्या यह बिना किसी के ड्राइव किए चमत्कारिक ढंग से कहीं भी पहुंच सकती है ?"

"म…म…मैं…!" बिल्ली जैसी आंखों की चमक और उसके मुंह से निकले शब्दों ने उसे इतना आतंकित कर दिया कि वह बकरी की तरह मिमिया उठी।

"इसके अलावा…।" पूर्ववत् उसकी आंखों में झांकते हुए उसने बोलना जारी रखा—"अगर वह तुम ही थीं तो तुम्हें वहां से भागकर इस तरह छिपने की जरूरत क्यों पड़ी ?"

"क्योंकि…क्योंकि…!"

"हां-हां यह कह दो कि तुम्हें किसी से अपनी जान का खतरा है और उसी खतरे के तहत तुम्हें यहां छुपने पर मजबूर होना पड़ा। क्यों ?" व्यंग्यभरी मुस्कराहट के साथ अचानक ही वामनराव का स्वर गुर्राहट में बदल गया—"लेकिन कुछ भी बताने से पहले इतना जरूर सोच लेना कि जब तक वह बात सच प्रमाणित नहीं होगी, तुम्हें पुलिस हिरासत में ही रहना होगा।"

'वाह !' इंस्पेक्टर गाडगिल ने मन-ही-मन उसकी प्रशंसा की—'बिना सख्ती किए मनोवैज्ञानिक ढंग से सामने वाले को तोड़ने की कला में इन्हें महारथ हासिल है।'

और वास्तव में वामनराव के इस हथियार से वह बुरी तरह बदहवास हो उठी थी।

मुंह से एक भी शब्द निकाले बिना वह उसके लम्बूतरे चेहरे को ऐसे ताक रही थी, जैसे सोच रही हो कि उसका बोला कोई भी झूठ इस घाघ पुलिसिए के पेट में आसानी से हजम नहीं हो पाएगा।

फ्लैट की मालकिन और इंस्पेक्टर गाडगिल के साथ आए सिपाही मूक दर्शक की भांति एक कोने में बैठे हुए थे।

"मिस माधुरी!" कुछ देर से वहां छाई खामोशी को अपनी सांय-सांय भरी आवाज से भंग करते हुए वामनराव बोला—"मैं ज्यादा इंतजार बर्दाश्त नहीं कर सकता। अब भी वक्त है, अगर तुमने अपना मुंह नहीं खोला तो मुझे मजबूरन तुम्हें हिरासत में लेना होगा।"

"न···नहीं···!" बुरी तरह फड़फड़ाकर उसके होंठ हिले—"म···मैं वहां गई थी।"

"गुड! यह हुई न समझदारी वाली बात। फिर···?"

"भ···भूल से मैं उस दरवाजे को खोल बैठी थी···।" फिर बेबसी-भरे अंदाज में उसने बिना रुके बोलना जारी रखा—"जिसमें एक जवान स्त्री-पुरुष आलिंगनबद्ध थे। यह देखकर तभी वहां से जाने के लिए मैं मुड़ी ही थी कि उसी औरत की चीख मेरे कानों से टकराई। वह लक्ष्मी-लक्ष्मी चिल्लाती हुई मेरे पीछे दौड़ पड़ी थी। मुझे लगा कि उसे पागलपन का दौरा पड़ता है इसीलिए शायद वह मुझे लक्ष्मी समझ रही थी। अतः किसी झमेले से बचने के उद्देश्य से मैं वहां से भाग खड़ी हुई थी।"

"बहुत खूब।" ताली बजाते हुए वामनराव जहरीली मुस्कराहट के साथ कह उठा—"वाह! मिस माधुरी! तुम्हारे झूठ बोलने के इस स्टाइल से हम बहुत खुश हुए। अगर हमारे वश में होता तो हम तुम्हें सर्वश्रेष्ठ एवं सफल झूठ बोलने का खिताब जरूर प्रदान करते। तुमने कल्पना की ऐसी उड़ान भरी है कि अच्छे-अच्छे लेखक भी तुम्हारे आगे नतमस्तक हो जायें। वाह! क्या बात कही है।" कहते-कहते उसकी बिल्लौरी आंखें मारे गुस्से के लाल सुर्ख हो उठीं। और फिर उसके मुंह से गुर्राहट-भरा स्वर निकला—"मैं अब तक यह समझकर तुम्हें ढील दे रहा था कि शायद वह औरत तुम न हो, लेकिन अब जबकि यह स्पष्ट हो चुका है कि वह औरत तुम ही थीं, तो कोई भी झूठ बोलने से पहले तुम्हें यह तो सोच लेना चाहिए था कि वह झूठ, सुनने वाले को प्रभावित करेगा या नहीं? और अब, मैं तुम्हारे मुंह से सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि तुम्हारे तब के चेहरे और

इस वक्त के चेहरे में यह जमीन-आसमान का अन्तर कहां से आ गया ?"

"च···चेहरे में अन्तर ?"

"लगता है, तुम इस तरह नहीं मानोगी। तुम्हारी पोल खुल चुकी है, यह जानने के बाद भी बेवजह अपनी दुर्दशा कराने वाले को मूर्ख ही कहा जाएगा। मैं तुम्हें दो मिनट का समय और देता हूं, शायद मेरी बात तुम्हारे भेजे में घुस जाए।"

"ब···बताती हूं।" बुरी तरह भयभीत और थरथराती ज़ुबान को काबू में करके वह हकलाई—"उस वक्त···उस वक्त म···मेरे चेहरे पर फेसमास्क लगा हुआ था।"

"फेसमास्क। कहां है वह ?"

"व···वह···उस हैंडबैग में।" उसकी कांपती हुई उंगलियां मेज पर रखे नीले रंग के हैंडबैग की तरफ उठती चली गईं।

"इसे अपने चेहरे पर लगाओ।"

और तब···!

वामनराव को छोड़कर सभी के मुंह से आश्चर्य-भरी सिसकारी-सी निकल गई।

अब वहां हू-ब-हू लक्ष्मी खड़ी दिखाई दे रही थी।

"चलो यहां आकर बैठ जाओ।" सामने रखी कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए वामनराव ने आदेश-भरे स्वर में कहा—"और एक ही बार में पूरा चक्कर बता डालो।"

"क···क्या मैं इसे निकाल सकती हूं ?" सामने मौजूद एक कुर्सी पर बैठते हुए उसने कंपित स्वर में पूछा था।

"निकाल दो।"

रबर की झिल्ली उसकी तरफ बढ़ाते हुए वह बोली—"इसके बारे में बताने से पहले मैं आपको अपना असली नाम व पेशा भी बताना चाहती हूं।"

"यानी माधुरी नाम नकली है ?"

"जी हां, मेरा असली नाम वीणा है।" इस बार उसने बोलना शुरू किया तो टेपरिकॉर्डर की तरह बोलती चली गई—"मैंने जब होश संभाला था तो अपने-आपको एक अनाथाश्रम में पाया था। मेरा उन्मुक्त स्वभाव वहां कैदियों जैसा जीवन बिताने के लिए हरगिज तैयार नहीं था। अतः

जवानी की सीढ़ियों पर कदम रखते-रखते मैं उस कैद से छुटकारा प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय कर चुकी थी। और फिर अनाथाश्रम के ही एक कर्मचारी को अपनी नशीली अदाओं से मैंने इस कदर प्रभावित किया कि वहां से निकल भागने में वह मेरी हर तरह से मद्द को तैयार हो गया। फिर वहां से निकलने में तो मैं कामयाब हो गई, लेकिन उस कर्मचारी से अपनी इज्जत नहीं बचा सकी थीं। उसने मेरी मजबूरी का भरपूर फायदा उठाया था। उसके बाद तो भूखे भेड़ियों के सामने अपने जिस्म को परोसना जैसे मेरी आदत-सी बन गई। विवाह, पति, बच्चे और सुखी जीवन बिताने का मेरा सपना, छिन्न-भिन्न होकर रह गया था। तब मैंने सोचा कि क्यों न इन बेवफा मर्दों को अपनी खूबसूरती के बल पर बेवकूफ बनाकर ऐशो आराम की जिंदगी बसर करूं। बस, फिर क्या था? थोड़े ही दिनों में मेरा धंधा चल निकला। मैं कारों में घूमने लगी।"

इतना कहकर वह सांस लेने के लिए रुकी तो वामनराव भी सिगरेट सुलगाने लगा।

"मैं यह करती थी…।" वीणा ने पुनः बोलना शुरू किया—"कि किसी मालदार आसामी को देखकर खुद ही उसकी तरफ आकर्षित हो जाती थी और जब मेरे रूप के जादू में वह बुरी तरह फंस जाता था तो उसे इतनी आजादी दे देती कि वह मुझे कहीं भी लेकर जा सके और फिर, जब वह मेरे जिस्म को पाने की कोशिश करता तो मैं उसे अलग करते हुए कहती कि अगर फौरन मुझे इतना रुपया न मिला तो मैं चिल्ला-चिल्लाकर कहूंगी कि यह आदमी मुझे धोखे से यहां लाकर मेरी इज्जत लूटना चाहता है। तब अपनी इज्जत बचाने के लिए उस व्यक्ति को वह रकम देनी ही पड़ती थी। लेकिन अपना आसामी चुनते वक्त मुझे इस बात का खास ख्याल रखना पड़ता था कि वह शरीफ और इज्जतदार हो। लेकिन फिर भी कई बार ऐसा भी होता था कि मेरी नजरें धोखा खा जाती थीं। फलस्वरूप पास की नकदी के साथ-साथ जिस्म भी नुचवाना पड़ता था। एक रात, जब एक धनवान बूढ़े को पांच हजार का चूना लगाकर मैं 'हंसा' होटल के उस कमरे में पहुंची, जिसमें कई दिनों से टिकी हुई थी, तो…।" कहते-कहते वह यूं खो गई, जैसे उस

दृश्य को प्रत्यक्ष देख रही हो।

□□

कमरे की लाइट ऑन होते ही सामने बैठे एक नकाबपोश को देखकर वीणा इतना ज्यादा आतंकित हो गई कि चीखने के लिए खुले मुंह से हल्की-सी आवाज तक भी न निकाल सकी थी।

लेकिन उसके कुछ समझने से पहले ही वह नकाबपोश कर्कश स्वर में बोल उठा--"चीखने की कोशिश बेकार है वीणा। तुम्हारी चीख सुनकर किसी के आने से पहले ही तुम्हें बेहोश करके मैं उसी तरह बाहर निकल जाऊंगा जैसे कि आया था। परन्तु उस स्थिति में नुकसान सिर्फ तुम्हारा ही होगा।"

"क···कैसा नुकसान ?" आश्चर्य से चकराते हुए दिमाग को काबू में करने की कोशिश करते हुए वीणा ने पूछा।

"जो ऑफर मैं तुम्हारे पास लेकर आया हूं, अगर उसे करने को तुम तैयार हो जाओ तो इसके बदले में, तुम्हें एक मुश्त पचास हजार रुपये मिल जायेंगे।"

इतनी बड़ी रकम के लालच में आकर वीणा तुरन्त पूछ बैठी—"लेकिन काम क्या है ?"

नकाबपोश बोला—"काम बहुत आसान है। तुम्हें एक आदमी की नजरों में अपने-आपको चरित्रहीन दिखाना होगा ?" ——— ———

"वह तो मैं हूं ही, इसमें दिखाने की क्या बात है ?"

"लेकिन वह ।म इतना आसान नहीं है कि जुबान पर रखते ही रसगुल्ले की तरह फिसलकर पेट में पहुंच जाएगा।"

"फ···फिर···?"

वह नकाबपोश वीणा को समझाते हुए बोला—"जिस आदमी के सामने तुम्हें अपनी चरित्रहीनता का प्रदर्शन करना है। वह एक प्राइवेट जासूस है। उसकी नियुक्ति एक सेठ के लड़के ने अपनी बीवी के संदिग्ध आचरण की जांच के लिए की है। अतः मैं चाहता हूं कि उसकी नजरों के सामने किसी भी मर्द के साथ ऐ ा व्यवहार करो, जिससे उसे लगे कि वह तुम्हारा प्रेमी है और उसके साथ तुम्हारे अनैतिक संबंध हैं।"

"ल···लेकिन···।" आश्चर्य से उछलते हुए वीणा कह

पड़ी—"क"'क्या मेरा चेहरा उस सेठ के लड़के की बीवी से मिलता है ?"

"यह जानने से पहले तुम यह और जान लो कि मैं तुमसे और क्या-क्या चाहता हूं। किसी मर्द को अपनी तरफ आकर्षित करने में तुम्हें किसी तरह की कठिनाई तो होगी नहीं। लेकिन एक बात का तुम विशेष ख्याल रखना, जब भी तुम उस प्राइवेट जासूस की नजरों में आओ, तुम्हारे साथ वाला मर्द हमेशा वही हो, जो पहली बार उसकी निगाहों में आया हो। और दूसरी बात, उससे मिलते समय तुम्हें इस तरह का अभिनय करना है जैसे तुम्हें इस बात की चिन्ता है कि तुम्हारा कोई परिचित तुम्हें देख तो नहीं रहा है। लेकिन हां, एक बात का विशेष ख्याल रखना कि उस प्राइवेट जासूस की तरफ भूलकर भी तुम्हारी तवज्जो नहीं जानी चाहिए, जिससे कि उसे यह शक हो जाए कि तुम उसे पहचानती हो।"

"लेकिन जब तक मैं उसे पहचानूंगी ही नहीं, तो उसके सामने यह सब कैसे कर सकूंगी।"

तब, सर्कस के जोकरों जैसी नाक वाले एक आदमी की तस्वीर दिखाते हुए वह नकाबपोश बोला—"इसे अच्छी तरह देख लो। वैसे इसकी नाक ऐसी है कि पूरा चेहरा दिमाग में सुरक्षित न रहने के बावजूद भी तुम देखते ही इसे पहचान जाओगी। यह सुबह-शाम हैंगिग गार्डन में घूमने का शौकीन है। अतः अपने द्वारा चुने हुए मर्द के साथ वहां पहुंचकर तुम बड़ी आसानी से उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर सकती हो। और फिर तुम्हें किसी मर्द के साथ देखकर वह तुरन्त तुम्हारे पीछे लग जायेगा।"

"बस, बता चुके या अभी और कुछ बाकी है। अगर अभी और कुछ बाकी है, तो पहले मैं एक बात साफ कर देना चाहती हूं कि मैं कोई भी ऐसा काम नहीं करूंगी, जिसमें पुलिस का चक्कर आता हो।"

"मेरे काम के बारे में तुम बेफिक्र रह सकती हो। परन्तु तुम्हारा खुद का अपने काम के बारे में क्या ख्याल है ? लोगों को बेवकूफ बनाकर लूटने वाले तुम्हारे धंधे में क्या पुलिस का चक्कर नहीं आ सकता ?"

आश्चर्य से वीणा अभी कुछ पूछने ही वाली थी कि वह

पुनः बोल पड़ा—"मेरी जानकारी पर आश्चर्य करने की बजाय तुम वह सुनो, जो तुम्हें बहुत ही होशियारी से करना है। अपने साथ के उस मर्द के साथ कई जगहों पर घूमने-फिरने के बाद तुम्हें किसी कम आबादी वाले स्थान पर स्थित एक कॉटेज या बंगले में, जिसे मैं किराये पर ले चुका होऊंगा, जाना होगा वहां एक दो घंटे बिताने के बाद जब तुम बाहर निकलो तो इस बात का विशेष ख्याल रखना होगा कि अगर उस वक्त तक वह जासूस तुम्हारा इंतजार करता दिखाई दे, या न दिखाई दे तो भी इस चालाकी से तुम्हें उस मर्द के साथ गायब होना होगा कि अगर वह तुम्हारा पीछा करने की कोशिश करे तो भी यह न जान सके कि तुम दोनों कहां चले गए? यह सिलसिला कम-से-कम दो-चार दिन तक कायम रखना होगा बस, तुम्हारा काम इतना ही होगा। बाकी का काम मेरा ही होगा।"

"त···तुम्हारा काम क्या···?"

बड़ी भयानक हंसी के साथ नकाबपोश बोला—"उससे तुम्हें कोई मतलब नहीं होना चाहिए। अगर तुम्हें मेरा सौदा मंजूर हो तो हां कहो, वर्ना फिर मैं किसी दूसरी लड़की का प्रबन्ध करूं?"

"द···दूसरी लड़की।" वीणा की खोपड़ी घूम गई—"जिस औरत की भूमिका मुझे अदा करनी है क्या उसकी हमशक्ल सैकड़ों की तादाद में हैं?"

"उनकी तादाद हजारों में भी हो सकती है। यह देखो, ये उस औरत की तस्वीर है, जिसकी भूमिका तुम्हें निभानी है।"

वीणा कुछ देर के लिए रुकी जैसे अपने दिमाग के रिकॉर्डर में नई कैसेट लगा रही हो।

"और···!" फिर वीणा ने फेसमास्क की तरफ इशारा करते हुए कहा—"वह तस्वीर इसी औरत की थी। फेसमास्क व अग्रिम दस हजार रुपये देकर वह नकाबपोश चला गया था। उसके बताये मुताबिक दूसरे ही दिन मैंने एक मर्द को अपनी तरफ आकर्षित कर लिया। उसने अपना नाम जनार्दन बताया था। वह नासिक का रहने वाला था। यहां सिर्फ घूमने आया था। हर दृष्टिकोण से वह मुझे अपने काम के लिए उपयुक्त लगा था। मैं फिर उस नकाबपोश के निर्देशों

के अनुसार एक्टिंग करने लगी।

उस दिन हम दोनों तीसरी बार उस बंगले में गए थे। जब दो जवान जिस्म एकांत में मिलेंगे तो कब तक सब्र कर सकेंगे। वही हमारे साथ भी हुआ। एक-दो घंटे बैठकर बोर होने से अच्छा तो यही था कि मनोरंजन के साथ समय व्यतीत हो जाए।

लेकिन अभी हम प्रेमालाप में डूबे ही थे कि अचानक एक आदमी खिड़की के जरिये अंदर कूदा। और अपने हाथ में थमी रिवॉल्वर को मुझ पर तानकर पता नहीं क्या-क्या बड़बड़ाने लगा। मुझे लगा कि पचास हजार के लालच में आकर आज मैं अपनी जान से ही हाथ धो बैठूंगी। लेकिन इससे पहले कि वह गोली चला पाता वही नकाबपोश किसी जिन्न की तरह पर्दे के पीछे से निकला, जो पता नहीं वहां कब से छुपा हुआ था। उसके हाथ में एक मोटा-सा डंडा था। तभी अचानक बंदरों जैसी फुर्ती से वह कमरे के मेन फ्यूज तक पहुंचा और फिर कमरे में अंधकार छा गया।

तभी फटाक की आवाज के साथ ही किसी के गिरने की आहट सुनाई दी। थोड़ी देर बाद जब रोशनी हुई तो हमने देखा की वह आदमी बेहोश पड़ा था। फिर रिवॉल्वर को अपने कब्जे में लेकर वह नकाबपोश मुझे एक कोने में ले जाकर फुसफुसाया—"अपने साथ के मर्द को लेकर यहां से तुरन्त निकल जाओ। इससे पीछा छुड़ाने के बाद फेसमास्क नष्ट कर देना, तुम्हारी बाकी की रकम आज ही पहुंचा दूंगा।"

वहां से निकलते वक्त जनार्दन काफी आतंकित व सहमा हुआ था। उसकी आंखें बता रही थीं कि वह मुझसे भी डर रहा था। अतः उससे पीछा छुड़ाने की नौबत भी नहीं आई। फिर कई दिनों तक इंतजार करने के बाद भी जब वह नकाबपोश नहीं आया तो मैं समझ गई कि या तो वह कहीं फंस गया है या फिर मुझे बेवकूफ बनाकर चंपत हो गया है।

थोड़े दिनों बाद इस घटना को भूलकर मैंने फिर से अपना वही पुराना धन्धा शुरू कर दिया। इसमें एक फायदा मुझे यह हुआ कि मैं नकाबपोश द्वारा दिया गया फेसमास्क लगाकर अब दो चेहरों के साथ लोगों को बेवकूफ बनाने लगी।

कल उस होटल में भी मैं फेसमास्क पहनकर गई थी, क्योंकि वहां मैं पहले ही बहुत से लोगों को बेवकूफ बना चुकी थी। अतः अगर उनमें से कोई वहां मौजूद होता, तो भी इस चेहरे की वजह से मुझे नहीं पहचान पाता।"

"गाडगिल !" वीणा की पूरी बात सुनने के बाद वामनराव की अधिकारपूर्ण आवाज गूंजी।

"यस सर !"

"इसे हथकड़ी पहना दो।"

"स···साहब !" वीणा भयभीत होकर हकलाई—"यह जानने के बावजूद कि यह सब मैंने किसी के कहने पर किया था, आप मुझे गिरफ्तार कर रहे हैं ?"

वामनराव ने खड़े होकर खूंखार दृष्टि से उसकी तरफ देखा और बिना कोई जवाब दिए दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

▭ ▭

"न···नहीं, यह झूठ है, सरासर गलत है।" अखबार में छपे वीणा की गिरफ्तारी व उसके बयान को पढ़कर सरला हिस्टीरियाई अंदाज में चीख उठी—"यह सब उस नागिन की साजिश है। अपना भेद खुलता देखकर, पुलिस व हमें गुमराह करने के लिए उसकी यह कोई नई चाल है।"

उसके बगल में बैठे भूपेन्द्रसिंह और कैलाश भी काफी हैरान दिखाई दे रहे थे।

फिर कुछ देर तक सोचते रहने के बाद कैलाश ने पूछा —"तुम कैसे कह सकती हो कि उसका यह बयान गलत है और इसके पीछे लक्ष्मी की ही कोई चाल छिपी है ?"

"उसके सिवा और किसे जरूरत पड़ी है, जो इतना बखेड़ा करे।" उसने धाराप्रवाह बोलना जारी रखा—"हमने उसे देख लिया था इसलिए उसका बौखला जाना स्वाभाविक है। अतः अपने जीवित रहने का भेद गुप्त रखने के उद्देश्य से उसने नकली चेहरा बनवाया होगा और उसे वीणा नामक महिला को देकर पूरी कहानी समझा दी होगी।"

"नहीं सरला, मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि तुम्हारा सोचना बिल्कुल गलत है।" कैलाश प्रभावी स्वर में बोला था।

"कैसे ?"

"अगर यह मानकर चलें कि हमें देखकर भागने वाली खुद लक्ष्मी ही थी तो इसका मतलब यह हुआ कि वह पहले से इस बात के लिए तैयार नहीं थी, कि उसकी मुलाकात हमसे हो जाएगी। क्यों ठीक है न ?"

सरला के साथ-साथ भूपेन्द्रसिंह का सिर भी सहमति में हिला था।

"तब तुम खुद ही सोच सकती हो...।" जोश भरे स्वर में कैलाश ने बोलना जारी रखा—"कि उस वक्त न तो उसे नकली चेहरे की आवश्यकता थी और न ही यह भय कि इस तरह उसके जीवित रहने का भेद खुल जाएगा।"

"आखिर तुम कहना क्या चाहते हो ?" सरला ने बेचैनी से पूछा था।

"यही कि रातों-रात नकली चेहरा नहीं बनवाया जा सकता।"

"क...क्यों ?"

"क्योंकि नकली चेहरा बनाने वाला भी हमारी-तुम्हारी तरह इंसान होता है। विज्ञान ने भी अभी तक ऐसी कोई मशीन ईजाद नहीं की है जो किसी के चेहरे को आनन-फानन में तैयार कर दे। इसके कारीगर को एक चेहरा बनाने में कई दिन या महीनों तक लग सकते हैं। कारीगर को जिस चेहरे का फेसमास्क बनाना होता है, पहले वह उसका रेखा चित्र बनाकर उसकी डाई तैयार करता है। तत्पश्चात् नरम रबड़ के खोल पर गड्ढों व उभारों को हू-ब-हू बनाने में भी उसे काफी समय लगता है। फिर पूरा चेहरा बनाने के बाद उसे किसी मूर्ति या चेहरे पर लगाकर असली चेहरे के साथ मिलान करके यह देखा जाता है कि कहीं कुछ कमी तो नहीं रह गई है। अगर कमी मिलती है तो उसमें सुधार करके पुनः जांच की जाती है। इस तरह इन तमाम प्रक्रियाओं को पूरा करने के बाद, वह नकली चेहरा असली जैसा दिखाई देता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वह इतनी जल्दी फेसमास्क बनवाने में कामयाब नहीं हो सकती थी।"

"इसका मतलब तुम यह कहना चाहते हो कि लक्ष्मी जीवित नहीं है ?"

"यह दावा तो मैं तब तक नहीं कर सकता, जब तक कि यह पता न चल जाए कि वीणा के बयान के मुताबिक किसी

नकाबपोश का अस्तित्व है भी या नहीं। क्योंकि, उस स्थिति में यह भी तो हो सकता है कि ऐसी किसी सम्भावना की कल्पना लक्ष्मी ने पहले से ही कर रखी हो और इसी उद्देश्य से अपना नकली चेहरा बनवा लिया हो कि संयोग से अगर उसके जीवित रहने का भेद कभी खुल भी गया, तो वह इसकी सहायता से बड़ी आसानी से स्वयं को छुपा सकती है। लेकिन अब सवाल यह उठता है कि वह ऐसा क्यों करेगी ? थोड़ी देर के लिए अगर यह मान लिया जाये कि वह किसी दूसरे को चाहती थी और देवेन्द्र से पीछा छुड़ाने के लिए उसने इस तरह की साजिश रची थी, ताकि वह अपने प्रेमी के पास जा सके। तब समझ में नहीं आता कि उसे इतनी लम्बी-चौड़ी साजिश रचने की क्या जरूरत थी ? वह उससे तलाक भी तो ले सकती थी। वैसे देखा जाए तो उसके किसी प्रेमी की सिर्फ एक सम्भावना ही है। लेकिन वास्तव में इसकी कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि हम लोग अच्छी तरह जानते हैं कि देवेन्द्र ने उससे लव मैरिज की थी। पहले से किसी से प्रेम सम्बन्ध होने की सम्भावना तो तब रहती है, जब घर वालों के दवाव में आकर विवाह करना पड़ा हो। इसलिए मुझे तो लगता है, इस साजिश के पीछे किसी दूसरी ही हस्ती का दिमाग काम कर रहा है।"

"तब फिर क्या तुम्हारे पास मेरी इस बात का कोई जवाब है कि लक्ष्मी के अलावा देवेन्द्र का कौन ऐसा दुश्मन था, जो इतनी गहरी साजिश रचकर उसकी जान का दुश्मन बन बैठा है।" सरला किसी प्रतिद्वंद्वी वकील की तरह कैलाश के चेहरे की तरफ देखती हुई बोली थी।

"इसका जवाब तो अंकल ही दे सकते हैं।" भूपेन्द्रसिंह की तरफ देखकर कैलाश एक झटके से बोला था।

"म···मैं क्या जवाब दे सकता हूं ?" आश्चर्य से उछलते हुए भूपेन्द्रसिंह हकला उठे।

"यही कि आपका कौन ऐसा दुश्मन है, जो ऐसी साजिश कर सकता है।"

"अरे भाई, कह तो दिया···।" भूपेन्द्रसिंह घबराहट छुपाते हुए बोले—"कि मेरी किसी के साथ दुश्मनी नहीं है, फिर उसमें ऐसा और वैसा क्या ?"

"देखिए अंकल...!" उसकी आंखों में झांकते हुए कैलाश ने कहना शुरू किया—"अज्ञात मददगार के रूप में हमें हर कदम पर मात देने वाले शख्स पर मुझे शुरू से ही शक था। हो सकता है कि वह ब्लैकमेलर न होकर आपका कोई ऐसा दुश्मन रहा हो, जो किसी वजह से हमें आतंकित करके लक्ष्मी की हत्या में देवेन्द्र को सजा दिलवाने का ख्वाहिशमंद रहा हो। मैंने उस वक्त भी किसी ऐसे दुश्मन की सम्भावना व्यक्त की थी, लेकिन तब आपने जान-बूझकर उस बात को टाल दिया था। अतः जहां तक मैं समझता हूं, आप वह बात मुझे बताना नहीं चाहते कि कहीं उसे जानने के बाद मैं आपके प्रति गलत दृष्टिकोण न अपना लूं। लेकिन ऐसा सोचते समय आप यह क्यों भूल रहे हैं अंकल कि मैं आपका होने वाला दामाद हूं। उस नाते आप मेरे पिता तुल्य हैं। परन्तु अफसोस...आप मुझ पर यकीन नहीं कर रहे हैं। अगर आप मुझे सबकुछ साफ-साफ बता देते तो हो सकता था कि आपके दुश्मन को जान लेने के बाद मैं देवेन्द्र को बचाने की ऐसी व्यूह रचना तैयार कर पाता, कि वह तो बचता ही, साथ ही आपके दुश्मन के चेहरे से नकाब भी उतर जाता। अगर अब भी आप उसका नाम बता देते हैं, तो मैं वादा करता हूं कि बहुत जल्द वह कानून की गिरफ्त में होगा।"

"उफ!" सिर पर हाथ मारते हुए भूपेन्द्रसिंह झुंझलाकर चीखे—"मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि जब मैंने एक बार कह दिया कि मेरी किसी से भी दुश्मनी नहीं है तो फिर तुम बार-बार एक ही बात क्यों रटे जा रहे हो?"

जवाब में वह विचित्र-सी नजरों से उसके चेहरे पर मौजूद भावों को पढ़ने की कोशिश करता रहा।

लेकिन फिर उन नजरों का सामना न कर पाने की वजह से भूपेन्द्रसिंह कसमसाते हुए बोल उठे—"मेरा यकीन करो बेटे। हमने किसी के साथ, ऐसा कुछ नहीं किया है, जिससे कि वह हमसे दुश्मनी निभाने पर आमादा हो जाए। राघव ने भी हम पर जो इल्जाम लगाया था, वह सिर्फ हमें अपमानित करने के उद्देश्य से ही लगाया था। जब उसके बूढ़े शरीर से ऊबकर उसकी जवान बीवी घर से भाग गई त उसे खोजने की फरियाद लेकर वह मेरे पास पहुंचा था। त

मैंने उसे समझाया था कि अब उसे खोजने से कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि वह अपनी मर्जी से उसे छोड़कर गई थी। अतः अगर पुलिस की मदद से हम उसे खोज भी लेंगे तो भी वह उसके साथ रहने को राजी नहीं होगी। और बालिग होने के नाते वह उसे जबरदस्ती अपने साथ रहने पर विवश भी नहीं कर सकता। उस वक्त तो वह कुछ नहीं बोला था। लेकिन एक दिन बिना किसी को कुछ बताए अचानक ही नौकरी छोड़कर चला गया था। शायद मेरे समझाने का उस पर उल्टा ही असर पड़ा था। शायद उसने सोचा था कि मैं उसकी बीवी को इसलिए नहीं खोजना चाहता, क्योंकि उसे भगाने में मेरा हाथ रहा था?"

"खैर...।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए कैलाश बोला —"इस साजिश की रचना राघव जैसे मूढ़ इंसान के वश के बाहर की बात है। उसका रचयिता तो कोई ऐसी हस्ती होनी चाहिए, जो काफी तेज दिमाग रखने के साथ-साथ लोमड़ी की तरह धूर्त भी हो।"

"मैं फिर भी यही कहूंगी...।" सरला उत्साहित स्वर में बोल उठी—"कि यह सब लक्ष्मी का ही किया धरा है। उसके साथ बिताए दिनों में मैं अच्छी तरह यह अनुभव कर चुकी थी कि दिमाग के मामले में वह काफी तेज थी। अतः ऐसी साजिश कोई रच सकता है तो वह उसे छोड़कर दूसरा कोई नहीं हो सकता। वह शायद एक ही तीर से दो शिकार करना चाहती थी। पहला तो वह भइया को फांसी पर लटकाकर पूरा कर चुकी है। दूसरा दौलत हासिल करने के लिए अब वह यह साबित करने की कोशिश करेगी कि इस साजिश के पीछे कोई दूसरी हस्ती काम कर रही थी। बाद में वह इस तरह प्रकट होने का इरादा रखती होगी, जिससे कि पुलिस और हमें यह यकीन दिलाने में कामयाब हो जाए कि अब तक उसे किसी ने कैद कर रखा था। लेकिन उस नागिन की बातों पर यकीन करने की बात तो दूर, मैं तो उसे देखते ही गोली मार दूंगी। फिर भले ही मुझे फांसी क्यों न हो जाए।"

इस बार कोई कुछ न बोला।

बोलता भी कौन? भूपेन्द्रसिंह और कैलाश दोनों ही गहरी सोच में डूबे हुए थे।

□ □

"बोल हरामजादे, बोल। मुझसे झूठ बोलने की तेरी हिम्मत कैसे हुई ?" क्रोध से अंगारा हुई आंखें और होंठों को सख्ती से भींचे वामनराव लगातार लात-घूंसों से राघव की पिटाई करते हुए गुर्राए जा रहा था।

राघव के जिस्म पर मौजूद जेल की वर्दी तार-तार होकर उसके बदन पर झूल चुकी थी। उसकी नाक से निकल कर बहता खून होंठों से होता हुआ उसकी वर्दी को रंगता चला गया था।

बुरी तरह आतंकित होकर उसके मुंह से आवाज की जगह चीखें उबल रही थीं। इस बार वामनराव का एक फौलादी घूंसा उसके पेट से टकराया।

भैंसे की तरह डकराने के साथ राघव चीख पड़ा—"म···मुझे मत मारिये साहब। म···मैं···।"

"मिस्टर वामनराव !" काफी देर से खामोश खड़े डिप्टी जेलर ने नाराजगी भरे स्वर में कहा—"बस, बहुत हो चुका। यह आपका टार्चर रूम नहीं है, बल्कि जेल है। अगर कैदी को कुछ हो गया तो मैं तो बीच में ही मारा जाऊंगा, आपको कौन पूछेगा ? इसलिए इससे जो भी पूछना हो, कायदे से पूछिए।"

"कायदा···कानून···और इन जैसे लोगों से···।" दहकते शोलों-सा सांय-सांय भरा स्वर उसके मुंह से निकला—"नहीं डिप्टी साहब ! आप इन लोगों को नहीं जानते। ये सिर्फ लातों की भाषा समझ सकते हैं। आप शायद यह नहीं जानते हैं कि इस हरामी के झूठ ने मेरे ऊपर कितना बड़ा कलंक लगा दिया है। जिस वामनराव का नाम लोग यह कहकर फख्र से लेते थे कि उसके द्वारा कभी किसी निर्दोष व्यक्ति को सजा नहीं मिल सकती और मुजरिम कभी सजा से बच नहीं सकता।" बिना रुके वह चीख-चीखकर बोलता जा रहा था—"किन्तु इस हरामजादे के झूठ ने मेरे द्वारा एक निर्दोष को मुजरिम घोषित कर फांसी पर लटकवा दिया, जबकि असली मुजरिम अब भी आजाद घूम रहा है।"

"मैं आपकी परेशानी समझ रहा हूं मिस्टर वामनराव, लेकिन आप मेरी मजबूरी का भी ख्याल कीजिए। अगर यह बात हमारे उच्चाधिकारियों या नेताओं तक पहुंच गई मैं तो

सस्पेंड कर दिया जाऊंगा।"

"आप बेफिक्र रहिये। ऐसी नौबत आने पर मैं आपके ऊपर आंच तक नहीं आने दूंगा। मैं साफ-साफ यह स्वीकार कर लूंगा कि रिवॉल्वर की नोक पर मैंने ही तुम्हें इस मामले में हस्तक्षेप न करने पर मजबूर कर दिया था। और इस कैदी को मैंने अपने हाथों कत्ल किया था।" अपने अन्तिम शब्दों को उसने डिप्टी जेलर की तरफ घूमते हुए हल्के से आंख दबाकर कहा था।

"न···नहीं···!" राघव हलक फाड़कर चीख। उसे लगा कि वह जुनूनी इंस्पेक्टर अपना कहा सच साबित कर देगा।

अतः बड़ी मुश्किल से उसके मुंह से हलाल होते बकरे जैसी मिमियाहट निकली—"म···मैं···सब बताऊंगा···सब-कुछ बताऊंगा।"

अपने शब्द रूपी हथियार का प्रभावकारी परिणाम होते देख उनके होंठ धूर्तता-भरी मुस्कराहट के साथ हिले—"नहीं, अब इसकी कोई जरूरत नहीं है। अपने ऊपर लगे बदनामी के दाग को तुम्हारे खून से धोने के बाद ही मुझे चैन मिलेगा।" कहने के साथ ही वामनराव ने अपना हाथ होलेस्टर की तरफ बढ़ाया।

"न···नहीं···!" राघव के मुंह से निकलने वाली यह चीख, पहले वाली चीखों की अपेक्षा हजार गुना नहीं तो सौ गुना तेज तो अवश्य ही कही जा सकती थी। चीखने के साथ ही वह न सिर्फ उसके कदमों पर गिर पड़ा, बल्कि जोंक की तरह उनसे लिपटते हुए बिलख-बिलखकर रो उठा। उसके मुंह से एक ही शब्द बार-बार निकल रहा था—"मैं सब बताऊंगा साहब, सब बताऊंगा।"

"ठीक है। पहले उठकर खड़े हो जाओ।"

उसके आदेश को सुनकर उसने तुरन्त रोना बन्द कर दिया और उठकर खड़ा हो गया। फिर विस्फारित निगाहों से उसके लम्बूतरे चेहरे को देखने लगा, जैसे उसे अपने कानों पर यकीन ही न आ रहा हो।

फिर दुबारा आश्वासन मिलने पर उसने मशीनी अंदाज में बोलना शुरू कर दिया—"अपने बारे में मैंने जो कुछ बताया था, वह बिल्कुल सच था। सावित्री का मुझे छोड़कर

चले जाना भी सही था, लेकिन उसके बाद मैंने जो कहा था, वह उस नकाबपोश के सिखाने पर कहा। सावित्री का लिखा पत्र भी मुझे उस नकाबपोश ने ही दिया था।"

"नकाबपोश ! वह तुम्हें कहां मिला था?" शंका से उसे घूरते हुए वामनराव ने पूछा।

"सावित्री के चले जाने से मैं इतना टूट गया था कि शराब पीकर अपने गम को भुलाने की कोशिश करने लगा था। पास के सब पैसे खत्म हो गए थे। और पास में कोई काम-धंधा न होने के कारण मैं कुछ आपराधिक तत्त्वों के साथ चोरियां करने लगा था। रहने के लिए झोंपड़ पट्टी क्षेत्र में एक छोटी-सी झोंपड़ी बना ली थी। वह नकाबपोश मुझे वहीं मिला था। सावित्री के साथ कैसे और क्या हुआ था? उसने मुझे इस ढंग से बताया कि मुझे उसकी बातों पर यकीन आ गया था। सावित्री के लिखे उस पत्र को पढ़कर तो मुझे पक्का यकीन हो गया था कि जिन्हें मैं अपना भगवान् समझता था, वे तो शैतानों से भी ज्यादा गिरे हुए हैं।"

"उस पत्र पर यकीन करने की वजह क्या थी? क्या तुम अपनी बीवी की लिखावट पहचानते थे?"

"लिखावट तो नहीं पहचानता था साहब, लेकिन इतना जरूर जानता था कि वह थोड़ा-बहुत लिखना-पढ़ना जानती है। और पत्र जिस ढंग से लिखा हुआ था, उसे देखते हुए शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी, क्योंकि देवेन्द्र के द्वारा छेड़-छाड़ की शिकायत उसने मुझसे एक-दो बार की थी, लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया था।

अतः उस नकाबपोश की बात सुनकर, उन जालिमों से बदला लेने के लिए मैं बुरी तरह बेचैन हो उठा था। तब उसने यह भी बताया था कि देवेन्द्र ने अपनी बीवी का खून कर दिया है। अपनी योजना के बारे में बताते हुए उसने कहा था कि देवेन्द्र को सजा दिलवाने का इंतजाम तो वह कर चुका है। साथ ही भूपेन्द्रसिंह को सजा देने का जो तरीका उसने सोचा है, उससे वह जीते-जी मौत मांगने लगेगा। इस काम के लिए उसने मुझे वही सब बातें बताई थीं, जो मैंने आपको उस दिन बताई थीं। उसका यह कहना था कि जब भूपेन्द्रसिंह की दौलत उस ब्लैकमेलर के कब्जे में आ जाएगी तो वह आसानी से, जब चाहे उस ब्लैकमेलर से

वह दौलत छीन सकता है। लेकिन एक दिन···।"

सांस लेने के लिए एक क्षण रुककर उसने पुनः बोलना शुरू किया—"जब वह मेरी झोंपड़ी में आया तो मारे घबराहट के उसकी आवाज बुरी तरह कांप रही थी। उसने बताया कि भूपेन्द्रसिंह को ब्लैकमेल करने वाली बात आप जान गए हैं। अतः एक न एक दिन आप उस तक पहुंच जायेंगे। तब उसने कसम खाकर मुझे यकीन दिलाया था कि अगर उसकी जगह मैं गिरफ्तार हो जाऊं तो आपका ध्यान उस पर से हट जायेगा और वह मुझसे बहुत ज्यादा चालाक होने के नाते भूपेन्द्रसिंह से बदला लेने की कोई दूसरी तरकीब निकाल लेगा। बस, मेरी समझ में उसकी यह बात घुस गई। अतः मेरे तैयार होने पर उसने प्रफुल्ल का पता व नकाबपोश के हुलिए के साथ एक देशी रिवॉल्वर देते हुए कहा था कि वहां तुम इस ढंग से जाओगे, ताकि अगर कोई तुम्हें देख भी रहा हो तो उसे यही लगे कि तुम वहां काफी होशियारी से वहां घुस रहे हो। उसके बाद आपने मुझे गिरफ्तार कर लिया था बस···।"

कहने के बाद वह ठीक उसी ढंग से खामोश हो गया, जैसे चलता हुआ कैसेट खत्म हो जाने पर टेपरिकॉर्डर चुप्पी साध लेता है।

"जिस वक्त उसने तुम्हें ये बातें बताईं।" उसकी आंखों में झांकते हुए वामनराव के होंठों से सांय-सांय भरी आवाज निकली—"क्या उसके चेहरे पर नकाब मौजूद था?"

"जी हां, मैंने उसका चेहरा देखने की बहुत जिद की थी। लेकिन उसका कहना था कि मुझसे चेहरा छुपाने का एकमात्र कारण यह है कि अगर संयोग से कभी मेरा भेद खुल गया, तो उस स्थिति में पुलिस तुमसे सख्ती करने के बावजूद भी मेरे बारे में कुछ नहीं जान पाएगी और मैं भूपेन्द्रसिंह से हमारे साथ हुए अत्याचारों का बदला ले लूंगा।"

"इसके अलावा नकाबपोश ने तुम्हें कुछ और बताया था?"

"नहीं साहब, बस इतना ही बताया था।"

"अच्छी तरह याद कर लो।" इस बार सांय-सांय की जगह गुर्राहट-सी निकली—"शायद उसने कुछ और भी

बताया हो, जो इस वक्त तुम्हें याद न आ रहा हो।"

पलकें झपकाते हुए कई क्षण सोचने के बाद राघव इंकार में सिर हिलाता हुआ बोला—"नहीं साहब और कुछ नहीं बताया।"

"क्या यह नहीं बताया था, कि उसने लक्ष्मी का एक नकली चेहरा बनवाया है ?"

"न···नकली चेहरा ? ल···लक्ष्मी का !" आश्चर्य से उछलते हुए वह बोल उठा—"य···यह क···क्या कह रहे हैं आप ?"

तुरन्त जवाब देने की जगह, कई क्षणों तक उसके चेहरे पर उभरने वाले आश्चर्य और चौंकने वाले भावों को अपनी हरी व चमकदार आंखों से वामनराव इस ढंग से तोलता रहा कि वह स्वाभाविक रूप से उभरे हैं या अभिनय के कमाल से। आखिर उसकी बातों में आकर वह जबरदस्त गच्चा जो खा चुका था।

अंततः किसी निर्णय पर न पहुंच पाते हुए उसने अपने सिर को झटकते हुए कहा—"मैं इस वक्त तो जा रहा हूं, लेकिन अगर पता चला कि तुमने पुनः झूठ बोला है तो फिर कोई भी ताकत तुम्हें नहीं बचा सकेगी। तुम्हारी किस्मत में मैं ऐसी मौत लिख दूंगा कि तुम्हें यकीन तक नहीं आएगा कि किसी इंसान की मौत इस तरह भी हो सकती है।"

कहने के साथ ही उसकी शतुरमुर्ग जैसी पतली टांगें तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ गई थीं।

□□

कॉलबेल की आवाज सुनकर गजानन ने आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया। द्वार पर वामनराव खड़ा था। बूढ़े घोड़े की तरह दुर्बल जिस्म पर पूर्ण वर्दी के साथ।

"आइये-आइये इंस्पेक्टर साहब !" चौंकने के साथ ही दरवाजे के सामने से हटता हुआ वह नाटकीय ढंग से बोल उठा—"जहे नसीब जो आप इस गरीबखाने पर तशरीफ लाए। मेरे लायक कोई सेवा ?"

बिल्ली जैसी आंखों से उसे घूरते हुए, सोफे पर बैठकर उसकी सांय-सांय भरी आवाज उभरी—"हां, सेवा भी है और मेवा भी। लेकिन पहले यह बताओ, तुमने आज का अखबार पढ़ा या नहीं ?"

"अखबार पढ़े बिना तो मेरा धंधा ही नहीं चलता साहब, लेकिन आज एक क्लाइंट के केस में कुछ इस कदर व्यस्त रहा कि अखबार पढ़ने की कौन कहे, देखने तक की फुर्सत नहीं मिली। अभी मैं…।"

"ठीक है, अब पढ़ लो।" उसकी बात पूरी होने से पहले ही वामनराव बोल उठा था।

आश्चर्य से उसके लम्बूतरे चेहरे की तरफ देखता हुआ वह बोला—"आखिर बात क्या है साहब? आज ऐसा क्या छप गया है कि आपको खुद यहां तक चलकर आना पड़ा?"

"सब समझ जाओगे। पहले अखबार पढ़ लो। तुम्हें सिर्फ वीणा नाम की युवती की गिरफ्तारी व उसके बयान को पढ़ना है।"

असमंजस-भरी निगाहों से उसकी तरफ देखते हुए गजानन ने मेज पर पड़ा अखबार उठा लिया।

फिर प्रथम पृष्ठ पर ही उसे वह समाचार नजर आ गया। समाचार पढ़ने के बाद उसके मुंह से हैरत भरा स्वर निकला—"इ…इतना बड़ा धोखा?"

"हां, इतना बड़ा धोखा।" वामनराव गुर्राया—"लेकिन मैं यहां यह जानने के लिए आया हूं कि तुम्हारे धोखे की नाप कितनी लम्बी है?"

"क…क्या मतलब?" वह बुरी तरह चकरा उठा।

"मतलब ये मिस्टर गजानन जी कि देवेन्द्र ने तुम्हारी सेवा इसलिए हासिल की थी कि तुम उसकी बीवी के क्रियाकलापों की रिपोर्ट उसे देते रहो। और तुमने उसे यह रिपोर्ट दी कि वह चरित्रहीन थी। ठीक?"

उसे सहमति में सिर हिलाकर स्वीकार करना पड़ा।

"तुम्हारी दी गई रिपोर्ट के आधार पर देवेन्द्र तुम्हारे बताए हुए स्थान पर जा पहुंचा।" बिल्ली जैसी आंखों से उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश करते हुए उसने बोलना जारी रखा—"और अपनी आंखों से अपनी बीवी को किसी पर-पुरुष के साथ देखकर उसने उसे जान से मार डालने की कोशिश की, लेकिन एक नकाबपोश ने चोट पहुंचाकर उसे बेहोश कर दिया। इसके बाद घर पहुंचकर उसने अपनी बीवी का कत्ल कर दिया। कानून ने उसे फांसी दी और अब वीणा यह साबित कर रही है कि जिसकी रिपोर्ट तुमने

देवेन्द्र को दी थी, वह लक्ष्मी न होकर वह खुद थी। यानी किसी ने साजिश रचकर देवेन्द्र के हाथों लक्ष्मी का कत्ल करवाया था। क्योंकि जिस शख्स ने यह साजिश रची थी वह यह अच्छी तरह जानता था कि देवेन्द्र को अपनी बीवी के चरित्र पर शक है। अब सवाल यह उठता है कि ये बात और कौन-कौन जानता था ? जवाब दो मिस्टर गजानन।"

"म···मैं क्या जवाब दूं ?' वह हकलाया—"इस बात को जानने वालों की संख्या कम भी हो सकती है और ज्यादा भी।"

"नहीं मिस्टर गजानन, इनकी संख्या ज्यादा या कम नहीं, बल्कि निश्चित रूप से तीन होनी चाहिए।" अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए वामनराव ने बोलना जारी रखा—'एक तो खुद देवेन्द्र, दूसरी लक्ष्मी और तीसरे तुम ?"

"न···नहीं···वामनराव साहब। आप बेवजह मुझ पर शक कर रहे हैं। मुझे तो सिर्फ लक्ष्मी जी के क्रियाकलापों की रिपोर्ट देनी थी। लेकिन तब मुझे यह थोड़े ही पता था कि वह असली है या नकली।"

"मैं असली-नकली की बात नहीं पूछ रहा हूं।" उसकी आंखों में झांकते हुए वह गुर्राया—"मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि जब इस बात को सिर्फ तीन लोग ही जानते थे तो फिर वह उस शख्स तक कैसे पहुंची, जो इस साजिश का रचयिता है। मेरे ख्याल से इसका जवाब यह हो सकता है कि न तो देवेन्द्र ही अपनी बीवी की चरित्रहीनता का ढिंढोरा पीट सकता था और न खुद लक्ष्मी ही। अब बाकी बचते हो तुम ?"

"न···नहीं···।" बुरी तरह आतंकित होकर वह गिड़गिड़ा उठा—"ऊपर वाले की कसम खाकर कहता हूं, यह बात मैंने किसी को भी नहीं बताई। मेरा यकीन मानिए इंस्पेक्टर साहब, मैं किसी नकाबपोश को नहीं जानता।"

"मैं तुम्हारी बात पर यकीन कर सकता हूं लेकिन तब, जब तुम यह बता दो कि साजिश रचने वाले शख्स को यह जानकारी कैसे मिली होगी ?"

"अगर मैं यह समझ जाता तो फिर रोना ही किस बात का था।" वह रुआंसे स्वर में बोला—"मैं तो सिर्फ इतना

जानता हूं कि अपने काम की शुरुआत से लेकर अब तक मैंने अपने किसी भी क्लाइंट का कोई भी रहस्य किसी को भी नहीं बताया है।"

"इस काम में तुम्हारा कोई सहयोगी भी है।"

"नहीं साहब, ऑफिस से लेकर फील्ड तक का सारा काम मैं खुद ही करता हूं।"

"अरे हां।" कुछ सोचते हुए वामनराव के निराशा-भरे चेहरे पर अचानक एक अलौकिक चमक व्याप्त हो गई—"क्या तुमने वीणा यानी, तुम्हारी समझ के अनुसार लक्ष्मी की आपत्तिजनक तस्वीरें खींचने की कोशिश की थी ?"

"जी हां, मैंने उन दोनों की कई तस्वीरें खींची थीं। देवेन्द्र जी को मैंने कहा भी था कि अगर वह चाहें तो मेरे ऑफिस में आकर उन तस्वीरों को ले जा सकते हैं, लेकिन वह नहीं आए।"

"ओह गुड ! उन तस्वीरों को ले आओ।"

"लेकिन अब उन तस्वीरों से क्या हासिल होगा साहब ? जबकि अब तो यह साबित हो चुका है कि वह देवेन्द्र जी की बीवी नहीं, बल्कि उनका चेहरा लगाए वीणा थी।"

"तुम दिखाओ तो सही।" वामनराव जोश-भरे स्वर में बोला—"हो सकता है वीणा के साथ वाले मर्द को पहचानने के बाद कोई नतीजा निकल सके। या यह भी हो सकता है कि उसे इस काम के लिए नियुक्त करने वाला शख्स भी उन तस्वीरों में आ गया हो, जो यह देखने के लिए वहां उपस्थित हो कि उसका बताया काम वह ठीक ढंग से कर भी रही है या नहीं, क्योंकि नकाबपोश के रूप में वीणा से मिले होने की वजह से उसे अपने पहचाने जाने का भय तो रहा नहीं होगा।"

"ठीक है। आप बैठिये, मैं ढूंढ़ कर लाता हूं।" कहने के साथ ही वह तेजी से उठकर बगल के कमरे में दाखिल हो गया।

करीब आधे घंटे के बाद वापस लौटकर बिना कुछ बोले उसने पीले रंग का एक लिफाफा उसकी तरफ बढ़ा दिया।

उसमें अधिकांश तस्वीरें लक्ष्मी और एक नौजवान की

थीं, जो भिन्न-भिन्न जगहों पर खींची गई थीं।

तस्वीरों को उलटते-पलटते अचानक उसकी निगाहें एक तस्वीर पर चिपककर रह गईं, जो किसी गार्डन में खींची गई थी। उस तस्वीर में लक्ष्मी व उसके प्रेमी के अलावा अन्य बहुत से लोग थे। उन्हीं लोगों में एक शख्स, जो उनसे काफी दूर हटकर उन्हीं दोनों की तरफ टकटकी लगाए देख रहा था। उसका चेहरा पहचानते ही वामनराव को लगा, जैसे उसकी खोपड़ी में पटाखे फूटने लगे हों।

"क्यों साहब ?" गजानन बोल उठा—"बड़ी देर से देख रहा हूं, आप इसी तस्वीर को देखे जा रहे हैं। आखिर इसमें ऐसा क्या है ?"

उसके प्रश्न को नजरअंदाज करते हुए वामनराव ने उस तस्वीर में दिखाई दे रहे उस शख्स पर उंगली रखते हुए पूछा— "इसे पहचानते हो ?"

कुछ देर गौर से देखने के बाद इंकार में सिर हिलाता हुआ गजानन बोला—"नहीं, मैंने इसे कभी नहीं देखा। कौन है ये ?"

"अभी मैं यह दावा तो नहीं कर सकता, लेकिन लगता है, यही वह शख्स है, जिसने मेरे दिन-रात का चैन छीन रखा है।" कहते हुए वह तस्वीरों को जेब में रखकर एक झटके से उठकर खड़ा हुआ। उसकी हरी आंखों में इतनी तेज चमक व्याप्त थी कि जिसकी तुलना टॉर्च लाइट से भी नहीं की जा सकती।

□□

"नमस्ते मालिक ! वकील बाबू नमस्ते !"

डाइनिंग टेबल के इर्द-गिर्द बैठे कैलाश, सरला और भूपेन्द्रसिंह ने पलटकर दरवाजे की तरफ देखा।

हाथ में टीन का डिब्बा, बिस्तर और एक झोला लटकाये, वहां उनका नौकर मुरारी खड़ा था।

"अरे मुरारी तू !" कैलाश बोला—"कब आया ?"

"बस, सीधा स्टेशन से ही चला आ रहा हूं वकील बाबू।"

"अपनी बीवी को कहां छोड़ आया ?"

"इस बार मां ने उसे नहीं आने दिया।" फिर कुछ झेंपते हुए वह बोला—"पहला बच्चा है न, इसलिए।"

"अरे वाह गुरु ! बाप बनने वाले हो और हमें खबर तक नहीं।"

वह शरमाकर अभी कुछ कहने ही वाला था कि भूपेन्द्रसिंह तेज स्वर में बोल उठे—"बिना कुछ बताए कैसे चला गया था मुरारी ? जाने से पहले कम-से-कम अपनी जगह दूसरा नौकर तो रखकर जाता।"

"म···मालिक···ये···ये आप क्या कह रहे हैं ?" कहते समय उसकी आंखों में महान् आश्चर्य झलकने लगा था।

"बहरा हो गया है क्या ?" भूपेन्द्रसिंह और जोर से भड़के—"मैं पूछ रहा हूं कि किसी को बिना कुछ बताए कैसे चला गया था ?"

"म···मालिक !" वह सहमते हुए बोला—"आपने ही तो मुझसे यह कहा था कि मेरे गांव का रहटू मेरी मां की बीमारी की खबर लेकर आपके पास आया था। तब आपने ही मुझे गांव जाने की सलाह देते हुए कहा था कि मैं जल्दी से पहुंचकर मां की देखभाल करूं। यहां का काम तो किसी तरह चलता ही रहेगा, लेकिन मां-बाप तो जिंदगी में एक ही बार मिलते हैं।"

"त···तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है।" भूपेन्द्रसिंह इस बार गला फाड़कर चीखे—"तू होश में है या नहीं ? यह क्या अनाप-शनाप बक रहा है तू ?"

"म···मैं···।" वह बुरी तरह हकलाया और चौंककर बोला—"ओह ! गलती हो गई मालिक। लगता है इतने दिन गांव में रहने से मेरे दिमाग में धूल-मिट्टी भर गई है ?"

"क···क्या मतलब ?" उसे अचानक इस तरह बात पलटते देखकर कैलाश ने उसे कठोर निगाहों से देखते हुए पूछा था।

"मतलब कुछ नहीं वकील बाबू।" वह बड़े आत्मविश्वास से बोला—"दरअसल रहटू खुद मुझसे मिला था और उससे अपनी मां की बीमारी की खबर सुनकर मैं इतना इंतजार न कर सका था कि मालिक के पास जाकर अपने जाने की बात बताता। उस वक्त सरला मेमसाब घर पर ही थीं। मैंने उन्हें बता दिया था। लेकिन पता नहीं कैसे मेरे दिमाग में यह घुस गया कि रहटू की जगह मुझे मालिक से मां की बीमारी की खबर लगी थी।"

"ऐसी कोई बात भला बेवजह ही किसी के दिमाग में घुस सकती है ?"

"अ···अब वकील बाबू आपको क्या बताऊं ?"

"जाने भी दो कैलाश बेटे।" नर्म पड़ते हुए भूपेन्द्रसिंह बोल उठे—"ऐसे अहमक लोगों की दुनिया में कमी नहीं है, जो कहते क्या हैं और सोचते क्या हैं। इसका खुद उन्हें ही होश नहीं रहता।"

"लेकिन डैडी···!" सरला ने पहली बार अपना मुंह खोला—"पहले तो यह कोई बात नहीं भूलता था ?"

"यह कोई बात नहीं भूलता···? इसका मतलब तुम यह कहना चाहती हो कि मैं भूल गया हूं। मैंने ही इसे इसकी मां की बीमारी की खबर देकर इसके गांव भेजा था। और आने पर अब मैं ही पूछ रहा हूं कि वह बिना बताए कैसे चला गया, ताकि जब वह यह कहे कि आपने ही भेजा था, तब यह साबित हो जाए कि मैं पागल हो गया हूं।"

"ड···डैडी !" वह हकलाई—"म···मेरा मतलब यह नहीं था, मैं तो सिर्फ यह जानना चाहती थी कि आखिर इसे हो क्या गया है ?"

"हुंह ! क्या पता ?" उसे घूरते हुए वह भुनभुनाए—"ये तो यही जाने ?"

"द···देखिये, मेरी खातिर आप लोग आपस में मत झगड़िए। मैं कसम खाकर कहता हूं कि गलती मेरी ही थी। दो महीने गांव में रहने व वहां की व्यस्तता के कारण वह बात मेरे दिमाग से उड़ गई थी। शायद इसी वजह से मुझसे भूल हो गई।"

"ठीक है···ठीक है।" बात को वहीं खत्म कर देने के उद्देश्य से कैलाश बोला—"हम लोग बेवजह ही छोटी-सी बात को तूल दिए बैठे हैं। मुरारी तुम जाओ। सामान रख-कर अपना काम शुरू कर दो।"

"ज···जी···!" कहकर दरवाजे की तरफ बढ़ता हुआ वह अचानक ठिठका और भूपेन्द्रसिंह की तरफ देखते हुए बोला—"छोटे मालिक और मेम साहब नहीं दिखाई दे रहे हैं। क्या वे लोग कहीं अलग रहने लगे हैं ?"

और फिर जब कैलाश ने उसे पूरी बात बताई तो···?

मूर्खों की तरह पलकें झपकाने के सिवा उसके मुंह से

□□

वामनराव के इशारे पर इंस्पेक्टर गाडगिल ने गंदी-सी दिखाई देने वाली एक कोठरी का दरवाजा जोर से भड़भड़ाया था।

"अरे कौन है भाई ? आता हूं। दरवाजा तोड़ डालने का इरादा है क्या ?" अन्दर से किसी की मद्धिम आवाज के साथ पदचाप उभरी थीं।

फिर सांकल खोलने की आवाज के साथ दरवाजा धीरे से खुला।

उनके सामने एक ऐसा बूढ़ा खड़ा था, जिसकी सभी हड्डियां आसानी से गिनी जा सकती थीं।

बत्तीस में से मुश्किल से उसके दो-चार दांत ही शेष बचे थे।

दो पुलिस अधिकारियों पर निगाहें पड़ते ही उसके पोपले मुंह से आश्चर्य में डूबी आवाज निकली—"अ···आप लोग ! क्या बात है साहब ?"

"अन्दर चलो, बताता हूं।" फिर वामनराव और इंस्पेक्टर गाडगिल उस कोठरी के अन्दर दाखिल हो गए। कोठरी के अन्दर इतनी ज्यादा दुर्गन्ध थी कि सांस लेने में खासी दिक्कत महसूस हो रही थी। उस बूढ़े को दरवाजा बंद करते देख वामनराव जोर से चिल्लाया, "उसे खुला ही रहने दो। उफ ! कितनी दुर्गन्ध है।"

बिना बत्तीसी के अपनी खीसें निपोरता हुआ वह बूढ़ा बोला—"क्या करूं साहब, शरीर में इतनी ताकत ही नहीं बची कि सफाई कर सकूं।"

उसकी बातों को नजरअंदाज करके, रुक-रुककर सांस लेते हुए वामनराव ने पूछा—"तुम्हारा नाम शंकरनाथ कनपुरिया है ना ?"

"जी साहब, लेकिन बात क्या है ?"

दुर्गन्ध से फटे जा रहे दिमाग और उसके बार-बार पूछे जाने वाले प्रश्नों से खीजकर इंस्पेक्टर गाडगिल चिल्ला उठा —"उतना ही जवाब दो, जितना तुमसे पूछा जाए। समझे !"

"ज···जी !"

"और तुम..." अपनी आंखें उसके चेहरे पर टिकाए वामनराव के होंठ हिले—"नकली चेहरा बनाने का काम करते हो ?"

"जी साहब, पेट के लिए करना पड़ता है।"

"इस काम को करने के लिए तुम्हारे पास कानूनी अधिकार है ?"

"नहीं साहब, लेकिन क्या करूं, इस बुढ़ापे में कोई नौकरी तो देने से रहा। अतः चोरी या भीख मांगने से तो अच्छा है कि अपनी इस कला के सहारे पेट भरता रहूं।"

"यह जानने के बावजूद कि पकड़े जाने पर तुम्हें सजा भी हो सकती है ?"

"अब क्या फर्क पड़ता है साहब !" कनपुरिया दिलेरी से बोला—"पैर कब्र में लटके हैं। आज नहीं तो कल इस दुनिया से विदा होना ही है। स्थान चाहे यह दुर्गन्धयुक्त कोठरी हो, चाहे जेल की चार दीवारी...।"

"हूं !" पूर्ववत् उसके चेहरे पर नजरें टिकाए वामनराव ने पूछा—"तुम जिसका चेहरा बनाते हो और जिसे बनाकर देते हो, क्या उसका कोई रिकार्ड भी रखते हो ?"

"वैसे इसकी जरूरत तो नहीं रहती साहब, क्योंकि मेरी याददाश्त ही मेरा रिकार्ड है। फिर भी सावधानीवश चेहरा बनवाने वाले का नाम और अपने द्वारा बनाए हुए चेहरे की एक तस्वीर मैं अपने पास रख लेता हूं।"

लक्ष्मी की तस्वीर उसके सामने करते हुए वामनराव ने पूछा—"क्या इसका चेहरा तुमने ही बनाया था ?"

तस्वीर देखते ही कनपुरिया बेहिचक बोल उठा—"जी हां साहब, करीब पांच-छः महीने पहले इस लड़की का चेहरा, एक अपटूडेट आदमी को मैंने पांच हजार रुपये में बनाकर दिया था।"

"तुम उस आदमी को पहचान सकते हो ?"

"क्यों नहीं साहब ? सामने आने पर जरूर पहचान जाऊंगा।"

"उसने अपना नाम तो बताया होगा ?" वामनराव ने कुछ सोचते हुए पूछा था।

"हां, नाम तो बताया था, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा है। आप एक मिनट ठहरिए, मैं अभी देखकर बताता

हूं।"

कहने के साथ ही वह कोने में रखी लकड़ी की एक टूटी-फूटी अलमारी के पास पहुंचा और उसमें से एक चश्मा निकालकर आंखों पर लगाने के बाद एक खस्ताहाल रजिस्टर के पृष्ठ उलटने-पलटने लगा।

फिर एक पृष्ठ पर नजर पड़ते ही वामनराव की तरफ देखकर बोला—"उसका नाम रामलाल है साहब। लेकिन बात क्या है? क्या मेरे बनाए चेहरे का गलत प्रयोग कर उसने कोई जुर्म किया है?"

"जुर्म! तुम जुर्म की बात कर रहे हो…।" गाडगिल गुर्रा उठा—"ऐसा जुर्म किया है तुम्हारे उस अपटूडेट ने कि जिसे सुनकर तुम्हारी बूढ़ी आत्मा परलोक सिधार जाएगी।"

"ल…लेकिन साहब!" कनपुरिया सहमता हुआ बोला—"देखने में तो वह आदमी बहुत शरीफ लगता था। उस चेहरे को बनवा े का कारण उसने यह बताया था कि वह औरत अब इस दुनिया में नहीं है, किन्तु उसके साथ उसका ऐसा भावनात्मक सम्बन्ध है कि उसे देखे बिना वह एक पल भी नहीं रह सकता। उसने यह भी बताया था कि वह उसकी एक मूर्ति भी बनवा चुका है, लेकिन उस मूर्ति का चेहरा वास्तविक जैसा नहीं दिखता, इसलिए इस चेहरे को उस पर लगा देगा। उसने मुझे मूर्ति के चेहरे का भी नाप दिया था।"

"और तुमने उसकी बातों पर यकीन कर लिया।" जहर बुझे स्वर में कहते हुए वामनराव ने जेब से उस तस्वीर को निकालकर कनपुरिया के सामने कर दिया, जिसमें एक शख्स को पहचानकर वह बुरी तरह चौंक पड़ा था, बोला—"इसे अच्छी तरह देखकर जवाब दो कि क्या इसमें वह आदमी मौजूद है?"

काफी देर तक चश्मे के पीछे छुपी अपनी बूढ़ी आंखों से तस्वीर को निहारने के बाद कनपुरिया के मुंह से निराशा-भरी आवाज निकली—"इसमें उस आदमी की तस्वीर तो नहीं है, किन्तु उस लड़की की जरूर है, जिसका चेहरा मैंने बनाया था।"

सुनकर उसकी बिल्ली जैसी आंखें सोचने वाले अंदाज

में सिकुड़ गई और उसके होंठों से हैरानी भरा स्वर निकला —"क्या बक रहे हो ? ध्यान से उन चेहरों को देखो, जो तस्वीर में काफी अस्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। खासकर इस आदमी को ध्यान से देखो।" कहकर वामनराव ने तस्वीर में मौजूद एक चेहरे पर अपनी उंगली रख दी थी।

एक बार फिर कुछ देर तक निहारने के बाद वह बोला —"साहब, इसकी आकृति स्पष्ट नहीं है इसलिए मैं इसे नहीं पहचान पा रहा हूं।"

"तुम्हारे पास वह लैंस तो होगा, जिसमें किसी भी चीज को बड़ा करके देखा जा सकता है।"

"ओह हां ! उसका तो मुझे होश ही नहीं रहा।" फिर अपनी जेब से एक लैंस निकालता हुआ कनपुरिया बोला— "इसके बिना तो मेरा काम ही नहीं चल सकता साहब ! चेहरे के छोटे-छोटे चढ़ाव मैं इसकी सहायता से बना पाता हूं।"

फिर लैंस से उस तस्वीर को देखते ही उसके मुंह से प्रसन्नता में डूबी आवाज निकली—"र···रामलाल ! रामलाल यही है साहब।"

"गुड ! जब तुमने तस्वीर देखकर ही इसे पहचान लिया तो फिर सामने आने पर न पहचानने का तो कोई सवाल ही नहीं उठेगा।"

"जी हां साहब ! इसमें क्या शक है, लेकिन···!"

उसके पोपले मुंह से अभी कुछ और निकलता कि इससे पहले ही वामनराव अपनी शतुरमुर्ग जैसी टांगों से चलते हुए दरवाजे के बाहर निकल चुका था।

▭ ▭

न्यायाधीश कनौजिया की अदालत में पैर रखने तक की जगह नहीं बची थी। किन्तु भीड़ थी कि क्षण-प्रतिक्षण बढ़ती ही जा रही थी।

थोड़ी देर बाद बेकाबू भीड़ को काबू में करने के लिए पुलिस का एक अतिरिक्त दस्ता वहां आ पहुंचा था।

जो लोग अन्दर पहुंच गए थे, वे ही मुश्किल से उस कक्ष में समा पा रहे थे। फिर भी पुलिस के घेरे को तोड़कर भीड़ अन्दर घुसने की कोशिश कर रही थी।

इसकी वजह यह थी कि अदालत में आज एक ऐसा

मुजरिम पेश किया जाने वाला था, जिसकी साजिश में फंस-कर कानून ने एक बेकसूर व्यक्ति को फांसी पर लटका दिया था।

तभी पुलिस की एक बंद वैगन वहां आकर रुकी।

भीड़ में जोरदार हलचल हुई।

वैगन से उतरने वाले मुजरिम का चेहरा देखने के लिए लोग एक-दूसरे को धकेलते हुए आगे बढ़ने लगे।

किन्तु भीड़ को वैगन से दूर ही रखने के लिए पुलिस के डण्डे तेजी से बरसने लगे और भीड़ तितर-बितर हो गई।

फिर मुजरिम को अदालत के कक्ष में पहुंचा दिया गया था।

तभी न्यायाधीश महोदय पहुंचे और अपनी कुर्सी ग्रहण कर उन्होंने अदालत की कार्यवाही शुरू करने का ऐलान किया।

मुजरिम को कटघरे में खड़ा कर दिया गया।

मुजरिम का चेहरा देखते ही भीड़ में से कोई चीखा—"अरे! ये तो भूपेन्द्रसिंह है।"

"देवेन्द्र का बाप!" दूसरा बोला।

"इसने तो शैतान को भी मात दे दी।"

तभी तीसरा बोला—"लोग तो अपने बेटे के लिए जान तक दे देते हैं, लेकिन यह दरिंदा तो अपने ही बेटे को खा गया।"

फिर इससे पहले कि भीड़ का शोर और अधिक बढ़ पाता, न्यायाधीश महोदय ने अपनी हथौड़ी को मेज पर पटकते हुए प्रभावशाली स्वर में कहा—"आर्डर"'आर्डर!" और अदालत में खामोशी छा गई।

तभी सरकारी वकील चांदोलकर अपने काले गाउन को सम्भालते हुए उठे फिर मुजरिमों के कटघरे के समीप आकर खड़े हो गए।

फिर खंखारकर गला साफ करने के बाद दाएं हाथ की उंगली भूपेन्द्रसिंह की तरफ उठाकर चीखे—"यह शख्स, जो इस वक्त कटघरे में खड़ा है, इसके गुनाह की कल्पना मात्र से कलेजा थर्रा उठता है। यह शख्स न सिर्फ अपनी निर्दोष बहू का कातिल है, बल्कि इसकी साजिश में फंसकर कानून ने इसके निर्दोष बेटे को फांसी पर लटका दिया है।"

"ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड !" वकीलों वाला चोंगा पहने कैलाश कुर्सी से उठकर पुरजोर स्वर में चीखा—"हमारे काबिल दोस्त अभियुक्त का जुर्म बयान करते समय यह क्यों भूल रहे हैं कि जब तक अभियुक्त का जुर्म साबित नहीं हो जाता, तब तक उसे कातिल, हत्यारा या खूनी कहने का कोई अधिकार नहीं है।"

"ऑब्जेक्शन सस्टेंड—मिस्टर चांदोलकर, आपको हिदायत दी जाती है कि अभियुक्त के लिए आप जो भी शब्द इस्तेमाल करें, कानून की धाराओं को मद्देनजर रखकर ही करें।"

"थैंक्यू मीलॉर्ड ! हां तो मैं कह रहा था कि इस वक्त मुजरिमों के कटघरे में भूपेन्द्रसिंह नाम का जो शख्स खड़ा है, इस पर यह आरोप है कि इसने अपनी बहू की हत्या इसलिए करा दी, क्योंकि अपनी भरपूर कोशिशों के बावजूद यह उसकी अस्मत पर डाका डालने में कामयाब नहीं हो सका। यही नहीं मीलॉर्ड, इस पर यह आरोप भी है कि उस हत्या का इल्जाम अपने बेटे के सिर पर थोपने के लिए इसने ऐसी साजिश रची, जिससे कि इसका निर्दोष बेटा, फांसी पर लटका दिया गया। अतः इस प्रकार, इसे दो-दो हत्याओं का अभियुक्त मानते हुए अदालत अपनी कार्यवाही आरम्भ करे।"

चांदोलकर के खामोश होते ही व्यंग्यभरी मुस्कराहट के साथ कैलाश ने कहा—"क्या कहा वकील साहब ? दो-दो हत्याओं का अभियुक्त ?"

"ज...जी हां !" कुछ हकबकाते हुए चांदोलकर बोले—"लक्ष्मी और देवेन्द्र की हत्या का आरोप।"

"तब तो मैं यह कहना चाहूंगा वकील साहब !" चांदोलकर के चेहरे पर नजरें टिकाए कैलाश ने धाराप्रवाह बोलना शुरू किया—"कि जब आपका आरोप बुनियाद से ही गलत है तो आप उसे साबित क्या खाक करेंगे ? उत्तेजना में शायद आप यह भी भूल गए हैं कि देवेन्द्र का कत्ल नहीं हुआ, बल्कि उसे कानून ने फांसी दी थी। और फांसी उसे इसलिए दी गई थी, क्योंकि अदालत ने उसे उसकी बीवी की हत्या का मुजरिम करार पाया था। अतः अगर देवेन्द्र को कानून द्वारा दी गई फांसी को मेरे काबिल दोस्त हत्या करार

देते हैं, तो म यह कहने में जरा भी नहीं हिचकिचाऊंगा कि वह हत्या खुद कानून ने की थी। हत्यारा कानून है। सजा उसे दी जानी चाहिए न कि मेरे मुवक्किल को।"

उसके मुंह से निकले इन शब्दों ने अदालत में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति की दिल की धड़कनों को असाधारण रूप से तीव्र कर दिया था।

वहां ऐसा सन्नाटा खिच गया कि सुई गिरे तो उसकी आवाज भी स्पष्ट सुनी जा सके।

किंकर्तव्यविमूढ़ अवस्था में खड़े चांदोलकर को जब होश आया तो वे जोर से चीख पड़े—"सुना आपने मीलॉर्ड! मेरे काबिल दोस्त मिस्टर कैलाशनाथ भावनाओं में इस कदर बहक गए हैं कि कानून का सरासर अपमान कर रहे हैं। अपने मुवक्किल को बचाने की खातिर ये कानून के लिए हत्यारा जैसा घृणित शब्द का प्रयोग कर रहे हैं।"

"मिस्टर कैलाशनाथ!" न्यायाधीश कनौजिया की गम्भीर आवाज गूंजी—"कानून को हत्यारा कहकर आपने अदालत और कानून दोनों का अपमान किया है। अतः अदालत आपको चेतावनी देती है कि या तो माफी मांगकर आप अपने शब्द वापस लीजिए, अन्यथा अपने कथन को सत्य प्रमाणित कीजिए।"

"मैं अदालत का आदेश मानने को तैयार हूं, मीलॉर्ड! बशर्ते कि मेरे काबिल दोस्त मेरे मुवक्किल पर लगाए गए इस आरोप को वापस लें कि वह दो हत्याओं का अभियुक्त है।"

"क···कैसे वापस लूं।" चांदोलकर बौखलाए स्वर में बोले—"आरोप, आरोप है।"

"तब फिर मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि मैंने भी कानून पर जो आरोप लगाया है, वह अपनी जगह बिलकुल उचित व जायज है।"

"क···कैसे जायज है ?"

"कैसे क्या ? जायज, जायज है।"

कैलाश का जवाब सुनकर व चांदोलकर की बौखलाहट देख दर्शकों के मुंह से कहकहे फूट पड़े थे।

"आर्डर···आर्डर!" जज साहब को अपनी हथौड़ी पीटनी पड़ी थी।

"मिस्टर कैलाशनाथ।" न्यायाधीश महोदय बोले—

"अब आप ज्यादती कर रहे हैं। अदालत आपको पुनः चेतावनी देती है कि जल्द-से-जल्द अपने कथन को प्रमाणित कीजिए अन्यथा माफी मांगिए।"

"मीलॉर्ड!" कैलाश ने जोरदार आवाज में कहा—"मेरा इरादा ना तो कानून का अपमान करने का था और ना ही उसे हत्यारा कहने का। सरकारी वकील महोदय के इस कथन पर कि मेरे मुवक्किल पर दो-दो हत्याओं के आरोप हैं, मुझे ऐसा कहने पर मजबूर होना पड़ा। उनका आरोप सिरे से ही गलत और बेबुनियाद है, क्योंकि इसी अदालत में यह साबित हुआ था कि लक्ष्मी की हत्या देवेन्द्र के हाथों चलने वाली गोली से हुई थी। अदालत को इस बात के प्रमाण न सिर्फ हत्या में प्रयुक्त रिवॉल्वर पर पाए गए देवेन्द्र की उंगलियों के निशानों से मिल चुके थे, बल्कि अन्य सबूतों के साथ-साथ देवेन्द्र के इकबालिया बयान से भी यह साफ हो गया था कि अपनी बीवी की हत्या उसने ही की थी। और जब उस हत्या के जुर्म में अदालत ने देवेन्द्र को फांसी की सजा सुना दी थी, तब मेरे मुवक्किल भूपेन्द्रसिंह पर उन दोनों हत्याओं का आरोप कैसे लगाया गया? अगर थोड़ी देर के लिए यह मान लिया जाए कि सरकारी वकील साहब के पास ऐसे सबूत हैं, जिनसे यह साबित किया जा सकता है कि लक्ष्मी की हत्या देवेन्द्र ने नहीं, बल्कि भूपेन्द्रसिंह ने की थी, तब भी यह सच्चाई तो अपनी जगह अटल रहेगी। फिर भी अगर देवेन्द्र की फांसी को हत्या कहा जा सकता है तो अदालत खुद सोच सकती है कि मेरे कथन में क्या गलती थी?"

"गलती थी मिस्टर कैलाशनाथ।" न्यायाधीश महोदय की गम्भीर आवाज गूंजी—"लेकिन आपकी गलती बताने से पहले मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहूंगा।"

"पू···पूछिए मीलॉर्ड?"

"मान लीजिए, अभी कोई खूंखार अपराधी यहां आकर यहां खड़े इंस्पेक्टर की रिवॉल्वर छीन लेता है और उसी से सरकारी वकील मिस्टर चांदोलकर को गोली मार देता है तो आप हत्यारा किसे कहेंगे?"

जज साहब की बात सुनकर जहां चांदोलकर के चेहरे पर बदहवासी छा गई, वहीं अदालत में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति

की खोपड़ी इस प्रश्न पर चक्कर-घिन्नी बनकर रह गई थी।

और तो और खुद कैलाश भी हकबकाकर कह उठा—"इसमें प्रश्न जैसा तो कुछ है ही नहीं मीलॉर्ड। फिर मैं क्या उत्तर दूं।"

"प्रश्न क्यों नहीं है? मैंने पूछा है कि आप हत्यारा किसे कहेंगे?"

सिर्फ एक क्षण सोचने के बाद वह बेहिचक कह उठा—"यह तो कोई बेवकूफ से बेवकूफ आदमी भी बता सकता है कि चांदोलकर का खून करने वाला ही हत्यारा है।"

"यह आपकी राय है।" मंद मुस्कराहट बिखेरते हुए न्यायाधीश महोदय के होंठ हिले—"लेकिन मेरा मानना है कि वह रिवॉल्वर खूनी है, जिससे चली गोली चांदोलकर की मृत्यु का सबब बनी।"

"ल···लेकिन मीलॉर्ड!" बुरी तरह हकबकाए कैलाश के होंठों ने हरकत की—"आप ऐसा क्यों कहेंगे? रिवॉल्वर तो एक माध्यम मात्र है। फिर इस हत्या के लिए उसे जिम्मेदार कैसे ठहराया जा सकता है?"

"तो मिस्टर कैलाशनाथ, शायद आप अपने इस उत्तर से ही समझ गए होंगे कि आपके कथन में क्या गलती थी। जिस तरह आप उस रिवॉल्वर को हत्या का जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते, ठीक उसी तरह कानून को भी किसी हत्या का दोषी नहीं ठहराया जा सकता। क्योंकि कानून किसी जीवित प्राणी का नाम ना होकर एक ऐसे हथियार का नाम है, जो असहाय लोगों को उनका हक दिलाने व उन्हें सताने वाले अत्याचारियों को सजा देने के लिए बनाया गया है। उस हथियार का इस्तेमाल करने के लिए अदालत, देखरेख के लिए पुलिस और उसका सही ढंग से इस्तेमाल होता है या नहीं, इसकी जांच करने के लि : न्यायाधीश व अधिवक्ताओं की नियुक्ति की गई है। अ अगर कोई इंसान अपनी चालाकी से अदालत को गुमराह करके कानून रूपी हथियार से किसी का कत्ल कर देता है तो आप कानून या अदालत को हत्यारा कहेंगे या उस चालाक इंसान को?"

कई क्षणों तक तो कैलाश के मुंह से आवाज ही ना निकल सकी थी, फिर कुछ सोचते हुए वह बोला—"लेकिन मीलॉर्ड!

क्या आप यह कहना चाहते हैं कि हमारा कानून इतना कमजोर है कि कोई भी खिलौने की तरह उससे खेल सकता है।"

"यह तो मैं नहीं कह सकूंगा, किन्तु फिर भी इतना अवश्य कहूंगा कि हमारे कानून में अभी ऐसी बहुत-सी खामियां हैं, जिनसे फायदा उठाकर चालाक और ...से वाले लोग कभी-कभी कानूनरूपी इस हथियार से न सिर्फ खुद को बचा लेते हैं, बल्कि उसके वार से किसी निर्दोष को मारने तक में सफल हो जाते हैं।"

"और अब जबकि अदालत का काफी समय नष्ट हो चुका है। अतः अभियुक्त पर लगाए गए आरोपों को प्रमाणित करने की कार्यवाही शुरू की जाए।"

"यस मीलॉर्ड !" चांदोलकर उठकर खड़े हुए—"सबसे पहले मैं आपसे यह जानना चाहता हूं मिस्टर भूपेन्द्रसिंह कि क्या आप यह जानते थे कि आपकी बहू लक्ष्मी के किसी से अनैतिक सम्बन्ध थे ? जवाब दीजिए।"

भूपेन्द्रसिंह का छाती पर लटका सिर मशीनी अन्दाज में ऊपर उठा। उनके चेहरे पर असीमित अपमान सहन करने का दुःख व पश्चाताप के भाव झलक रहे थे, फिर वह अवरुद्ध गले से बोले—"यह बात मुझे देवेन्द्र ने बताई थी।"

"कब ? लक्ष्मी की हत्या से पहले या बाद में ?"

"बाद में।"

"यानी कि आप स्वीकार करते हैं कि उसकी हत्या से पहले आपको उसके चरित्रहीन होने की कतई जानकारी नहीं थी।"

"ज···जी हां ?" उसने स्वीकार किया।

"झूठ···सफेद झूठ।" चांदोलकर जोर से चीखे—"मीलॉर्ड, अभियुक्त के इस बयान को नोट किया जाए।" कहने के साथ ही वह तेजी से अपनी मेज की तरफ लपके और मेज से एक तस्वीर उठाकर पुनः कटघरे के नजदीक पहुंचे।

यह वही तस्वीर थी, जो गजानन ने खींची थी और जिसमें एक गार्डन में लक्ष्मी किसी नौजवान के साथ प्रेमिकाओं की तरह हाथों में हाथ डाले बैठी थी। तस्वीर में दिखाई दे रहे अन्य लोगों के चित्रों पर उंगली रखते हुए

चांदोलकर बोले—"लक्ष्मी के साथ दिखाई दे रहे इस नौजवान को आपने कभी देखा है?"

"जी···जी नहीं!" झुककर देखने के बाद भूपेन्द्रसिंह ने जवाब दिया।

"अच्छी तरह देखकर जवाब दीजिए मिस्टर भूपेन्द्रसिंह।"

"जी नहीं।"

"मीलॉर्ड! यह प्वॉइंट भी नोट किया जाए।" वह बोले—"इसमें उनकी खुद की तस्वीर भी है, जिसे देखने के बाद कोई भी यह कह सकता है कि इनकी निगाहें इन दोनों की तरफ ही उठी हुई हैं।" कहने के साथ ही चांदोलकर ने वह तस्वीर जज साहब की तरफ बढ़ा दी।

तस्वीर को देखने के बाद सामने रखी फाइल पर कुछ लिखते हुए न्यायाधीश महोदय ने वह वापस चांदोलकर को थमा दी।

कैलाश अपनी जगह से उठा। उसने चांदोलकर से वह तस्वीर लेकर गौर से देखी। उसमें काफी दूरी पर खड़े भूपेन्द्रसिंह की निगाहें उन दोनों पर ही केन्द्रित थीं।

तस्वीर को लौटाकर कुछ सोचते हुए कैलाश बोला—"इस तस्वीर पर इसलिए यकीन नहीं किया जा सकता मीलॉर्ड, क्योंकि फोटोग्राफी में किसी भी तरह की जालसाजी अब असम्भव नहीं रही।"

"और अब···।" उसकी बातों पर ध्यान न देते हुए एडवोकेट चांदोलकर बोले—"मैं उस व्यक्ति को पेश कर रहा हूं मीलॉर्ड, जो अभियुक्त की साजिश का चश्मदीद गवाह है—मिस्टर संदीप कुलकर्णी।"

वह कटघरे में आ खड़ा हुआ।

शपथ की कार्यवाही पूर्ण होने के बाद चांदोलकर के प्रश्न के जवाब में उसने बोलना शुरू किया—"कुछ दिन पहले मैं भूपेन्द्रसिंह के ऑफिस में नौकरी किया करता था। मेरी प्रेमिका मीनाक्षी भी वहीं काम करती थी। एक बार देवेन्द्र ने उसके साथ अशोभनीय हरकत की तो मैं देवेन्द्र पर हाथ छोड़ बैठा था। जिसके कारण भूपेन्द्रसिंह ने हम पर चोरी का झूठा इल्जाम लगाकर हमें नौकरी से निकाल दिया था। तभी मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं अपने अपमान का बदला

अवश्य लूंगा। और फिर उस दिन अपने अपमान का बदला लेने की सोचता हुआ मैं इनके बंगले में इस उद्देश्य से पहुंचा था कि अपने ऊपर चोरी का झूठा इल्जाम लगाने वाले के यहां मैं सचमुच की चोरी करूंगा।

यही सब सोचता हुआ एक पाइप की सहायता से जब मैं बंगले में ऊपर पहुंचा कि अचानक एक कमरे से आती जोर-जोर की आवाजें सुनकर ठिठक गया और इसका कारण जानने के लिए मैंने खिड़की से अन्दर झांका।"

"क्या उस वक्त खिड़की पर पर्दा नहीं था ?" कैलाश ने खड़े होकर पूछा।

"पर्दा तो था, लेकिन एक किनारे पर वह थोड़ा-सा सरक गया था। जिसकी वजह से कांच की पारदर्शी खिड़की से अन्दर का दृश्य स्पष्ट देखा जा सकता था।" बिना किसी हिचकिचाहट के संदीप ने बोलना जारी रखा, "अन्दर का दृश्य देखकर एकाएक मैं अपनी आंखों पर विश्वास न कर सका था। उस वक्त भूपेन्द्रसिंह लक्ष्मी के पेट पर बैठा हुआ दोनों हाथों से उसका गला दबा रहा था और वह उसकी पकड़ से छूटने के लिए बुरी तरह मचलती हुई हाथ-पैर पटक रही थी। फिर मैंने देखा कि थोड़ी देर बाद लक्ष्मी का विरोध ढीला पड़ गया था। तब भूपेन्द्रसिंह ने उसे उठाकर कुर्सी पर बिठा दिया था। फिर उसके एक हाथ में कलम थमाकर दूसरे को मेज पर रखे कागज पर रख दिया था। इसके बाद भूपेन्द्र-सिंह ने दस्ताने युक्त हाथों से एक रिवॉल्वर निकाली थी। लेकिन अभी वह उसे लक्ष्मी की कनपटी से लगाना ही चाहता था कि पता नहीं क्यों उसे मेज पर फेंककर कमरे से बाहर निकल गया। उसके तुरन्त बाद देवेन्द्र कमरे में दाखिल हुआ और उसने आनन-फानन में मेज पर से रिवॉल्वर उठाकर उससे लक्ष्मी को शूट कर दिया। इस दृश्य को देखकर मैं इतना ज्यादा आतंकित हो गया था कि तुरन्त वहां से भाग खड़ा हुआ था।"

"आपने इस हत्या की सूचना पुलिस को क्यों नहीं दी थी मिस्टर कुलकर्णी ?" उसके करीब होते हुए कैलाश ने पूछा।

"क्योंकि मैं चोरी के इरादे से वहां गया था इसलिए मैं डर रहा था कि कहीं पुलिस मुझे ही हत्यारा समझकर गिरफ्तार न कर ले। इसलिए मैंने एक गुमनाम टेलीफोन

द्वारा पुलिस को इस घटना की सूचना दे दी थी।"

"क्या तुमने फोन पर पुलिस को अपना यही बयान दिया था ?"

"जी नहीं, मैंने सिर्फ एक कत्ल होने की बात बताई थी। मैं नहीं चाहता था कि मैं बेवजह ही पुलिस के झमेले में फंसू। मैंने सोचा था कि अगर पुलिस वहां जल्दी पहुंच जायेगी तो उसे लाश के साथ-साथ वह रिवॉल्वर भी बरामद हो जाएगा, जिससे लक्ष्मी पर गोली चलाई गई थी। और उस पर मौजूद उंगलियों के निशानों की वजह से जब देवेन्द्र को गिरफ्तार किया जाएगा, तो अपने आप ही वह सबकुछ कबूल कर लेगा।"

"तो क्या तुम्हारी सूचना पर पुलिस वहां पहुंची थी ?" व्यंग्य-भरी मुस्कराहट के साथ कैलाश ने पूछा था।

"जी हां, मेरी सूचना पर पुलिस पहुंची तो थी, लेकिन फिर वहां से खाली हाथ लौट गई थी। यह बात मुझे उस अज्ञात नकाबपोश ने बताई थी, जो मेरा वह दस्ताना लौटाने आया था, जो धोखे से भूपेन्द्रसिंह के बंगले में ही गिर गया था।"

"वाह ! क्या बात कही है। कोई नकाबपोश तुम्हारा गिरा हुआ दस्ताना लौटाने तुम्हारे पास पहुंच गया। तुम बता सकते हो कि उसने ऐसा क्यों किया ?"

"क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि वहां मेरी मौजूदगी को जानकर पुलिस भ्रमित हो जाए और वह असली हत्यारे की बजाय मेरी तरफ बढ़ने लगे। उसने ऐसे तर्क भी दिए थे, जिससे अगर मैं उस वक्त पुलिस के पास जाने की सोचता भी, तो हो सकता था मेरी बातों पर यकीन करने की बजाय वह मुझे ही हत्यारा समझती।"

"फिर इतने दिनों बाद आप पुलिस के पास कैसे पहुंच गए ?"

"जैसे ही देवेन्द्र की फांसी की खबर मैंने अखबारों में पढ़ी, मैं बेचैन हो उठा, क्योंकि लक्ष्मी की हत्या में बाप-बेटे दोनों ही शरीक थे, फिर अकेला देवेन्द्र ही दोषी कैसे पाया गया। उसकी गिरफ्तारी के बाद मैं सोच रहा था कि जब पुलिस उससे सख्ती से पूछताछ करेगी तो वह अपना मुंह बन्द नहीं रख सकेगा और इस हत्या में अपने बाप का भी शरीक

होना कबूल कर लेगा, किन्तु जब मैंने वीणा नाम की एक युवती की गिरफ्तारी व उसके नकली चेहरे के बारे में जाना, तो यह सोचकर मैं दंग रह गया कि भूपेन्द्रसिंह ने अपने बेटे को फंसाने की खातिर ही तो कहीं यह ड्रामा नहीं रचा था। और अपनी आंखों से देखी भूपेन्द्रसिंह की हरकत पर विचार करने के बाद तो मुझे इस बात का पक्का यकीन हो गया कि असली मुजरिम भूपेन्द्रसिंह ही है। देवेन्द्र से मुझे कोई हमदर्दी तो नहीं थी, लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता था कि लक्ष्मी का असली कातिल आजाद घूमता रहे। इसलिए पुलिस के पास जाकर मैंने यह सोचकर सारी हकीकत खुलासा कर दी थी कि अब पुलिस के पास मुझ पर शक करने का कोई आधार भी नहीं है।"

"नहीं···यह झूठ बोल रहा है।" तभी भूपेन्द्रसिंह गला फाड़कर चिल्लाए—"यह नौकरी से निकाले जाने का मुझसे बदला ले रहा है। इ···इसकी बातों पर यकीन मत कीजिए जज साहब। निःसंदेह यह मुझे फंसाने के लिए झूठ बोल रहा है।"

"आप कृपया खामोश रहिए।" जज साहब बोले—"आपको अपनी सफाई का पूरा मौका दिया जाएगा।"

"मीलॉर्ड! इस गवाह का बयान सरासर गलत व पुलिस का सिखाया हुआ लगता है।" कैलाश पुरजोर स्वर में चीखा—"यह इस बात से ही साफ जाहिर हो जाता है कि इसने लक्ष्मी की हत्या भूपेन्द्रसिंह के गला दबाने से होना स्वीकार की है, जबकि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के अनुसार लक्ष्मी की मृत्यु गोली लगने की वजह से हुई। और चूंकि यह हमारे मुवक्किल से दुश्मनी रखता था इस बात से भी इसके बयान को शक की दृष्टि से देखा जाएगा। इसके अलावा सबसे अहम बात ये है कि यह पुलिस के पास तब गया, जब देवेन्द्र को फांसी हो गई। अतः मैं अदालत से दरख्वास्त करता हूं कि इसके बयान को अमान्य घोषित किया जाए।"

"आई ऑब्जेक्शन मीलॉर्ड।" चांदोलकर चीखे—"मेरे गवाह ने पुलिस के पास जाने का जो कारण अभी बताया है, वह उसकी बताई स्थिति के अनुकूल था। कोई भी इंसान खुद फंसने की सूरत में दूसरों को फंसाने का दुःसाहस नहीं कर सकता। वह ऐसी हिम्मत तभी दिखा सकता है, जब उसे

अपने न फंसने का यकीन हो जाए। मिस्टर संदीप ने भी वही किया। और हमारे काबिल दोस्त का यह कहना है कि उनके मुवक्किल से मेरे गवाह की दुश्मनी की वजह से उसकी गवाही को न माना जाए, तो यह कानून की किस धारा में लिखा है ? उसकी गवाही को एक ही सूरत में अमान्य घोषित किया जा सकता है। तब, जबकि यह साबित हो जाए कि वह झूठ बोल रहा है। रही बात पोस्टमार्टम रिपोर्ट की तो अदालत को मैं यह बता देना चाहता हूं कि मेरे गवाह ने ऐसा कोई दावा नहीं किया है कि अभियुक्त के गला दबाने से ही लक्ष्मी की मृत्यु हुई थी। बल्कि उसने सिर्फ इतना कहा है कि लक्ष्मी का शरीर ढीला पड़ गया था। शरीर का ढीला पड़ना मृत्यु का लक्षण है और बेहोशी का भी। अतः हो सकता है, भूपेन्द्रसिंह के गला दबाने से लक्ष्मी सिर्फ बेहोश हुई हो और देवेन्द्र की चलाई गोली से उसकी मृत्यु हो गई हो।"

न्यायाधीश महोदय का सिर सहमति में हिल गया था।

"और अब हमारे दूसरे गवाह हैं, श्री शंकरनाथ कनपुरिया।"

अपने चश्मे को ठीक करता हुआ कनपुरिया कटघरे में आ खड़ा हुआ और सरकारी वकील मिस्टर चांदोलकर की तरफ प्रश्न सूचक नेत्रों से देखने लगा।

"क्या आप नकली चेहरे बनाते हैं ?"

"जी हां !"

लक्ष्मी की तस्वीर उठाकर कनपुरिया के सामने करते हुए चांदोलकर ने पुनः पूछा—"क्या आपने इसका नकली चेहरा बनाया था ?"

"जी हां।" कनपुरिया ने बेहिचक स्वीकार किया—"ऐसा चेहरा रामलाल ने बनवाया था।"

"क्या आप रामलाल को पहचानते हैं ?" कैलाश ने पूछा।

"जी हां, खूब अच्छी तरह से। सामने कटघरे में रामलाल ही तो खड़े हैं।"

"तुम्हारी आंखें धोखा खा रही हैं कनपुरिया।" कैलाश के मुंह से गुर्राहट जैसा स्वर निकला—"यह रामलाल नहीं, भूपेन्द्रसिंह है।"

"अब चाहे कोई भी सिंह हो, लेकिन मैं तो इन्हें रामलाल के नाम से ही जानता हूं ?"

उसे शंकित निगाहों से घूरते हुए कैलाश ने पूछा—"क्या तुम उन सभी आदमियों को पहचान जाते हो, जिससे तुम्हारी मुलाकात एकाध बार हुई हो ?"

"हर आदमी को तो मैं नहीं पहचान सकता वकील साहब, लेकिन मुझे अपने ग्राहकों का चेहरा बखूबी ध्यान है, क्योंकि उनकी संख्या इतनी कम है कि उंगलियों पर गिनी जा सके। दूसरे, इन साहब से हुई मुलाकात को तो अभी छः महीने भी नहीं बीते हैं।"

"नहींSSS।" अपमान, खीझ और बेबसी के मिले-जुले भाव चेहरे पर लिए भूपेन्द्रसिंह जोर से चिल्लाए—"यह झूठ बोल रहा है जज साहब। मेरा यकीन मानिए मैं इसे जानता तक नहीं। जरूर किसी के बहकावे में आकर यह मेरे खिलाफ जहर उगल रहा है।"

"मुजरिमों के कटघरे में खड़ा होने वाला हर व्यक्ति चीख-चीखकर यही कहता है।" व्यंग्य-भरी मुस्कराहट के साथ चांदोलकर ने कहा—"कि वह बेगुनाह है, उसे जान-बूझकर फंसाया जा रहा है।"

"ऑब्जेक्शन मीलॉर्ड ! सरकारी वकील महोदय मेरे मुवक्किल पर जान-बूझकर मनोवैज्ञानिक दबाव डालना चाहते हैं, ताकि वह अंदर-ही-अंदर टूट जाए।"

"सच हमेशा कड़वा होता है मिस्टर कैलाशनाथ।"

"आर्डर···आर्डर !" न्यायाधीश महोदय को एक बार फिर अपनी हथौड़ी पीटनी पड़ी। चांदोलकर ने इस बार वीणा का नाम पुकारा था।

उसने अपना वही बयान दोहरा दिया था, जो वह वामनराव के सामने कबूल कर चुकी थी।

राघव और प्रफुल्ल ने भी वही बयान दिया, जो वे पहले भी दे चुके थे।

फिर, समय अधिक हो जाने के कारण न्यायाधीश महोदय की प्रभावशाली आवाज गूंजी—"इस मुकदमे की सुनवाई कल तक के लिए स्थगित की जाती है।" कहने के साथ ही वह उठकर खड़े हो गए थे।

"म···मैं पागल हो जाऊंगी कैलाश।" सरला सिसकती हुई बोली—"आखिर यह सब क्या हो रहा है? पहले लक्ष्मी भाभी का भइया के हाथों कत्ल, फिर भइया को फांसी और अब डैडी को इस साज़िश का दोषी समझा जा रहा है। यह सब क्या हो रहा है। मेरे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

"यही सवाल ता मेरी खोपड़ी को भी घुमाये हुए है।" कैलाश ने बेबसी-भरे स्वर में बोलना जारी रखा—"मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि जब अंकल दोषी नहीं हैं तो उनके खिलाफ मिलने वाले सबूत इतने पुख्ता क्यों हैं, कि मेरी पुर-जोर कोशिशों के बावजूद उन्हें झुठलाना मुझे असंभव नजर आ रहा है। अगर यह सारे सबूत और गवाह यदि किसी की साजिश का परिणाम हैं, तो सवाल यह उठता है कि आखिर वह शख्स कौन है? अगर अंकल यह स्वीकार कर लेते हैं कि उनका ऐसा कोई दुश्मन है। तो उसे खोजकर कानून के हवाले करने से यह मसला सुलझ सकता है। लेकिन अफसोस है कि मेरे बार-बार पूछने के बाद भी अंकल कुछ भी बताने को तैयार नहीं हैं।"

"तो क्या तुम यह कहना चाहते हो···।" रोना बन्द करके वह उत्तेजित स्वर में बोली—"कि डैडी के खिलाफ मिलने वाले सबूत इसलिए इतने पुख्ता हैं, क्योंकि वह वास्तव में दोषी हैं।"

"नहीं सरला, नहीं।" कैलाश झुंझलाकर चीखा—"अगर मेरा ऐसा कोई इरादा होता तो मैं उनके मुकदमे को लड़ता ही क्यों? तुम तो यह अच्छी तरह जानती हो कि अब तक मैंने सिर्फ उसी मुकदमे में हाथ डाला है जिसमें मुझे अपने मुवक्किल के निर्दोष होने का पूरा-पूरा यकीन होता है, लेकिन मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि अंकल के निर्दोष होने के बावजूद उनके खिलाफ मिलने वाले सबूतों को मैं क्यों नहीं झुठला पा रहा हूं? उनके खिलाफ गवाही देने वालों की गवाही को मैं गलत साबित क्यों नहीं कर पा रहा हूं? क्या मेरे दिमाग को जंग लग गया है या फिर यह उस काबिल नहीं रहा कि किसी निर्दोष की पैरवी कर सके?"

"म···मैं कुछ नहीं जानती कैलाश, मैं तो सिर्फ इतना

जानती हूं कि जिस बेटे को डैडी अपनी जान से ज्यादा चाहते थे, उसी को फांसी पर लटकाने की खातिर वह इतनी बड़ी साजिश कैसे रच सकते हैं ? भइया के फांसी लगने की खबर सुनकर रोते-रोते डैडी की आंखें सूज गई थीं। उन्होंने कई दिनों तक भोजन तो क्या, पानी भी गले से नीचे नहीं उतारा था।"

जवाब देने की जगह कैलाश कुछ सोचता रहा।

और फिर अचानक उछलकर यूं उठ खड़ा हुआ, जैसे उसे बिच्छू ने डंक चुभो दिया हो। फिर कंपित स्वर में बोला—"इस बात का फैसला भी हो सकता है।"

"क···किस बात का ?" सरला ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।

"यही कि अंकल दोषी हैं या निर्दोष ?" एक झटके से उसने कहा था।

"क···कैसे ?" पूछते समय सरला की आंखों में महान् आश्चर्य झलकने लगा था।

"तुम्हें याद होगा सरला, जब मुरारी गांव से लौटा था तो अंकल ने उससे पूछा था कि तुम बिना बताए कैसे चले गए थे ?"

"ह···हां, मुझे याद है।"

"तब उसका जवाब था—कि मालिक, आपने ही तो मां की बीमारी की खबर देकर मुझे गांव जाने की सलाह दी थी।"

"लेकिन उसी वक्त उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली थी।" सरला उलझन-भरे स्वर में बोली थी।

"हां, की थी, लेकिन तब, जब अंकल उस पर नाराज होने लगे थे।" उसने धाराप्रवाह बोलना जारी रखा—"उसके अचानक बात पलटने से मुझे उस पर शक तो हुआ था, लेकिन फिर यह सोचकर उस वक्त मैंने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था कि हो सकता है, उसी की ही गलती हो। अगर उससे वास्तव में भूल हुई थी, तो मैं समझूंगा कि मेरा शक निराधार था, लेकिन अगर···।" वाक्य को अधूरा छोड़ सरला की तरफ देखते हुए वह कह उठा—"अगर इस बाबत तुम्हें कोई एतराज न हो, तो मैं मुरारी से पुनः पूछना चाहता हूं।"

"यह तो किसी को जलील कर उससे माफी मांग लेने जैसी बात हुई।" सरला क्रोध से फुफकारी—"अगर तुम्हें डैडी पर यकीन होता तो उन पर शक करने का कोई सवाल ही नहीं उठना चाहिए था। तुम्हारी इस बात से साफ जाहिर हो चुका है कि तुम्हें वह मुजरिम नजर आ रहे हैं और तुम्हारा उन पर शक करने का मतलब है, मुझ पर शक करना।"

"प···प्लीज सरला, प्लीज—किसी संदेहास्पद बात की जांच पड़ताल करने पर अगर तुम इसका यह नतीजा निकालती हो तो यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल होगी। मैं तुम्हें जलील नहीं कर रहा हूं। ऐसा सोचकर तो तुमने मुझ पर और मेरी मोहब्बत पर तमाचा रसीद किया है। उससे एक बार पुनः पूछकर देख लेने में क्या हर्ज़ है? लेकिन अगर तुम यह नहीं चाहती हो तो मुझे भी इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।"

"आवश्यकता क्यों नहीं?" वह विक्षिप्तों की तरह चीखी—"बुलाओ उसे और पूछकर अपनी तसल्ली कर लो।"

"अब इसकी कोई जरूरत नहीं। जब तुम्हें यकीन है तो समझो मुझे भी है।"

"नहीं, मैं नहीं मान सकती। उसे बुलाकर तुम अभी यह साबित करो कि डैडी ने उसे यहां से इसलिए भेज दिया था, ताकि लक्ष्मी का कत्ल करने उसमें भइया को फंसाने की उनकी साजिश में किसी तरह का अवरोध उत्पन्न न हो।"

"स···सरला···क···क्या हो गया है तुम्हें? मैंने तो···।"

"मुरारी···!" उसकी बात पूरी होने से पहले ही वह चिल्ला उठी थी।

हकबकाकर कैलाश अभी कुछ कहना ही चाहता था कि मुरारी वहां आ पहुंचा।

"जी मेम साहब। आपने बुलाया?"

"हां।" वह जख्मी नागिन की तरह फुफकारी—"मैं जो पूछने जा रही हूं, अगर उसका तूने ठीक-ठीक जवाब नहीं दिया तो नौकरी तो तेरे हाथ से जाएगी ही साथ ही मैं तुझे इस कदर बरबाद करके छोड़ूंगी कि तू किसी काम का नहीं रहेगा।"

सरला का रौद्र रूप देख मुरारी के छक्के छूट गए। अपने माथे पर चुहचुहा आए पसीने को हथेली से पोंछते हुए वह हकलाया—"म···मुझसे कोई ग···गलती हो गई क्या मेमसाहब ?"

"गलती के बच्चे ! अपने गांव से लौटने पर तूने डैडी से यह क्यों कहा था कि तुझे गांव जाने के लिए खुद उन्होंने कहा था ?"

"व···वह···भूल हो गई थी मेमसाहब।"

"कैसे ?" वह दांत पीसते हुए गुर्राई—"कैसे हुई इतनी बड़ी भूल ?"

"व···वो···म···मैं···।" आगे के शब्द लाख चाहने के बावजूद भी उसके मुंह से निकलने को तैयार नहीं हुए।

"बोल, कैसे हुई इतनी बड़ी भूल तुझसे ?" खिसियाई बिल्ली की तरह सरला मुरारी के चेहरे पर अपने नाखूनों के निशान छोड़ने लगी थी।

मुरारी का जिस्म ही नहीं, बल्कि रोयां-रोयां थर्रा उठा था और उसके मुंह से घिघियाया-सा स्वर निकला—"व··· बताता हूं···बताता हूं मेमसाहब।"

"जल्दी बता।"

"म···मैंने सच कहा था।"

सुनकर सरला की समस्त हरकतें यूं थम गईं, मानो चाबी वाले खिलौने की चाबी खत्म हो गई हो।

फिर अपनी घबराहट को काबू में करने के बाद मुरारी ने अपना मुंह खोला—"मालिक ने मुझे बताया था कि मेरे गांव से रहटू खबर लाया था कि मेरी मां बीमार है। यह जानने के बाद मैं तुम्हें गांव जाने से नहीं रोकूंगा लेकिन यह तो तुम जानते ही हो कि आजकल विश्वसनीय आदमी नहीं मिलते। अगर कहीं मिल भी जाते हैं तो काम ठीक ढंग से समझने में ही काफी अर्सा लग जाता है। और फिर तुम्हारी अनुपस्थिति में फूल-पौधों के रखरखाव व घर का पूरा काम सरला के जिम्मे आ जाएगा। तो वे दोनों ही मुझ पर चिल्लायेंगे कि बिना आदमी का बन्दोबस्त किए आपने उसे कैसे जाने दिया। अतः तुम्हारे वापस आने पर अगर मैं तुमसे यह कहूं कि तुम बिना बताए कैसे चले गये थे तो तुम यही जवाब देना—कि क्या करूं मालिक, मां की बीमारी की खबर सुन-

कर रहा नहीं गया। लेकिन उस दिन मुझे मालिक की बात का बिल्कुल होश नहीं रहा था। मेरे दिमाग में तो यह बैठ चुका था कि मैं मालिक के कहने पर ही गांव गया था। अतः जल्दबाजी में मेरे मुंह से वही सच निकल गया। लेकिन हां, एक बात बताना तो मैं भूल ही गया। वह यह कि गांव पहुंचने पर मुझे इस बात का बड़ा आश्चर्य हुआ कि रहटू तो गांव में ही था, तो फिर मालिक से झूठ-मूठ मेरी मां की बीमारी की खबर किसने दी। मां भी बिल्कुल भली-चंगी थी। मैं तो उसी वक्त लौट आता, लेकिन भाई की लड़की की शादी की वजह से मां ने नहीं आने दिया।" इतना कहकर मुरारी खामोश हो गया।

उसकी बात सुनकर सरला को लगा, जैसे उसके सिर के बाल छत से लटके पंखे से बंधे हैं और वह उस पंखे के साथ पूरी रफ्तार से घूम रही है।

लेकिन ज्यादा देर तक यह अहसास कायम न रह सका।

क्योंकि दूसरे ही क्षण भरभराते हुए फर्श पर गिरकर वह बेहोश हो चुकी थी।

▭ ▭

अगले दिन अदालत में।

"और अब अदालत के सामने मैं चंद ऐसे सबूत को पेश करने जा रहा हूं।" धाराप्रवाह चीखना जारी रखते हुए चांदोलकर बोले—"जो अभियुक्त की शैतानी साजिश का पर्दाफाश करके रख देंगे।"

कहने के साथ ही टेबल से काला नकाब, लबादा व दस्ताने उठाकर दिखाते हुए वे पुनः बोले—"ये सब वस्तुएं अभियुक्त के कपड़ों की निजी अलमारी से बरामद हुई हैं मीलॉर्ड।"

"मिस्टर भूपेन्द्रसिंह, क्या यह सच है कि इन चीजों को पुलिस ने आपके यहां से बरामद किया है?"

बेबसी की मूर्ति बने भूपेन्द्रसिंह ने धीरे-से अपने सिर को ऊपर उठाया और बिना कुछ बोले पुनः झुका लिया।

"जवाब दीजिए मिस्टर भूपेन्द्रसिंह।" न्यायाधीश महोदय की गम्भीर आवाज गूंजी—"अन्यथा अदालत आपकी खामोशी को आपकी स्वीकृति समझने पर बाध्य हो

जाएगी।"

छाती पर लटका सिर मशीनी अंदाज में पुनः ऊपर उठा और फड़फड़ाते होंठों से धीमा-सा स्वर निकला—"यह सच है जज साहब, किन्तु मैं यह नहीं जानता कि उन्हें वहां किसने रखा ? मुझे लगता है कि अदालत को एक बार फिर से गुमराह किया जा रहा है। मेरे खिलाफ साजिश रचने वाला यह चाहता है कि मुझे भी देवेन्द्र की तरह फांसी पर लटका दिया जाए। और मैं देख रहा हूं कि वह अपने उद्देश्य में काफी हद तक कामयाब होता जा रहा है।"

"अदालत को गुमराह करने की कोशिश तो आप कर रहे हैं मिस्टर भूपेन्द्रसिंह।" तभी चांदोलकर हलक फाड़कर चीखे—"इतने पुख्ता सबूतों को किसी दूसरे की साजिश बताकर आप एक ऐसा झूठ बोलने की कोशिश कर रहे हैं, जो किसी के भी गले नहीं उतर सकता।" फिर चांदोलकर न्यायाधीश से मुखातिब होकर बोले—"सच बात तो यह है मीलॉर्ड कि अपनी सारी कोशिशें नाकाम हो जाने पर अभियुक्त के पास सिर्फ एक ही रास्ता रह जाता है कि वह अपने अभिनय के बल पर सबूतों और गवाहों को झुठलाने की कोशिश करे।"

"आपको अपनी सफाई में कुछ कहना है ?" जज साहब ने भूपेन्द्रसिंह से पूछा था।

"इसके सिवा और कुछ नहीं कि मैं निर्दोष हूं।"

"मिस्टर कैलाशनाथ !" न्यायाधीश महोदय ने दर्शकों की पहली कतार में बैठे कैलाश की तरफ देखकर कहा—"क्या बात है ? आज आप दर्शकों के बीच बैठे हैं ? अपने मुवक्किल के बचाव में क्या आपको और कुछ नहीं कहना है ?"

आंखों में क्रोध का ज्वालामुखी लिए कैलाश उठकर सामने पहुंचा। फिर उसके मुंह से भेड़िए जैसी गुर्राहट निकली—"मीलॉर्ड ! सब लोग यह अच्छी तरह से जानते हैं कि कैलाशनाथ सिर्फ उन लोगों का मुकदमा लड़ता है, जोकि निर्दोष होते हैं। उसने दौलत की खातिर कानून से खेलने की कोशिश कभी नहीं की। ये शख्स…।" कहते-कहते वह चीते की तरह भूपेन्द्रसिंह की तरफ घूम गया और उंगली से उसकी ओर संकेत करके गुर्रा पड़ा था—"इसके

बारे में मुझे जबरदस्त गलतफहमी हुई थी कि यह निर्दोष है, लेकिन अब मैं जान गया हूं कि यह एक ऐसा आदमखोर दरिन्दा है, जो अपनी बहू और बेटे को ही निगल गया। इस नीच और वहशी इन्सान को इसके गुनाह के लिए जितनी भी सख्त सजा दी जाए, वह कम होगी।"

अदालत में मौजूद दर्शक ही नहीं, बल्कि सरकारी वकील और न्यायाधीश महोदय तक कैलाश की बात सुनकर स्तब्ध रह गए थे।

बचाव पक्ष का वकील ही अपने मुवक्किल को दोषी ठहराने लगे। यह पहली बार देखने को मिल रहा था।

भूपेन्द्रसिंह आश्चर्य और अविश्वास से, उसके तमतमाए चेहरे की तरफ देखते हुए काफी कमजोर आवाज में हकलाए—"क...कैलाश बेटे। य...ये तुम क्या कह रहे हो...?"

"खा...मो...श!" कैलाश गला फाड़कर दहाड़ उठा —"अपनी गंदी जुबान से मेरा नाम लेने की कोशिश भी मत करना नीच इन्सान। तेरे पापों का घड़ा अब फूट चुका है। मुझे अपनी साजिश के जाल में फंसाकर तू समझता था कि मैं तुझे निर्दोष समझ लूंगा। पुलिस के द्वारा पेश किए सबूतों और गवाहों पर शक का कोई कारण न होते हुए भी मैं इसलिए उन पर विश्वास नहीं कर पा रहा था, क्योंकि मैं समझता था कि तुम्हें फंसाने की यह तुम्हारे किसी दुश्मन की साजिश है। लेकिन अब...जबकि मुरारी को गांव भेजने की तेरी साजिश मैं जान चुका हूं, अतः डंके की चोट पर कह सकता हूं कि तू खूनी है, कातिल है, दरिन्दा है।"

सुनने वालों की धड़कनें असामान्य हो उठी थीं।

"मीलॉर्ड! अब मैं आपको इस दरिन्दे की सारी करतूतें खुलासा करके बताता हूं, ताकि शक की कोई गुंजाइश न रहे।" कैलाश ने धाराप्रवाह बोलना शुरू किया—"भूपेन्द्रसिंह नाम का यह जानवर नारी जिस्म का भूखा है। यह एक नहीं, बल्कि कई आदमियों के बयान से जाना जा सकता है। इसके प्रत्येक जानकार का कहना है कि जो स्त्री इसे पसन्द आ जाती थी, उसे ये धन के लालच, छल-कपट या विश्वासघात से प्राप्त करने की कोशिश करता था। लेकिन जब उनमें असफल हो जाता था तो उसे बलपूर्वक प्राप्त

करने का प्रयास करने लगता था। और फिर एक दिन, जब इस शैतान की आंखों ने एक बेपनाह हुस्न की मलिका को अपनी बहू के रूप में अपने घर में कदम रखते देखा, तो इसके अन्दर का जानवर उसे पाने के लिए तड़प उठा। यह भूल गया कि बहू को बेटी की दृष्टि से देखा जाता है। लेकिन, जब इसने देखा कि यह अपने किसी हथकंडे से उसे प्राप्त नहीं कर सकेगा तो फिर इसने उसे बलपूर्वक प्राप्त करने का निश्चय किया। लेकिन इसमें यह डर था कि वह इसकी काली करतूत इसके बेटे को बता देती। और वह ऐसा न कर सके। इसके लिए इसने एक ऐसी योजना बनाई, जिससे यदि संयोग से या किसी गलती से भी वह इसकी हवस का शिकार होने से बच निकलती या अपनी इज्जत लुटने की बात अपने पति को बता देती तो भी उसका पति उसकी बात का यकीन न करे। और फिर अपनी योजना के तहत अपनी बहू लक्ष्मी के प्रति देवेन्द्र के मन में शंका का बीज बोने का अवसर इसे तब मिला, जब लक्ष्मी अपनी बीमार सहेली से मिलने उसके घर जाने लगी। अब इसे सिर्फ देवेन्द्र के शक की पुष्टि करने की जरूरत थी जिसे इसने लक्ष्मी का नकली चेहरा बनवाकर, वीणा के माध्यम से पूरा कर लिया। इसका उद्देश्य यह था कि लक्ष्मी को आपत्तिजनक अवस्था में देखने के बाद देवेन्द्र उसकी किसी भी बात पर यकीन नहीं करेगा।" चीखते हुए कैलाश ने बोलना जारी रखा—
"अतः अपनी योजनानुसार जिस दिन इसने लक्ष्मी की इज्जत पर डाका डालने का निश्चय किया था, उसी दिन अपने नौकर मुरारी को उसकी मां की बीमारी की झूठी खबर देकर उसके गांव रवाना कर दिया। ताकि इसकी करतूत में किसी तरह का व्यवधान उत्पन्न होने की गुंजाइश न रहे। और जब देवेन्द्र को प्राइवेट जासूस के जरिए यह पता चला कि उसकी बीवी किसी गैर मर्द के साथ एक बंगले में मौजूद है, तो देवेन्द्र क्रुद्ध होकर वहां पहुंच गया, लेकिन अभी वह लक्ष्मी का चेहरा लगाए वीणा को गोली मारने ही वाला था कि वहां नकाबपोश बनकर छिपे इस शैतान ने चोट पहुंचाकर उसे बेहोश कर दिया एवं रिवॉल्वर को लेकर इस उद्देश्य से बंगले में लौट आया कि अगर लक्ष्मी उसकी इतनी माथापच्ची के बाद भी काबू में न आई तो उसकी

इज्जत लूटने के बाद रिवॉल्वर से उसे गोली मारकर आत्महत्या का रूप देने में इसे कोई कठिनाई नहीं होगी। लेकिन इस बात का इसने सिर्फ अनुमान ही लगाया होगा। क्योंकि यह तो सोचता था कि नकली चेहरा लगाए वीणा की आपत्तिजनक तस्वीरों को देखते ही लक्ष्मी इसकी बात मान जाएगी। और फिर यह काफी दिनों तक उसके जिस्म का भक्षण कर सकता है। लेकिन जब उस शरीफ औरत के सामने इसने अपनी घिनौनी शर्त रखी होगी, तब निश्चित ही वह रणचण्डी का रूप धारण कर, इसका विरोध कर बैठी होगी। फिर उसे पाने की अपनी हर कोशिश नाकाम जाते देख वासना में पगलाया यह दरिन्दा हैवान बन गया और इसने गला दबाकर उसकी हत्या करने की कोशिश की। इस बात का चश्मदीद गवाह संदीप मौजूद है, लेकिन संयोग कहो या देवेन्द्र की बदकिस्मती कि गला दबाने से लक्ष्मी मरी नहीं, बल्कि मरणासन्न हालत में पहुंच गई थी। जब इसने देखा कि उसके हाथों एक कत्ल हो गया है तो इसका खुराफाती दिमाग अपनी पूर्व नियोजित योजना पर काम करने लगा। देवेन्द्र और प्राइवेट जासूस की निगाहों में लक्ष्मी की चरित्र-हीनता का सबूत यह पहले ही क्रियेट कर चुका था। अतः उसे आत्महत्या का रूप देने के लिए इसने लक्ष्मी के अवचेतन जिस्म को कुर्सी पर बिठाया और कागज व कलम उसके हाथों में पकड़ाने के बाद, यह अपने दस्तानेयुक्त हाथों से रिवॉल्वर की गोली अभी लक्ष्मी की कनपटी में उतारने एवं रिवॉल्वर को उसके हाथ में थमाने की कार्यवाही पूरी कर पाता कि अपनी तरफ आते कदमों की आहट सुनकर या फिर खिड़की के बाहर किसी की मौजूदगी का अहसास करके हड़बड़ी में यह रिवॉल्वर फेंककर वहां से भागा। और देवेन्द्र से आमना-सामना न हो, इसलिए यह बगल के उस कमरे में छुप गया होगा, जिसमें सामान वगैरह रखा रहता है। बाद में लक्ष्मी के चेहरे पर गोली मारकर देवेन्द्र ने इसकी आत्महत्या साबित करने वाली योजना का बंटाधार कर दिया। यह शैतान यह अच्छी तरह जानता था कि चेहरे पर लगी गोली देखते ही पुलिस जान जाएगी कि इसकी हत्या की गई है। अब देवेन्द्र को बचाने से ज्यादा इसे अपनी फिक्र लग गई। तभी इसने पाइप से उतरते संदीप को देख-

कर उसे पहचान लिया होगा। अब, अगर यह मका मुंह बन्द करने की कोशिश नहीं करता तो उसकी गवाही पर फंस जाता। अतः नका पोश का चोंगा पहनकर इसने इस तरह की हरकतें करनी शुरू कर दीं कि अगर कभी इसके ऊपर शक किया जाए तो यह अपना दोष राघव के सिर मढ़ सके। फिर इसने लाश दूसरे कमरे में छिपाने की करतूत की और उसे किसी ब्लैकमेलर के मत्थे मढ़ने के लिए इसे प्रफुल्ल के रूप में एक बलि का बकरा आसानी से मिल गया। लेकिन जब इसने देखा कि इस केस की जांच कर रहे इंस्पेक्टर को यह शक हो चुका है कि कोई रहस्यमय शख्स भी इसमें इनवाल्व है, तो यह समझ गया कि जब तक कि वह अपनी जगह किसी दूसरे रहस्यमय शख्स को उस इंस्पेक्टर के सामने नहीं करेगा तब तक वह इंस्पेक्टर चैन से नहीं बैठेगा। अतः इसने राघव को बहला-फुसलाकर इंस्पेक्टर वामनराव के सामने पेश कर दिया। शायद इसकी पोल कभी न खुलती, लेकिन यह इसकी बदकिस्मती कहिए या इसकी भूल कि वीणा को दिए नकली चेहरे के बारे में यह बिल्कुल ही लापरवाह हो गया था। इसने यह जानने की कोई कोशिश नहीं की कि वीणा ने इसके कहे मुताबिक फेसमास्क को नष्ट कर दिया है या नहीं। अतः उस चेहरे के कारण इसकी योजना की पहली कलई खुल गई। अब मैं यह अच्छी तरह जान गया हूं कि इस शैतान की वजह से ही मेरे भाई समान दोस्त को फांसी पर लटका दिया गया। बस मीलॉर्ड! मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि अदालत इस वहशी और खूंखार अपराधी को फांसी की सजा देकर ही सन्तोष न कर ले, बल्कि इसे ऐसी सजा दे कि फिर कभी कोई व्यक्ति भूपेन्द्रसिंह बनने की जुर्रत न कर सके।"

उसके खामोश होने के बाद अदालत में काफी देर तक मरघट जैसा सन्नाटा छाया रहा।

इस सन्नाटे को भंग किया था न्यायाधीश कनौजिया की प्रभावशाली आवाज ने—"अभियुक्त पर लगाए गए आरोप व उसे प्रमाणित करने वाले सबूतों एवं गवाहों को मद्देनजर रखते हुए अदालत इस नतीजे पर पहुंची है कि अभियुक्त भूपेन्द्रसिंह अपनी बहू की हत्या एवं अपने निर्दोष बेटे को अपनी साजिश में फंसाकर कानून द्वारा फांसी दिलवाने का

दोषी पाया गया है। अतः अदालत ऐसे घिनौने व असामाजिक अपराधी को किसी तरह की रियायत का हकदार नहीं समझती और उसे ताजीराते हिन्द जेरे दफा ३०२ के तहत फांसी पर लटकाने का हुक्म सुनाती है।"

"न···नहीं···!" एक हृदय विदारक चीख के साथ भूपेन्द्रसिंह का जिस्म बेहोश होकर कटघरे के अन्दर लुढ़क गया।

वहां मौजूद एक जोड़ी हरी व चमकदार आंखें यह देखकर सोचने वाले अन्दाज में अन्दर की तरफ सिकुड़ती चली गई थीं।

▭ ▭

"क···कैलाश बेटे।" जेल के विशेष मुलाकाती कक्ष में अपने सामने बैठे कैलाश कि तरफ आंसुओं-भरी आंखों से देखते हुए भूपेंन्द्रसिंह भर्राए गले से बोले—"किसी ने सच ही कहा है, ऊपर वाले की लाठी बे-आवाज गिरती है। आज जबकि मुझे फांसी होने में सिर्फ पांच-छः घण्टे ही बाकी हैं, अपनी आखिरी इच्छा के रूप में मैंने तुम्हें यहां इसलिए बुलाया है, ताकि अपने उस गुनाह से तुम्हें परिचित करा सकूं, जो तुम्हारे बार-बार पूछने पर भी मैं बताने की हिम्मत न कर सका था। अपने उस दुश्मन का नाम तुम्हें बताता तो तुम सिर्फ उसका नाम जानकर ही सन्तोष नहीं करते, बल्कि उससे दुश्मनी का कारण भी खोजते और मुझे डर था कि कारण मिलने पर कहीं तुम मेरी उस गिरी हुई हरकत पर इस कदर खफा न हो जाओ कि सरला से विवाह करने के अपने फैसले को ही तोड़ दो। लेकिन अब जबकि मेरी मृत्यु का समय निकट आ चुका है, मैं तुमसे यह वादा लेना चाहता हूं कि मेरे गुनाहों को जानने के बावजूद भी तुम सरला को अपना लोगे।"

"मैं वादा देने की जरूरत नहीं समझता हूं।" नाराजगी के भाव चेहरे पर लिए वह शुष्क स्वर में बोला—"मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि इसमें सरला का कोई दोष नहीं है। लेकिन तुम तो इतने जलील इन्सान हो कि तुम्हारा चेहरा देखते ही घिन आने लगती है। मेरा जी तो नहीं चाहता है कि तुम्हारी कोई बात सुनूं। लेकिन मरने वाले की आखिरी ख्वाहिश जानने के लिए मुझे यहां आने पर

मजबूर होना पड़ा।"

"नहीं बेटे, नहीं।" भूपेन्द्रसिंह गिड़गिड़ा उठा—"सबकी तरह तुम भी गलतफहमी के शिकार हो। मैं मानता हूं कि मैं खूनी हूं, कातिल हूं। लेकिन अपनी बहू और बेटे की हत्या में मुझे जान-बूझकर फंसाया गया है।"

"हुंह। मरते वक्त भी तुमने झूठ का दामन नहीं छोड़ा।"

"म···मेरा यकीन करो बेटा।" उसने बेबसी भरे अंदाज में कहना जारी रखा—"इतना तो तुम जानते हो कि जिस इन्सान को यह मालूम है कि वह सिर्फ थोड़ी देर का मेहमान है, तो वह झूठ बोलने की कोशिश नहीं करेगा। फिर उसे झूठ बोलकर फायदा ही क्या पहुंचेगा? मरने के बाद उसे अपनी मान मर्यादा, शर्म-संकोच का भय तो रहता नहीं है।"

"तो इसका मतलब तुम यह कहना चाहते हो कि किसी ने साजिश रचकर तुम्हें फांसी की सजा दिलवाई है।"

"हां, मैं यही कहना चाहता था, लेकिन मुझे इस बात से भी इन्कार नहीं है कि मैं और देवेन्द्र निर्दोष थे। निश्चित तौर पर हम दोनों फांसी के हकदार थे; लेकिन लक्ष्मी की हत्या के इल्जाम में नहीं, बल्कि अपने उस गुनाह के बदले, जो हमने आठ वर्ष पहले किया था। आज मैं तुम्हें अपने उस गुनाह के बारे में बताना चाहता हूं, ताकि तुम्हें यह यकीन हो जाए कि इस साजिश में किसका हाथ है? लेकिन पहले मुझे यह यकीन दिला दो कि तुम सरला से विवाह करके उसे हमेशा खुश रखोगे।"

"एक बार कहा ना।" कैलाश क्रोध से भुनभुनाया—"जब इसमें उसका कोई दोष ही नहीं है तो फिर मैं उसे अपनाने से इन्कार क्यों करूंगा।"

"बस बेटे, बस।" भूपेन्द्र के गले से प्रसन्नता में डूबा, किन्तु भर्राया हुआ स्वर निकला—"अब मुझे अपने मरने का कोई दुःख नहीं है। ऐसा कहकर तुमने न सिर्फ एक अत्याचारी पर उपकार किया है बल्कि अपनी महानता का भी परिचय दिया है।" थोड़ा रुककर उसने पुनः बोलना शुरू किया—"शुरू से ही बताता हूं, ताकि किसी तरह की गलतफहमी की गुंजाइश न रह जाए। मैं जब इस शहर में पहली बार आया था तो मेरे पास न सिर छुपाने की जगह थी और न ही

पेट भरने का जरिया। यहां रघुवीर सिंह जो एक इण्ड्रस्ट्रीज के मालिक थे, उन्होंने न सिर्फ मुझे अपने यहां नौकरी दी, बल्कि रहने के लिए अपने बंगले में बने सर्वेन्ट क्वार्टर में जगह भी दी। नौकरी के अलावा मैं उनके घर का छोटा-मोटा काम भी कर दिया करता था। धीरे-धीरे वह मुझे बहुत अधिक मानने लगे थे। वक्त बीतने के साथ-साथ उन्होंने मुझे फटेहाल इन्सान को अपनी इण्ड्रस्ट्रीज का मैनेजर बना दिया। इस दौरान सुधा नाम की एक युवती से मैंने विवाह कर लिया था। लेकिन हमारा दाम्पत्य जीवन ज्यादा दिन तक कायम न रह सका। देवेन्द्र और सरला क्रमशः दस और सात वर्ष के थे, तभी लम्बी बीमारी के बाद वह हमारा साथ छोड़कर ऊपर वाले की शरण में पहुंच गई। बच्चों के भविष्य का ख्याल करके मैंने दूसरा विवाह तो नहीं किया था, लेकिन बाद में काम-ज्वर से पीड़ित होने पर मेरे कदम गलत राह पर चल निकले थे। अब हालत यह थी कि मैं अपनी तनख्वाह सुरा-सुन्दरी पर खर्च करने लगा था। और पैसा कम पड़ने पर इण्ड्रस्ट्रीज के खातों में हेर-फेर करने लगा था। मेरी यह हरकत रघुवीर सिंह को मालूम पड़ती इससे पहले ही ऊपर वाले ने ऐसा खेल दिखाया कि…।" कहते-कहते भूपेन्द्रसिंह ऐसे खो गया मानो दिवास्वप्न देख रहा हो।

□ □

"म…मैनेजर साहब! मैनेजर साहब!" एक बदहवास चपरासी ने भूपेन्द्रसिंह के ऑफिस में दाखिल होकर हकलाते हुए कहा—"सेठजी का एक्सीडेंट हो गया है। वे अस्पताल में भर्ती हैं। जख्मी हालत में बार-बार वह आपका नाम पुकार रहे हैं।"

भूपेन्द्रसिंह तुरन्त अस्पताल की तरफ दौड़ पड़ा।

रघुवीर सिंह का पूरा बदन पट्टियों में जकड़ा हुआ था। बस नाक, मुंह व आंखें ही खुली हुई थीं।

अगर बेड के करीब रघुवीर सिंह का आठ वर्ष का लड़का नागेश और बारह वर्षीय लड़की नलिनी न खड़े होते तो शायद भूपेन्द्रसिंह उन्हें पहचान भी न पाता।"

दोनों बच्चे भूपेन्द्रसिंह को देखकर अंकल-अंकल कहते हुए उसकी ओर दौड़े और रोते-सिसकते, उसके पैरों से लिपट गए।

"पगलों !" उन दोनों के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए भूपेन्द्रसिंह ने झूठी तसल्ली देकर कहा—"तुम रो क्यों रहे हो ? तुम्हारे पापा को मामूली चोटें आई हैं। देखना दो दिन में वे भले-चंगे हो जायेंगे।"

फिर उन्हें अलग कर वह रघुवीर सिंह के नजदीक पहुंचा।

रघुवीर सिंह की आंखों से निकलते आंसुओं को देखकर भूपेन्द्रसिंह का दिल व्यथित हो उठा।

तभी नलिनी बोल पड़ी—"देखो-देखो अंकल, पापा रो रहे हैं। अगर वे ठीक हो जायेंगे तो इस तरह रो क्यों रहे हैं ?"

उसे समझाने के लिए भूपेन्द्रसिंह अभी कुछ कहना ही चाहता था कि रघुवीर सिंह ने आंख के इशारे से उन दोनों को वहां से हटा देने को कहा।

"देखो बच्चो।" भूपेन्द्रसिंह बोला—"तुम्हारे पापा को आराम की जरूरत है। जाओ, तुम दोनों थोड़ी देर बाहर खेलो। तब तक मैं इनके पास बैठता हूं।" बड़ी मुश्किल से वे दोनों बाहर निकलने को राजी हुए थे।

उनके बाहर जाते ही रघुवीर सिंह ने आंखों के इशारे से भूपेन्द्रसिंह को अपने नजदीक बुलाया। और जब भूपेन्द्रसिंह ने अपना कान एकदम उनके मुंह के करीब कर दिया तो रघुवीर सिंह ने रुक-रुककर बोलना शुरू किया। उसके मुंह से निकलने वाली आवाज इतनी धीमी थी, जैसे कोई मक्खी भिनभिना रही हो—"भूपेन्द्रसिंह मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है, क्योंकि मैं यह जानता हूं कि अब मेरा अंतिम समय निकट आ चुका है। अपने अंतिम क्षणों में मुझे तुम्हारे सिवा अपना ऐसा कोई नजर नहीं आता जिस पर मैं विश्वास कर सकूं। मुझे यह यकीन है कि मेरे न रहने पर भी तुम नलिनी व नागेश की परवरिश अपने बच्चों की तरह करोगे। अतः अपने वकील से जो वसीयत नामा मैंने बनवाया है, उसके मुताबिक जब तक कि मेरे दोनों बच्चे वयस्क नहीं हो जाते, अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति का देख-रेख कर्ता तुम्हें मैंने नियुक्त किया है। उनके वयस्क हो जाने के बाद तुम पूरी सम्पत्ति के एक चौथाई के हकदार रहोगे। अगर संयोग से उनमें से किसी का आकस्मिक निधन हो जाता है तो उसके

हिस्से की सम्पत्ति में से भी एक चौथाई हिस्सा तुम्हारा होगा। अब जबकि मैं कुछ ही क्षणों का मेहमान हूं, तुम मेरे सिर पर हाथ रखकर कहो कि मेरे विश्वास पर किसी भी स्थिति में आंच नहीं आने दोगे।"

उसके सिर पर हाथ रखकर दिखावे के लिए रोता हुआ भूपेन्द्रसिंह कह उठा—"अगर कभी मैं आपके विश्वास की हत्या करूं, तो ऊपर वाला मेरी दोनों औलाद मुझसे छीन ले, लेकिन आप इस तरह दिल छोटा न कीजिए। आपको कुछ नहीं होगा, अगर यहां अच्छा इलाज संभव न हुआ तो मैं आपको अमरीकी डॉक्टरों को दिखाऊंगा।"

सुनकर रघुवीर सिंह के होंठों पर मद्धिम-सी मुस्कराहट रेंगी और उसके फड़फड़ाते हुए होंठ हिले—"ऊपर वाले की मर्जी के बिना किसी की किस्मत में लिखी मौत नहीं टाली जा सकती भूपेन्द्र! तुम्हारा वादा पाकर अब मेरी आत्मा अपने ऊपर किसी तरह का बोझ महसूस नहीं कर रही है। ये लो, मैं कहता था न कोई कुछ नहीं कर सकता। देख लो, यमदूत आकर तुम्हारे बगल में खड़े हो गए हैं।"

चौंककर भूपेन्द्रसिंह ने अपनी गर्दन घुमाई तो वहां दो डॉक्टर और तीन नर्सें खड़ी थीं।

"भूपेन्द्र, देखो-देखो, ये लोग मुझे जबरदस्ती अपने साथ ले जाना चाहते हैं। इन्हें रोको, समझाओ, कह दो कि मेरे छोटे-छोटे बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं है।" इस तरह की न जाने कितनी बातें कहते हुए रघुवीर सिंह की आवाज आश्चर्यजनक ढंग से तेज हो गई थी।

लेकिन थोड़ी देर बाद वह उसी आश्चर्यजनक ढंग से शनैः-शनैः कम होती हुई एकदम ही खामोश हो गई।

तभी नलिनी व नागेश भी वहां आ पहुंचे। रघुवीर सिंह के ऊपर सफेद कपड़ा पड़ा देखकर दोनों फूट-फूटकर रो पड़े थे।

घड़ियाली आंसुओं को बहाते व उन्हें चुप कराने की कोशिश करते हुए भूपेन्द्रसिंह का दिमाग आकाश की बुलंदियों पर मंडरा रहा था।

▭ ▭

सात वर्ष बाद!

अब भूपेन्द्रसिंह मैनेजर नहीं, बल्कि सेठ भूपेन्द्रसिंह बन

"अरे !" बुरी तरह चौंककर वह बोली—"अ—अंकल ! आपकी तबीयत तो ठीक है ना ? आप कुछ बोलते क्यों नहीं ?"

"हां नलिनी।" कामोत्तेजना से कांपते स्वर में उसके अन्दर का दरिंदा बोला—"मेरी तबीयत तो कल रात से ही खराब है।" कहते हुए वह उससे एकदम सटकर बिस्तर पर जा बैठा।

"और आपने किसी को बताया तक नहीं।" कहने के साथ ही उसने अपने कोमल हाथ का स्पर्श भूपेन्द्रसिंह के माथे पर किया तो वह जोर से चिहुंक उठी—"अरे बाप रे ! कितना तेज बुखार है। रुकिए, मैं डॉक्टर को बुलाती हूं।"

उसने बिस्तर से उठने की कोशिश की तो भूपेन्द्रसिंह ने एक हाथ से उसकी कलाई खींचकर उसे अपनी गोद में गिराते हुए कहा—"डॉक्टर की कोई जरूरत नहीं है नलिनी। अगर तुम चाहो तो मेरे बुखार को ठीक कर सकती हो।"

लेकिन वह नासमझ उसकी बातों का अर्थ न समझ सकी। समझती भी कैसे ? क्या वह यह सोच सकती थी कि हमेशा उसे बेटी कहकर पुकारने वाला इंसान इतनी गिरी हुई व जलील हरकत कर सकता है।

"कमाल करते हो अंकल ! मुझे तो डॉक्टरी की ए, बी, सी, डी भी नहीं मालूम और आप कहते हैं कि मैं आपको ठीक कर सकती हूं।"

"क्यों नहीं ठीक कर सकती।" कहते हुए भूपेन्द्रसिंह के अजगर के समान घिनौने व लिजलिजे हाथ नलिनी के जिस्म पर रेंगने लगे।

तब कहीं जाकर उसे उसके शैतानी इरादों की भनक लगी। उसकी पकड़ से बचने के लिए वह मचलकर बिस्तर से ऐसे उछली, जैसे चार सौ चालीस वोल्ट का नंगा तार उसे छू गया हो।

आंखों में जमाने-भर का आश्चर्य लिए वह हकला उठी—"अ···अंकल ! आप इतना गिर सकते हैं, यह तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी। मेरा क्रोध परवान चढ़े, इससे पहले ही मेरी नजरों से दूर हो जाइए। छी: ! ऐसा सोचने से पहले ही तुम्हें चुल्लू-भर पानी में डूब मरना चाहिए था।"

उसकी बातों को अनसुना करके आंखों में शैतानी चमक लिए भूपेन्द्रसिंह उसकी तरफ बढ़ता गया।

"म...मैं कहती हूं चले जाइए यहां से।" उसे घृणा-भरी निगाहों से देखती हुई वह फुफकारी—"वर्ना मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगी?"

लेकिन भला शैतान इन धमकियों से कहां डरने वाला था। भूपेन्द्रसिंह ने झपटकर उसे दबोच लिया।

"हरामजादे...कुत्ते...।" जख्मी शेरनी की तरह गुर्राकर गालियां बकती हुई नलिनी उसकी पीठ पर मुक्के बरसाती जा रही थी। साथ ही चीखती भी जा रही थी—"छोड़ दे मुझे, वहशी कुत्ते, छोड़ दे मुझे। वरना तेरा यह घिनौना चेहरा मैं पूरी दुनिया के सामने बेनकाब कर दूंगी।"

"कर देना।" वहशी शैतान के हलक से पैशाचिक ठहाके निकले—"लेकिन इतना ध्यान रखना कि जितनी बदनामी मेरी होगी, उससे कहीं ज्यादा तुम्हारी होगी।"

और इन शब्दों के साथ ही भूपेन्द्रसिंह भूखे भेड़िए की तरह नलिनी पर झपट पड़ा था।

भरपूर विरोध के साथ वह खूब चीखी-चिल्लाई, लेकिन उस साउण्डप्रूफ कमरे से न तो उसकी चीख-चिल्लाहट किसी दूसरे के कानों में पड़ी और न ही उस शैतान के कानों पर कोई असर डाल सकी। हर तरह के विरोध को नाकाम जाते देखकर वह बिलख-बिलखकर रोते हुए बोल उठी—"भगवान के लिए मुझे छोड़ दीजिए। मैं आपकी बेटी न सही, लेकिन बेटी जैसी तो हूं।"

किन्तु सब व्यर्थ।

शैतान का दिल जरा भी नहीं पसीजा।

अन्ततः शैतान जीत गया और इंसानियत का खून हो गया।

□ □

"नीच, वहशी, जलील, तू बाप नहीं कसाई है।" क्रोध से तमतमाते चेहरे व घृणा-भरी निगाहों से देवेन्द्र चीखता जा रहा था—"आज से मेरा और तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं रहा। जी तो चाहता है ऐसे नीच इंसान का अपने हाथों से कत्ल कर दूं। लेकिन नहीं, मैं तेरे गंदे खून से अपने हाथ

चुका था। और इस परिवर्तन के साथ ही उसकी ऐयाशियां भी बढ़ चुकी थीं। नित्य नई लड़की के साथ रात गुजारना उसकी आदत बन गई थी। ऐयाशी में लिप्त रहने के कारण वह यह भी न जान सका था कि उसका बेटा देवेन्द्र भी उसी के पदचिह्नों पर चलने लगा था।

उस वक्त तक नलिनी उन्नीस वर्ष की हो चुकी थी। कुदरत ने उसे ऐसा कयामत खेज रूप दिया था कि जो भी उसे एक बार देख लेता था तो बस देखता ही रह जाता था।

एक रात !

बुरी तरह नशे में धुत्त जब भूपेन्द्रसिंह एक पार्टी से घर लौटा तो रात का एक बज रहा था। लड़खड़ाते कदमों को घसीटते हुए वह अपने कमरे की तरफ बढ़ रहा था। अचानक देवेन्द्र के कमरे से आने वाली धीमी खिलखिलाहट को सुनकर वह बुरी तरह चौंका। नशे में होने के बावजूद वह उस स्वर को अच्छी तरह पहचान गया था। निश्चित रूप से वह नलिनी की आवाज थी।

अतः भूपेन्द्रसिंह दबे कदमों से की-होल के नजदीक पहुंच गया। और अन्दर का दृश्य देखते ही वह स्तब्ध रह गया।

तुरन्त ही उसका सारा नशा कपूर की तरह उड़ गया। देवेन्द्र और नलिनी एक-दूसरे को अपनी आगोश में लिए खिलखिला रहे थे। पता नहीं उस दृश्य में ऐसा क्या आकर्षण था, कि भूपेन्द्रसिंह की आंखें की-होल से हटने का नाम ही नहीं ले रही थीं। थोड़ी ही देर बाद उनकी खिलखिलाहट छेड़छाड़ में तबदील हो गई।

और जल्दी ही उस छेड़छाड़ ने एक-दूसरे के जिस्मों को सहलाने व चूमने का रूप ले लिया। फिर उसके देखते-ही-देखते उनके जिस्म पर मौजूद वस्त्र फर्श पर आकर गिरने लगे थे। फिर भूपेन्द्रसिंह तब तक की-होल पर आंखें चिपकाए वहीं खड़ा रहा, जब तक कि कमरे में उठा तूफान अपनी चरम सीमा पर पहुंचकर शांत न हो गया था।

उस वक्त तो भूपेन्द्रसिंह ने किसी तरह अपने ऊपर काबू पा लिया था। लेकिन सारी रात उसे करवट बदलते हुए गुजारनी पड़ी थी। उसकी आंखों के सामने नलिनी का जवान और कयामत-भरा जिस्म घूमता रहा था। वासना के

उन्माद में वह यह भी भूल गया था कि उसने रघुवीर सिंह के सिर पर हाथ रखकर उसके विश्वास को ठेस न पहुंचाने की कसम खाई थी।

भूपेन्द्रसिंह ने सुबह उठते ही देवेन्द्र को पूना जाकर अपने ग्राहकों से बाकी पेमेंट वसूल लाने का हुक्म दनदना दिया।

अब बंगले में भूपेन्द्रसिंह और नलिनी रह गए थे।

राघव माली के बारे में उसे विशेष फिक्र करने की जरूरत वैसे ही नहीं थी, क्योंकि वह तो बहुत जरूरी काम होने पर ही बंगले के अन्दर कदम रखता था, अन्यथा बगीचे की देख-भाल के बाद सर्वेंट क्वार्टर में ही पड़ा रहता था। फिर भी भूपेन्द्रसिंह ने उसे हिदायत दे दी थी कि वह एक बहुत ही आवश्यक काम में व्यस्त है, अतः न तो वह खुद आए और न ही किसी मिलने वाले को यह बताए कि वह बंगले में मौजूद है।

नलिनी का भाई नागेश उन दिनों होस्टल में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी कर रहा था और सरला अपने मामा के यहां गई हुई थी। कहने का मतलब यह है कि उसे रोकने-टोकने वाला अब वहां कोई नहीं था।

अतः बेखौफ होकर अपने शैतानी इरादों के साथ भूपेन्द्रसिंह ने नलिनी के कमरे में कदम रखा।

उस वक्त नलिनी के कयामत ढाते बदन पर पारदर्शी कपड़े की सिर्फ एक नाईटी मौजूद थी, जो उसके सांचे में ढले एवं उफनते अंगों को छुपा पाने में पूरी तरह असमर्थ नजर आ रही थी।

उसे ऐसे वस्त्रों में देखकर भूपेन्द्रसिंह के अन्दर बैठा शैतान अट्टहास कर उठा। नलिनी ने पदचाप सुनकर उसकी तरफ देखा था। तब तक वह उसके कमरे की चिटकनी लगाकर उसकी तरह घूम चुका था। उसे देखकर धीरे-से चौंकती हुई वह बोली—"अरे! अंकल आप? आज इतनी जल्दी कैसे आ गए?"

लेकिन भूपेन्द्रसिंह को जवाब देने का होश ही कहां था। उसकी कामुक निगाहें तो उसकी नाईटी से झांकते अंगों पर टिकी हुई थी। फिर धीरे-धीरे किसी आदमखोर दरिंदे की तरह वह उसकी तरफ बढ़ने लगा।

करने की कोशिश करेगी। अब अगर तुम उससे विवाह करने से इंकार करते हो तो भी वह दुनिया के सामने चीख-चीख कर इसे हम दोनों की करतूत ही बताएगी।"

"ल···लेकिन···।" बदहवास होकर देवेन्द्र हकलाया—"इतना जानने के बाद अब मैं उससे विवाह नहीं कर सकता।"

"तुम्हें विवाह करने को कौन बेवकूफ कह रहा है। मैं तो सोच रहा हूं कि उस मुसीबत से कैसे पीछा छूटेगा?"

जवाब में देवेन्द्र की मोटी अक्ल में कुछ न आया तो वह खामोश ही रहा। भूपेन्द्रसिंह कुछ सोचने का अभिनय करते हुए बोला—"अगर नलिनी आत्महत्या कर लेती है तो उससे तुम्हारा पीछा छूट सकता है और उसके हिस्से की दौलत का एक चौथाई हिस्सा भी हमें मिल सकता है।"

"लेकिन वह आत्महत्या क्यों करेगी? यदि उसका ऐसा कोई इरादा होता तो अब तक कर चुकी होती।"

"करेगी तो नहीं?" भूपेन्द्रसिंह शैतानी मुस्कराहट के साथ बोला—"लेकिन अगर हम चाहें तो उसे आत्महत्या करनी ही पड़ेगी।"

"क···कैसे?"

"पहले तुम यह बताओ कि मेरे किसी भी काम में तुम सहयोग देने को तैयार हो या नहीं?"

"क···कैसा काम?"

"मान लो हमें नलिनी की हत्या करनी पड़े।"

"ह···हत्या···!" वह बुरी तरह बदहवास हो उठा।

"हां, हत्या।" भूपेन्द्रसिंह ने धाराप्रवाह बोलना जारी रखा—"लेकिन इस ढंग से कि पुलिस और दुनिया वाले उसे आत्महत्या समझें।"

देवेन्द्र के गले से बड़ी कठिनाई से निकला—"क··· कैसे?"

"सुनो!" उसके कान के पास मुंह ले जाकर भूपेन्द्रसिंह ने बहुत फुसफुसाकर अपनी योजना के बारे में बताना शुरू किया।

□ □

"नलिनी, मैंने फैसला कर लिया है कि हम इस नर्क में अब एक पल भी नहीं रहेंगे।"

रोते-रोते सूज गई आंखों से देवेन्द्र की तरफ देखती हुई वह बोली—"मैं भी नहीं रह सकती। अगर तुम्हारा ख्याल न होता तो इस घर की कौन कहे, अब तक तो मैं इस दुनिया से ही चली गई होती। लेकिन मैं जानती थी कि तुम भी मेरे बिना जिन्दा न रह सकोगे।"

"यह सच है नलिनी। अगर तुम वास्तव में ऐसा कुछ कर बैठती तो मैं भी अपने आपको खत्म कर लेता। लेकिन जाने से पहले मैं यह चाहता हूं कि तुम पर हुए अत्याचार का बदला चुकाऊं।"

"नहीं···नहीं!" वह घबराकर बोली—"तुम ऐसी कोई भी कोशिश मत करना, वरना जो बात अभी तक हम तीनों की जानकारी में है, वह दुनिया जान जाएगी। तब उस अत्याचारी के साथ-साथ हमें भी तो बदनाम होना पड़ेगा।"

"नहीं नलिनी, तुम चिन्ता मत करो। मैं उसे इस तरह से कत्ल करूंगा कि किसी को मुझ पर शक तक नहीं होगा।"

"नहीं देवेन्द्र, नहीं! मैं तुम्हें ऐसा हरगिज नहीं करने दूंगी। अगर कहीं तुम उस पापी के कत्ल के इल्जाम में गिरफ्तार हो गए तो फिर मेरा व मेरे पेट में पल रहे हमारे बच्चे का क्या होगा?"

"तो क्या तुम यह चाहती हो···।" ज्वालामुखी बना वह चिल्लाया—"कि वह राक्षस, जिसने तुम्हें बरबाद किया है, यूं ही आजाद घूमता रहे। नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। उसे सजा देने का मैंने एक ऐसा तरीका सोचा है, जिससे कि सांप भी मर जाएगा और लाठी भी नहीं टूटेगी। यानी उस शैतान को उसके किए की सजा भी मिल जाएगी और हमें किसी तरह का खतरा भी नहीं रहेगा।"

"फिर ठीक है।" सहमति में सिर हिलाती हुई नलिनी गुर्राई—"मुझे कोई एतराज नहीं है। मेरी इज्जत पर डाका डालने वाले उस वहशी को सजा मिलनी ही चाहिए। लेकिन तुम्हारी योजना क्या है?"

"योजना ऐसी जानदार है कि तुम सुनोगी तो उछल पड़ोगी।" प्रसन्नता में डूबे स्वर में देवेन्द्र ने कहना जारी रखा—"हम दोनों अपना-अपना सुसाइड नोट लिखकर यहां छुपा देंगे। फिर चुपचाप बिना किसी की जानकारी में आए

नहीं रंगना चाहता हूं। इसकी सजा तुझे ऊपर वाला खुद दे देगा। तेरे बदन में कीड़े पड़ेंगे कुत्ते, कीड़े। मैं इसी वक्त ये घर छोड़कर जा रहा हूं। अब एक पल भी मैं इस नर्क में नहीं रह सकता।"

सबकुछ समझते हुए भी भूपेन्द्रसिंह ने अनजान बनकर पूछा—"यह क्या बक रहा है? आखिर हुआ क्या है तुझे?"

"मेरी जुबान को और ज्यादा गंदी न करा कुत्ते। तू क्या समझता था, नलिनी अपनी बदनामी के भय से तेरी करतूत किसी से नहीं बताएगी?"

"अच्छा, तो तुम इसलिए इतना भड़क रहे हो। जो हो गया, सो हो गया। लेकिन ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि नलिनी इसी काबिल थी। उसका तुम्हारे अलावा एक और मर्द से अनुचित सम्बन्ध है। यह मैंने अपनी आंखों से देखा है।" भूपेन्द्रसिंह ने कोरी गप मारते हुए आगे कहा—"जरा सोचो, अगर वह तुम्हें अपना सबकुछ समझती तो क्या अपनी इज्जत लुटने के बाद तुम्हें अपना चेहरा दिखा पाने का हौसला रख पाती? शायद कभी नहीं। गैरतमंद लड़कियां अपनी इज्जत गंवाने के बाद एक पल भी जीना बर्दाश्त नहीं कर सकतीं हैं। लेकिन नलिनी ने ऐसा नहीं किया। इसी से साबित हो जाता है कि वह खुद ही गलत है।"

"अगर वह ऐसी ही होती तो फिर तुम्हारी करतूत मुझे क्यों बताती?"

"वह इसलिए···।" लोहा गर्म देखकर चोट करता हुआ भूपेन्द्रसिंह बोला—"क्योंकि मैंने जो भी किया, वह उसकी इच्छा से नहीं हुआ, लेकिन तुम्हारे अलावा उसका जिस दूसरे आदमी से सम्बन्ध है, उसके साथ वह ही सबकुछ अपनी इच्छा से करती है।"

"नहीं···!" देवेन्द्र पुरजोर स्वर में चीखा—"अपनी करतूत छिपाने व नलिनी को बदनाम करने की यह तुम्हारी एक चाल है। उसका मेरे अलावा और किसी से कोई संबंध नहीं है।"

"अगर तुम्हें मेरी बातों का यकीन नहीं है तो कुछ दिन रुको, फिर तुम खुद ही समझ जाओगे कि नलिनी क्या चीज है?" यह शब्द भूपेन्द्रसिंह ने इतने आत्मविश्वास के साथ कहे थे कि देवेन्द्र उसकी बातों से प्रभावित नजर आने लगा

था।

"लेकिन उससे पहले मैं यह जानना चाहता हूं कि कहीं तुम उससे विवाह करने का सपना तो नहीं देख रहे थे?"

"ह···हां मैं ऐसा ही चाहता था।" कहते हुए उसका स्वर हकलाया था।

"तो मैं यही कहूंगा···।" भूपेन्द्रसिंह ने प्रभावशाली आवाज में अपना अन्तिम तीर फेंका—"कि तुम एक जबरदस्त बेवकूफी करने जा रहे हो। तुमने एक ऐसी लड़की से विवाह करने का फैसला किया है, जो विवाह से पहले ही तुम्हें अपना तन समर्पित कर चुकी है। उसके इस रवैये पर ही तुम्हें समझ जाना चाहिए था कि इज्जतदार लड़कियां विवाह से पहले अपना तन समर्पित करना पाप समझती हैं और इसके अलावा क्या तुम यह चाहते हो कि तुम एक ऐसी औरत के पति बनकर रहो, जो तुम्हें एक वफादार कुत्ते से ज्यादा महत्त्व न दे।"

"ल···लेकिन नलिनी ऐसा क्यों सोचेगी?" देवेन्द्र हकलाया।

"वह इसलिए···। क्योंकि हम जिस दौलत पर ऐशो-आराम कर रहे हैं, वह दौलत नलिनी और नागेश की धरोहर है। अब वह समय निकट आ गया है, जबकि यह दौलत हमसे छिन जाएगी और इसके मालिक वे दोनों हो जायेंगे। अपनी दौलत पर रोटी तोड़ने वाले पति को वह वफादार कुत्ता नहीं समझेगी तो और क्या समझेगी? दौलत के लिए अपना अपमान सहने से तो अच्छा है कि उसे भूलकर किसी ऐसी लड़की की तलाश करो, जो तुम्हारे अनुकूल हो।"

"ल···लेकिन डैड···व···वह मेरे बच्चे की मां बनने वाली है।"

सुनकर भूपेन्द्रसिंह को एक झटका-सा लगा, लेकिन तुरन्त ही उसके शैतानी दिमाग ने एक शैतानी इरादे को जन्म दिया, बोला—"उसके पेट में पल रहे पाप का असली वारिस कौन है? यह तो वह खुद भी नहीं बता सकती। क्योंकि मुझे मिलाकर उसके तीन-तीन मर्दों से अवैध संबंध हैं, तब फिर क्या पता कि इनमें से किसका पाप उसके पेट में अंकुरित हो रहा है। लेकिन चूंकि उसका सम्बन्ध तुम्हारे साथ अधिक था, इसलिए वह उसे तुम्हारी ही संतान साबित

को बाहर से बन्द कर दिया।

और फिर! सबकुछ भूपेन्द्रसिंह की योजना के मुताबिक हुआ। पुलिस ने उसे आत्महत्या का केस बनाकर केस फाइल कर दिया।

लेकिन अगर कोई गड़बड़ी हुई तो नलिनी के भाई नागेश की वजह से हुई।

उसकी आत्महत्या की खबर पाकर जब वह वहां पहुंचा तो उसकी लाश से लिपटकर बिलख-बिलखकर रोते हुए बोला—"दीदी, तुमने ऐसा क्यों किया। मुझे छोड़कर जाने से पहले कम-से-कम अपने छोटे भाई को तो यह बता दिया होता कि वह कौन खूनी भेड़िया है, जिसकी वजह से तुम्हें मौत को अपने गले लगाना पड़ा। मुझे राखी के धागों की कीमत चुकाने का अवसर तो देतीं, जो तुम पन्द्रह वर्षों से मेरी कलाई पर बांधती आ रही थीं।"

फिर रोते-रोते एकाएक उसका स्वर गुर्राहट में बदल गया—"मैं तुम्हारे सिर पर हाथ रखकर कसम खाता हूं दीदी! तुम भले ही मरते वक्त तक उसका नाम अपनी जुबान पर नहीं लाईं। लेकिन मैं उस भेड़िए को पाताल से भी खोज निकालूंगा और तुम पर हुए जुल्म का ऐसा भयंकर बदला लूंगा कि सिर्फ उसका ही नहीं, बल्कि देखने और सुनने वालों का कलेजा भी थर्रा उठेगा।"

▭ ▭

नागेश का उस वक्त का रौद्र रूप देखकर भूपेन्द्रसिंह और देवेन्द्र दोनों का जिस्म ही नहीं, बल्कि रोयां-रोयां कांप उठा था। लेकिन उन्होंने यह सोचकर अपने आपको तसल्ली दे ली थी कि उसे अब मरने वाली तो आकर बताएगी नहीं कि उसका कत्ल उन्होंने किया है। फिर उन्होंने ऐसा कोई सबूत भी नहीं छोड़ा था, जिसके सहारे वह उन तक पहुंचता, और जब पुलिस कुछ भी नहीं जान सकी तो यह पन्द्रह साल का छोकरा क्या जान पाएगा।

लेकिन ऐसा सोचकर भूपेन्द्रसिंह ने जबरदस्त भूल की थी। यह बात उसे तब महसूस हुई, जब उसे यह ज्ञात हुआ कि नागेश नलिनी की सहेलियों से पूछताछ करता फिर रहा है।

फिर यह सोचकर भूपेन्द्रसिंह बुरी तरह घबरा उठा

कि कहीं नलिनी ने अपने और देवेन्द्र के प्यार का जिक्र अपनी किसी सहेली से न कर रखा हो। तब उसके अन्दर बैठे शैतान ने एक क्रूर निर्णय और लिया। वह यह कि किसी पेशेवर कातिल से उसकी हत्या इस ढंग से करवा दी जाए कि वह महज एक इत्फाक या दुर्घटना नजर आए।

तब भूपेन्द्रसिंह अपना परिचय गुप्त रखते हुए एक पेशेवर कातिल से मिला और उसने पच्चीस हजार में नागेश के कत्ल का सौदा तय कर लिया।

लेकिन कई दिनों के बाद भूपेन्द्रसिंह को खबर मिली कि इन दिनों नागेश ना तो अपने होस्टल में दिखाई दिया और ना ही अपने कॉलेज में। उसी दिन से वह गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो गया था। भूपेन्द्रसिंह ने उसे खोजने का लाख प्रयास किया, लेकिन वह यह नहीं जान सका कि नागेश कहां गायब हो गया है।

भूपेन्द्रसिंह पुनः अपने वजूद में लौट आया था वह कह रहा था—"लेकिन अब मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह न सिर्फ इस शहर में मौजूद है, बल्कि अपनी बहन के ऊपर हुए जुल्म का बदला भी ले चुका है। देवेन्द्र को वह फांसी पर लटका ही चुका है। आज मैं भी लटका दिया जाऊंगा। यकीनन इस साजिश के पीछे उसी का हाथ है। खैर, अब जबकि मैं यह जानता हूं कि मैं कुछ देर का मेहमान हूं। मैं उसे गलत नहीं ठहरा सकता। उसने हम बाप-बेटों को जो सजा दी है, वह तो बहुत ही कम है, बल्कि मुझे यह कहने में भी कोई झिझक महसूस नहीं हो रही है कि हम जैसे नीच इन्सान को तो तड़पा-तड़पाकर जिन्दा जला देना चाहिए था।" कहने के साथ ही भूपेन्द्रसिंह खामोश हुआ तो उनके चेहरे पर पश्चाताप व आत्मग्लानि के सिवा और कुछ नजर नहीं आ रहा था।

"मैं मानता हूं…।" पूरी बात गौर से सुन रहे कैलाश ने गम्भीर स्वर में कहा—"कि तुम फांसी के हकदार हो, लेकिन जिस तरह नागेश ने कानून के साथ खिलवाड़ किया है, वह उसका सबसे बड़ा गुनाह है। फांसी की सजा सुनकर जिस तरह के भाव तुम्हारे चेहरे पर दिखाई दिए और जिस तरह वह सदमा बर्दाश्त न कर पाने से तुम बेहोश हुए, उसे देखने के बाद ही मैं इस नतीजे पर पहुंच गया था कि मुझे कहीं

यहां से निकल जायेंगे। बाद में पब्लिक टेलीफोन पर हम अपना नाम गुप्त रखते हुए पुलिस को यह सूचना दे देंगे कि भूपेन्द्रसिंह के बंगले में कुछ ऐसा घटित हुआ है, जो अपराध की श्रेणी में आता है, इसलिए वहां बारीकी से छानबीन करें। और जब हमारे लिखे वे पत्र पुलिस यहां बरामद करेगी, तब वह राक्षस हमें आत्महत्या के लिए विवश करने के जुर्म में गिरफ्तार हो जाएगा और कानून के मुताबिक किसी को आत्महत्या के लिए विवश करने वाला उतना ही दोषी होता है, जितना कि कत्ल करने वाला। उसे सजा होने के बाद अगर हम यहां वापस आ गए, तो भी पुलिस हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। क्योंकि हम यह कहेंगे कि हम यहां से सचमुच आत्महत्या के इरादे से निकले थे, लेकिन बाद में अपना इरादा बदल दिया था। अतः हम पर किसी तरह की कानूनी धारा लागू नहीं होगी।"

देवेन्द्र की बातों से प्रभावित नलिनी उत्सुकता से पूछ बैठी—"लेकिन अपने सुसाइड नोट में हम क्या लिखेंगे?"

"मैं अपने सुसाइड नोट के बारे में तो अभी पूरी तरह संतुष्ट नहीं हूं, लेकिन तुम्हारे सुसाइड नोट का खाका मेरे जेहन में तैयार हो चुका है। तुम तुरन्त लिखना शुरू कर दो और मेरे मुंह से निकले हर शब्द को ज्यों-का-त्यों लिखती जाओ। जब तक कि मैं खामोश न हो जाऊं, बीच में एक शब्द भी मत बोलना। मैं एक शब्द भी भूल गया और उसकी जगह तुमने गलत शब्द लिख दिया, तो हमारी सारी योजना चौपट हो जाएगी।"

"ठीक है, बोलो!" कागज और पैन सम्भालते हुए वह बिना किसी सोच-विचार के बोली थी। सोच-विचार करने या कुछ पूछने की आवश्यकता तो वह तब महसूस करती, जब उसे उस पर किसी तरह का संदेह होता, क्योंकि वह तो उस पर अटूट विश्वास रखती थी।

"लिखो!" फिर देवेन्द्र ने बोलना शुरू किया।

"मैं एक युवक से मुहब्बत करती थी, यहां उसका नाम बताना मैं जरूरी नहीं समझती। हम दोनों के विवाह पूर्व ही शारीरिक सम्बन्ध कायम हो गए थे। फलस्वरूप मेरी कोख में एक बीज अंकुरित होने लगा था, जिसे समाज में पाप कहा जाता है। और जब मैंने

अपने प्रेमी पर विवाह के लिए दबाव डाला तो वह साफ मुकर गया। तो मजबूरन मुझे आत्महत्या करने का निर्णय लेना पड़ा।"

अंतिम वाक्य लिखते समय नलिनी का हाथ क्षणभर के लिए कांपा, लेकिन देवेन्द्र की चेतावनी याद आते ही वह तुरन्त सक्रिय हो गई थी।

और जब पत्र के नीचे वह अपने हस्ताक्षर कर चुकी तो देवेन्द्र ने यह कहकर—"देखूं जरा, ठीक लिखा है या नहीं ?" उसके हाथ से पत्र ले लिया।

अपने मन में उठी शंका का निवारण करने के लिए अभी नलिनी ने अपना मुंह खोला ही था कि···।

भड़ाक की जोरदार आवाज के साथ दरवाजे के पट खुले और चेहरे पर क्रूर व वहशियाना भाव लिए भूपेन्द्रसिंह किसी नर पिशाच की तरह अन्दर दाखिल हुआ। फिर बाप-बेटे ने मिलकर उस मासूम लड़की को फांसी पर लटकाने की तैयारी शुरू की।

भूपेन्द्रसिंह ने दस्ताने पहनकर छत में लगे हुक में रस्सी का फंदा डाला और उसके नीचे स्टूल लाकर रख दिया। इस दौरान नलिनी अपनी आश्चर्य व अविश्वास से फटी जा रही आंखों से, गंगी बनी एकटक देवेन्द्र के चेहरे की तरफ देखे जा रही थी। स्टूल पर खड़ा करते और गले में फंदा डालते वक्त भी उसने कोई विरोध नहीं किया था। बस, पूर्ववत् उसके चेहरे की तरफ देखते हुए उसकी आंखों से अविरल अश्रुधारा बहे जा रही थी।

देवेन्द्र में इतना साहस नहीं बचा था कि उन आंसुओं-भरी आंखों से अपनी नजरें मिला पाता।

वह अपना मुंह दूसरी तरफ घुमाकर खड़ा हो गया था। और ठीक उसी वक्त भूपेन्द्रसिंह ने नलिनी के पैरों के नीचे से स्टूल को इस तरह पीछे गिरा दिया था, जिससे देखने वाले को वह उसके पैर के धक्के से गिरा हुआ लगे।

थोड़ी देर तक छटपटाने के बाद नलिनी की गर्दन लम्बी होती गई और उसकी जीभ व आंखें बाहर को उबल पड़ी थीं।

वहां से अपनी मौजूदगी के सारे सबूत मिटाने एवं पत्र को मेज पर रखने के बाद उन्होंने 'लैच लॉक' वाले दरवाजे

तरह वहां से निकलती चली गई थी।

अब वहां कैलाश की जगह उससे भी ज्यादा आकर्षक युवक खड़ा था। किन्तु उसका आकर्षक चेहरा इस समय सुर्ख अंगारों की तरह दहक रहा था, और उसके मुंह से गुर्राहट उभर रही थी—"मैं तेरे वहशी बाप को एक कागज पर लिखकर यह बता आया हूं कि कैलाशनाथ नाम का शख्स कोई और नहीं, बल्कि बाप-बेटों को फांसी के फंदे तक पहुंचाने वाला नागेश है। उस कागज के जरिए मैं उस कुत्ते को यह भी बता आया हूं कि अब मैं तेरे साथ क्या सलूक करूंगा। अब तुझे फांसी पर लटकाकर मैं वही कहानी दुहराऊंगा, जो तेरे शैतान भाई और बाप ने मेरी दीदी के साथ घटित की थी।"

वह अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए चीख रहा —"जिस तरह मेरी दीदी के पेट में पल रहे उनके खुद के पाप के अंकुर का फायदा उठाकर उन दरिन्दों ने उसकी हत्या को आत्महत्या साबित किया था, कुदरत ने मुझे भी आज वैसा ही मौका दिया है। तेरे साथ वही सब कुछ करने के बाद ही मेरी आत्मा को ठंडक पहुंचेगी। किन्तु तुम्हारी हत्या को आत्महत्या साबित करने के लिए मैं उन दरिन्दों की तरह तुमसे छल और जबरदस्ती नहीं करूंगा। लेकिन फिर भी कानून मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा, क्योंकि उसे मेरे खिलाफ यहां ऐसा कोई सबूत नहीं मिलेगा, जिससे कि वह मुझे सजा दे सके। लेकिन तुझे फांसी पर लटकाने से पहले मैं यह बता देना जरूरी समझता हूं कि उन दरिन्दों को उनके किए की सजा मैंने क्यों और कैसे दी?"

"न...नहीं...?" अचानक वह गला फाड़कर चिल्ला उठी। साथ ही बुरी तरह आतंकित होकर पीछे हटने लगी।

उसके पीछे हटते प्रत्येक कदम के साथ-साथ कैलाश आगे की तरफ बढ़ता जा रहा था।

सहसा सरला बिजली की तेजी से मुड़ी और दरवाजे की तरफ भाग उठी। लेकिन अभी वह दरवाजे के करीब भी फटक नहीं पायी थी कि कैलाश ने बाज की तरह झपट्टा मारकर उसे दबोच लिया और फिर किसी खिलौने की तरह उठाकर बिस्तर पर उछाल दिया था।

तदुपरांत उसने दरवाजे की चिटकनी लगायी और दह-

बते चेहरे के साथ उसकी तरफ पलटा। फिर उसके मुंह से हड्डियों तक को कंपा देने वाला स्वर निकला—"तेरी मौत निश्चित तय है सरला। अब इसे कोई माई का लाल नहीं टाल सकता, लेकिन मरने से पहले तू वह सब तो सुन ले जो मैं तेरे भाई और बाप को नहीं सुना सका था। और तू यह भी सुन, कि किस तरह उन दरिन्दों ने मेरी भोली-भाली दीदी को लूटा था, फिर किस तरह छल करके उसकी हत्या कर दी थी।"

भय से थरथराती सरला सिसकते हुए गिड़गिड़ा उठी—"ल'''लेकिन नरेश'''म'''मैंने तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है'''।"

"मेरी दीदी नलिनी ने भी उन दरिन्दों का क्या बिगाड़ा था? उस बेचारी का तो सिर्फ यही कसूर था कि अपने भोलेपन की वजह से वह तेरे शैतान भाई के हाथों लुट गई थी। तेरे जलील और वहशी बाप के बलात्कार की शिकार बन गई थी।" उसके मुंह से दहकते अंगारों के से अल्फाज निकल रहे थे—"इतना अत्याचार करने के बाद भी उन जालिमों को तसल्ली न हुई तो उन्होंने छल करके उसकी जान ले ली। नहीं सरला नहीं, मुझे भावनाओं में बहाकर तुम अपने आपको बचा नहीं सकती। कैलाश तुम पर रहम कर सकता है, लेकिन वह भाई कोई रहम नहीं कर सकता, जो यह जानता है कि उसके सामने मौजूद लड़की उस दरिन्दे देवेन्द्र की बहन है, उस नरपिशाच भूपेन्द्र की बेटी है, जिसने उसकी बहन की ना सिर्फ अस्मत लूटी थी, बल्कि उसकी जान भी ले ली थी।"

"न'''नहीं'''!" सरला के फड़फड़ाते होंठों ने अस्फुट स्वर उगला—"त'''तुम झूठ बोल रहे हो। मेरे भइया और डैडी ऐसे नहीं हो सकते।"

"हूंह! सच्चाई हमेशा कड़वी होती है सरला, वह आसानी से किसी के गले नहीं उतरती। मैं यह जानता था कि तुम्हें मेरी बातों पर यकीन नहीं आएगा। इसलिए जब तेरे बाप का बुलावा आया था तो मैं यह सोचकर एक पॉकेट टेपरिकॉर्डर अपने साथ लेकर गया था कि शायद अपने आखिरी क्षणों में वह अपनी करतूत बताकर अपना जी हल्का करना चाहता है। ले सुन, अपने बाप की आवाज में उसकी

न-कहीं गलतफहमी जरूर है। तब मैंने तुम्हारे अतीत के पन्नों को उलटना शुरू किया तो जल्दी ही नलिनी की आत्म-हत्या व नागेश का रहस्यमय ढंग से गायब होना जान गया। नागेश की खोज में मैंने आकाश-पाताल एक कर दिया और कामयाब भी हुआ, लेकिन यह जानने का प्रयास कर ही रहा था कि उससे तुम्हारी दुश्मनी क्या है कि तभी तुम्हारा बुलावा पाकर यहीं चला आया।" कहने के साथ ही कैलाश एक झटके से उठ खड़ा हुआ और फिर अपनी जेब से एक कागज निकालकर भूपेन्द्रसिंह की तरफ बढ़ते हुए बोला—"यह देखिए, मैंने इसमें अपनी पूरी इंवेस्टीगेशन लिख दी है।"

पत्र देने के बाद कैलाश वहां रुका नहीं। आंधी-तूफान की तरह सीधा बाहर निकल गया था।

▭ ▭

"कैलाश तुम आ गए। मैं कब से तुम्हारा इन्तजार कर रही थी।"

"क्यों? आज कुछ खास बात है क्या?" सरला की तरफ विचित्र निगाहों से देखते हुए उसने पूछा था।

"हां कैलाश।" सरला पूर्ववत् घबराए स्वर में बोली—"दो-तीन दिन से अपने जी मिचलाने की शिकायत पर मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया था, लेकिन आज कई मर्तबा उल्टी होने के बाद जब डॉक्टर को दिखाया तो उसने जो बताया, उसे सुनकर मैं बेहोश होते-होते बची।"

"इसमें बेहोश होने जैसी क्या बात थी? उसने ज्यादा-से-ज्यादा यही बताया होगा कि तुम मां बनने वाली हो।"

"अ...और तुम ऐसे कह रहे हो...।" वह आश्चर्य से आंखें फाड़े कैलाश को देखते हुए कह उठी—"कि इसमें बेहोश होने जैसी क्या बात है? जानते हो, किसी कुंआरी लड़की के मां बनने पर हमारा समाज उसे क्या कहता है?"

"हां, मैं अच्छी तरह जानता हूं।" कहते हुए कैलाश की आंखें छत को घूरने लगीं। और फिर उसके मुंह से भेड़िए जैसी गुर्राहट निकली—"उसे समाज में पाप की औलाद कहा जाता है और पाप की औलाद को पेट में पालने वाली को चरित्रहीन, पतिता।"

"य...य...ये...!" वह बुरी तरह चौंककर हकलाई—"ये तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो कैलाश? तुम

यह अच्छी तरह जानते हो कि मैंने तुम्हारे सिवा किसी दूसरे मर्द की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा है। अ···और त···तुम मेरे लिए चरित्रहीन जैसे घृणित शब्द···।"

"ये मैं नहीं कह रहा हूं सरला···।" भेड़िए जैसी गुर्राहट में कैलाश ने बोलना जारी रखा—"बल्कि ये अल्फाज तेरे उस वहशी बाप के हैं, जिसने ठीक यही शब्द मेरी दीदी नलिनी के लिए कहे थे।"

सरला को लगा, जैसे कि उसकी खोपड़ी में कोई शक्तिशाली बम का विस्फोट हुआ हो, और उसकी खोपड़ी के चिथड़े-चिथड़े उड़ गए हों।

वह आश्चर्य से फटी जा रही अपनी आंखों से कैलाश के चेहरे को इस तरह देखने लगी मानो ताजमहल व लालकिला आपस में गले मिल रहे हों।

फिर बड़ी कठिनाई से उसके फड़फड़ाते होंठों से अस्फुट स्वर निकला—"क···क्या क···कह रहे हो ? न···नलिनी तुम्हारी बहन थी। नहीं-नहीं, तुम···तुम नागेश नहीं हो सकते। क्या मैं उसे पहचानती नहीं थी ? जरूर, तुम मुझे बेवकूफ बनाने के लिए ऐसा कह रहे हो···! प···प्लीज कैलाश, ये मजाक छोड़ो। चलो, जल्दी से चलकर हम दोनों विवाह कर लें, वरना लोग हमारा जीना दूभर कर देंगे···।"

"ह···हा···हा···हा···।"

कैलाश के मुंह से निकलने वाला यह ठहाका जोरदार होने के साथ-साथ अपने साथ बहुत ही ज्यादा भयानकता समेटे था।

फिर अट्टहास रोककर वह गुर्रा पड़ा—"बेवकूफ लड़की, अब भी तू इसे मजाक समझ रही है। अब इस जन्म में तेरा विवाह मुझसे तो क्या, किसी से भी नहीं हो पाएगा। तेरी डोली की जगह अब सिर्फ तेरी अर्थी उठेगी। मैं कैलाश नहीं हूं, नागेश हूं सरला—नलिनी का भाई। जो अपनी दीदी पर हुए अत्याचारों का बदला चुकाने के लिए अब तक घुट-घुटकर जीता रहा है। ले देख मेरा असली चेहरा, ताकि तेरी आंखों को मुझे पहचानने में किसी तरह का धोखा न हो।"

कहने के साथ ही उसने अपने गले के पास हाथ लगाकर अंगूठे और उसकी बगल वाली उंगली की सहायता से वहां की चमड़ी को पकड़कर खींचा, तो वह प्याज के छिलके की

करतूतों का काला चिट्ठा।"

यह कहते हुए कैलाश ने जेब से पाॅकेट टेपरिकॉर्डर निकालकर बिस्तर पर उछाल दिया।

अविश्वास-भरी नजरों से कभी उसके भभकते चेहरे व कभी टेपरिकॉर्डर को देखते हुए अन्ततः सरला ने उसका स्विच ऑन कर दिया।

और टेपरिकॉर्डर के खामोश होते ही उसके होंठ सख्ती से भिंच गए थे। सहसा टेपरिकॉर्डर को फर्श पर पटकती हुई वह चीखी—"जलील कुत्ते, तेरी तो बोटी-बोटी करके चील, कौवों को खिला देनी चाहिए। उफ ! यह सुनने से पहले मैं मर क्यों न गई कि मैं ऐसे नीच और जलील इन्सान की बेटी हूं···।"

"मेरे पास वक्त बहुत कम है सरला। अपने बाप पर इस तरह नकली गुस्सा दिखाकर तुम मेरे कहर से बच नहीं सकती। उधर तेरा बाप अब तक जेल में कुहराम मचा चुका होगा। इसलिए अगर कोई पुलिसिया यहां पहुंच गया तो मैं अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाऊंगा। अतः मरने से पहले तू यह जान ले कि तेरे भाई व बाप को अपनी साजिश में मैंने किस तरह फंसाया ?" क्षणभर सांस लेने के लिए, रुककर कैलाश ने पुनः बोलना शुरू किया—"तेरे वहशी बाप द्वारा मेरे पीछे लगाए गए पेशेवर कातिल को जब पहली बार मैंने अपना पीछा करते हुए देखा तो मैं समझ गया था कि दीदी को आत्महत्या के लिए विवश करने वाला शख्स यह नहीं चाहता, कि मैं उस तक पहुंच सकूं। अतः उसे डॉज देकर मैं उस दुकान पर पहुंचा, जहां मेकअप का सामान मिलता था। फिर वहां से नकली दाढ़ी-मूंछ खरीदकर उन्हें अपने चेहरे पर चिपकाने के बाद मेरा चेहरा इतना बदल गया था कि मुझे कोई परिचित भी न पहचान पाता। पता नहीं क्यों, मेरा दिल कह रहा था कि दीदी की आत्महत्या का कारण मुझे उनके कमरे से ही मिल सकता है।

अतः एक रात मैं वहां जा पहुंचा और वहां तलाशी के दौरान एक छोटी-सी-डायरी में मुझे अपना उत्तर मिल गया। उस डायरी में दीदी ने देवेन्द्र के साथ अपने प्रेम की व भूपेन्द्र-सिंह द्वारा अपनी इज्जत लूटे जाने की दास्तान भी लिखी थी। यह जानते ही कि नलिनी को बरबाद करने वाले कोई

और नहीं, बल्कि वे नीच इन्सान हैं, जिन्हें मैं भाई और अंकल कहा करता था तो क्रोध से मेरा बदन सुलग उठा था। मेरा मन कर रहा था कि उन शैतानों की तब तक बोटी-बोटी करता चला जाऊं जब तक कि उनके मास और हड्डियों का कीमा न बन जाए। और जितना क्रोध मुझे उन शैतानों पर आ रहा था कि उससे कहीं अधिक उस कानून पर आ रहा था, जिसने मेरी दीदी के साथ इन्साफ नहीं किया था। अतः उसी वक्त से मैंने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि इन दोनों शैतानों को कानून के हाथों ही सजा दिलवाऊंगा।

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए मुझे कानून के दांव-पेंच व उसकी धाराओं की जानकारी लेना आवश्यक था, इसलिए दूसरे शहर में जाकर मैंने कानून की क्लास ज्वॉइन कर ली। किन्तु मुझे सिर्फ डिग्री की ही जरूरत नहीं थी, बल्कि ऐसे ज्ञान की आवश्यकता थी, जो कानून की धाराओं में घुसकर उसमें ऐसे बिल तलाश करने में कामयाब हो सके, जिसमें फंसने के बाद मेरा दुश्मन हरगिज जीवित ना बच सके। अतः डिग्री हासिल करने से पहले मैंने कानून की उन सभी मोटी-मोटी किताबों को चाट डाला, जिनका पूरा ज्ञान धुरंधर से धुरंधर वकीलों तक को नहीं हो पाता है। यह महारथ हासिल करने के बाद मुझे अपराध जगत की जान-कारियां हासिल करने की धुन सवार हुई। लेकिन अपराध की जानकारी सिर्फ किताबी कीड़ा बनकर ही हासिल नहीं की जा सकती थी, इसलिए अपराधियों के साथ रहकर मैंने अपराध की प्रैक्टिकल जानकारी ग्रहण की। ऐसा करते वक्त कई बार गिरफ्तार होने की नौबत आई थी, लेकिन मेरी किस्मत हर जगह मेरा साथ देती रही थी। कहने का मतलब मैं पूरी तैयारी के साथ इस शहर में आना चाहता था। लेकिन यहां आने से पहले मुझे अपने इस चेहरे का भी इन्त-जाम करना था। और इस समस्या को मेरे एक मुजरिम दोस्त ने नकली चेहरा बनवाकर सुलझा दिया। इसके अलावा उसने मेरी एल० एल० बी० की डिग्री में नागेश की जगह कैलाश-नाथ लिखवाने में भी मेरी मदद की थी और फिर यहां आने के बाद मैंने अपनी प्रैक्टिस शुरू करने के साथ ही देवेन्द्र से दोस्ती बनाने का प्रयास शुरू कर दिया, जिसमें जल्दी ही कामयाबी मिल गयी।

लेकिन यहां मैं यह बता देना जरूरी समझता हूं कि उस वक्त तक ऐसी कोई योजना मेरे दिमाग में नहीं बन पायी थी, जिससे कि मैं अपने दुश्मनों से बदला ले सकता। देवेन्द्र से दोस्ती करने के पीछे मेरा उद्देश्य सिर्फ यह था कि अपने दुश्मनों के बीच घुसने के साथ-साथ मैं यह भी जान सकूं कि उनसे किस तरह बदला लिया जा सकता है। और वक्त गुजरने के साथ-साथ हमारी दोस्ती प्रगाढ़ होती गई। भूपेन्द्र-सिंह भी मुझ पर अटूट विश्वास करने लगा था। और जब तुम मेरी तरफ आकर्षित हुई थीं तो अपनी इस सफलता पर मैं फूला न समाया था। अब मुझे सिर्फ इस बात की जरूरत थी कि कोई ऐसा मौका मेरे हाथ लगे, जबकि मैं अपने सुलगते दिल को ठंडा कर सकूं। और इत्तफाक से ऐसा मौका मुझे तब नजर आया, जब मैंने एक ऐसी युवती को देखा, जो काफी खूबसूरत होने के साथ-साथ कालगर्ल के पेशे से जुड़ी थी।

मैंने पैसे का लालच देकर उसे अपनी योजना के अनुसार ढाल लिया और अपनी योजना पर कार्य आरम्भ कर दिया।

फिर मेरे बताए अनुसार अपना नाम लक्ष्मी रखकर वह कालगर्ल इस तरह देवेन्द्र से मिली जैसे कि वह किसी ऑफिस में काम करने वाली एक बहुत सीधी-सादी लड़की हो। चूंकि देवेन्द्र के बारे में मैं अच्छी तरह जानता था कि वह रूप का रसिया है। अतः उस खूबसूरत लड़की की तरफ आसानी से आकर्षित हो जाएगा। और हुआ भी वही, लेकिन उस काल-गर्ल ने जिसे अब लक्ष्मी कहना ठीक रहेगा, मैंने सख्त चेतावनी दे दी थी कि उसे अपनी तरफ से कोई पहल नहीं करनी है। जब देवेन्द्र खुद ही उसकी तरफ आकर्षित हो जाए और उसके रूप का जादू उस पर इस कदर हावी हो जाए कि उसे पाने के लिए वह तड़प उठे तो भी उसे इस बात का विशेष ख्याल रखना होगा कि वह उसके जिस्म को प्राप्त करने में सफल ना होने पाए। और जब वह उस पर विवाह करने का जोर डालेगी, तब निश्चित ही उसके रूप के जादू में बन्धे देवेन्द्र के पास उसके जिस्म को हासिल करने का वही एक तरीका रह जाएगा। इस योजना में कामयाबी मिलने के बाद मैं अपनी उस योजना को साकार करना चाहता था, जिससे एक ही तीर से दो शिकार कर सकूं। अतः मैंने भूपेन्द्र सिंह का फोन

मास्क तैयार करवाया।"

एक क्षण रुककर, नागेश ने उसके चेहरे पर कुछ पढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसे वहां कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। बिल्कुल उस स्लेट की तरह जिस पर कुछ भी न लिखा गया हो। फिर होंठों पर क्रूर मुस्कराहट व आंखों में चीते जैसी चमक लिए वह पुनः बोला—"जिस तरह आज तुम मुझे देख रही हो, ठीक उसी तरह मेरी दीदी भी उस दरिन्दे की तरफ देखती रही थी, जिसे उसने टूटकर चाहा था। मरते वक्त भी उसे अपनी आंखों पर यकीन नहीं था जिसे उसने अपने तन और मन से देवता की कुर्सी पर बिठा रखा था, वही जल्लाद बनकर उसकी जान ले सकता है। ओह!" तभी धीरे-से चौंकने साथ ही उसने कहना जारी रखा—"फिर भूल गया कि मेरे पास वक्त बहुत कम है। हां तो मैं यह बता रहा था कि मेरे दिमाग से एक तीर से दो शिकार करने की योजना बन गई थी। इतना तो तुम मेरे बताए बगैर समझ सकती हो कि देवेन्द्र के मन में शंका का बीज बोने के लिए लक्ष्मी को मैंने ही कहा था, और जैसा कि स्वाभाविक था, उसने एतराज किया कि अगर उसकी इस हरकत पर खफा होकर देवेन्द्र उसे मारने-पीटने या जान से मार डालने की कोशिश करेगा तो···? तब मैंने उसे झांसा दिया कि वह बेफिक्र रहे, ऐसी गैर हरकत करने से पहले वह इस दुनिया में जीवित नहीं बचेगा। यह सुनकर वह संतुष्ट हो गई। लेकिन तब उस बेचारी को यह थोड़े ही पता था कि मैं देवेन्द्र के हाथों में उसे इस दुनिया से उठाने की योजना बना चुका हूं। और फिर भूपेन्द्रसिंह का पहले से बनवाया फेस मास्क लगाकर मैं शंकरनाथ कनपुरिया के पास लक्ष्मी का नकली चेहरा बनवाने पहुंचा। और फिर जिस दिन मुझे देवेन्द्र के लिए फांसी के फंदे का इंतजाम करना था उस दिन मैंने भूपेन्द्रसिंह बनकर मुरारी को उसकी मां की बीमारी की झूठी खबर देकर उसके गांव रवाना कर दिया। उसे गांव भेजने का पहला कारण तो यह था कि उसकी अनुपस्थिति में, मैं खुलकर अपनी गतिविधियां सक्रिय रख सकता था। और दूसरा, जब देवेन्द्र को सजा दिलवा चुका होऊंगा तो उसकी गवाही पर भूपेन्द्रसिंह और अधिक शक के दायरे में आ जाएगा। तो जिस वक्त देवेन्द्र लक्ष्मी

बनी वीणा का कत्ल करने पर आमादा था, उस वक्त मौके की ताक में नकाबपोश बनकर मैं वहीं छुपा हुआ था। और फिर उसे बेहोश करके उसकी रिवॉल्वर लेकर मैं यहां आ गया। देवेन्द्र के ऊपर किए अपने वार से मुझे यकीन था कि वह कम-से-कम दो घंटे तक होश में आने वाला नहीं है। अब मुझे यहां ऐसी सिच्युएशन क्रियेट करनी थी, जिससे उसके हाथों लक्ष्मी का कत्ल हो जाए और साथ ही वहां एक ऐसा प्रत्यक्षदर्शी गवाह मौजूद रहे, जो इस कत्ल को भूपेन्द्रसिंह और देवेन्द्र की मिली-जुली साजिश समझे। और जो खुद के फंसने के भय से पुलिस के पास जाने की हिम्मत न कर सके। उस गवाह का इंतजाम मैंने संदीप को बेवकूफ बनाकर पूरा कर लिया था। चूंकि देवेन्द्र से मिलने मैं यदाकदा उसके ऑफिस भी जाता रहता था, इसलिए संदीप के साथ हुई घटना से मैं बखूबी परिचित था और यह भी जानता था कि संदीप उन बाप-बेटों से रंजिश रखता है। तब मैं उससे मिला, लेकिन नागेश के चेहरे के साथ। क्योंकि वह मेरे नए रूप से परिचित था। मैंने अपना परिचय उसे भूपेन्द्रसिंह के नए मैनेजर के रूप में देते हुए काल्पनिक तीस लाख रुपयों की बात बताकर उसे यहां चोरी करने के लिए तैयार कर लिया था। फिर उसे बंगले में दाखिल होने का वह समय भी बताया, जब देवेन्द्र के दो घंटे बेहोश रहने के बाद यहां पहुंचने की उम्मीद थी। ठीक उसी वक्त पहुंचने में वह किसी तरह की लापरवाही न कर सके, इसलिए मैंने पहले ही उसे चेतावनी दे दी थी कि अगर वह वक्त पर पहुंचने में जरा भी चूक गया और बाद में किसी तरह की गड़बड़ी की वजह से पकड़ा गया तो उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी। और फिर, जब वह अपने निश्चित समय पर वहां पहुंचा तो उस वक्त खिड़की पर खड़ा मैं उसी का ही इंतजार कर रहा था। अत: मैं जल्दी से भूपेन्द्रसिंह का चेहरा लगाकर लक्ष्मी के कमरे में पहुंच गया। लक्ष्मी पहले ही वहां पहुंच चुकी थी। अत: मुझे यानी भूपेन्द्रसिंह को अपने कमरे में देखकर वह चौंक उठी थी, लेकिन मैंने इशारे से उसे खामोश रहने को कहा और खिड़की के पास जाकर उसे थोड़ा-सा खोलकर मैं से इस तरह की आवाजें निकालने लगा, ताकि पाइप पर चढ़ रहे संदीप का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो

जाए। फिर उसे अपनी तरफ आता देखकर मैं फौरन लक्ष्मी के ऊपर झपट पड़ा। वह ठीक से कुछ समझ पाती कि मेरे दोनों हाथ उसके गले पर जम गए। बाद में मैंने वही सबकुछ किया, जो संदीप ने अपने बयान में बताया था। लक्ष्मी के गले पर मैंने उतना ही दबाव डाला था, कि उसकी मृत्यु न हो सके, लेकिन वह ऐसी हालत में जरूर पहुंच जाए कि कुछ देर तक मुर्दे की तरह पड़ी रहे।

संदीप ने बाकी के सब काम तो ठीक ढंग से किए थे। लेकिन उसके बारे में मेरा यह सोचना कि वह पुलिस के पास नहीं जाएगा, मेरी एक जबरदस्त भूल साबित हुआ। योजना बनाते समय मुझे इस बात का होश नहीं रहा था कि अपने को बचाने के लिए वह फोन के जरिए पुलिस को इस घटना की जानकारी दे सकता है। फिर भी उसने होशियारी से सिर्फ गोली चलने और चीखने की बात पुलिस को बताई कि वह उस तक न पहुंच सके। अपनी इसी गलती की वजह से लक्ष्मी की लाश मुझे वहां से गायब करनी पड़ी थी। अगर संदीप के फोन पर इंस्पेक्टर गाडगिल की जगह वामनराव वहां आ जाता तो इतना सब करने के बावजूद मेरी योजना की टांग टूट जाती, लेकिन एक बार फिर मेरी किस्मत ने साथ दिया था और इंस्पेक्टर गाडगिल वहां आ धमका था, क्योंकि उस दिन वामनराव छुट्टी पर थे। फिर प्रफुल्ल और राघव को कौन-सा झांसा देकर मैंने अपनी साजिश में फंसाया, यह तो अदालत में तुम सुन ही चुकी हो।

लक्ष्मी की लाश ठिकाने लगवाने में तुम्हरा साथ मैंने इस ढंग से दिया, कि तुम लोग मुझे अपना सच्चा हमदर्द समझ बैठो, जबकि मैं यह अच्छी तरह जानता था कि वह कांइयां इंस्पेक्टर वामनराव बड़ी आसानी से सबकुछ समझ जाएगा। पाजेब को वहां छुपाकर पुलिस को बरामद करवाने के पीछे मेरा यह उद्देश्य था कि वामनराव के दिमाग में यह बात अच्छी तरह बैठ जाए कि कोई और भी इस केस में इनवॉल्व है।

वामनराव के दिमाग में यह बात बिठाने के बाद ही मैं उसका शक भूपेन्द्रसिंह की तरफ मोड़ सकता था। उस वक्त राघव को बेवकूफ बनाकर मैंने उसके शक की पुष्टि कर दी थी। जेवर गायब होने का क्या रहस्य था? यह भी सुन लो।

तुम्हें ध्यान होगा कि जिस वक्त गमले में जेवर छुपाए गए थे और पुलिस के आने के बाद सब लोग अन्दर की तरफ भागे थे तो मैं पीछे ही रह गया था। वहां छिपे प्रफुल्ल का चेहरा तो मैं नहीं देख पाया, लेकिन यह देखने में जरूर कामयाब हो गया था कि वहां कोई-न-कोई छुपा जरूर है। इसलिए मुझे जेवरों की पोटली निकालने में कोई कठिनाई नहीं हुई। इसकी वजह यह थी कि मैं इतनी आसानी से उन्हें पुलिस के पास नहीं जाने देना चाहता था। आखिर मुझे सिर्फ देवेन्द्र को ही नहीं, बल्कि भूपेन्द्रसिंह को भी फंसाना था। वैसे यहां मैं एक बात और बता देना चाहता हूं कि राघव की बीवी के बारे में मैंने उसे जो कुछ बताया था, वह महज मेरी कल्पना की उपज थी, जो संयोग से ठीक निशाने पर बैठी और उसने उसे सच समझकर बाकायदा मेरे कहे मुताबिक हर काम को ठीक ढंग से अंजाम दिया। उसे दिया हुआ पत्र मैंने एक कम पढ़ी—औरत को पैसे देकर लिखवाया था। और इस तरह···।" होंठों पर वही क्रूर मुस्कराहट लिए नागेश ने बोलना जारी रखा—"देवेन्द्र को फांसी पर लटकवाने की तैयारी के साथ ही मैं भूपेन्द्रसिंह को भी उसी रास्ते पर धकेलने के लिए उसके खिलाफ सबूतों का चक्रव्यूह तैयार करने लगा। देवेन्द्र को फांसी हो जाने के बाद भूपेन्द्रसिंह की तरफ शक का दरवाजा मैंने तुम्हें उस होटल में बुलाकर खोला, जहां लक्ष्मी का चेहरा लगाकर थोड़ी ही देर बाद वीणा पहुंचने वाली थी। और यह बात मैं अच्छी तरह जानता था। मुझे यह विश्वास इसलिए था, क्योंकि मैं जानता था कि वीणा ने उस फेसमास्क को नष्ट नहीं किया था। ऐसा शायद उसने इसलिए किया था, ताकि अगर कभी मैं उस फेसमास्क को मांगने जाऊं तो वह अपने बाकी के रुपये मुझसे वसूल कर सके। लेकिन जब मैं फेसमास्क लेने नहीं गया तो उसने उस चेहरे को अपने धंधे में शामिल कर लिया। उसकी प्रत्येक हरकत की खबर रखने के कारण मैं यह भी अच्छी तरह जानता था कि आजकल वह दूसरे ढंग से लोगों को बेवकूफ बना रहा है। वह यह करती थी कि किसी धनवान लड़के से मुहब्बत का ड्रामा करके कुछ दिनों तक उसे अपने साथ चिपकाए रखती थी और इस दौरान झूठ-मूठ मां, भाई व बहन की बीमारी का जिक्र करके उससे पैसे ऐंठती रहती

थी, फिर जब वह यह जान लेती कि अब वह उससे कुछ नहीं निकाल पाएगी तो फिर किसी भी बात पर खफा होने का नाटक करके दूसरे से सम्बन्ध बना लेती थी। लक्ष्मी का फेसमास्क उसके पास होने के कारण वह एक साथ दो माशुकाओं का रोल अदा कर रही थी। उस वक्त वह माधुरी के नाम से विजय नाम के एक लड़के की ओर लक्ष्मी का चेहरा लगाकर कंचन के नाम से जय किशन नाम के लड़के की प्रेमिका बनी हुई थी। अत: मैंने जय किशन बनकर फोन पर उस होटल का नाम व कमरा नम्बर बताकर एक अनमोल तोहफा देने का लालच देकर उसे बुलाया था। और हां, एक बात बताना तो मैं भूल ही गया था कि लक्ष्मी बनी वीणा और उसके साथ के मर्द के साथ बगीचे में खींची गई तस्वीर में भूपेन्द्रसिंह का चेहरा लगाए मैं वहां इसलिए मौजूद था, ताकि उसे देखने के बाद किसी को भी भूपेन्द्र-सिंह पर शक हो जाए। क्योंकि यह बात मैं पहले ही सोच चुका था कि जैसे ही लक्ष्मी के नकली चेहरे की बात ओपन होगी, पुलिस उस प्राइवेट जासूस तक जरूर पहुंचेगी। और तब उसे यह सोचकर उन तस्वीरों की दरकार होगी कि वीणा से काम कराने वाला नकाबपोश उसकी क्रिया-कलापों पर नजर रखने के लिए शायद वहां मौजूद रहा हो। और उसकी जानकारी में आए बिना उन दोनों के साथ उसकी भी तस्वीरें खींच ली गई हों। इसके बाद का घटनाक्रम बताना मैं इसलिए जरूरी नहीं समझता, क्योंकि वह कुछ तो तुम्हारी जानकारी में है और कुछ का अंदाजा तुम खुद लगा सकती हो और क्योंकि अब तक मैं अपना बहुत ज्यादा समय नष्ट कर चुका हूं।" अपने अंतिम शब्दों के साथ ही नागेश सरला की तरफ बढ़ा था।

"नहीं...।" गला फाड़कर चीखने के साथ वह यूं उछली, जैसे स्वप्न में कोई बहुत ही भयानक दृश्य दिखाई दिया हो।

फिर थोड़ा संयत होने के बाद भाव रहित चेहरा लिए वह सपाट स्वर में बोल उठी—"रुको नागेश, मैं मानती हूं कि तुम्हारी दीदी के ऊपर मेरे हैवान भाई और बाप ने जो अमानुषिक अत्याचार किए थे, उनकी जो सजा तुमने उन्हें दी है, वह बहुत कम है। लेकिन उसमें मेरा तो कोई दोष नहीं था। और तुम इस सच्चाई से भी इंकार नहीं कर

सकते कि मैंने तुम्हें दिल की गहराइयों से चाहा है। और मेरे पेट में पनप रहा बीज हमारे पवित्र प्यार की निशानी है। क्या तुम इतने क्रूर हो सकते हो कि अपने ही खून से निर्मित बीज को अपने हाथों नष्ट कर दोगे ?"

"हां···हां। मैं इतना ही क्रूर हूं।" वह सचमुच पागलों की तरह चिल्ला उठा—"अगर तुम यह सोचती हो कि तुम्हारी लच्छेदार बातों में आकर मैं भावनाओं में बह जाऊंगा, तो यह तुम्हारी भूल है। मेरी आंखों में इस वक्त सिर्फ नलिनी दीदी का मासूम चेहरा और उसे फांसी पर लटकाते दो दरिंदे नजर आ रहे हैं। म···मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता।"

कहने के साथ ही कैलाश चीते-की-सी फुर्ती से उसके ऊपर झपटा था।

लेकिन सरला उससे भी ज्यादा फुर्तीली साबित हुई। जबरदस्त फुर्ती से एक ओर उछलकर उसने उसकी पकड़ से ना सिर्फ अपने-आपको बचा लिया, बल्कि टेबल पर मौजूद फल काटने वाले एक चाकू को भी उठा लिया था।

उसकी इस हरकत पर नागेश ने जोरदार अट्टहास लगाते हुए गुर्राकर कहा—"तो तुम चाकू से मेरा कत्ल करोगी ? ठीक है, कोशिश करके देख लो, शायद अपने बाप और भाई के कातिल को मारकर उससे बदला चुका सको।"

"नहीं···।" वह खिसियाए अंदाज में चीखी—"मुझसे उन दरिंदों का रिश्ता कायम करके मुझे और अधिक जलील मत करो नागेश। उनकी मौत पर मैं बेहद खुश हूं। उन्हें अपने किए की सजा दिलवाकर तुमने 'कोई गुनाह नहीं किया है। किन्तु मुझे कत्ल करने के बाद तुम्हारे सिर पर एक निर्दोष के कत्ल का इल्जाम आ जाएगा अतः मैंने फैसला किया है कि मैं स्वयं ही खुद को खत्म कर लूं, ताकि तुम्हारे मन को शांति मिले, और तुम्हें यह विश्वास भी हो जाए कि मेरा प्यार धोखा नहीं था।"

"क···क्या ?" कैलाश उर्फ नागेश बुरी तरह बौखला उठा था—"नहीं, मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा। म···मैं···।"

"अब मुझे कोई नहीं रोक सकता नागेश।" उसकी बात पूरी होने से पहले ही वह बोल उठी—"लेकिन तुमसे एक

बिनती करती हूं, कि यदि मेरी अंत्येष्टि तुम अपने हाथों करोगे तो मेरी आत्मा पर से यह बोझ हट जाएगा कि तुमने मुझे माफ नहीं किया है और तुम्हारा प्यारा दिखावटी न होकर वास्तविक था।"

"त···तुम पागल हो गई हो? यह जानते हुए भी कि मैं तुम्हारा कत्ल करने पर आमादा हूं। तुम सिर्फ इसलिए अपने-आपको खत्म कर रही हो, कि मेरे सिर तुम्हारे कत्ल का इल्जाम न आ सके?"

"हां नागेश···म···मैं पागल हो गई हूं।" इस बार लाख चाहने के बावजूद भी सरला की आंखों से आंसू निकल पड़े फिर वह भर्राए स्वर में बोली—"शायद इस तरह के पागलपन को ही दुनिया वाले प्यार का नाम देते हैं। अच्छा, अलविदा मेरे प्राणनाथ। शायद अगले जन्म में तुम्हारा प्यार प्राप्त करने का सौभाग्य पा सकूं।"

इतना कहने के साथ ही सरला का चाकू वाला हाथ तेजी से उसके सीने की तरफ लपका था, लेकिन उतनी ही तेजी से नागेश का जिस्म भी उसकी तरफ झपटा था।

किन्तु!

साजिश रचने वाला वह कुशल खिलाड़ी, फुर्ती के मामले में यहां मात खा गया।

फलस्वरूप।

'खच्च' की आवाज के साथ ही वह चाकू मूठ तक सरला के सीने में पेवस्त हो गया।

उसी के साथ भावनाओं में बुरी तरह बह चुके नागेश के तेज दिमाग ने भी जैसे उसका साथ छोड़ दिया था और उसे बचाने की खातिर उसने सरला के सीने में धंसे चाकू की मूठ को पकड़कर झटके से बाहर खींच लिया था।

उसके सीने से चाकू निकालने और वामनराव के वहां कदम रखने की घटना एक ही क्षण में घटित हुई थी।

"अफसोस!" वामनराव के पिचके गालों वाले होंठों से उसका चिरपरिचित स्वर बुलन्द हुआ—"मेरी तमाम कोशिशों के बावजूद आखिर तुम तीसरा कत्ल करने में कामयाब हो गए। भूपेन्द्रसिंह को गिरफ्तार करते वक्त ही मुझे लग रहा था कि कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है। इतने पुख्ता सबूतों के बावजूद वह बार-बार अपने को निर्दोष

बता रहा था। और यही बात मुझे खटक रही थी। कोई भी इंसान अपनी पोल खुल जाने के बाद अदालत में भले ही मुकर जाए, लेकिन कम-से-कम पुलिस के सामने तो वह ऐसा दुःसाहस नहीं कर सकता। लेकिन तुमने उसके खिलाफ सबूतों का ऐसा जाल बिछाया था कि मैं भी उसमें उलझकर रह गया था। फिर भी मैंने यह जानने की कोशिश शुरू कर दी थी कि कहीं सचमुच ही कोई उसे फंसाने की कोशिश तो नहीं कर रहा है। अपने संदेह की लिस्ट में मुझे तुम्हारा नाम सबसे ऊपर नजर आया। क्योंकि अपनी बहन की आत्महत्या के बाद तुमने जो कसम खाई थी, उसके कई लोग गवाह हैं। उसके बादतु म्हारा रहस्यमय ढंग से गायब हो जाना भी तुम्हें शक के दायरे में ला रहा था। तब मैंने तुम्हारी तस्वीर के सहारे तुम्हें ढूंढ़ने का प्रयास शुरू किया। लेकिन उसमें सफलता क्यों नहीं मिली थी, यह अब मेरी समझ में आ गया है। वैसे तुम्हारी जानकारी के लिए मैं यह बता दूं कि तुम्हारे बहुरूपिए रूप पर मुझे तभी संदेह हुआ था, जब तुमने भूपेन्द्रसिंह को बचाने की जगह उसके खिलाफ अदालत में जहर उगलना शुरू कर दिया था। लेकिन तुम्हारे चेहरे पर चढ़े नकली चेहरे की वजह से मैं यह नहीं जान सका था कि तुम्हारी भूपेन्द्रसिंह से क्या दुश्मनी है? उस वक्त मैंने यही समझा था कि हो सकता है, तुम मुजरिमों से सख्त नफरत रखते हो। आखिर तुमने अपना रिकॉर्ड भी तो उसी ढंग का बना रखा था। किन्तु मैं फिर भी तुम्हारी प्रत्येक हरकत पर नजरें रखे हुए था।" बिना रुके सांय-सांय भरी आवाज गूंजती रही—"और जब तुम भूपेन्द्रसिंह से मिलने जेल पहुंचे तो मैंने इस आशय से वहां गुप्त तरीके से माइक्रोफोन का इंतजाम करवा रखा था कि शायद भूपेन्द्रसिंह के आखिरी क्षणों का ख्याल कर तुम उसे अपना रहस्य बता दो, लेकिन वहां भी तुमने चालाकी से काम लेते हुए अपने मुंह से कुछ न कहकर भूपेन्द्रसिंह को एक कागज थमा दिया था। फिर यहां पहुंचने में मुझे इतनी देर इसलिए हो गई, क्योंकि मैंने सोचा था कि तुम्हारे दिए कागज को अभी भूपेन्द्रसिंह पढ़ रहे हैं और तुम अभी वहीं मौजूद हो। लेकिन काफी देर बाद तक जब कोई आवाज न सुनाई दी तो मैं उस तरफ दौड़ा। वहां भूपेन्द्रसिंह

बेहोश पड़े थे और तुम निकल चुके थे। मैं यह बेहिचक स्वीकार करता हूं कि तुम मुझे धोखा देने में एक बार फिर कामयाब को गए थे। लेकिन अब तुम बुरी तरह फंस चुके हो। अब तुम्हारी कोई चालाकी तुम्हें फांसी के फंदे से नहीं बचा सकती। किन्तु मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि तुमने यह बेवकूफी कैसे की ?"

तभी उसकी गोद में पड़ी सरला कराह उठी।

फिर वह पीड़ा को पीने की कोशिश करती और अपनी बन्द होती पलकों को जबरन खोलते हुए बहुत ही मद्धिम स्वर में बोली– "इ···इंस्पेक्टर साहब ! मेरा खून इन्होंने न ···नहीं किया···।"

"क···क्या ?" वह जोर से चौंका—"अपने भाई और बाप के कातिल को बचाने के लिए आप झूठ बोल रही हैं।"

"न···नहीं···।" सरला के फड़फड़ाते होंठ हिले—"य ···यह झूठ है। अपने बाप···अ···और भाई की करतूत···ज ···जानने के···बाद···म···मैंने···ख···खुद···ही··· आत्म-हत्या···क···की है।"

इन शब्दों के साथ ही सरला ने एक जोरदार हिचकी ली। उसके जख्म से ढेर सारा खून उबल पड़ा था। उसी के साथ उसका जिस्म स्थिर पड़ता गया।

"नहींSSS।" नागेश के मुंह से एक जोरदार चीख निकली। लेकिन इस एक मात्र चीख के बाद उसने दुबारा चीखने की कोशिश नहीं की। अब वह आश्चर्य से फटी अपनी आंखों से कभी अपने हाथ में थमे रक्त रंजित चाकू को देख रहा था, तो कभी खून के तालाब में डूबी सरला की लाश को।

हथकड़ी लिए अपनी तरफ बढ़ते वामनराव को देखने के बावजूद उसकी स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ा।

हाथों में हथकड़ी पहनने के बाद भी उसकी अविश्वास-भरी निगाहें सरला की लाश पर ही टिकी हुई थीं।

□□□

मर्डर स्पेशलिस्ट

की अपार सफलता के बाद

मनोज पॉकेट बुक्स

में

अर्जुन पंडित

का आगामी
नया उपन्यास

फाँसी दो कानून को

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है

साजन का सिन्दूर

की अपार सफलता के बाद

मनोज पॉकेट बुक्स

में

मनोज

का आगामी

नवीनतम उपन्यास

वचन की जंजीर

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है

जुर्म की मेंहदी

की अपार सफलता के बाद

मनोज पॉकेट बुक्स

में

विनय प्रभाकर

का

आगामी नवीनतम उपन्यास

राखी का हत्यारा

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है

खून सनी दौलत

की अपार सफलता के बाद

मनोज पॉकेट बुक्स

में

रमन भंडारी

का

आगामी नवीनतम उपन्यास

सिन्दूर का कातिल

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है।

A.H.W. Raja Series

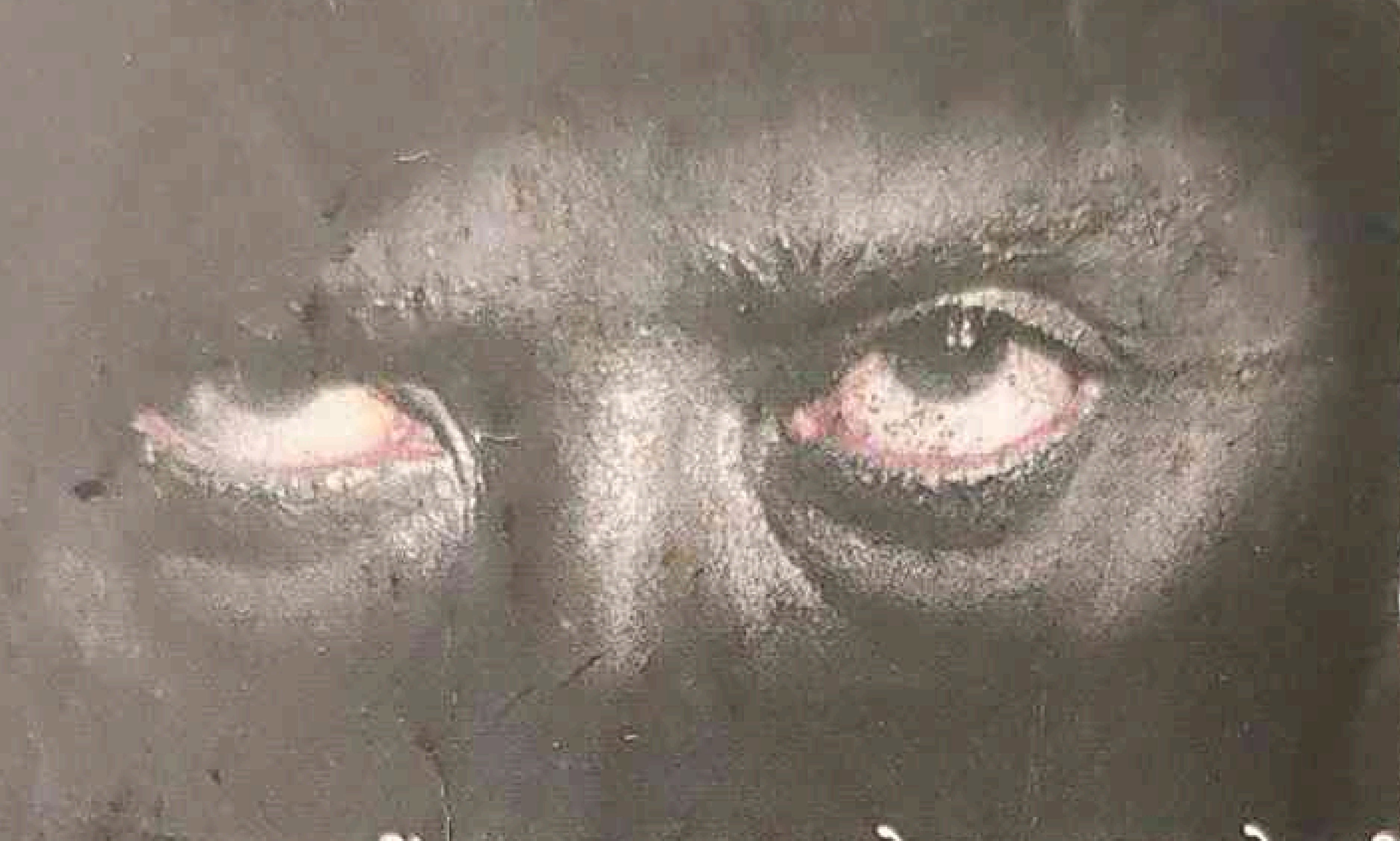

"अ... आप कहीं उसका खून करने का इरादा तो नहीं बना रहे हैं?"

"हाँ, दौलत बचाने का यही एकमात्र तरीका है। जरा सोचो, दस लाख कितनी बड़ी रकम होती है। उसके लिए एक नहीं, अगर दो खून भी करने पड़ें तो हमें हिचकिचाना नहीं चाहिए।"

"ल... लेकिन डैडी, अभी तो एक खून की वजह से ही गर्दन पर नंगी तलवार लटक रही है। और आप हैं कि...।"

"वह भी तेरी बेवकूफी की वजह से। खैर, उसे खत्म करने के लिए मैंने एक ऐसा प्लान बनाया है कि फंसने की कोई गुंजाइश ही बाकी नहीं रह जाती है।"

अर्जुन पंडित का नया उपन्यास

मर्डर स्पेशलिस्ट